चित्रा मुद्गल एवं चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज

Chitra Mudgal evam Chandramathi ki Kahaniyom mein Nari Asmitha ki Khoj

शोध प्रबंध

THESIS

कालिकट् विश्वविद्यालय की डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

Thesis submitted to the University of Calicut for the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

निर्देशिका

डॉ.जे.अम्बिका देवी

भूतपूर्व आचार्या एवं अध्यक्षा

सरकारी आर्ट्स व साईन्स कॉलेज

कालिकट् -१८

Dr.J.Ambika Devi

(Supervising Teacher)

Head of P.G Department Of Hindi & Research Centre (Rtd)

Govt. Arts & Science College

Calicut-18

प्रस्तुत कर्ता

हेमा.जी

शोध छात्रा

सरकारी आर्ट्स व साईन्स कॉलेज

कालिकट् -१८

Hema.G

(Research Scholar)

P.G Department Of Hindi & Research Centre

Govt. Arts & Science College

Calicut-18

कालिकट् विश्वविद्यालय

CERTIFICATE

This is to certify that this thesis entitled **"Chitra Mudgal evam Chandramathi ki kahaniyom mein Nari Asmitha ki Khoj "** is a bonafide record of research work carried out by **Smt.Hema.G** under my supervision and that no part of this thesis has hitherto been submitted for a degree in any University.

Place: Calicut
Date:

Dr.J.Ambika Devi
(Supervising Teacher)
Head of P.G Department Of Hindi &
Research Centre (Rtd)
Govt. Arts & Science College
Calicut-18

DECLARATION

I **Hema.G** do hereby declare that this thesis entitled **"Chitra Mudgal evam Chandramathi ki kahaniyom mein Nari Asmitha ki Khoj"** has not been submitted by me for the award of any Degree, Diploma, Title or Recognition before. The research work was supervised by **Dr.J.Ambika Devi.**

Place:Calicut
Date:

Hema.G
Research Scholar
P.G Department Of Hindi &
Research Centre
Govt. Arts & Science College
Calicut

विषयानुक्रम

प्राक्कथन **I - IV**

अध्याय एक **१-४१**

नारी अस्मिता : स्वरूप एवं प्रक्रिया

१.१ नारी अस्मिता परिभाषा

१.२ नारीवाद

१.३ नारीवाद परिभाषा एवं स्वरूप

१.४ नारीवाद का इतिहास

१.५ पाश्चात्य स्त्रीवादी आंदोलन

१.६ नारीवाद - वैचारिक सरणियां

१.६.१ उदारवादी नारीवाद (Liberal Feminism)

१.६.२ मार्क्सवादी नारीवाद (Marxian Feminism)

१.६.३ उग्रवादी नारीवाद (Radical Feminism)

१.६.४ समाजवादी नारीवाद (Social Feminism)

१.६.५ पर्यावरणीय नारीवाद (Eco-Feminism)

१.६.६ अश्वेत नारीवाद (Black Feminism)

१.७ भारतीय संस्कृति में स्त्री का स्थान

१.७.१ सभ्यता के आरंभ में

१.७.२ वैदिक युग में

१.७.३ उत्तर वैदिक युग में

१.७.४ मध्यकाल में

१.७.५ आज़ादी के समय

१.७.६ आज़ादी के बाद

१.७.७ समकालीन युग में

१.८ धर्म में नारी

१.८.१ हिन्दु धर्म में

१.८.२ ईसाई धर्म में

१.८.३ इस्लाम धर्म में

१.८.४ बौद्धधर्म में

१.८.५ जैन धर्म में

१.९ भारतीय साहित्य में नारीवाद

१.१० हिन्दी साहित्य में नारीवाद

१.१०.१ हिन्दी कहानी में नारीवाद

१.१०.१.१ प्रेमचंद पूर्व युग में

१.१०.१.२ प्रेमचंद युग में

१.१०.१.३ प्रेमचंदोतर युग में

१.१०.१.४ समकालीन युग में

अध्याय दो **४२-८९**

हिन्दी महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता

२.१ हिन्दी महिला कहानी लेखन की परंपरा

२.१.१ प्रारंभकालीन कथा साहित्य

२.१.२ विकासशील कथा साहित्य

२.१.३ समकालीन कथा साहित्य

२.२ समकालीन महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता

२.२.१ मन्नु भण्डारी

२.२.२ उषा प्रियंवदा

२.२.३ ममता कालिया

२.२.४ सुधा अरोडॉ

२.२.५ नमिता सिंह

२.२.६ मृदुला गर्ग

२.२.७ मृणाल पांडे

२.२.८ राजी सेठ

२.२.९ महरुन्नीसा परवेज़

२.२.१० शशि प्रभा शास्त्री

२.२.११ सूर्यबाला

२.२.१२ मालती जोशी

२.२.१३ मंजुल भगत

२.२.१४ मणिका मोहिनी

२.२.१५ कुसुम अंसल

२.२.१६ कृष्णा अग्निहोत्री

२.२.१७ ऋता शुक्ला

२.२.१८ मैत्रेयी पुष्पा

२.२.१९ दीप्ति खड़ेलवाल

२.२.२० नासिरा शर्मा

२.२.२१ देवकी अग्रवाल

२.२.२२ निरूपमा सेवती

२.२.२३ प्रतिमा वर्मा

अध्याय तीन **९०-१३१**

मलयाललम् महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता

३.१ मलयाललम् कथा साहित्य में नारी

३.२ मलयालम् की महिला कहानी लेखन परंपरा

३.२.१ के.सरस्वती अम्मा के पहले के महिला कहानीकार

३.२.२ आधुनिक काल के महिला कहानीकार

३.२.२.१ ललितम्बिका अंतरजनम्

३.२.२.२ के.सरस्वती अम्मा

३.२.२.३ माधविकुट्टी

३.२.२.४ राजलक्ष्मी

३.२.२.५ पी. वत्सला

३.२.२.६ सारा जोसफ

३.२.२.७ ग्रेसी

३.२.२.८ मानसी

३.२.२.९ अषिता

३.२.२.१० प्रिया. ए. एस

३.२.२.११ गीता हिरण्यन

३.२.२.१२ सितारा . एस

३.२.२.१३ बी.एम.सुहरा

३.२.२.१४ इन्दु मेनन

३.२.२.१५ के.पी.सुधीरा

अध्याय चार **१३२-२०२**

चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी अस्मिता

४.१ नारी अस्मिता

४.२ चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी अस्मिता

४.२.१ चित्रा मुद्गल की कहानियों में वैयक्तिक अस्मिता

४.२.१.१ शून्य

४.२.१.२ प्रमोशन

४.२.१.३ सफेद सोनारा

४.२.१.४ सौदा

४.२.१.५ इस हमाम में

४.२.१.६ लेन

४.२.२ चित्रा मुद्गल की कहानियों में पारिवारिक अस्मिता

४.२.२.१ लाक्षागृह

४.२.२.२ प्रेतयोनि

४.२.२.३ अभी भी

४.२.२.४ ट्रेन छूटने तक

४.२.२.५ लकड़बग्घा

४.२.२.६ स्टेपनी

४.२.२.७ अपनी वापसी

४.२.२.८ ताशमहल

४.२.३ चित्रा मुद्गल की कहानियों में सामाजिक अस्मिता

४.२.३.१ गिल्टी रोज़ेस

४.२.३.२ जब तक बिमलाएँ हैं

४.२.३.३ केंचुल

४.२.३.४ बावजूद इसके

४.२.३.५ चेहरे

४.२.३.६ हस्तक्षेप

४.२.३.७ नतीजा

अध्याय पाँच **२०३-२४३**

चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता

५.१ चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता

५.१.१ चंद्रमती की कहानियों में वैयक्तिक नारी अस्मिता

५.१.१.१ कत्तु कुत्त्

५.१.१.२ ओरु सूपर कथा (एक सूपर कहानी)

५.१.१.३. सर्वम् सहा (सब कुछ सहनेवाली)

५.१.१.४ वारांत्यम् (हफ्ते का अंतिम दिन)

५.१.१.५ निलत्तिल् पोर

५.१.२ चंद्रमती की कहानियों में पारिवारिक नारी अस्मिता

५.१.२.१ कथा राघवीयम् (कहानी राघव की)

५.१.२.२ ओरु नववधुविंडे जीवितत्तिल् ग्रेयम् ग्रीनिण्डे प्रसक्ति (एक नवोढ़ा के जीवन में ग्रेयम ग्रीन की प्रासंगिकता)

५.१.२.३ ज्योति विश्वनाथण्डे (पोस्ट मोडेन)कथा (ज्योति विश्वनाथन की पोस्ट मार्डन कहानी)

५.१.२.४ तांगुचुरुलुकल

५.१.२.५ पावनस्मरणयकु नेरमिल्लाते (पुण्य स्मृति केलिए फुर्सत नहीं)

५.१.२.६ अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन)

५.१.२.७ 9/11

५.१.३ चंद्रमती की कहानियों में सामाजिक नारी अस्मिता

५.१.३.१ माँलत्तिनु वेलीयिल (दराज के बाहर)

५.१.३.२ जनकीय कोड़ती (लोक अदालत)

५.१.३.३ अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति)

५.१.३.४ अड़िच्चिरकुकल (नीचे का पंख)

५.१.३.५ आर्यावर्तनम् (आर्या की गाथा)

अध्याय छः **२४४-२९३**

चित्रा मुद्गल एवं चंद्रमती की कहानियों में

नारी अस्मिता - एक खोज

६.१ चित्रा मुद्गल एवं चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता

६.१.१ वैयक्तिक अस्मिता

६.१.२ पारिवारिक अस्मिता

६.१.३ सामाजिक अस्मिता

उपसंहार **२९४-३०१**

संदर्भ ग्रंथ सूची **३०२-३१२**

आधार ग्रन्थ

सहायक ग्रन्थ

पत्र-पत्रिकाएँ

प्राक्कथन

लोकप्रिय साहित्यिक विधा होने के कारण कहानी के प्रति हमेशा मेरी रुचि रही है । इसलिए अपने शोध कार्य केलिए मैं ने कहानी को ही चुना । महिला कहानीकारों की कहानियों पर ज़्यादा विचार विमर्श नहीं हो पाया है । इसलिए महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता की खोज करना महत्वपूर्ण विषय बन जाता है । इस शोध प्रबंध में मेरा उद्देश्य मलयालम् एवं हिन्दी के महिला कहानीकारों की कहानियों में बदलते परवेश में चित्रित नारी के दृष्टिकोण का अध्ययन करना था । लेकिन इसकी व्यापकता को मद्देनज़र रखते हुए मैं ने हिन्दी की चित्रा मुद्गल एवं मलयालम् की चंद्रमती की कहानियों को केंद्र में रखकर उनकी कहानियों में नारी अस्मिता की खोज की है ।

नारी अस्मिता का सवाल आज बहुचर्चित विषय है । नारी अस्मिता की तलाश अब भी ज़ारी है । नारीवादी साहित्य के नीवाधार तथ्यों के आधार पर नारी की अपनी अस्मिता और बदहालत की पहचान का चित्रण करना आज भी समीचीन है । किसी भी कहानी का समकालीन ज़िन्दगी से अवश्य सरोकार रहता है । यही सरोकार चित्रा मुद्गल एवं चंद्रमती की कहानियों में देख सकते हैं ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को अध्ययन की सुविधा केलिए छः अध्यायों में विभाजित किया गया है । चित्रा मुद्गल एवं चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज करने केलिए नारीवादी सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त करना ज़रूरी है । इसलिए प्रथम अध्याय “नारी अस्मिता: स्वरूप एवं प्रक्रिया” में नारी अस्मिता की परिभाषा देकर उसके स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास किया गया है । इसमें नारीवाद के विभिन्न वैचारिक सरणियों के साथ भारतीय एवं पाश्चात्य नारीवादी आन्दोलनों के इतिहास पर भी प्रकाश डाला गया है । साथ में भारतीय संस्कृति एवं भारतीय साहित्य में नारी के स्थान का भी चर्चा की गयी है ।

दूसरे अध्याय “हिन्दी महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी अस्मिता” में हिन्दी साहित्य की पहली महिला कहानीकार ‘बंग महिला से’ लेकर समकालीन कहानीकार मन्नूभंडारी, उषा प्रियम्वदा आदि की कहानियों में नारी अस्मिता को ढूँढने का प्रयास हुआ है ।

मलयालम् के साहित्यकारों को हिन्दी क्षेत्र के साहित्यकारों से परिचित कराना भी मेरा उद्देश्य रहा । इसलिए तीसरे अध्याय “मलयालम् महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता” में

मलयालम् कथा साहित्य में नारी के चित्रण का ज़िक्र किया गया है । उसके बाद मलयालम् महिला कहानी लेखन की परंपरा का सामान्य परिचय दिया गया है । इस में मलयालम् की पहली महिला कहानीकार से लेकर समकालीन इंदुमेनन तक की कहानियों का विवेचन-विश्लेषण हुआ है ।

आदि-अनादि शीर्षक पुस्तक में चित्रा जी की १९६५ से २००७ तक की सभी कहानियाँ संग्रहीत है । मैं ने अपने शोध कार्य केलिए तीन खंडों में प्रस्तुत इस कहानी संग्रह को लिया है । चौथे अध्याय "चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी अस्मिता" में नारीवादी सिद्धांतों के आधार पर उनकी कहानियों में नारी अस्मिता की खोज की गयी है । इसमें नारीवादी विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में उनकी कहानियों में चित्रित नारी-अस्मिता की खोज की गयी है ।

चंद्रमती मलयालम् कहानीकारों में नारीवादी चेतना को लेकर कहानियाँ लिखने वाली प्रमुख कथाकार है । लेकिन हिन्दी क्षेत्र में आप उतनी परिचित नहीं है । पांचवे अध्याय "चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता" में चंद्रमती की कहानियों को नारीवादी विचारधारा के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है ।

अंतिम अध्याय "चंद्रमती एवं चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज" में दोनों कहानीकारों की कहानियों में चित्रित नारी की अस्मिता की खोज उनके वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक धरातल पर हुआ है । साथ में दोनों कहानीकारों की कहानियों में चित्रित नारी समस्याओं की समानता एवं असमानता का भी चित्रण हुआ है ।

उपसंहार में उपर्युक्त विमर्श को निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

श्रीमती चित्रा मुद्गल एवं चंद्रमती से में कृतज्ञ हूँ । चित्रा जी के साथ कोच्चिन विश्वविद्यालय एवं दिल्ली में मेरी मुलाक़ात हुई । उन्होंने होसला बढ़ाकार मेरा पथ-प्रथर्शन किया। चंद्रमती के साथ भी मेरी मुलाक़ात हुई । दोनों ने मेरे शोध कार्य केलिए मुझे होसला देकर मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया ताकि में अपने लक्ष्य तक पहुँच सकी ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध सरकारी आर्ट्स व साईन्स कॉलेज से सेवानिवृत विभागाध्यक्षा श्रीमती डॉ.जे.अंबिका देवी के विद्वतापूर्ण मार्ग दर्शन में सम्पन्न हुआ है । इस शोध कार्य केलिए मार्ग दर्शन करते समय उन्होंने अपने विचार मुझ पर नहीं थोपा और मुझे पूरी आज़ादी दी । उनके स्नेह तथा प्रोत्साहन को व्यक्त करना मेरे बस की बात नहीं है । इसकेलिए मैं उनकी सदा

आभारी हूँ । शोध कार्य केलिए इस विषय को सुझा कर अध्ययन की अदम्य प्रेरणा को जागृत करने का श्रेय उन्हीं को है ।

सरकारी आर्ट्स व साईन्स कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्षा श्रीमती डॉ.एन.गिरिजा के प्रति भी में कृतज्ञ हूँ । हिन्दी विभाग के मेरे सहकर्मियों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। हमारे कॉलेज के प्रिंसिपल और कर्मचारियों से मुझे काफी मदद मिली है । उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ ।

प्रस्तुत शोधकार्य के सम्पन्न होने में कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.सेतुनाथन, पूर्व विभागाध्यक्षा श्रीमती डॉ.सुधा.बी, विभाग के अध्यापक डॉ.वी.के.सुब्रह्मनियन आदि का विशेष योगदान रहा है । सरकारी आर्ट्स व साईन्स कॉलेज के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डॉ.पवूर शशीन्द्रन का भी मैं आभारी हूँ, जिनका उपदेश मुझे समय-समय पर मिलता रहा ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूरा करने केलिए मुझे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन मित्रों तथा हितैषियों से सहायता मिली है । उन सब के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध केलिए आवश्यक पुस्तकें मुझे जेएन.यु के हिन्दी पुस्तकालय, केरल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, सरकारी विमन्स कालेज के पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, केंद्रीय साहित्य अकादमी के पुस्तकालय, कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी पुस्तकालय, मलयालम् पुस्तकालय एवं सी.एच मेम्मोरियल ग्रंथालय, कालीकट के अन्वेषी नामक मलयालम् पुस्तकालय, सरकारी आर्ट्स व सायन्स कालेज के मलयालम् पुस्तकालय, मलपुरम् सरकारी कालेज के मलयालम् विभाग का पुस्तकालय आदि से उपलब्ध हुई हैं । इन सभी पुस्तकालयों के ग्रंथपालों एवं अधिकारियों के प्रति हार्थिक आभार व्यक्त करती हूँ ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मुझे तीन साल केलिए अनुसंधान वृत्ति प्राप्त हुई जिसके परिणाम स्वरूप मैं यह शोध कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न कर सकी । अत: मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रति हार्दिक कृतज्ञ हूँ ।

अध्याय एक

नारी अस्मिता : स्वरूप एवं प्रक्रिया

१.१ नारी अस्मिता : परिभाषा

"अस्मि" की भाववाचक संज्ञा अस्मिता है । "अस्मि" का अर्थ है "मैं हूँ"। तब अस्मिता का अर्थ हुआ " मैं " हूँ का अहसास । यानि होने का बोध ही अस्मिता है । अस्मिता स्त्रीलिंग शब्द है । लेकिन स्त्री के संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग इतिहास में कहीं नहीं मिलता । अनामिका के अनुसार " इस "मैं" में कई छोटे छोटे "मैं" समाहित होते है- माँ "मैं" , पत्नी "मैं" , बहन "मैं" बहु "मैं" ,बेटी "मैं" , दोस्त "मैं" , दुश्मन "मैं" , अध्यापिका "मैं" , छात्र "मैं", पड़ोसी "मैं" , कायर "मैं" ।"१ अर्थात् स्त्री के अनेक रूप होते हैं - पत्नी, बहन, माँ, बेटी आदि । उन सभी रूपों में उसका अपना सत्व रहता है । घर, परिवार एवं समाज में व्यष्टि के रूप में वह खड़ी होती है । लेकिन घर-परिवार के चक्कर में वह हमेशा दूसरों के बारे में हमेशा सोचती रहती है । इसके कारण वह अपने "स्व" को पहचान नहीं पाती है ।

पश्चिमी "अस्मिता" निजी नाम व सफलता को महत्व देती है । जापानी "अस्मिता" उसके दूसरों के साथ संबंध में होती है और उसी में विकास करती है । भारतीय विचार में "अस्मिता" निज से ज़्यादा सार्वजनिकता पर ज़ोर देता है ।

अस्मिता के समकक्ष अँग्रेजी में "Identity" शब्द मिलता है । हिन्दी में यह "पहचान" तथा "अस्तित्व-बोध" शब्दों से भी जाना जाता है । वर्तमान समय में अस्मिता शब्द परंपरा से सर्वथा भिन्न सत्ता के भाव के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

नारी अस्मिता संबंधी प्रश्नों का प्रतिनिधित्व करनेवाला साहित्य वही है जो स्त्री को मनुष्य, नागरिक एवं सामाजिक प्राणी की हैसियत से उसके मानवीय अधिकारों की संघर्षपूर्ण माँग करनेवाला साहित्य हो । नारी अस्मिता संबंधी प्रश्न आज भी अधूरा है । बदलते परिवेश के साथ-साथ उसमें नवीन अध्याय और नवीन प्रश्न जुडते चले जा रहे हैं । आज नारी की वास्तविक स्थिति को समझने केलिए सूक्ष्म दृष्टि और विश्लेषण की आवश्यकता है ।

स्त्री की अस्मिता का सवाल केवल साहित्य तक सीमित नहीं है । स्त्री की अस्मिता मूलत: उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति से बनती है । "भारत जैसे उत्तर औपनिवेशिक समाज में स्त्री की अस्मिता को बनाने एवं बिगाड़ने में कई तरह के दबाव काम करते हैं । उन में कुछ नये है तो कुछ पुराने, कुछ देशी है तो कुछ विदेशी ।"२ यही

नहीं हमारे समाज की संरचना में स्त्री की अस्मिता धर्म, समुदाय, जाति, वर्ग, और लिंग से भी संबन्धित है । इसलिए इनमें से किसी एक की विचारधारा के आधार पर स्त्री की अस्मिता को पहचानने की कोशिश करना ठीक नहीं होगा । यह कोशिश अधूरी ही रहेगी । उदाहरण के लिए एक हिन्दु स्त्री की अस्मिता का संकट एवं एक मुसलमान स्त्री की अस्मिता के संकट में जरुर अंतर होगा । उसी तरह एक सवर्ण स्त्री एवं दलित स्त्री की अस्मिता का संकट और एक अमीर स्त्री एवं गरीब स्त्री की अस्मिता के संकट में भी अंतर हैं । क्यों कि स्त्री के सामाजिक, आर्थिक, एवं धार्मिक स्थिति में अंतर है । यह अंतर उसकी पहचान का प्रमुख अंग है । यह भी सच है कि पुरुष सत्तात्मक समाज में रहने के कारण स्त्रियों पर हर वक्त हर अवस्था में पुरुषों का आधिपत्य रहा है । इसी कारण पुरुष के द्वारा स्त्री का शोषण होता रहा है । लेकिन वर्ण, वर्ग, समुदाय की भिन्नता के कारण उनके शोषण की प्रक्रिया में भी भिन्नता होती है ।

पिछले साठ साल का इतिहास मुख्य रूप से अस्मिता आदोलनों का इतिहास है । स्त्री एवं दलित आन्दोलनों के पहले स्वाधीनता आंदोलन । उसी तरह रंग-भेद के नीति के खिलाफ पनपा अश्वेत आंदोलन । ये सब अस्मिता आंदोलन इस बात का प्रमाण है कि जहाँ उपेक्षित और प्रताड़ित है, वहाँ इस के विरुद्ध लड़ने की प्रक्रिया होती रहती है "किसी भी अन्य अस्मिता की तरह नारी अस्मिता भी समाज के हाशिएकृत समुदायों केलिए अन्याय के विरूद्ध अपने सामुदायिक अस्तित्व के पक्ष में एक एहसास है ।"३ हर तरह की अस्मिता को हाशियारे पर रखने के लिए सत्ताधारी आयाम हमेशा मौजूद रहता है । ये सत्ताधारी आयाम द्लित अस्मिता केलिए सवर्ण सत्ता है तो नारी अस्मिता केलिए पितृसत्ता है । नारी अस्मिता या अन्य किसी अस्मिता के बारे में कहा जाय तो एक बात ज़रूर है कि सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं ।

समाज की आधी आबादी होने के बावजूद भी नारी की कभी भी इज्जत नहीं की गयी है । कभी भी उसकी बराबरी और हक की आवाज़ को या उसके अस्तित्व और अस्मिता की माँग को ध्यान से सुना नहीं गया । सदियों से वह इन अत्याचारों को सहती रही । लेकिन अब धीरे-धीरे उसे इन बंधनों एवं अत्याचारों का एहसास होने लगा है । वह अपने "स्व" के अस्तित्व को पहचानने लगी है । सुरेश बत्रा के अनुसार "एक लंबी, पुरानी स्थापित व्यवस्था को तोड़कर जन संघर्ष से जुड़ना और कदम पर यथार्थ से मुठभेड़ करना अस्मिता की पहचान का तक़ाज़ा है ।"४ स्त्री को अपनी अस्मिता के संघर्ष में पुरानी रीति-

रिवाज़ों से लड़ना पड़ता है । यह भी सच है कि व्यवस्था से लड़ने की ताकत उस में है । पुरुष-प्रभुत्व की व्यवस्था में अनेक परिवर्तनों के बावजूद भी स्त्री की पराधीनता की कड़ियाँ कमज़ोर नहीं हुई हैं । ये कड़ियाँ इतनी पुरानी है कि स्त्रियों को यह बंधन का एहसास नहीं दिलाता । इसलिए जब भी वह इन कड़ियों को तोड़ने की बात सुनती है, तो चौंक उड़ती है ।

वास्तव में नारी अस्मिता अन्याय के विरुद्ध अपने अस्तित्व के पक्ष में एक एहसास है । नारी अस्मिता का यह बोध ही नारी विमर्श का आरंभिक बिन्दु माना जाता है । साहित्य में नारी अस्मिता का अध्ययन नारीवाद के आधार पर ही किया जाता है । स्त्री की पहचान और सम्मान, बराबरी और अधिकार के सवालों से जूंझता है । ऐसी नारी अस्मिता नारी के व्यक्तित्व की पहचान है ।

स्त्री द्वारा लिखा गया और उस के विषय में लिखा गया साहित्य ही साहित्यिक स्त्री विमर्श माना जाता है । स्त्री होने के नाते स्वानुभूति पर आधारित प्रामाणिक व विश्वसनीय साहित्य की रचना वही कर सकती है । श्रीमती धर्मा यादव के अनुसार "पुरुष लेखक संवेदना के स्तर पर स्त्री पीड़ा को व्यक्त करने में सक्षम हो रहे हैं । लेकिन स्त्री पीडॉ का यथार्थ चित्रण उतनी इमानदारी से नहीं कर सके हैं ।"५ यह एक विवादपूर्ण विषय है । इसके बारे में पहले से ही विद्वानों में मत भेद रहा है । महादेवी वर्मा "श्रृंगला की कड़ियों" में अपना विचार इस प्रकार व्यक्त करती है - "पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है, परंतु नारी केलिए अनुभव । अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह स्वयं हमें दे सकेगी, वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके ।"६ नारी में अनुभव की सचाई होती है । इसी सच्चाई के सहारे वह अपने से, अपने परिवार से एवं समाज से लड़ती है । वैसे तो व्यापक अर्थ में स्त्री विमर्श स्त्री-जीवन के अनछुए, अनजाने पीड़ा को व्यक्त करने के साथ इसके जिम्मेदार तथ्यों की खोज करना भी है ।

१.२ स्त्रीवाद या नारीवाद

स्त्रीवाद शब्द मूलतः अग्रेज़ी शब्द "फेमिनिज़म" का हिन्दी अनुवाद है । हिन्दी में नारीवाद, स्त्रीवाद, महिलावाद आदि शब्द का संबन्ध इस लेखन से है, जिसके द्वारा स्त्रियों के हकों एवं अधिकारों का समर्थन किया जाता है । आजकल नारीवाद के स्थान पर स्त्रीवाद शब्द का प्रयोग किया जाता है ।

स्त्रीवाद एक व्यापक अवधारणा है । यह किसी एक तत्व पर आधारित नहीं है । इसीलिए इसका स्वरूप समझना आसान नहीं है । इसके कई स्तर हैं । स्त्रीत्व का व्यक्तित्व के साथ जुड़ा हुआ एक अर्थ भी है । संस्कृति की सृष्टि एवं देन में अपने को साझेदार बनाने के श्रम के रूप में नारीवाद का उदय हुआ था । पुरुष समाज ने नारीवाद की प्रगति को बदनामी के ज़रिये दबाने की कोशिश की । धर्म एवं धार्मिक संस्थाओ ने इसकेलिए प्रोत्साहन भी दिया । ऐसी परिस्थिति में स्त्री साहित्य नारी लेखन के नाम से जाने लगा ।

पुरुष-सत्तात्मक व्यवस्था की मूल्यों से विरोध प्रकट कर एवं चुनौती देकर ही स्त्री साहित्य का सृजन हुआ है । नारीवाद मानव समाज के अस्तित्व के प्रतिरोध की राजनीति से जुड़ा हुआ है । नारीवाद स्त्री को स्त्री में ही कैद करने की चीज़ नहीं है । वह मानव समाज के आधे हिस्से को आज़ाद करने की संस्था भी नहीं है । बल्कि उन सब के परे सारे मानव समाज की मुक्ति ही नारीवाद का लक्ष्य है ।

आज तक स्त्री ने अपने आप को देखा नहीं है । हमेशा उसे पुरुष की नज़रिये से ही देखा गया है, और पुरुष की इच्छा के अनुसार ही उसे चित्रित किया गया है । नारीवाद ने सब से पहले स्त्री को अपने दृष्टिकोण से देखने के शक्ति दी है । इस तरह वह अपने सत्व को पहचानने लगी । अब उसे पता चला है कि उसके बारे में जितने भी बातें कही गयी है उससे ज़्यादा कहने केलिए शेष हैं । पुरुष के द्वारा निर्धारित अर्थ के बदले अपने पहचान के अनुरूप अर्थ को ढूँढने की प्रक्रिया ही नारी लेखन का आधार है । नारीवाद एक नए संसार की, हाशियारे पर रखे गए लोगों की एवं धरती की मुक्ति के मार्ग पर चलता है । नारीवाद स्त्री को प्रकृति के साथ जोड़ता है । भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने स्त्रीवाद को परिभाषित किया है ।

१.३ नारीवाद परिभाषा एवं स्वरूप

नारीवाद या स्त्रीवाद उतना ही पुराना है, जितनी पुरानी पितृसत्ता है । "पितृसत्ता यदि स्त्रियों को पुरुषों के अधीन रखने केलिए तमाम तरह के बंधनों में जकड़ देने का नाम है, तो स्त्रीवाद उन बंधनों से मुक्त होने केलिए विद्रोह करने और स्त्री-पुरुष समानता केलिए प्रयास करने का नाम है ।"७ हमारा पितृसत्तात्मक समाज हमेशा स्त्री पर अपना अधिकार ज़माने की कोशिश करता है । किसी पर अगर अधिकार ज़माने की कोशिश होती है, तो

यह स्वाभाविक है कि वह उसे तोड़ने का प्रयास भी करेगा । स्त्री के साथ भी यही हुआ है ।

मृदुला गर्ग हिन्दी में "फेमिनिस्म" शब्द का सही सार्थक अनुवाद "नारी चेतना" को मानती है । उनके अनुसार "हम कह सकते हैं कि जो दृष्टि नारी की ऐतिहासिक और सामाजिक छवि के तिलिस्म को तोड़े, वह नारी चेतना है । उसका संबंध वर्ग, वर्ण, धर्म या लिंग से नहीं, दृष्टि से है ।"८ अगर नारी चेतना का संबंध दृष्टि से है तो पुरुष के द्वारा स्त्री के दृष्टिकोण से लिखे गये साहित्य को भी हम नारीवादी लेखन के अंतरगत रख सकते हैं । लेकिन इस पर ज़्यादातर लोग सहमत नहीं है ।

"नारी चेतना के मूल में नारी की सामाजिक, राजनीतिक, संस्कृतिक स्थितियों से जुड़े सभी प्रश्न हैं । इसका प्रमुख उद्देश्य नारी के सामर्थ्य की खोज करके उसे उससे परिचित कराना है ।"९ नारी की स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए सब से पहले उसे शरीर के परे होकर देखने की आवश्यकता है । बंगला लेखिका तस्लीमा नज़रीन ठीक ही कहती है - "जिस दिन यह समाज स्त्री-शरीर का नहीं, शरीर के अंग-प्रत्यंग का नहीं, स्त्री की मेधा और श्रम का मूल्य सीख जाएगा, सिर्फ उस दिन स्त्री की मनुष्य के रूप में स्वीकृति होगी ।"१० आज कल स्त्री को सिर्फ जिस्म या वस्तु के रूप में ही देखा जाता है । उसके मन एवं मस्तिष्क के बारे में कोई सोचता तक नहीं । यही स्त्री के साथ होने वाले सारे मुसीबतों की जड़ है ।

मराठी समीक्षक उषा शिंदे नारीवाद को मानवता के साथ जोड़कर देखने की कोशिश करती है । उन्होंने नारीवाद का स्वरूप कुछ इस प्रकार स्पष्ट किया है - "कानून, रूढ़ि, संस्था और जनमन सभी स्तरों पर नारी को मानवता का मूल्ययुक्त अधिकार दिलाने केलिए सूझबूझ के साथ लड़ी जानेवाली राजनैतिक लड़ाई को स्त्रीवाद कहा जा सकता है ।"११ वे नारीवाद को राजनैतिक लड़ाई मानती हैं । उनके अनुसार सब से पहले स्त्री को मनुष्य के रूप में देखने की ज़रूरत है । बाकी बातें बाद में आती है ।

तेलुगू की विचारक अड़वी सूर्यकुमारी के अनुसार "स्त्रीवाद से तात्पर्य स्त्री का औरों पर अधिकार, हक प्रस्थापित करना न होकर औरतों के सवालों के संबंध में समाज में एक विस्तृत नज़रिया निर्माण करके उसके अनुसार समाज का पुन:निर्माण करना है ।"१२ समाज के द्वारा निर्मित नियम ही स्त्री के पैरों पर जज़ीर बनकर उसे पुरुष का गुलाम बनाती है । इसलिए नारी के प्रति, उसके हक एवं अधिकार के प्रति समाज का नज़रिया

बदलना ज़रूरी है । तभी वह अपने हक की माँग कर सकती है और उसे प्राप्त भी कर सकती है ।

नारी को मानव के रूप में प्रस्तुत करना स्त्रीवाद का उद्देश है । मानव शब्द सिर्फ पुरुष के लिए ही प्रयुक्त होता है । सिमोन द बुआ के अनुसार "जब हम मानव शब्द का उच्चारण करते हैं, तो उस में पुरुष एवं स्त्री दोनों समाहित होते हैं ।"१३ कभी भी स्त्री, मानव शब्द के अंतरगत आती नहीं है । यही सब से बड़ी विडम्बना है । नारीवादियों ने इसे सुधारने की कोशिश की है । नारीवाद की परिभाषा हर जगह, हर वक्त और हर काल में एक जैसा नहीं है । नारीवाद का कार्यक्षेत्र व्यापक है । स्त्री के अधिकारों के प्रति अवबोध कराना नारीवाद का प्रमुख लक्ष्य है ।

स्त्री के अधिकारों केलिए की गई लड़ाई और इसके विरुद्ध खड़े हरेक के प्रति किया गया वैयक्तिक एवं संगठित संधर्ष नारीवाद के कार्यक्षेत्र के अंतरगत आता है । पीड़ित स्त्रियों का पुरुष विद्वेष, पुरुष निराकरण, लैंगिक आज़ादी, शारीरिक एवं सामाजिक ज़िन्दगी में स्वयं निर्णय लेने की आज़ादी (उदाहरण के लिए गर्भधारण एवं गर्भपात), स्व-वर्ग रति आदि सब मिलकर नारीवाद का कार्य क्षेत्र व्यापक है ।

नारीवाद वास्तव में नारी की परंपरागत मानसिकता में परिवर्तन लाकर उसे अपने "स्व" या अस्तित्व से साक्षात्कार कराता है । नारीवाद के स्वरूप के संदर्भ में निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि नारीवाद पुरुषों के विरोध में संधर्ष कदापि नहीं है बल्कि सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तरों पर घर, परिवार एवं समाज में स्त्री को जो दूसरा स्थान दिया गया है, उसके बदले पुरुष के समान स्थान प्राप्त करके अपने अस्तित्व की अलग पहचान कराना है ।

१.४ स्त्री-मुक्ति आंदोलन का इतिहास

आम तौर पर नारीवाद के नाम पर जिस बात की चर्चा की जाती है वह मूलतः पश्चिमी देशों के अनुभवों पर आधारित है । पश्चिम से आयी नारी जागरण की आवाज़ को भारतीय नारियों ने महसूस तो किया, लेकिन भारतीय स्त्रियों के समक्ष स्त्री-स्वतन्त्रता अथवा पुरुषों से समानाधिकार की माँग कोई नयी स्थिति नहीं थी । उमा चक्रवर्ती अपने "सोशल डायमेंशियन्स आफ आर्ली बुधिसम्" नामक पुस्तक में "बौद्ध साहित्य को सबसे पुराने स्त्रीवादी लेखन का स्रोत मानती है । और बुद्ध के शिष्य आनन्द को पहला स्त्रीवादी

पुरुष ।"१४ यों तो कहा जाता है कि बौद्ध धर्म ने स्त्री को पुरुष के बराबरी का स्थान नहीं दिया है । इसके बारे में भिन्न धर्म में स्त्री का स्थान शीर्षक में आगे चर्चा करेंगे ।

भारत का स्त्री आंदोलन शुरू से ही पश्चिम के स्त्री आंदोलन से भिन्न रहा है । वहाँ स्त्रियों को जिन अधिकारों के लिए - जैसे वोट देने के अधिकार के लिए - लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी, वह हमारे यहाँ आज़ादी के बाद स्त्रियों को स्वत: ही प्राप्त हुआ । पश्चिम के स्त्रीवाद से हमारा स्त्रीवाद भिन्न है । हमारे यहाँ जात-पात और छुआछूत जैसे सामाजिक प्रश्न तथा यौन शुचिता से संबन्धित नैतिक नियम हैं । लेकिन यह पश्चिम में बहुत बड़ी समस्या नहीं है । इसलिए हमारे स्त्रीवाद को जात-पात तथा छुआछूत जैसे सामाजिक प्रश्न और यौन-शुचिता से संबन्धित नैतिक नियमों से भी सैद्धांधिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर टकराना होगा ।

स्त्रीवादी विचारधारा का संबन्ध स्त्रीवादी आंदोलन से है । भारत में स्त्रीवादी आंदोलन की परंपरा का स्वतंत्र अस्तित्व होने के बावजूद कही-न-कही पाश्चात्य स्त्रीवादी विचारों से संबंध देखने को मिलता है । अत: भारतीय स्त्रीवाद पर प्रकाश डालने के पूर्व पाश्चात्य स्त्रीवादी आन्दोलनों पर प्रकाश डालना ज़रूरी है ।

१.५ पाश्चात्य स्त्रीवादी आंदोलन

मनुष्य की आदिम अवस्था से लेकर मध्ययुग तक नारी विभिन्न बंधनों से जकड़ती रही है । अठारहवीं शती तक आते-आते पश्चिम की नारी अपने अस्तित्व का एहसास करने लगी और वह अपनी मुक्ति केलिए लड़ने भी लगी । आदिम समाज में स्त्री घर-परिवार का देखभाल करती थी और पुरुष कबीले की रक्षा करता था । स्त्री की प्रजनन क्षमता उसकी दुर्बलता का कारण बन गया । सिमोन द बुआ के अनुसार "औरत में प्रजनन की क्षमता थी । यह क्षमता पुरुष के पास नहीं थी । औरत की यही विशेषता उसकी दासता का मूल कारण बनी और वह संतति पैदा करने का माध्यम बन कर रह गयी ।"१५ स्त्री की प्रजजन शक्ति को उन्होंने स्त्री की कमज़ोरी मानी । लेकिन इसे कमज़ोरी नहीं ताकत के रूप में लेना है । आज की नारी इसे कमज़ोरी मानने केलिए तैयार नहीं है ।

लेकिन कृषि युग में प्रजनन शक्ति के कारण उसे अत्यधिक महत्व प्राप्त हुआ । उस ज़माने में वंश माँ के नाम से चलता था । धीरे-धीरे पुरुष ने अपनी क्षमता को पहचान लिया और उसने स्त्री का शोषण करना शुरू किया । उसने स्त्री को अपना गुलाम बना

दिया, और तब से वंश पिता के नाम से चलने लगा । इस तरह पितृ-सत्तात्मक समाज में औरत पुरुष की संपत्ति बनकर रह गयी । मध्य-युग में स्त्री को हमेशा गौण स्थान था ।

मताधिकार प्राप्ति केलिए अमरीका में "अमेरीकन वुमन सफ्रेज असोशिएशन" की स्थापना हुई । सफ्रेज असोशिएशन के प्रयासों के फलस्वरूप धीरेधीरे अमेरीका के एक-एक राज्य ने नारी को मताधिकार देना आरंभ किया । १९२० तक अमरीका की नारी को मताधिकार प्राप्त हुआ । इस से प्रेरित होकर ब्रिटेन, फ़्रांस, कानेडा आदि यूरोपियन राष्ट्रों में नारी अंदोलनों का स्वरूप उग्र होता चला गया । १९४५ तक आते-आते फ़्रांस की नारी को भी मताधिकार प्राप्त हुआ ।

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ती के पश्चात् यूरोप में जो परिस्थितियाँ हुई उसके फलवरूप स्त्री अपने "स्व" के संदर्भ में एक बार फिर सोचने केलिए मजबूर हो गयी । समाज में घटित विभिन्न घटनाओं के कारण नारी आन्दोलनों को लक्ष्य तक जाने का मार्ग तत्कालीन सहित्यकारों ने दिखाया । उन्होंने साहित्य के माध्यम से स्त्री की असली स्थिति को स्पष्ट करके स्त्री को अपने अधिकारों से परिचित करवाया ।

मध्य-युग के अंत तक आते-आते स्त्री विभिन्न क्षेत्र में काम करने लगी । धीरे-धीरे उसके जीवन में विकास होने लगा । फ़्रांस की राज्यक्रान्ति के कारण स्त्री की स्थिति में परिवर्तन की आशा की गयी और फ़्रांस की राज्यक्रांति के बाद पाश्चात्य राज्यों में स्त्री की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया गया । उसके बाद औध्योगिक क्रान्ति के कारण कारखानों में स्त्रियों की ज़रूरत पड़ी ।

पश्चिम में स्त्रीवादी आन्दोलनों की शुरुआत अठारहवीं सदी में इंगलेंड में मानी जाती है । " 'रानी विक्टोरिया के दरबारी' 'जॉन स्टुआर्ट मिल (जे.एस.मिल)' की "अ सबजेकशान आफ वुमेन" (१८६९) पुस्तक से स्त्रीवादी आन्दोलन की शुरुआत मानी जाती है । १८६७ में उन्होंने स्त्रियों के वयस्क मताधिकार की माँग की ।"१६ स्त्री-अधिकार संबंधी बिल पास करने केलिए उन्होंने बहुत कोशिश की थी ।

"इसके लगभग ७० साल पहले "मेरी वुलस्टन क्राफ्ट" की "ए वेंडिकशन आफ द रेट्स आफ वुमन" (A Vindication of the Rights of Women) १७९२ में प्रकाशित हुई ।"१७ यह स्त्रियों की प्रतिष्ठा एवं माँग केलिए प्रकाशित पहली किताब है । फेंज विद्रोह

के बाद छः हफ्तों के अंदर लिखी गयी इस किताब में उन्होंने बताया है कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी सहती गयी स्त्री की गुलामी एवं निशब्द होकर सहती हुई अनीति समाज एवं पितृसत्ता की ही सृष्टि हैं ।

१९४२ में वर्जिना वुल्फ की "ए रूम आफ वन्स ओन(A Room of one's Own)" प्रकाशित हुआ । इसे फेमनिज़म का बैबिल माना जाता है । "उनके अनुसार स्त्रियों को समवेतन एवं संपत्ति में सम हिस्सा मिलना चाहिए । इसकेलिए अगर ज़रूरत पड़े तो समाज को अपनी आर्थिक दृष्टिसकोण को बदलना पड़ेगा । उन्होंने यह भी तर्क प्रस्तुत किया है कि हरेक स्त्री केलिए वैयक्तिक सफलता एवं आज़ादी अनमोल हैं ।"१८ स्त्री केलिए उसकी आज़ादी ही सब कुछ है । चाहे वह वैयक्तिक, पारिवारिक या सामाजिक क्यों न हो । आर्थिक स्वतन्त्रता कभी भी उसकी आज़ादी का कारण नहीं बल्कि आजकल गुलामी का कारण बन गया है । अर्थ के कारण परिवार उसे अपने कब्जे में रखना चाहता है । इसीलिए समाज के आर्थिक दृष्टिकोण का बदलना भी ज़रूरी हो गया है ।

१९४९ में फ्रेंच उपन्यासकर एवं दार्शनिक "सिमोन द बुआ" ने "द सेकड़ सेक्स" शीर्षक पुस्तक की रचना की । इसमें उन्होंने समाज में सदियों से ज़ारी स्त्री के पद के इतिहास का अध्ययन किया है । उनके अनुसार समाज के परिवेश और परिवार ही नारी को नारी बनाये रखने केलिए जिम्मेदार है । "सिमोन ने कहा औरत को औरत होने केलिए सिखाया जाता है । औरत बनी रहने केलिए अनुकूल बनाया जाता है। इस में सिमोन ने स्त्री संबंधी संवेदनशील मुद्दों पर विचार करने के साथ ही स्त्री को दूसरा दर्जा दिये जाने वाली विचार धारा का भी खंडन किया है ।"१९ उनके अनुसार पितृसत्तात्मक समाज हमेशा स्त्री को दूसरा स्थान ही देता है । यह स्त्री के ऊपर अपने नैतिक नियमों को थोपकर उसे अपने नियंत्रण में रखने की साजिश है । इसीलिए जन्म से लेकर उसके ऊपर तरह-तरह के नियंत्रण रखे जाते हैं । ताकि वह अपने ऊपर होने वाले शोषण एवं गुलामी को स्वाभाविक समझे और इसके खिलाफ आवाज़ उठाने की कोशिश न करे ।

१९६३ में अमरीका के "बेट्टी फ्रीड़न" ने अपनी विवादास्पद "द फेमिनैन मिस्टिक(The Feminine Mystique)" नामक पुस्तक में अमरीकी समाज के स्त्री-पुरुष मित्रता एवं स्त्री की संतृप्ति का मुखौटा खींच उतारा । "उन्होंने मध्यवर्ग की महिलाओं के साथ की गयी पूछ-ताछ से यह भी दिखाया है कि माँ होने की खुशी एवं घरेलू भद्रता देनेवाली संतृप्ति समाज के द्वारा आरोपित 'स्त्रैण आदर्श' मात्र है ।"२० तब तक यह

मूढ़ विश्वास प्रचालन था कि परिवार के ढाँचे के अंदर स्त्री संतुष्ट है । लेकिन पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ घर के अंदर कैद थीं और वे घर के अंदर शून्यता बोध का अनुभव कर रही थी । जब इस का खुलासा हुआ तब एक साथ स्त्री एवं पुरुष समाज अस्वस्थ हुए । इस के बाद "मेरी एलन" की "थिकिंग अबाउट ए वुमन", "केट मिलेट" की "सेकसुअल पालिटिक्स" तथा "जर्मन ग्रियर" की "द फीमेल यूनिक" आदि पुस्तकों ने स्त्रीवादी आन्दोलनों को आगे बढ़ाया ।

१.६ नारीवाद - वैचारिक सरणियाँ

नारी अस्मिता के विभिन्न वैचारिक सरणियों के सिद्धान्त की जड़ें इतिहास में गहरी घँसी थी । नारी मुक्ति आन्दोलनों से इसे नयी शक्ल मिली ।

नारीवाद कई विचारघाराओं में बाँटता गया । हरेक विचारधारा अलग-अलग परिकल्पनाओं और पहलुओं को प्रतिबिम्बित करती है । उदारवादी नारीवाद, मार्क्सवादी नारीवाद, समाजवादी नारीवाद, उग्रवाद आदि इस दिशा की चार उल्लेखनीय विचारधाराएँ हैं । इसके अलावा पर्यावरणीय नारीवाद एवं अश्वेत नारीवाद भी प्रचार में हैं ।

१.६.१ उदारवादी नारीवाद (Liberal Feminism)

अठारहवीं सदी की प्रारंभिक नारीवादियों ने मानवीय गरिमा और समानता की उदारवादी धारणाओं एवं स्त्री की ज़िंदगी की वास्तविक हकीकत के बीच में व्याप्त अंतर्विरोध को समाज के सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की थी । इन्होंने जेड़र (gender) पर आधारित विभेद को सांस्कृतिक मूल्य का उपज ही माना । ये परिवार एवं समाज में स्त्री की दोयम स्थिति पर भी ज़ोर देते हैं । उदारवादी नारीवाद उदारवाद की दार्शनिक परंपरा का अनुगमन करता है । इसके अधिकांश सदस्य मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाएँ थीं ।

"मेरी वुलस्टोन क्राफ्ट"(१७५९-१७९७) शुरुआती उदारवादी नारीवादी थी । "उन्होंने १७९२ में लंदन से प्रकाशित "ए वेंडिकशन आफ द रेट्स आफ वुमन" (A Vindication of the Rights of Women, महिलाओं के अधिकारों का समर्थन) में महिलाओं के अधिकारों की ज़ोरदार ढंग से हिमायत की ।"२१ अर्थात् स्त्रियों को अपने अधिकारों से वंचित करके रखा जाता है । उनके अनुसार स्त्रियों को राजनीतिक अधिकारों से वंचित करने का कोई तार्किक आधार नहीं है ।

"हैरिएट टेलर मिल" एवं "जॉन स्टुआर्ट मिल" ने साथ मिलकर निबंधों की श्रुंगलाएँ प्रकाशित की । इन निबंधों का विषय स्त्रियों की मुक्ति ही थी । इस में नौकरी और परिवार की पारंपरिक प्रणाली पर सवाल उठाया गया । क्राफ्ट और मिल दोनों ने स्त्री एवं पुरुष के समान प्राकृतिक अधिकार पर ज़ोर दिया ।

स्त्रियाँ पुरुष पर आर्थिक एवं सामाजिक रूप से निर्भर थी । उदारवादियों ने इस निर्भरता को समाप्त करना चाहा । इसकेलिए स्त्रियों को शिक्षा एवं प्रशिक्षण देने की ओर उन्होंने ज़ोर दिया । उदारवादियों ने स्त्री-पुरुष समानता एवं स्त्री-स्वातंत्र्य पर भी ज़ोर दिया । इनका विश्वास था कि सार्वजनिक जीवन में पुरुष के समान स्थान प्राप्त होने के बाद ही स्त्री पुरुष के साथ आत्मविश्वास से चल सकेगी । स्त्री-शिक्षा के अलावा स्त्रियों की वैयक्तिक एवं सामाजिक आज़ादी, संपत्ति में समान अधिकार, विवाह के नियमों में परिष्कार, वोट करने का हक आदि इनकी प्रमुख माँगें थीं । इन्होंने कभी भी पुरुष निराकरण नहीं किया । शायद इसीलिए इन के साथ स्त्रियों के हक केलिए लड़ने को पुरुष भी तैयार हुए । भारत में राजाराम मोहन राय, महर्षि कर्वे, ईश्वर चंद विद्यासागर आदि स्त्रियों के हक केलिए लड़नेवालों में से हैं ।

इनकी सब से बड़ी कमी यह थी की इन में पूंजीवादी-पितृसत्ता से लड़ने की हिम्मत नहीं थीं । स्त्री-पुरुष के बीच का आर्थिक संबंध, पुरुष प्रधान संस्कृति आदि पर उन्होंने अपना विचार व्यक्त नहीं किया । साथ ही साथ वर्ण एवं वर्ग के आधार पर स्त्री का जो शोषण हो रहा है, उस पर भी उन्होंने ज़ोर नहीं दिया । उदारवादियों ने लिंग पर आधारित नौकरी के विभाजन को अपने अध्ययन या विमर्श का विषय नहीं बनाया । उदारवादियों ने साहित्य और सामाजिक इतिहास का साक्ष्य लेकर उन पूर्वाग्रहों को उभरने की कोशिश की जिनके खिलाफ संधर्ष की ज़रूरत है ।

१.६.२. मार्क्सवादी नारीवाद (Marxian Feminism)

"नारी की स्थिति के संदर्भ में सोचते हुए मार्क्स के चिंतन को आधार बनाकर नारी के सर्वहारा व्यक्तित्व को अंकित करने वाला विचार मार्क्सवादी नारीवाद है ।"२२ मार्क्सवादी नारीवाद का आधार मार्क्सवाद ही है । आज़ादी, बराबरी, शोषण से मुक्ति, शोषकों के विरुद्ध प्रतिरोध आदि मार्क्सवादी सिद्धांत के प्रमुख तत्व हैं । मार्क्सवादी नारीवाद इसके साथ स्त्री-पक्ष चिंताओं को जोड़ता है । "ऐगल्स" का "परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति"

शीर्षक पुस्तक ही मार्क्सवादी नारीवाद का मूल स्रोत है । इसमें उन्होंने नारियों के संबंध में अपना विचार व्यक्त किया है । इनके अनुसार नारी की आर्थिक असमानता ही उनकी गुलामी का कारण है । मार्क्स एवं ऐगल्स के अलावा "फूटियर राबर्ट", "ओवेन", "विलियम थामस" आदि भी स्त्री सवालों को स्वतन्त्रता से विचार करनेवाले थे ।

मार्क्सवादी नारीवाद ने नारी की स्थिति को आर्थिक दृष्टिकोण से देखने की कोशिश की है । उनके अनुसार जब तक पूंजीवादी व्यवस्था अस्तित्व में है, तब तक नारी का शोषण होता रहेगा । नारी की आर्थिक स्वतन्त्रता के संदर्भ में प्रभा खेतान ने कहा है - "मुक्ति की पहली शर्त है कि स्त्री आर्थिक रूप से स्वावलंबी हो । यदि इस शर्त को कोई औरत पूरा कर ले तो वह अपनी जिंदगी की आधी से अधिक लड़ाई जीत लेती है ।"२३ आज स्त्री आर्थिक रूप में स्वावलंबी हो रही है । लेकिन सिर्फ आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने से उसकी शोषण की प्रक्रिया समाप्त नहीं होगी । पुरुष-प्रधान व्यवस्था में परिवर्तन होने की ज़रूरत है ।

मार्क्सवादी नारीवाद के अनुसार "उत्पादन के साधनों पर जिन थोड़े से लोगों का प्रभुत्व हुआ वे मर्द थे और कैपिटलिज़म तथा इंपेरियलिज़म के मेल शोवेनिज़म भी दरअसल उन्हीं की देन है ।"२४ जिस तरह पूंजीपति अतिरिक्त मूल्य के दोहन के ज़रिये मज़दूरों का शोषण करता है । उसी तरह पुरुष स्त्रियों के धरेलु श्रम का कुछ भी मूल्य न चुका कर उससे लाभान्वित होते हैं ।

मार्क्सवादी नारीवाद पुरुषों का नहीं पुरुष-वर्चस्व का विरोधी है । इसमें स्त्री की आज़ादी एवं हक के बारे में तभी चर्चा की जाती थी, जब उत्पादन प्रक्रिया एवं परिवार के बीच के संबंध का विश्लेषण होता था । स्त्री के द्वारा किये गये बिना वेतन के घरेलू काम एवं उस में झुलसी स्त्री की समस्याओं के बारे में चर्चा करने में या उसे सुलझाने केलिए मार्क्सवादी सिद्धांत पर्याप्त नहीं ठहरा । मार्क्सवाद के प्रति मन में इस प्रकार की शंका और शिकायत रखते हुए भी मार्क्सवादी नारीवादियों ने इसके प्रति अपना गहरा लगाव दिखाया है ।

१.६.३ उग्रवादी नारीवाद (Radical Feminism)

साठ के दशक के उत्तरार्द्ध में तथा सत्तर के दशक की शुरूआत में उदारवादी नारीवाद के खिलाफ प्रक्रिया के तौर पर रेडिकल नारीवाद का उदय हुआ । "इनका मानना

था कि लड़ाई पुरुष से नहीं पितृसत्तात्मक समाज से होनी चाहिए ।"२५ उग्रवादी स्त्रीवाद स्त्री-शोषण के मूल में पुरुष सत्ता को मानती है । क्योंकि हमारी सामाजिक व्यवस्था पुरुष प्रधान है, और इसके कानून भी पुरुषों ने अपने हितों को ध्यान में रखकर ही बनाया है ।

शादी, परिवार एवं लिंग के आधार पर नौकरी के बटवारे के पीछे पितृसत्ता के राजनैतिक तंत्र को रेडिकल नारीवाद ने पहचाना । "वे स्त्री के त्यागमयी मातृशक्ति के बिम्ब को सब से अधिक त्रासद मानती है तथा विवाह एवं मातृत्व के बंधनों से आज़ाद रहकर दूसरी तरह के जीवन जीने को प्रोत्साहित करती है "२६ । मातृत्व एवं परिवार स्त्री के पारंपरिक बंधनें ही हैं और यह पारंपरिक पारिवारिक ढाँचा स्त्री के शोषण का कारण बन जाता है ।

१९६० और १९७० के दशक के दौरान आधुनिक रेडिकल नारिवादी सिद्धांत के उदय में तीन पुस्तकों ने अहम भूमिका आदा की । "पहली थी "सिमोन द बुआ" की किताब "द सेकेड सेक्स (The Second Sex)" । उनका मानना था कि सेक्स को जेंडर से अलग समझना चाहिए ।"२७ नारी के उत्पीड़न का कारण जेंडर है । दूसरी किताब थी "कार्ल मिलेट" की "सेक्सुअल पालिटिक्स (Sexual Politics)" । इस में मिलेट ने पुरुषों के द्वारा यौन क्रीडाओं के वर्णन में समाहित सत्ता संबंधों का चित्रण किया । मिलेट की तरह बुआ भी इस बात पर ज़ोर देती है कि पितृसत्ता का निर्माण पुरुषों ने किया और स्त्रियों को इस तरह पाला पोसा जाता है कि वे उसे स्वाभाविक मान लेती हैं । " "द केस फॉर फेमिनिस्ट रेवोलूशान" शीर्षक अपनी किताब में "शूलमिथ फायरस्टोन" ने पितृसत्ता के इतिहास के विश्लेषण में ऐतिहासिक भौतिकवाद की मार्क्सवादी पद्धति का प्रयोग किया, जिसमें उन्होंने आर्थिक वर्ग संधर्ष और लिंग-वर्ग (sex-class) संधर्ष की समानताओं की तुलना की ।"२७ अर्थात् परिवार नामक संस्था एक आर्थिक आयोजन है, उसके नियमों का पालन स्त्री सिर्फ इसलिए करती है कि उसके बदले में उसे अपना संरक्षण प्राप्त होता है ।

शूलमिथ के अनुसार स्त्री-पुरुष के बीच विभाजन के मूल में लिंग संबंधी कारण है । लिंग संबंधी शारीरिक विशेषता के कारण उसे गर्भ धारणा करना पड़ता है, और बच्चों का देखभाल करना पड़ता है । उनके अनुसार इन सब से मुक्ति ही स्त्री की असली मुक्ति है । लिंग निरपेक्ष व्यवस्था ही स्त्री की स्थिति में परिवर्तन ला सकती है । इसलिए इस उत्पीड़न को समाप्त करने केलिए "फयरस्टोन" प्रजनन में स्त्री की भूमिका बिलकुल समाप्त कर देने का प्रस्ताव रखती है ।

रेडिकल नारीवाद "स्त्रीत्व" को महत्व पूर्ण चीज़ मानता है । उनके अनुसार स्त्री को ही स्त्रीत्व का प्रचार करना चाहिए । वे इसके प्रचार एवं विकास के विघ्न में जो भी आये - चाहे परिवार, समाज, आचार, या कपड़ा हो उन सब का निराकरण करने का आह्वान करते हैं । वे समलैंगिकता की स्वाभाविकता को भी स्वीकार करते हैं ।

सभी रेडिकल नारिवादी इस बात पर सहमत है कि लिंग पर आधारित जेंडर के फर्क हमारे जीवन के लगभग हर पहलू की संरचना करता है । जेंडर पर आधारित विभाजन प्रकृति के द्वारा नहीं बल्कि पितृसत्तात्मक समाज के द्वारा बनाया गया है । रेडिकल नारीवाद इस बात पर ज़ोर देता है कि स्त्रियों को जबरन मातृत्व और यौन गुलामी के पिंजड़े से आज़ाद होना चाहिए । इसकेलिए उन्हें अपने शरीर पर नियंत्रण कायम रखना है।

रेडिकल नारीवादियों ने स्त्री-पुरुष संबंध की असमानता एवं अनीति के कारणों को जैविक एवं मनोवैज्ञानिक अंतर की दृष्टि से ही देखने की कोशिश की है । इसके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वातावरण की ओर कभी ध्यान नहीं दिया । यह रेडिकल नारीवाद की कमी है ।

१.६.४ समाजवादी नारीवाद (Social Feminism)

स्त्री का शरीर, घरेलु काम के नाम पर किए जाने वाले शोषण, स्त्री-पुरुषों के संबंध की राजनीति, लैंगिकता आदि सब कुछ इसका विषय है । इसके विषय संबंधी यह विविधता एवं विस्तृति उसे आज नारीवादी सिद्धांतों से अलग एवं आकर्षक बनाता है । पारिवारिक जीवन, वैयक्तिक संबंध आदि पर आधारित स्त्रीपक्षवाद सामाजिक नारीवाद है । रेडिकल नारीवाद के सिद्धान्त को यह नकारता नहीं । साथ ही वामपंथी पुरुष नेतृत्व के साथ समता को भी कायम रखता है ।

समाजवादी नारीवाद समाज को बनाये रखने की प्रेरक शक्ति के रूप में पारिवारिक जीवन एवं घरेलू काम को देखता है ।

समाजवादी स्त्रियाँ पूंजीवादी व्यवस्था की विरोधी रही है । इसीलिए समाजवादी नारीवादी स्त्रियों ने पूंजीवादी पितृसत्ता को समझने और बदलने का प्रयास किया । "समाजवादी नारीवादियों ने इस बात को दर्शाया कि किस तरह पूंजीवादी पितृसत्ता में महिलाएँ समाज के पुनरुस्थान केलिए निहायत ज़रूरी काम करती हैं ।"२८ समाजवादी नारीवादियों के अनुसार समाज की प्रगति केलिए स्त्रियों का योगदान ज़रूरी है ।

भारत जैसे देश में ज़्यादातर महिलाएँ असंगठित क्षेत्र में काम करती है । जैसे कृषि मजदूर, घरेलु नौकर और निर्माण करनेवाला मजदूर के तौर पर ही वे काम करती हैं । समाजवादी नारीवादियों ने घरों में काम करनेवाली महिलाओं को संगठित करने का प्रयास किया ।

समाजवादी नारीवाद यह मानता है कि औरतों का कामकाजी होना ही उन्हें पुरुषों के समकक्ष बनाने में मदद करेगा । "मार्क्सवादी नारीवादियों के अनुसार स्त्रियों के शोषण का जिम्मेदार उत्पादन की संरचना (structure of production) है । रेडिकल नारीवादी इसका जिम्मेदार बच्चों के गलत सामाजीकरण को ठहराती है ।"२९ हरेक नारीवाद ने स्त्रियों के शोषण के अलग कारण बताया है । लेकिन पुरुष-वर्चस्ववादी समाज के ज़रिये नारी के शोषण के बारे में सभी सहमत है । दरअसल जो जहाँ परित्यक्ता है, स्त्री आंदोलन उससे जुडा जाता रहा है । १९६० में लिबरल फेमिनिस्ट परमाण्विक निश:स्त्रता आंदोलन से जुड़ी । सातवें, आठवें दशक में रेडिकल फेमनिस्ट ब्लेक मूवमेंट से जुड़ी और नवें दशक में दलित आंदोलन और पर्यावरण अभियानों से उनका संबंध रहा । अब वे भूमंडलीकरण के खिलाफ संघर्ष करती हुई दिखाई देती है ।

१.६.५ पर्यावरणीय नारीवाद (Eco-Feminism)

मानव एवं सभी जीव जंतुओं में एक ही प्राण रहता है । असंस्कृत एवं प्राकृत मानव प्रकृति के साथ मिलकर प्रकृति एवं संसार को आदर के साथ देखकर जीता था । लेकिन आधुनिक मानव धरती का शोषण करने लगा । प्रकृति के साथ मिलकर जीने की एक जीवन शैली बनाई जाने की अनिवार्यता एवं आवश्यकता है । यह बोध आज राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान एवं साहित्य में विद्यमान है । इक्को फेमिनिज़म के पीछे भी यही संकल्प रहता है । औद्योगिक आंदोलन के कारण मानव ने धरती पर इतना नाश किया था कि इस सर्वनाश ने मनुष्य को यह सोचने केलिए विवश किया है कि धरती को सहज अवस्था में वापस लाने केलिए क्या किया जाय? इसके उत्तर के रूप में इक्को फेमिनिज़म को देख सकते हैं ।

"1962 में "रेचल करसन" नामक औरत का "द साइलन्ड स्प्रिंग" नामक किताब प्रकाशित हुई । इस में उन्होंने रासायनिक खाद के अत्यधिक उपयोग के कारण निशब्द होते वसंत ऋतु के बारे में कहा ।"३० इस जानकारी ने मानव राशि के हृदय को झकझोर

डाला । इक्को फेमिनिज़म की सोच की शुरुआत यहाँ से शुरू होती है ।

इक्को फेमिनिज़म या पर्यावरणीय नारीवाद महिलाओं को प्रकृति, पर्यावरण और पृथ्वी के प्रति चिंताओं के साथ जोड़ता है । नारीवादियों के अनुसार प्रकृति एवं स्त्री का एक साथ शोषण होता जा रहा है। इसलिए नारीवाद को उन्होंने परिस्थिति के साथ जुड़े प्रकृति के शोषण को, स्त्री के साथ होनेवाले शोषण समझा है ।

१.६.६ अश्वेत नारीवाद (Black Feminism)

इनके अनुसार वर्ण व्यवस्था के अंत होने से ही स्त्री आज़ाद हो सकती है । त्वचा के रंग के अनुसार मनुष्य को बाँटना इन्हें अच्छा नहीं लगता । गोरे लोगों को छोड़कर बाकी सब इनके अनुसार काले हैं ।

इक्कीसवीं सदी में तीन और नारीवादी विचारधाराओं का उदय हुआ । १.इक्विटी फेमिनिज़म २.जेंडर फेमिनिज़म ३.वेव फेमिनिज़म । इसके अलावा पोस्ट मोडेन फेमिनिज़म भी है ।

नारीवाद महिला उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं को समझने की दिशा में प्रयासरत एक गतिशील एवं निरंतर परिवर्तित होनेवाली विचारधारा है । सभी में एक विचार समान है । वह है मौजूद स्त्री-पुरुष संबंधों को बदलने की कोशिश । अर्थात् सभी विचारधाराएँ घर, परिवार एवं समाज में स्त्रियों को स्वतंत्र एवं समान हक देने के पक्ष में है । नारीवाद एक ऐसे समतामूलक समाज की कल्पना करता है जिसमें स्त्री और पुरुष को समान स्थान हो ।

१.७ भारतीय संस्कृति में स्त्री की स्थिति

१.७.१ सभ्यता के आरंभ में

स्त्री और पुरुष दोनों जीवन-रथ के दो पहिये बताये गये हैं । जीवन रूपी गाड़ी सही ढंग से आगे चलने के लिए इन दोनों पहियों का साथ-साथ चलना ज़रूरी है । लेकिन हमारे देश में प्राचीन काल से ही इन दो पहियों में काफी अंतर दिखाया गया है ।

“भारत बहुजातीय तथा बहुसांस्कृतिक समाजों का देश हैं । भारतीय सभ्यता के आरंभ में हमारा समाज पितृसत्तात्मक नहीं था । सभ्यता के आरंभ में स्त्रियाँ स्वतंत्र,

सम्मानित और पुरुषों की हमसफर रही है ।"३१ प्राचीन युग स्वच्छंदता का युग था । लोग प्राकृतिक जीवन जीते थे । उस समय कोई नियम या नैतिकता नहीं थी । मानव पशुओं के समान स्वच्छंद यौन व्यवहार करता था । इस कारण पिता के बारे में कुछ कह पाना असंभव था, लेकिन माँ के बारे में निश्चय ही दावा किया जा सकता था । इसीलिए संतान की पहचान माँ से ही जुड़ी होती थी और वंश भी केवल माँ के नाम से ही चल सकता था ।

प्राचीन सभ्यता के आरंभ में हमारा समाज मातृसत्तात्मक था । जैसे-जैसे मानव समाज सभ्य होता गया स्त्रियाँ सत्ता और प्रतिष्ठा से पदच्युत होती गयी । पशुपालन और शिकार जीवन यापन का साधन हो गया । जब पशु धन के कारण उनकी शत्रुएँ भी होने लगी, तब श्रम का विभाजन हुआ । "महिलाएँ सूत कातने और कंबल बुनने में कुशल होती थी । श्रम-विभाजन में पुरुषों को शिकार का ज़िम्मा मिला ।"३२ यह विभाजन स्त्री-पुरुष के जैविक विशेषता के कारण ही हुआ ।

जब संपत्ति बढ़ गयी तब परिवार के अंदर पुरुष का दर्जा स्त्री की तुलना में ज़्यादा महत्वपूर्ण होता गया । पुरुष ने इन बदलती परिस्थितियों में अपनी सत्ता को दृढ़ बनाया । तब से पितृसत्ता का अस्तित्व समाज में स्थापित हुआ और आज तक ज़ारी है ।

मातृसत्ता का अस्तित्व समाप्त होने के बारे में प्राचीन इतिहासकार एवं समाजशास्त्री रजवाड़े ने अपने "भारतीय विश्वसंस्था का इतिहास" नामक पुस्तक में वर्णन किया है । उनके अनुसार मातृसत्ता का अस्तित्व यों ही पितृ सत्ता में नहीं परिणित हुआ है । बल्कि स्त्री-पुरुष संबंधों की तीन अवस्थाएँ हुई जिनका अंत पितृसत्तात्मक समाज में परिणित हुआ । वे कहते हैं - "सिर्फ पशु अवस्था में ही एक स्त्री और अनेक पुरुष वाला समाज होता था । ....समूह अवस्था में अनेक पुरुषों और अनेक स्त्रियों के बीच मिलाजुला लैंगिक संबंध होता था । इस समय स्त्रियों को जनि (जन्म देनेवाली) और पुरुष को जन (जन्म देनेवाला) कहा जाता था । आगे चलकर रुचि-अभिरुचि के अनुसार स्त्री-पुरुष की जोड़ियाँ बनने लगी और अंत में बहुप्रयत्नों के बाद एक पुरुष और एक स्त्री वाली व्यवस्था प्रचलित हुई ।'३३ इसके बाद स्त्री पर नियंत्रण के नियम बनाने शुरु हुए । यह स्त्रियों को अपने नियंत्रण में रखने की पुरुषों की चाल थी । क्यों कि स्त्री अपनी प्रजनन-क्षमता के कारण स्वयं एक संपत्ति हैं और उसे निजी संपत्ति बनाने केलिए पुरुष ने उसे

अपने नियंत्रण एवं अधिकार के अधीन रखा । धीरे-धीरे पत्नी के सतीत्व यानि बच्चों के पितृत्व की रक्षा केलिए स्त्री को पुरुष की निरंकुश सत्ता के अधीन बना दिया गया । इस तरह मातृसत्तात्मक समाज का पितृसत्तात्मक समाज में रूपांतर हुआ । इस स्थिति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी चालू रखने केलिए जो नियम बनाये गये उसे धर्म का नाम दिया गया ।

१.७.२ वैदिक युग में

वैदिक संहिताओं में स्त्री की महिमा और उसके तेजस्व को सर्वत्र स्थापित किया गया है । " वैदिक काल में गृहस्थाश्रम का केन्द्र स्त्री होती थी। स्त्री सामाजिक राजनैतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में विशिष्ट रूप से प्रतिष्ठित होती थी "३४ । इस काल में पुरुष-ऋषियों की तरह स्त्री-ऋषिकायेँ याग या यज्ञ में भाग लेती थी । इस काल के स्त्री के बारे में बताने केलिए हमेशा मैत्रेयी एवं गार्गी का ज़िक्र होता रहा है । लेकिन विचारणीय बात यह है कि प्रश्न पूछने के कारण गार्गी से भी कहा गया था कि इस तरह प्रश्न पूछना अच्छी बात नहीं है ।

वेदों में आत्मा को स्त्री-पुरुष के भेद से परे माना है । इस युग में "स्त्रियों को यज्ञ में भाग लेने का अधिकार था । स्त्रियाँ युद्ध क्षेत्र में भी जाती थी । यद्यपि ऐसी बातें ऋग्वेद में बतायी गयी है तथा भी पत्नी, बेटी, माँ, कन्या आदि रूप में स्त्री के बारे में वेदों में जो बातें कही गयी है वह बिलकुल पुरुषाधिष्टित व्यवस्था के अनुकूल ही हैं ।"३५ वैदिक युग में स्त्रियाँ स्वतंत्र थी । फिर भी पत्नी धर्म, कन्यात्व आदि बातों का ज़िक्र पुरुष के अनुकूल ही किया गया है ।

शादी के समय जिन मंत्रों को उच्चरित किया जाता है, वे सूर्या, सावित्री जैसे विदुषी द्वारा रचित है । वैदिक काल में स्त्री को सहचरी का पद प्राप्त था । इस युग में पर्दा प्रथा अस्तित्व में नहीं था । स्त्री को अपने जीवन साथी चुनने का अधिकार था । स्त्री शिक्षा प्राप्त कर सकती थी । लेकिन राजनैतिक क्षेत्र में उसका कोई स्थान नही था । "स्त्री अपने पति के साथ धार्मिक कृत्यों में एवं संस्कारों में सहभागी होती थी । पत्नी के सिवा कोई भी धार्मिक संस्कार या विधि पूरी नही होती थी ।"३६ इस तरह धार्मिक क्षेत्र में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान था ।

वैदिक काल में स्त्री को एक हद तक स्वतन्त्रता प्राप्त थी । सामाजिक एवं धार्मिक

क्षेत्र में उसे कई अधिकार प्रदान किये गये थे । लेकिन आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अधिकार प्राप्त नहीं था । वैदिक युग के अंत तक आते-आते समाज में स्त्रियों की सम्मानजनक स्थिति का ह्रास होने लगा ।

१.७.३. उत्तर वैदिक युग में

पौराणिक काल में स्त्री को शिक्षा से दूर रखा गया । "पुराण काल में स्त्री का विवाह योग्य आयु घट गई, बहु-पत्नी प्रथा बढ़ी । विधवा-विवाह पर प्रतिबंध लगाना आरंभ हुआ । विवाह प्रत्येक लड़की केलिए अनिवार्य माना गया । स्त्रियों का प्रमुख गुण व कर्तव्य पति सेवा और आज्ञा पालन हो गया ।"३७ इस काल में पर्दा प्रथा का आरंभ हुआ । पुत्र सन्तान के जन्म को महत्व दिया गया । जो स्त्री पुत्र को जन्म नहीं देती है, वह परित्यक्ता होने लगती थी । आधुनिक युग में भी स्थिति भिन्न नहीं है ।

स्त्री पर लगाम देने वाले कई नियम इस काल में अस्तित्व में आये जो मध्य युग तक आते-आते कठोर होते गये । उत्तर वैदिक काल, बौद्ध, पुराण, स्मृति, रामायण, और महाभारत काल से होती हुई मुगल काल तक आतेआते स्त्री दुर्गति की पराकाष्ठा तक पहुँच गई । इसकेलिए उस पर कई तरह की कुप्रथाएँ थोपी गई । बालविवाह की प्रथा प्रचलित होने के कारण नन्ही बच्चियों को बचपन से समझाया गया है कि पति भगवान होता है । यही स्थिति रामायण, महाभारत काल की स्त्रियों की भी थी । पति को देवता एवं पत्नी को उसकी दासी माना गया ।

वैदिक संस्कृति के अनुगामी के रूप में अर्थशास्त्र, मनुस्मृति एवं कामसूत्र आदि ग्रंथ आते हैं । मनुस्मृति ने पूर्ण रूप से स्त्री को अज्ञान के धोर अंधकार में धकेल दिया । "अर्थशास्त्र में कौड़िल्य ने स्त्री को विवाह के सबसे अच्छे व्यवहार माना है । उनकेलिए स्त्री सिर्फ राजनैतिक क्षेत्र में विजय प्राप्त करने केलिए उपयुक्त एक चीज़ है । उसे शासन में कोई हिस्सा नहीं है । लेकिन पुरुष के हाथों में शासन लाने केलिए एक उपकरण के रूप में उसे देखा गया या उसका उपयोग किया गया ।"३८ चाणक्य ने अपनी कूर्म बुद्धि से स्त्रियों को राज्य अधिकार प्राप्त करने का मोहरा बना दिया । इसकेलिए उसके सौन्दर्य एवं बुद्धि का भी उपयोग किया । लेकिन काम हो जाने के बाद उसे शासन से दरख्वास्त भी किया ।

काम सूत्र में भी स्त्री का स्थान दूसरा है । स्त्री वहाँ भी पुरुष की इच्छा के अनुसार ही नियंत्रित है । कामसूत्र में प्रमुख रूप से यह बताया गया है कि स्त्री को कैसे पुरुष की भोग वस्तु बनाया जाय ।

१.७.४ मध्यकाल में

मध्यकाल तक आते-आते स्त्री पूर्ण रूप से शिक्षा से वंचित रही । भारत पर मुसलमानों के आक्रमण के कारण उस पर कठिन प्रतिबंध लगाये गये । इस युग में बाल-विवाह, पर्दा-पद्धति, सती-प्रथा आदि सामाजिक अनाचारों का विकास हुआ । मध्यकाल के साहित्य में भी नारी को मोह माया तथा साधना में बाधक, भोग विलास की वस्तु माना है । इस काल के अंत में उसकी स्थिति को सुधारने की कोशिश की गयी । लेकिन इस प्रयास में काफी सफलता प्राप्त नहीं हुई ।

"ब्राह्मण ने हिन्दु धर्म की रक्षा, रक्त की शुद्धता और स्त्रियों के स्त्रीत्व को बनाये रखने केलिए महिलाओं के संबंध में नियमों को और भी अधिक कठोर बना दिया था । महिलाएँ पति की दासी और उपभोग करने की एक वस्तु मात्र बन कर रह गयी थी ।"३९ सवर्ण समाज ने स्त्री के साथ हमेशा अन्याय ही किया । वे स्त्री को उपभोग की वस्तु मानते थे । उन्होंने स्त्री को अपने कब्ज़े मे रखने की साजिश की । स्त्री को अपने नियंत्रण में रखने के नियम बनाये गये, ताकि वह हमेशा पुरुष की दासी बनकर रहें ।

संपत्ति के मामले में अवश्य मुगलकाल में महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार हुआ । पुत्र न होने पर पिता की संपत्ति का उत्तराधिकार कन्याओं को मिलने लगा और पति की मृत्यु होने पर उसकी संपत्ति पर विधवा का अधिकार होने लगा । लेकिन वह सिर्फ संपत्ति का उपभोग कर सकती थी, उसे बेच नहीं सकती थी । भक्ति आंदोलन का भी महिलाओं की सामाजिक-धार्मिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पडा था । तत्कालीन समाज में उनकी स्थिति सुधारने के कुछ प्रयास तो ज़रूर हुए हैं । लेकिन उनकी स्थिति लग भग वैसे ही रही । महिलाओं की सामाजिक स्थिति का पतन मुगलकाल से शुरू हुआ और ब्रिटिश शासन काल तक लगातार ज़ारी रहा ।

उन्नीसवीं सदी में स्त्रियों को शिक्षित कराने के महत्व पर सब से पहला सार्वजनिक प्रयास राजा राम मोहन राय द्वारा १८१५ में स्थापित आत्मीय सभा के द्वारा ही हुआ । लड़कियों केलिए स्कूल सब से पहले अंग्रेज़ तथा ईसाई मिशनरियों के द्वारा शुरू हुआ ।

उसके पहले लड़कियों की शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी । "मिशनरी स्कूलों द्वारा ईसाई धर्म फैलाने के खतरे से ड़रकर हिन्दु एवं ब्राह्मण कन्या पाठशालाएँ खोली गयी । स्त्रियों की शिक्षा का उल्लेख आमतौर से उच्च मध्य वर्ग द्वारा अपनी स्त्रियों को पाश्चात्य तौर तरीकों में ढ़लने की आवश्यकता के रूप में किया गया ।"४० उच्च मध्य वर्ग के भारतियों ने अपनी स्त्रियों को पाश्चात्य सभ्यता से परिचित कराने केलिए ही उन्हें शिक्षा पदान की थी । वे अपनी स्त्रियों को बड़े अफसरों के सामने पाश्चात्य रूप से प्रस्तुत कराना चाहते थे । पाश्चात्य संस्कृति के प्रति भारतीयों का आकर्षण तभी से शुरू हुआ ।

१८६० के दशक में समाज सुधार आंदोलन में अनेक भिन्न तत्व दिखाई पड़े । "ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने हिन्दु और इस्लाम दोनों धर्मो को भारत में स्त्रियों की अवनति केलिए ज़िम्मेदार ठहराया । उनके अनुसार भारत की स्त्रियों को निरक्षरता एवं अज्ञानता के इस कुंड से निकालने केलिए इन्हें धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत पर शिक्षित करना ज़रूरी है ।"४१ अर्थात् धर्म स्त्रियों को हमेशा अपने अधिकारों से दूर रखने की साजिश करता है । इसीलिए उन्होंने धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत पर ज़ोर दिया । उन्होंने स्त्री-पुरुष भेद-भाव के खिलाफ खड़े होकर समाज को समझाया कि समाज में स्त्रियों की दुर्दशा के मुख्य कारण उनकी अशिक्षा, बहुविवाह और बालविवाह प्रथा ही है । स्त्री को शिक्षा की ओर अग्रसर कर उसे आत्मनिर्भर बनाने के लिए तत्कालीन समाज सुधारकों ने सराहनीय कार्य किया ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती स्त्री-पुरुष समानता के समर्थक थे । उनके अनुसार समाज में नारी के सम्मान के बिना प्रगति असंभव है । उन्होंने स्त्रियों को वेदाध्यन की सुविधा प्रदान की ।

राजाराम मोहन राय ने सती प्रथा के विरोध एवं विधवा पुनर्विवाह को लेकर बहुत सारी कोशिशें की । बाद में विधवा पुनर्विवाह केलिए कानून बनाया गया । इस कानून ने विधवा की ज़िंदगी को न केवल उसके पहले पति की मृत्यु के साथ दूभर कर दिया बल्कि पुनर्विवाह के पश्चात् उसे उसके नये पति के ऊपर पूरी तरह निर्भर करा दिया ।

उन्नीसवीं सदी के अंत में अंग्रेज़ सिपाहियों द्वारा स्त्रियों पर किये गये अत्याचारों को लेकर भारतीयों के मन में असंतोष हुआ । १९०४ में आनी बैसेंट ने नारी शिक्षा को राष्ट्रीय ज़रूरत बताया । १९०५ में कलकत्ता में सम्पन्न भारतीय सम्मेलन में सरोजिनी नायडू ने स्त्रियों को शिक्षित करने की बात पर ज़ोर देकर कहा - "यह बात कल भी सत्य

थी, आज भी है और रहती दुनिया तक सत्य रहेगी कि पालना झुलानेवाले हाथ ही विश्व पर शासन करते हैं ।"४२ उन्हें पूरा विश्वास था कि स्त्रियों में इतनी शक्ति एवं काबिलियत है कि भविष्य में वे विश्व पर शासन कर सकती है । श्रीमती इंदिरा गाँधी एवं मार्गरट ताचर जैसे प्रसिद्ध महिलाओं ने यह कर भी दिखाया ।

१९३० तक आते-आते भारतीय स्वाधीनता संग्राम में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में भाग लेनेवाली स्त्रियों की संख्या बढ़ती गयी । एक ओर गाँधी जी के नेतृत्व में बड़े पैमाने पर स्त्रियाँ आज़ादी की लड़ाई में भाग ले रही थी तो दूसरी ओर बड़ी संख्या में लड़कियाँ क्रातिकारी दलों में शामिल हुई ।

जब १९४० के दशक में स्वाधीनता एवं भारत की आज़ादी की चर्चाएँ हुई, तब स्त्रियों का आंदोलन पूरी तरह से स्वाधीनता संग्राम में तब्दील हो गया । नारी मुक्ति को भारत की स्वाधीनता के साथ जोड़कर देखा गया । शायद ऐसा विश्वास था कि स्वाधीनता के साथ ही पुरुष एवं स्त्री के मध्य मौजूद असमानताएँ दूर हो जाएगी तथा स्वतंत्र भारत में सब कुछ ठीक होगा ।

१.७.५. आज़ादी के समय

स्त्री को एक नई दिशा देने में भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का हाथ रहा । "स्वतन्त्रता संग्राम ने युगों से सुषुप्त नारी के कानों में जागरण का संदेश फूँका ।"४३ इस जागरण के कारण वह अपनी दयनीय स्थिति को पहचान गयी । स्वतन्त्रता के तुरंत बाद महिलाओं केलिए किये गये वादों को पूरा करने के अनेक प्रयास किये गये । इसके अनुसार सब से पहले संविधान में स्त्रियों को समान अधिकार दिये जाने की घोषणा की गई । वोट करने का हक इस में से एक है, जो यों ही स्त्रियों को प्राप्त हुआ ।

स्वतन्त्र भारत में नारीवादियों में बिखराव आया । क्योंकि अब उन्हें अंग्रेज़ के समान शत्रु की पहचान नहीं थी । इस का कारण शायद यह था कि नारीवादियों ने कभी भी लिंग के आधार पर शत्रु की पहचान नहीं की थी । पच्चास एवं साठ के दशक में महिला आन्दोलनों में खामोशी रही । परंतु सत्तर एवं अस्सी के दशक में जो नारी आंदोलन शुरू हुआ वह उसके पहले के आन्दोलनों से अलग था । यह अपने समय के परिवर्तनकारी आंदोलन माना जाता है ।

१.७.६ आज़ादी के बाद

आज़ादी के बाद शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ । इसी कारण स्त्रियों ने जीवन को एक नये दृष्टिकोण से देखना शुरू किया । इस समय सब से पहले संविधान में स्त्रियों को समान अधिकार देने की घोषणा की गयी । भारत में स्त्रियों की स्थिति में काफी सुधार आया । स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा केलिए केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों ने विभिन्न समितियों का निर्माण किया । स्त्रियों से संबन्धित मामलों के अध्ययन एवं उनके प्रति किये गये भेद-भाव व हिंसा के कारण पता लगाने केलिए १९७१ एवं १९७२ में केन्द्रीय सरकार ने दो महत्व पूर्ण कमीशन नियुक्त किये ।

"१९७२ में इला भट्ट ने असंगठित क्षेत्र में कामकरनेवाली महिलाओं केलिए "सेल्फ एम्प्लोयड विमेन्स एसोसिएशन (सेवा)" की स्थापना की। भारत के नारीवादियों ने "सेवा" की आलोचना की और यही नहीं "सेवा" की अपेक्षा मुंबई के मूल्यवृद्धि विरोधी आंदोलन तथा गुजरात के नवनिर्माण आंदोलन को अधिक महत्व दिया ।"४४ १९७५ को अंतराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया । सत्तर के दशक में दहेज उत्पीड़न एवं बलात्कार की खबरें अखबारों में आने लगी । इन दोनों के विरुद्ध नारीवादियों ने अभियान चलाया ।

आठवें दशक के पूर्वार्द्ध में अनेक शहरों में महिला केन्द्रों की स्थापना की गई, जिनमें कानूनी सहायता, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा सलाहकार सेवाएँ उपलब्ध करायी गयी । इसी दशक के पूर्वार्द्ध में स्त्रियों के, परिवार के भीतर के संबंधों में विवाह, तलाक, संपत्ति एवं मुआवज़ा आदि से जुड़े कानूनों की जाँच करने की ज़रूरत महसूस हुई । क्योंकि भारत में धार्मिक एवं सामुदायिक आधार पर इसके अलग अलग कानून रहते हैं ।

"अस्सी के दशक में भारतीय नारी कई टुकड़ों में विभक्त हो गयी। भारतीय स्त्रियाँ एक दूसरे को मुसलमान, ईसाई, हिन्दु कहकर संबोधित करने लगी ।"४५ इसके कारण इनमें एकता की कमी दिखने लगी । यही कारण है कि वे अपने हक के बारे में सोच न सके ।

"आठवें दशक के मध्य में मुसलमान धार्मिक नेताओं के दबाव में आकर सरकार ने ऐसा कानून पास कर दिया जिसके तहत् तलाक शुदा बेसहारा मुस्लिम औरतों को अपने पतियों से गुज़ारा भत्ता माँगने के अधिकार से वंचित कर दिया गया । और वह था तलाक शुदा मुस्लिम औरतों को धारा १२५ की परिधि से बाहर करना ।"४६ यह औरत समाज पर

सरकार के द्वारा किया गया एक बहुत बड़ा प्रहार था । संरक्षण करने वाले ही शोषक बन गये ।

१.७.७ समकालीन युग में

शिक्षा के कारण नारी ने आज उच्च स्तर का सम्मान प्राप्त कर लिया है । आज वह छोटे-बड़े कार्यालयों में विभिन्न पदों पर कार्यरत है । ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ स्त्री कार्यरत न हो । आधुनिक शिक्षा ने उसे आर्थिक स्वतन्त्रता एवं आर्थिक सुरक्षा प्रदान की है । वह पुरुष के समान घर,परिवार एवं समाज में अपना दायित्व निभा रही है । एक नई अस्मिता की खोज उस में दिखाई देने लगी है । वह परंपरागत रूढ़ियों को एक हद तक तोड़ने में सफल भी हुई है । लेकिन उसकी समस्याओं का समाधान अब तक नहीं हुआ है । कामकाजी होने के कारण उसकी समस्याएँ बढ़ गयी है । वह घर एवं दफ्तर में दायित्वों के बोझ से परेशान है । "मानसिक शोषण इक्कीसवीं सदी की स्त्री की एक नियति है ।"४७ समाज परंपरा एवं नैतिक मूल्यों की दुहाई देकर उसका शोषण करने लगा । वह आधुनिक एवं पारंपरिक जीवन मूल्यों के बीच संधर्षरत रहती है । क्योंकि वह तो परंपरा को छोड़ नहीं सकती है । साथ ही उसके मन में आधुनिकता के प्रति लगाव भी है ।

आज स्त्री अपने पति में देवत्व नहीं पुरुषत्व देखना चाहती है । वह पति को देव नहीं पुरुष के रूप में ग्रहण करना चाहती है । उसे एक हमसफर की ज़रूरत है, जो उसे ज़िंदगी के सफर में उसका साथ दे सके । आज की स्त्री राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में स्वतंत्र है, लेकिन नैतिक क्षेत्र में स्वतंत्र नहीं है । वह उस में परिवर्तन लाना चाहती है। लेकिन हमारा समाज जितना भी प्रगति क्यों न करें स्त्री को एक अलग नैतिक आवरण में देखना पसंद करता है । हाल ही में केरल में एक घटना हुई । "केरल के एरनाकुलम जिले में तसनी बानु नामक आई.टी. में काम करनेवाली स्त्री रात को अपने पुरुष दोस्त के साथ नौकरी करनेवाले जगह जा रही थी कि नैतिकता बोध से अंधे लोगों ने उन्हें खूब पीटा ।"४८ कारण यह था कि वह स्त्री रात में एक पराये मर्द के साथ सफर कर रही थी । हमारा पितृसत्तात्मक समाज स्त्री का किसी मर्द के साथ सफर करना गलत मानता है । वह हमेशा स्त्री को दबाकर रखना चाहता है । हमारे समाज की नैतिक दृष्टि औरत केलिए कुछ अलग ही है ।

आधुनिक युग में नर्स, सैल्स गेलस, जेरनालिस्ट, पुलिस एवं आई.टी. के क्षेत्र में कामकरनेवाली स्त्रियों को रात में भी काम करना पड़ता है । बदलती हुई परिस्थितियों में नैतिकता के संबंध में एक नये दृष्टिकोण का या एक से अधिक दृष्टिकोण का होना ज़रूरी है । "भारतीय समाज ऐसी विशेष स्थितियों से गुज़र रहा है जहां पुराने मूल्य पूर्ण रूप से नकारे जा रहे हैं । और नये मूल्य पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित नहीं हो पाये हैं । परिवर्तित हो रहे नये मूल्यों के बीच नैतिकता टेढ़े-मेढ़े रस्तों से गुज़र रही है ।"४९ स्त्री नये युग के नवीन परिस्थिति के अनुकूल अपने आप को फिट करने की कोशिश कर रही है । इसकेलिए सामाजिक मूल्यों में बदलाव आना ज़रूरी है । वह समाज में पुरुष के साथ बराबरी का स्थान माँग रही है । तब पुरुष के समान नैतिक मूल्य की माँग भी स्वाभाविक है । लेकिन यह भी ध्यान देने की बात है कि इस कोशिश में समाज की नीव न हिल पाये और नैतिक अराजकता का जन्म न हो पाये ।

१.८ धर्म में नारी

समाज में स्त्री का स्थान निर्णय करने में धर्म का अपना स्थान है । इसलिए नारी अस्मिता को बनाने एवं बिगड़ने के कारक के रूप में धर्म का बहुत बड़ा महत्व है । दुनिया के सभी देशों में सभ्यता का विकास लगभग एक जैसा ही रहा है । इसीलिए दुनिया के सभी धर्मों में स्त्रियों एवं गुलामों केलिए एक जैसा ही नियम बनाया गया ।

१.८.१ हिन्दु धर्म में नारी

वैदिक संस्कृति को आज के हिन्दु धर्म का उद्भव मानते हैं । यह वर्ण सिद्धांत पर आधारित है । इसका कोई आचार्य, आचार-विचार और धर्म ग्रंथ नहीं । यही इसकी खासियत है । "अन्य धर्म ग्रंथों से तुलना करके कह सकते हैं कि हिन्दु धर्म ही नहीं है । लेकिन आज इसे धर्म का स्तर मिल रहा है ।"५० वास्तव में यह एक जीवन चर्या है । लेकिन आजकल इसे धर्म का नाम दिया गया है । अपने फायदे केलिए इसका उपयोग भी आजकल हो रहा है ।

बीसवीं सदी में ही हिन्दु धर्म संधटित धर्म का रूप धारण करने लगा । वैदिक काल से लेकर हिन्दु धर्म के आचार, विचार एवं अनुष्ठान एक जैसा नहीं है । उसी तरह समाज में स्त्री की हालत भी बदलती गयी । दक्षिण भारत के भक्ति आंदोलन से संबन्धित

देवदासी संप्रदाय हिन्दु धर्म के पितृसत्तात्मक दृष्टि की उपज है । ब्राह्मण्य के प्रभुत्व के कारण बाद में देवदासी वेश्या बन गयी ।

विवाह के बाद जब हिन्दु स्त्री पराये अजनबी घर में जाती है तब वहाँ से उसकी अर्थी निकालने का विधान है । हिन्दु धर्म में विधवाओं की हालत बहुत बुरी थी । इस धर्म में पौराणिक काल से ही सती प्रथा प्रचलित थी । हिन्दु धर्म ने स्त्री को देवी का स्तर देकर उसका शोषण ही किया है ।

"हिन्दु समाज में जब संस्कार व्यवस्था अस्तित्व में आयी, तब महिलाओं को विवाह के अतिरिक्त अन्य किसी धार्मिक संस्कार में वेद-मंत्रों का उच्चारण करने की मनाही थी । उनका उपनयन संस्कार नहीं होता था । इसलिए न तो वह शिक्षा प्राप्त कर सकती थी और न ही वेदों का अध्ययन कर सकती थी ।"५१ यह पुरुष के द्वारा अपने फायदे के लिए स्त्री को अपने अधीन में रखने की साजिश थी । पहले ऐसा नहीं था । स्त्रियाँ वेद का अध्ययन कर सकती थी । उनका उपनयन संस्कार भी होता था । लेकिन न जाने कब यह सब बदलता गया ।

१.८.२ ईसाई धर्म में नारी

ईसाई धर्म में यह माना गया है कि पुरुष की पसेरी से स्त्री की सृष्टि हुई है । इसलिए ईसाई धर्म में हमेशा वह दूसरे स्थान की हकसार बनी । ईसा के कई शताब्दी पहले "पुराने नियम(old testimonial)" में स्त्री की हालत उतनी गिरी हुई नहीं थी ।

ईसा के प्रमुख शिष्य संत पॉल के अनुसार "पुरुष औरत केलिए नहीं बना है, औरत बनी है पुरुष केलिए । जैसे चर्च का स्वामी येशु है, वैसे ही स्त्री का स्वामी पुरुष है ।"५२ इस प्रकार कहकर उन्होंने पुरुष पर स्त्री का स्वामीत्व को स्थापित किया ।

उसी तरह संत थॉमस ने भी औरत की नियति के बारे में इस प्रकार कहा है - "यह औरत की नियति है कि वह पुरुष की अधीनता में रहे, इसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता । उसकी प्रभु से कोई सत्ता नहीं मिली ।"५३ इस प्रकार औरत को यह एहसास दिलाया गया है कि उसे हमेशा पुरुष के अधीन में ही रहना चाहिए । उसकी ज़िंदगी पुरुष के चरणों पर ही है । सच तो यह है कि उसकी आज़ादी से पुरुष सत्तात्मक समाज हमेशा डरता रहा, ताकि पुरुष केलिए वह खतरा न बन जाय । सभी धर्मों ने पुरुष सत्तात्मक समाज के इस विचार को बढ़ावा देने की कोशिश ही की है ।

१.८.३ इस्लाम धर्म में नारी

कुरान में भी पुरुष की पसेरी से "पुरुष केलिए" स्त्री की सृष्टि बतायी गयी है । और इस तरह जन्म लेने के कारण समाज में हमेशा उसका स्थान दूसरा रहा । इस्लाम धर्म पुरुष को एक से ज़्यादा स्त्री के साथ शादी करने की अनुमती देता है । लेकिन नासिरा शर्मा "औरत और औरत" पुस्तक में कहती है कि मुसलमान मर्द केलिए दूसरा और तीसरा विवाह उतना आसान नहीं है । उसकेलिए बहुत सारे शर्तें हैं । यदि पत्नी बीमार रहती है, बांझ है या उसके साथ नहीं रहती है तभी वह पहली पत्नी की मर्ज़ी से दूसरा विवाह कर सकता है । यदि वह पत्नी को तलाक देता है तो जिस घर में वह रहती है वहाँ से उसे जाने की ज़रूरत नहीं है, पति को घर छोड़ना पड़ता है । यही इस्लामिक कानून शरीयत् की हिदायत् है । लेकिन व्यावहारिक रूप में ऐसा होता नहीं है।

स्त्री पर पर्दा थोपने से पहले धार्मिक मामलों में एवं प्रशासन कार्यों में स्त्री एवं पुरुष को समान अधिकार प्राप्त था । "कुरान के चौथे सर्ग में स्त्रियों के बारे में निर्देश देनेवाले १७६ सूक्त है । उसमे पुरुष पक्षपात प्रबल रूप में देख सकते हैं ।"५४ बच्चों के हक से लेकर पिता की संपति में स्त्री के हिस्से तक के कानून पुरुष के हित को नज़र में रखकर ही बनाया गया है । बहुत सारे ऐसे कानून भी है जो स्त्री के हक एवं हित केलिए है । लेकिन पंडितों ने उनकी दुर्व्याख्या करके इससे भी स्त्रियों को वंचित रखा । उदाहरण केलिए पुरुष केलिए तलाक की व्यवस्था के समान स्त्रियों केलिए "फसख" की व्यवस्था भी है । लेकिन कही भी कभी भी स्त्री को इसका फायदा नहीं मिला है ।

इराक में सद्दाम हुसैन ने इस्लाम धर्म में स्त्रियों के पक्ष में होनेवाले कानूनों को अपने देश के संविधान में रखा । उदाहरण केलिए कुरान में व्यवस्था है कि तलाक के बाद स्त्री को घर छोड़कर जाने की ज़रूरत नहीं है । मर्द को घर छोड़ना पड़ता है और घर से जाते वक्त वह घर की कोई भी चीज़ लेकर नहीं जा सकेगा । यह उन्होंने इराक में कानून बनाया । तलाक के बाद बच्चे फैसला खुद लेने लायक होने तक माँ के साथ रहेंगे । दूसरा नियम है कि जहाँ पति का तबादला होगा, उसी शहर में पत्नी का भी तबादला होगा । तीसरा कानून यह है कि जिन औरतों के छोटे बच्चे हैं, वे आधे दिन नौकरी करके पूरा वेतन पा सकेगी ।

इस्लाम धर्म में स्त्री को मज़जिद जाने की अनुमति नहीं है । लेकिन आजकल स्त्रियों केलिए मज़जिद के पास एक छोटा सा कमरा बनाया जाता है, जहाँ वह प्रार्थना कर

सकती है । अगर किसी भी मामले में स्त्री ने गवाही दी है तो उस का मूल्य पुरुष के गवाही का आधा ही होगा । पिता की संपत्ति में बेटी का हिस्सा बेटे के हिस्से का आधा ही होगा ।

यह सच है कि उच्च वर्ग एवं पढे-लिखे मुसलमान परिवारों में स्त्रियों की हालत काफी बहत्तर है । लेकिन मध्यवर्ग की स्त्रियों केलिए समाज, मर्द और नौकरी ये सब परेशानी की बातें हैं । जो निम्न वर्ग की मुसलमान स्त्रियाँ हैं, उनकी हालत बहुत बुरी है । उन्हें न धर्म का पता है, न कानून का और न अपने हक का ।

मुसलमान पुरुषों केलिए आज भी स्त्री भोग की वस्तु है । इस्लाम धर्म में ही नहीं सभी धर्मों में पुरुष-वर्चस्व का ही प्रमुखता है ।

१.८.४ बौद्ध धर्म में

बौद्ध काल में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार किया गया था । बौद्ध धर्म ग्रंथों में ब्रहंवादिनी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है । बौद्ध भिक्षुणियों का स्वतंत्र व्यक्तित्व विकास बौद्ध काल की नारी स्वतन्त्रता का झलक प्रस्तुत करता है । लेकिन भिक्षु संस्थाओं में उनका स्थान गौण ही रहा ।

बौद्ध धर्म के आरंभिक काल में स्त्री को संघ में प्रवेश नहीं दिया गया था । इस युग में महात्मा बुद्ध भी नारी को संघ में दीक्षित करने के पक्ष में नहीं थे । बुद्ध के अनुसार "नारी के प्रवेश से संघ की आयु क्षीण हो जाएगी, वह संघ सहस्र वर्ष जीने के बदले पाँच सौ वर्ष भी नहीं जिएगा ।"५५ आगे चलकर उसकी स्थिति में सुधार हुआ । और इस तरह उनका संघ बना जिसे भिक्षुणी संघ कहा गया । इस संघ के नियम भिक्षुओं के जैसे ही थे । लेकिन भिक्षुणी संघ में प्रवेश पाने केलिए जो नियम है, उससे पता चलता है कि भिक्षुणियों का दर्जा भिक्षुओं से नीचा ही था ।

१.८.५ जैन धर्म में

जैन धर्म के दो विभाग थे - शेतांबर और दिगंबर । इस में से दिगंबरों का विश्वास था कि पुरुष के रूप में पुनर्जन्म लेने के बाद ही स्त्री को पूर्णता प्राप्त होती है । दोनों के अनुसार पुरुष ही स्त्री से बहत्तर सन्यासी बन सकता है । क्योंकि जैन धर्म ग्रंथ के कुछ

अध्याय का अध्ययन स्त्रियों केलिए निषिद्ध था । तीन वर्ष तक जैन धर्म का अध्ययन करनेवाला सन्यासी तीस वर्ष अध्ययन करनेवाली सन्यासिनी का गुरु बन सकता था । अर्थात् उनका विश्वास था कि तीस वर्ष का जो अध्ययन स्त्री ने किया है, उससे ज़्यादा ज्ञान तीन वर्ष के अध्ययन से पुरुष प्राप्त कर सकता था ।

"ओशो" ने अपने किताब "स्त्री विमोचनतिन् ओरु नवदशनम्" में बताया है कि जैनों का विश्वास था - "स्त्री का शरीर धारण करने वाला मुक्ति का हकदार नहीं है । पुरुष ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है ।"५६ जैन धर्म में भी स्त्री को दूसरा स्थान दिया गया है । उनके अनुसार मोक्ष प्राप्ति केलिए स्त्री को पुरुष के रूप में जन्म लेने की ज़रूरत है ।

१.९ भारतीय साहित्य में नारीवाद

नारीवाद की प्रणेता वर्जिना वुल्फ के लेखन काल (१९१५-१९४०) के दौरान भारत में नारी जागरण की घटना हो चुकी थी । भारत में १९ वीं सदी के नवजागरन काल के दौरान नारी विमर्श के केंद्र में मध्यवर्गीय स्त्री थी । रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज और प्रार्थना समाज जैसे संस्थाओं ने सती प्रथा का विरोध एवं विधवा-विवाह का प्रसार किया । राममोहन राय से प्रभावित होकर रवीन्द्रनाथ टेगोर ने "स्त्री का पत्र", "पहला नंबर", "दृष्टिदान", "सभा" जैसी कहानियाँ लिखी ।

मृदुला गर्ग " रबीन्द्र नाथ टेगोर" के "स्त्री का पत्र" कहानी को हिन्दी की ही नहीं पूरे भारतीय साहित्य की अमूल्य फेमिनिस्ट कहानी मानती है । उनके अनुसार "वह(कहानी) उस समय लिखी गयी थी, जब पश्चिम में भी कथा साहित्य में नारी चेतना का प्रवेश नहीं हुआ था ।"५७ इस कहानी में एक जमींदार की पत्नी पति से इसलिए दूर रहने चली जाती है कि घर में पलनेवाली गरीब रिश्तेदार लड़की से उसका निर्मम आचरण उसे ग्राह्य नहीं है । उस लड़की को बेटी बनाकर वह साथ ले जाती है । निहायत, गैर-नुमेषी ढंग से वह यह सब पति को लिखे पत्र में जतलाती है । यह विद्रोह का उत्कर्ष है और नारी चेतना का ज्वलंत उदाहरण भी ।

उन्नीसवीं सदी में "पंडिता रमाबाई" और "ताराबाई शिंदे" पितृसत्ता की तीखी आलोचना प्रस्तुत करती है । ताराबाई के अनुसार "जैसे मनु ने पुरुष के जीवन की चार अवस्थाएँ बतायी हैं - ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास, उसी तरह उन्होंने स्त्री के जीवन की चार अवस्थाएँ बतायी है - कुमारी, पत्नी, माँ और विधवा ।"५८ इस तरह

उन्होंने स्त्री-पुरुष की तुलना करते हुए दिखाया है कि स्त्रियों केलिए बनाये गये नियम और कायदे कितने कठोर हैं । इस तरह की आलोचना उस ज़माने में एक विद्रोह ही था । १८८२ में "ताराबाई शिंदे" द्वारा लिखित एवं 'पूना' से प्रकाशित पुस्तक "स्त्री पुरुष तुलना" तो पितृसत्ता की ज़बरदस्त आलोचना है । "इस में स्त्री तथा पुरुष की तुलना करते हुए कहा गया कि धोखेबाज़ी, मक्कारी, संदिग्ध चरित्र एवं असहिष्णुता के अवगुण जो स्त्रियों में माने जाते हैं, वे समान रूप में पुरुषों में भी मौजूद होते हैं ।"५९

"रमाबाई" पहली महिल प्रचारिका थी जिहोंने महिलाओं के हित केलिए काम किया । लेकिन सुधारवादियों द्वारा उन्हें काफी प्रोत्साहन नहीं मिला । शायद इसीलिए वे धर्म परिवर्तन करके ईसाई बन गयी ।

उन्नीसवीं सदी के अंत में निरूपमा देवी एवं अनुपमा देवी जैसे उपन्यास लेखिकाओं ने बंगाली साहित्य में अपनी छाप छोड़ दी । लेकिन उनके कृतित्व को छोटा तथा मात्र मनोरंजक कहकर उसकी उपेक्षा भी की गयी थी ।

"महाराष्ट्र की पहली महिला उपन्यासकार "काशीबाई कांतिकर" ने १८९० के दशक में लेखन प्रारंभ किया । ठीक उसी समय महाराष्ट्र की पहली महिला डाक्टर "आनंदी बाई जोशी" ने अपनी शिक्षा पूरी की ।"६० दोनों महिलाएँ सहेलियाँ थी । उस जमाने में जूता पहनने एवं छाता लेकर बाहर जाने का अधिकार सिर्फ पुरुषों को ही था । इसलिए जब वे दोनों जूता पहनकर एवं छाता लेकर बाहर निकली तो उनपर पत्थर बरसाये गये । क्योंकि पुरुष सत्तात्मक समाज के अनुसार उन्होंने पुरुषों को अपमानित किया है ।

१.१० हिन्दी साहित्य में नारीवाद

सभी भाषाओं के साहित्य में समय समय पर हो रहे मौलिक विचारधाराओं का प्रभाव पड़ता है । उसमें स्त्रीवादी लेखन भी है । स्त्रीवादी लेखन की परंपरा को देखने केलिए स्त्री को केन्द्र में रख कर स्त्री एवं पुरुष लेखकों ने जिस साहित्य का निर्माण किया है, उसे देखना ज़रूरी है । हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि किसी न किसी रूप में नारी को यहाँ चित्रित किया है ।

आदिकाल से लेकर आज तक काव्य के क्षेत्र में नारी चित्रण हुआ है । "आदिकालीन हिन्दी काव्य में एक ओर सिद्ध एवं नाथ पंथियों द्वारा नारी को माया का पर्याय बताकर

निंदित किया गया, तो दुसरी ओर रासोकार चारण कवियों ने उसकी कमनीयता एवं रूपसज्जा का मुग्धकारी वर्णन करके उस विलासिता की चरम सीमातक पहुँच दिया था ।"६१ आदिकाल में नारी को भोग वस्तु के रूप में चित्रित किया गया । वहाँ उसके सौन्दर्य का चित्रण खूब हुआ है । इन सब में नारी को पुरुष के दृष्टिकोण से देखने की कोशिश की है ।

भक्तिकाल में भी कबीर जैसे संतों ने उसे मोहमाया के रूप में चित्रित किया । भक्तिकाल में मीराबाई का अपना अलग दृष्टिकोण है । उनके काव्य में सामंती समाज व्यवस्था के विरोध का विद्रोह मुखरित है ।

रीतिकाल में भी सामंती परिवेश के कारण नारी को भोग वस्तु बनाया गया । और इसी कारण रीतिकालीन साहित्य में नारी को श्रृंगार की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में चित्रित किया है । इस काल में नायिका भेद, छन्द, अलंकार से संबन्धित बहुत किताबें लिखी गयीं । लेकिन इन सब में नारी का श्रृंगार रूप ही उभर कर आया ।

भारतेन्दु हरिश्चद्र से लेकर आगे आनेवाले कई कहानीकार, नाटककार, उपन्यासकर, तथा कवियों ने अपनी रचनाओं में नारी जीवन को अंकित किया है । डॉ. वैशाली देशपांडे के अनुसार "१९७५ तक नारी को केंद्र में रखकर जिन समस्याओं की चर्चा की गयी है, तथा उनसे मुक्ति के प्रयास होते हैं, उनके पीछे स्त्रीवादी विचारधारा की कोई वैचारिक पृष्ठभूमि प्राप्त नहीं है ।"६२

आधुनिक युग में स्त्री संबन्धित सुधारवादी दृष्टिकोण का प्रचलन है । भारतेन्दु युगीन काव्य में विभिन्न आन्दोलनों के कारण नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, विधवा-विवाह आदि इन काव्यों का विषय रहा । द्विवेदी युग में भी सुधारवादी दृष्टिकोण से नारी समस्या को चित्रित किया है । आर्य समाज से संबन्धित कवियों ने विधवा-विवाह, बाल-विवाह, अनमेल विवाह आदि को अपने काव्य का विषय बनाया ।

"राष्ट्रवादी काव्य धारा के अंतर्गत सुभद्राकुमारी चौहान का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है । इनके काव्य में स्त्रीवादी चेतना के स्वर प्राप्त होता है ।"६३ उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी अस्मिता का चित्रण बखूबी किया है । उनकी "झाँसी की रानी" शीर्षक एक कविता ही काफी है, जो यह बताती है कि नारी किस तरह अपने सामर्थ्य को

राष्ट्र के हित केलिए उपयोग करती है । छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा ने अपने काव्य के माध्यम से नारी जीवन की वेदना की अभिव्यक्ति की है ।

१.१०.१ हिन्दी कहानी में नारीवाद

यद्यपि कथा लेखन की शुरुआत देर से हुई, फिर भी कविता की अपेक्षा कथा साहित्य में स्त्री चेतना की व्यापकता मिलती है । आरंभिक कालखंड के कथा साहित्य में पुरुष कथाकारों के साथ-साथ कई महिला कहानीकार के नाम भी प्राप्त होते हैं । जिस तरह हिन्दी कहानी के इतिहास को प्रेमचंद पूर्व युग, प्रेमचंद युग, एवं प्रेमचंदोत्तर युग में विभाजित करते हैं, उसी तरह हिन्दी कहानी में नारिचेतना की चर्चा भी करते हैं ।

१.१०.१.१ प्रेमचंद पूर्व युग में

आधुनिक युग के कहानी विधा का स्वरूप बहुत पुराना नही है । उसकी शुरुआत उन्नीसवीं सदी में पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव एवं भारतीय संस्कृति की सामाजिक परिस्थितियों के कारण ही हुआ है । कथा-सरित् सागर, पंचतंत्र, हितोपदेश आदि में जितनी कथाएँ हैं, उनका उद्देश्य ज़्यादातर उपदेशात्मक ही रहा । उन्नीसवीं सदी के बाद ही कहानी-विधा सामाजिक यथार्थ की ओर मुड़ी ।

प्रेमचंद पूर्व युग की कहानियाँ कथा तत्व एवं घटना तत्व पर आधारित थी । इस युग की कहानियों में सामान्य जीवन की अभिव्यक्ति कम ही होती थी । इस युग की कहानियों में नारी के विशिष्ट रूप का ही चित्रण हुआ है ।

“इंशा अल्लाह खां” की “रानी केतकी की कहानी”, “किशोरिलाल गोस्वामी” की “इन्दुमति” आदि के नारी पात्र सामान्य जीवन की समस्याओं से संबन्धित नहीं है । “इन्दुमति” की नायिका के व्यक्तित्व का विकास ऐसे परिवेश में होता है, जहाँ उसने अपने पिता के अतिरिक्त किसी ओर पुरुष को नहीं देखा । “बंग महिला” की “दुलाईवाली” की नारी जीवन के सामाजिक यथार्थ का चित्रण तो करती है, लेकिन हल्के से । “दुलाईवाली” कहानी की पत्नी भी अपनी इच्छाओं को दबाकर पति के इच्छानुसार चलती है ।

द्विवेदी युग से ही हिन्दी कथाकारों ने स्त्री की समस्याओं पर सहानुभूति पूर्वक विचार करना शुरू किया था । लेकिन उनका दृष्टिकोण आदर्शवादी था । स्त्री को लेकर

दया एवं सहानुभूति उनका मूल भाव था । इस समय की नारी में विद्रोह की भावना नहीं थी । वह न तो अपने अस्तित्व को पहचानती थी, न अपनी अस्मिता को ।

छायावादी प्रभाव के कारण छायावादी युग के कथाकारों ने उनके आदर्शवादी चश्मे को हटा कर स्त्रियों को रोमांटिक चश्मे से देखना शुरू किया । “स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप संबंध, अर्थ, विचार एवं पर्यावरण के आधार पर मिलते हैं ।”६४ इन में नारी के विविध रूप तो अवश्य मिलते हैं, लेकिन इस में नारी अपने वास्तविक रूप एवं सामाजिक संदर्भों में चित्रित नहीं होती ।

१.१०.१.२ प्रेमचंद युग में

प्रेमचंद युग तक आते-आते भारतीय समाज में नारी जागरण, नारी सुधार आदि मुख्य विषय बनने लगी । इस युग में कहानी के तथ्य और शिल्प में बदलाव आया । “इस युग की कहानियों की नारी, आदर्श, मूल्य, मर्यादा, त्याग, क्षमा, सहानुभूति आदि गुणों से युक्त चित्रित हुई । कहानी सामाजिक यथार्थ से किसी सिद्धान्त या आदर्श विचारधारा के माध्यम से ही जुड़ी थी । इसलिए नारी के विविध रूप - कन्या, पत्नी, माँ, बहन, विधवा, प्रेमिका, वेश्या आदि कहानीकार की दृष्टि के माध्यम से ही उभरे हैं ।”६५

इस युग में जयशंकर प्रसाद जी की कहानियों में स्त्री की दुर्गा छवि का चित्रण हुआ है । उनकी नायिकाएँ प्रतिशोध का दायित्व अपने कन्धों पर लेने वाली हैं । यही नहीं वे शौर्य एवं कुलमर्यादा को माननेवाली भी हैं । उनके कुछ नारीपात्र परंपरागत अवमूलयों की मुद्रा में हैं, तो कुछ अपने अधिकारों केलिए संघर्षरत हैं । “प्रसाद कृत “व्रतभंग” की राधा धार्मिक अंधविश्वास और पुरुष की निरंकुशता के सामने सिर नहीं झुकाती । जब उसके ससुर उसे घर से निकाल देने का आदेश देता है, तब वह गर्व से सिर उठाकर उसका विरोध करती है ।”६६ लेकिन उनकी सभी नायिकाएँ ऐसी नहीं हैं । उनकी “पुरस्कार”, “ममता”, “आकाशदीप” आदि कहानियों में नारी का भावुक रूप चित्रित है । उनकी नायिकाएँ धीर, वीर भी है, साथ में भावुक भी । परंपरागत रूढ़ियों को तोड़ने की हिम्मत उन में नहीं है ।

प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में स्त्री समस्या को बुनियादी मानवीय समस्या के रूप में उठाया है । “नैराश्य”, “कुसुम”, “उद्धार”, “विध्वंस” आदि कहानियों में उन्होंने मानव जीवन की पराधीनता एवं दुर्बलता का चित्रण किया है । उनका नारीविमर्श भारतीय समाज

का नारी यथार्थ है, जो आज भी प्रासंगिक है । उन्होंने अपने साहित्य में यह तब किया था जब न तो नारी मुक्ति की कोई मुखर चेतना थी और न ही कोई सुगठित नारी आंदोलन ।

श्रीमती "मृदुला गर्ग" प्रेमचंद साहित्य की स्त्रियों को दो भागों में बाँटती है । एक वह जहाँ स्त्री का संधर्ष एवं शोषण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक कारणों से है । "गोदान", "रंगभूमि", "कर्मभूमि", जैसे उपन्यासों में स्त्री का यह रूप हम देख सकते हैं । यहाँ प्रमुख प्रवक्ता पुरुष है । स्त्री का दूसरा रूप "निर्मला", "गबन", आदि उपन्यास में एवं "बेटों वाली विधवा" जैसे कहानियों में मिलता है । "बेटों वाली विधवा" की माँ आर्थिक पराधीनता के कारण अपने बेटों द्वारा दिये गये दु:खों को सहती है । यहाँ स्त्री का शोषण पुरुषों के द्वारा होता है । लेकिन इन में प्रमुख प्रवक्ता स्त्री ही है।

शायद आज का जो स्त्री के जरिये कहानी कहने का सिलसिला है, वह प्रेमचंद से शुरू हुआ था । प्रेमचंद जी के "नैराश्य लीला", "कुसुम", "मिस पद्मा" आदि कहानियों की स्त्रियाँ प्रतिवाद करनेवाली हैं । इस तरह स्त्री पात्र की विविधता एवं स्त्री को स्त्री संदर्भ में देखने की परंपरा भी उन्होंने ही शुरू किया ।

प्रेमचंद की "मर्यादा की देवी" की प्रभा यातनाओं के सहने के बाद भी अपने ससुराल में रहती है । यहाँ भारतीय परंपरा के नारी का चित्रण हुआ है । लेकिन "शंखनाथ" की नायिका सीमाओं को लांधती है । उसी तरह "आभूषण" की नायिका आधुनिक विचारधारा से प्रभावित है । इसीलिए वह पुरुषों के आधिपत्य का विरोध करती है।

प्रेमचंद युगीन कहानी में संबंध, अर्थ, विचार, पर्यावरण आदि सभी धरातलों पर स्त्री की छवि का अंकन हुआ है ।

१.१०.१.३ प्रेमचंदोत्तर युग में

इस युग के कहानीकारों ने नारी को सामाजिक धरातल से उठाकर उसे मनोविश्लेषणात्मक धरातल पर रखा । इस युग की हिन्दी कहानी में "जैनेद्र", "अज्ञेय", "इलाचन्द्र जोशी" का महत्वपूर्ण स्थान है । जैनेद्र की "पत्नी" कहानी में पुरुष प्रधान समाज के अंतर्गत नारी की नियति का वर्णन है । लेकिन उनकी नारी विद्रोह नहीं करती । "उन्होंने बंद समाज में पुरुषाश्रित स्त्री की पीडॉ को आवाज़ दी । यह आवाज़ जितनी पीड़ित स्त्री की थी, उतनी जैनेद्र की भी थी । इस बंद समाज के पिंजड़े में वह चटपटाती

तो है, लेकिन उड़ने का यत्न नहीं करती ।"६७ उनकी नायिकाओं में पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध आवाज़ उठाने की क्षमता नहीं है । वे सिर्फ अपने आप में खोयी रहती हैं ।

अज्ञेय की "विपथगाथा", "मिलन" आदि कहानियों में स्त्री व्यवस्था का विरोध करके संधर्ष में भाग लेती है । उनके पात्र मध्यवर्गीय मूल्यों से चिपकी हुई है । लेकिन जैनेद्र की अपेक्षा अज्ञेय के स्त्री पात्र अपेक्षाकृत स्वतंत्र तथा बोल्ड है ।

अज्ञेय की "रोज़" कहानी में पत्नी सामाजिक दायित्व एवं बोझ से उदास एवं नीरस हो उठती है और इससे कहीं दूर जाना चाहती है । उनकी "पगोडा वृक्ष" कहानी में विधवा की आंतरिक व्यथा और सामाजिक विवशता को चित्रित किया है ।

इलाचन्द्र जोशी की कहानियों में नारी पुरुष प्रवंचनाओं का शिकार है । उनमें आर्थिक समस्या भी है । कहानियों में ज़्यादातर नारी को अर्थ की पराधीनता के कारण ही पति की यातनाओं का शिकार होना पड़ता है । "उनकी "क्रय-विक्रय", "चोथे विवाह की पत्नी", "डाक्टर की फीस" आदि कहानियों में नारी के क्रूरता का शिकार होती है ।"६८ उन्होंने अपनी कहानियों में नारी की पीडा, शोषण एवं दर्द का चित्रण तो किया है । लेकिन उनकी नारियाँ इसके खिलाफ अपना विरोध प्रकट नहीं करती ।

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी में नारी के चित्रण में एक विशेषता सामने आयी है, वह है नारी के अन्तर्मन का चित्रण । इस युग के नारी पात्र परंपराओं एवं मान्यता को माननेवाली है । इन में पुरुष के आधिपत्य के प्रति विद्रोह भी मौजूद है । लेकिन वे इस विद्रोह में सफल नहीं हो पाती । इस युग की कहानियों के नारी में प्राचीन मूल्य एवं आदर्श तो ज़रूर है । साथ में पुराने मूल्य का नवीन मूल्य के साथ संधर्ष भी है ।

१.१०.१.४ समकालीन युग में

अब तक कहानीकारों ने स्त्री को किसी सिद्धांत, आदर्श या विचारधारा के माध्यम से ही प्रस्तुत किया है । समकालीन युग में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ जब बदलने लगीं, तब स्त्री चित्रण का दृष्टिकोण भी बदल गया । समकालीन कहानी के क्षेत्र में महिला कहानीकारों की कहानी में नारी चेतना का आगे विस्तार से चर्चा की जाएगी ।

निष्कर्ष

नारी अस्मिता का प्रश्न कल भी था, आज भी है और आने वाले समय में भी रहेगा । क्यों कि नारी अस्मिता के साथ हमेशा नयी चुनौतियाँ जुड़ी रहती हैं । और उसके सामने हासिल करने केलिए नयी मंज़िलें होती है । इसीलिए नारी अस्मिता को लेकर लगातार बहसें चलती रहती हैं ।

नारीवाद वास्तव में नारी-जीवन के सम्पूर्ण अस्तित्व को लेकर चिंतन करता है । नारीवाद पुरुष का नहीं, पितृसत्ता एवं पुरुषवर्चस्व का विरोध करता है । नारीवाद ने स्त्री को मनुष्य के रूप में देखने एवं समझने के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है । यह सच है कि नारी अपने शरीर से अलग नहीं है । लेकिन उसके देह एवं सौन्दर्य को उसका अस्तित्व मानना ठीक नहीं है । क्योंकि शरीर के साथ-साथ उसके पास मस्तिष्क, बुद्धि एवं विवेक है । इन सब के आधार पर उसकी अस्मिता को खोजना है । नारीवाद एक ऐसे समाज की कल्पना करता है जिस में स्त्री और पुरुष समान होते हुए अपनी भिन्न अस्मिता रख सकें ।

भारतीय संस्कृति की शुरुआत में नारी समाज में आदरणीय थी और उसे समाज में समान हक प्राप्त था । उत्तर वैदिक काल से उसकी अवनति शुरू हुई । मध्यकाल में पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्री को धर्म एवं मर्यादा के नाम पर अपने अंकुश में रखा था । आधुनिक काल में नारी में नई चेतना का आविर्भाव हुआ । इसका कारण समाज सुधारकों के द्वारा किया गया अथक परिश्रम ही था । साथ में शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन के कारण नारी अपने “स्व” के प्रति जागरूक हुई। और इसका असर साहित्य पर भी पड़ा ।

संसार के सभी धर्मों में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय है । पितृसत्ता ने स्त्री को अपने अधीन में रखने केलिए धर्म का ही सहारा लिया । आज आधुनिक काल में भी स्थिति बिलकुल वही है । शिक्षा ने एक हद तक स्त्री की स्थिति को सुधारने की कोशिश तो ज़रूर की है ।

साहित्य के इतिहास में कभी भी स्त्री को महत्वपूर्ण स्थान नहीं दिया । उसे देवी का रूप देकर उसकी सोचने की क्षमता पर पाबंदी लगा दी गयी है । बाद में उसके सौन्दर्य का वर्णन हुआ । यहाँ भी वह अपनी अस्मिता खो बैठी । उसी तरह पूंजीवाद भी उसके सौंदर्य का इस्तेमाल करके उसे अपने नियंत्रण में रखने की कोशिश में हैं । नारीवाद इन सब से

अलग होकर दुनिया को नये तरीके से सजाने की कोशिश में है, जिसमें नारी का बराबरी का हक हो ।

संदर्भ

१. मन माँजने की ज़रूरत - अनामिका - पृ.सं. ४८

२. स्त्री अस्मिता: साहित्य और विचारधारा - सं जगदीश चतुर्वेदी & सुधासिंह -पृ.सं. २०४

३. परिचर्चा- प्रभा दीक्षित - प्रेरणा त्रैमासिक - पृ.सं. १३

४. नारी अस्मिता हिन्दी उपन्यासों मे - सुरेश बत्रा - पृ.सं. ५२

५. स्त्री विमर्श और हिन्दी लेखन - श्रीमती धर्मा यादव - पृ.सं. १४

६. श्रुगला की कड़ियां - श्रीमती महादेवी वर्मा - पृ.सं. ३२

७. आज का स्त्री आंदोलन - उमा चक्रवर्ती से रमेश उपाध्याय की बातचीत - पृ.सं. १०

८. चूकते नहीं सवाल - मृदुला गर्ग - पृ.सं. ४९

९. विश्व की महिला कहानिकरों में नारीविमर्श - डॉ. शशि पंजाबी - पृ.सं. १

१०. औरत के हक में -तस्लीमा नज़रिन - अनुवाद(मूनमून सरकार) - पृ.सं. ६६

११. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकर - डॉ. वैशाली देशपांडे - पृ.सं. १६

१२. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकर - डॉ. वैशाली देशपांडे - पृ.सं. १६

१३. स्त्री उपेक्षिता - प्रभा खेतान - पृ.सं. २५

१५. आज का स्त्री आंदोलन - उमा चक्रवर्ती से रमेश उपाध्याय की बातचीत - पृ.सं. ९

१५. स्त्री उपेक्षिता - प्रभा खेतान - पृ.सं. ४८

१६. मदुमति- विश्व की महिला आत्मकथाकरों का नारीविमर्श - डॉ. शशिपंजाबी पृ.सं. ८

१७. फेमिनिज़म - (सं). डॉ. जानसी जेंस - पृ.सं. २

१८. फेमिनिज़म - (सं.) डॉ. जानसी जेंस - पृ.सं. ४

१९. विश्व की महिला आत्मकथाकरों का नार -विमर्श - डॉ .शशि पंजाबी - पृ.सं. ९

२०. फेमिनिज़म - सं. डॉ. जानसी जेंस - पृ.सं. ५

२१. नारीवादी राजनीति -संधर्ष एवं मुद्दे - (सं). साधना आर्य, निवेदिता मेनन जीनी लोकनीता - पृ.सं. २३

२२. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार -डॉ. वैशाली पांडे - पृ.सं. २१

२३. प्रभा खेतान से साधन अग्रवाल की बातचीत -वागर्थ-सितंबर २००३ - पृ.स. ३७

२४. स्त्रीत्व के मानचित्र - अनामिका - पृ.सं. ४७

२५. स्त्रीत्व के मानचित्र - अनामिका - पृ.सं. ९

२६. नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती - अरुणा मुकिम - पृ.सं. ५८

२७. नारीवादी राजनीति : संधर्ष एवं मुददे - पृ.सं. ४०

२८. नारीवादी राजनीति:संघर्ष एवं मुद्दे - पृ.सं. ३२

२९. स्त्री उपेक्षिता - प्रभा खेतान - पृ.सं.९२

३०. स्त्री परिस्थिति आत्मीयता - डॉ: मिनी प्रसाद - पृ.सं. ५९

३१. नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती - अरुणा मुकिम - पृ.सं. १७

३२. नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती - अरुणा मुकिम - पृ.सं. १९

३३. भारतीय विश्वसंस्था का इतिहास - राजवाड़े - पृ.सं. ७०

३४. हिन्दी कथा साहित्य में रूढ़िमुक्त स्त्री - डॉ. सुधा .बी - पृ.सं. १२

३५. फेमिनिज़म - डॉ.जानसी जेम्स - पृ.सं. ७२

३६. स्त्रीवाद एवं महिला उपन्यासकार - डॉ. वैशाली देशपांडे - पृ.सं. ३७

३७. स्त्रीवाद एवं महिला उपन्यासकार - डॉ. वैशाली देशपांडे - पृ.सं. ३७

३८. फेमिनिज़ाम - डॉ.जनसी जेम्स - पृ.सं. ८०

३९. महिला सशक्तिकरण : वायदे और हकीकत - डॉ. रेणु त्रिपाठी - पृ.सं. ९

४०. स्त्री संधर्ष का इतिहास - राधाकुमार - पृ.सं. ३९

४१. वही - पृ.सं. ५०

४२. स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधाकुमार - पृ.सं. १११

४३. हिन्दी कथा साहित्य में रूढ़ि मुक्त स्त्री - डॉ. सुधा .बी - पृ.सं. १२

४४. स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधाकुमार - पृ.सं. २१३

४५. स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधाकुमार - पृ.सं. ३१४

४६. स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधाकुमार - पृ.सं. ३१५

४७. हिन्दी कथा साहित्य में रूढ़ि मुक्त स्त्री - डॉ. सुधा.बी. १५

४८. आधुनिक काल में नारी की जगह - स्त्री (देशाभिमानी) - २०११ जुलाई २१

४९. हिन्दी कथा साहित्य में रूढ़ि मुक्त स्त्री - डॉ. सुधा. बी - पृ.सं. १८

५०. पेण्णेषुत् - स्त्री संकलपम - मतगलूडे कारचापाडिल - पी. गीता - पृ.सं. ७२

५१. पेण्णेषुत् - स्त्री संकलपम - मतगलूडे कारचापाडिल - पी. गीता - पृ.सं. ७२

५२. स्त्री उपेक्षिता - प्रभा खेतान - पृ.सं. ६०

५३. स्त्री उपेक्षिता - प्रभा खेतान - पृ.सं. ६१

५४. फेमिनिज़म स्त्रीवाद और मित्तोलोजी - डॉ.जनसी जेम्स - पृ.सं. ११

५५. भारतीय सामाजिक व्यवस्था - राम आहूजा - पृ.सं. ८४

५६. स्त्री विमोचनतिन् ओरु नवदर्शनम् - ओषो - पृ.सं. ३२

५७. चुकते नहीं सवाल - मृदुला गर्ग - पृ.सं. ५०

५८. आज का स्त्री आंदोलन - उमा चक्रवर्ती से रमेश उपाध्याय की बातचीत - पृ.सं. १६

५९. स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधाकुमार - पृ.सं. ७९

६०. स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधाकुमार -पृ.सं. ७८

६१. समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप(भूमिका) - डॉ.धनश्याम दास भुतडा पृ.सं. ७

६२. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार - डॉ.वै शाली देशपांडे - पृ.सं. ४४

६३. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार - डॉ.वै शाली देशपांडे - पृ.सं. ४५

६४ .हिन्दी कहानी और मुस्लिम समाज(भूमिका) - दीपिका रानी - पृ.सं. १०

६५. हिन्दी कहानी और मुस्लिम समाज(भूमिका) - दीपिका रानी - पृ.सं. ११

६६. हिन्दी कहानी का समकालीन परिदृश्य -डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ पृ.सं. ४९

६७. नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती - अरुणा मुकिम - पृ.सं. ५४

६८. स्वतंत्रोत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप - डॉ. गणेश दास -पृ.सं. ७०

अध्याय दो

हिन्दी महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता

२.१ हिन्दी महिला कहानी लेखन की परंपरा

समकालीन महिला कहानी साहित्य आज जिस रूप में हमारे सामने उपस्थित है, उसकी नीव बहुत पहले ही डाली थी । हिन्दी कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं की जो सुदीर्घ परंपरा प्राप्त होती है, उसका सूत्रबद्ध रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय डॉ.उर्मिला गुप्ता को है । उन्होंने अपनी कृति में इस परंपरा को प्रारंभिक कथा साहित्य तथा विकासकालीन कथा साहित्य नामक दो भागों में विभाजित किया है । इसी विभाजन के साथ तीसरे विभाजन के रूप में समकालीन कथा साहित्य को रखकर आगे संक्षेप में महिला कहानी लेखन की परंपरा पर विचार करेंगे ।

२.१.१ प्रारंभिक कथा साहित्य

"डॉ.ऊर्मिला गुप्ता ने इस युग की अवधि सन् १८६८ से सन् १९२३ तक माना है ।"१ महिला कहानी लेखन की शुरुआत मिर्जापुर निवासी राजेन्द्र बाला घोष उर्फ "बंग महिला" से माना जाता है । उनकी पहली कहानी "दुलाई वाली" १९०७ में सरस्वती में छपी थी । इस के अलावा उन्होंने भाई-बहन, हृदय-परीक्षा आदि कहानियाँ भी लिखी ।

इस कालखंड की अन्य उल्लेखनीय लेखिकाएँ थी-"जानकी देवी", "ठकुरानी शिव मोहिनी", "गौरादेवी", "सुशीला देवी" और "धनवती देवी" । इनके बाद के महिला कहानीकारों में प्रमुख थी - "वनलता देवी", "सरस्वती देवी", "हेमंत कुमारी", "प्रियंवदा देवी" आदि । इन्होंने उस समय की राजनीतिक सरोकारों का परिचय अपनी कहानियों में किया । "समाज में फैली कुरीतियां, बल-विवाह, पर्दा-प्रथा और अशिक्षा को लेकर "मुन्नी देवी भार्गव", "चंद्रप्रभादेवी मेहरोणा", "विमला देवी चौधरानी" आदि ने कहानियाँ लिखी ।"२ इस कालखंड में उस समय की सामाजिक कुरीतियाँ एवं राजनीतिक समस्याओं को लेकर महिला कहानीकारों ने कहानियाँ लिखी ।

उस समय की परिस्थितियाँ आधुनिक समाज की परिस्थितियों से बिलकुल भिन्न थी । इसलिए महिला लेखिकाओं ने प्राचीन मर्यादाओं और रिवाज़ों को बरकरार रखकर ही स्त्री की अस्मिता को उभारने का प्रयास किया है । "इस काल की लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में स्त्री की घरेलू ज़िंदगी, पतिनिष्ठा, नारी की महानता, बाल-विवाह के दुष्परिणाम आदि विषयों को उठाया है ।"३ इस तरह यह युग हिन्दी कथा साहित्य में महिलाओं के प्रवेश

का युग था । कहानी लेखन के साथ महिला कहानीकारों ने उपन्यास लेखन का भी प्रयास किया ।

२.१.२ विकासशील कथा साहित्य

डॉ.ऊर्मिला गुप्ता ने सन् १९२४ से १९४७ तक की अवधि को विकासशील कथा साहित्य का युग माना है । इस चरण के कहानी लेखन क्षेत्र में "सुभद्राकुमारी चौहान", "उषादेवी मित्रा", "सुमित्राकुमारी सिन्हा", "कमला त्रिवेणी शंकर", "तेजरानी पाठक" तथा "तारा पांडे" प्रमुख रही । "इन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में विधवा-विवाह निषेध, दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, स्त्री-शिक्षा विरोध, वृद्ध विवाह आदि कुप्रथाओं का विरोध किया है ।"४ इनकी कहानियों में उस समय के समाज का चित्रण बखूबी हुआ है । इनसे भिन्न होकर सुभद्राकुमारी चौहान की कहानियाँ सामाजिक व्यावहारिक एवं पारिवारिक जीवन के चित्रण केलिए प्रसिद्ध है ।

आज़ादी के बाद हिन्दी साहित्य में कथा साहित्य तथा गद्या के अन्य विधाओं के लेखन में प्रगति होने लगी । इसी काल में महिला कथाकारों की एक पीढ़ी साहित्य सृजन में लगी हुई थी । इन महिला कथाकारों में "दिनेश नंदिनी", "रजनी पणिक्कर", "चंद्र किरण सौनरिक्सा", "कंचलता सबरवाल", "हिरणदेवी चतुर्वेदी" आदि का महत्व पूर्ण योगदान रहा।

२.१.३ समकालीन कथा साहित्य

साहित्य के संदर्भ में समकालीनता का संबंध मात्र समय से नहीं है । बल्कि एक ही कालखंड में समान मानसिक पृष्टभूमि से, समान संवेदनाओं से युक्त साहित्य के निर्माण से है । डॉ. सुरेश बाबर के अनुसार "समकालीन रचनाओं का संबंध विशेष कालखंड से होता है, उसी कालखंड में सृजित सभी रचनाओं में युग-बोध की अभिव्यंजना समान रूप से होती है । इसी प्रकार युग बोध की अभिव्यक्ति ही विभिन्न रचनाओं में समकालीनता का प्रमाण प्रस्तुत करती है ।"५ बीसवीं सदी के छठे दशक में महिला कथाकारों का एक सशक्त प्रवाह हिन्दी साहित्य में प्रवाहित हुआ । इस में "मन्नु भण्डारी", "कृष्णा सोबती", "उषा प्रियम्वदा", "शशिप्रभा शास्त्री", "शिवानी", "मेहरुन्नीसा परवेज़", "मृदुला गर्ग", "मंजुल भगत", "मालती जोशी", "कृष्णा अग्निहोत्री", "ममता कालिया", "नासिरा शर्म", "सूर्यबाला", "मैत्रेयी पुष्पा", "चित्रा मुद्गल" आदि प्रमुख है ।

समकालीन महिला कथाकारों ने अपने अनुभव के क्षेत्र को विस्तृत किया । इन्होंने समाज की दोहरी नैतिकता का पर्दाफाश करके नारी के साथ होते अत्याचार का जीता जागता चित्रण अपनी कहानियों में करने की कोशिश की । उनकी कहानियों में घर-परिवार के बाहर काम करनेवाली स्त्री की दोहरी भूमिका का यथार्थ चित्रण है । साथ ही स्त्री-पुरुष संबंधों की सूक्ष्मताओं का नये रूप में भी चित्रण है । उनकी कहानियाँ मानवीय रागात्मकता तथा संबंधों के बिखराव के कारण उत्पन्न सूनेपन को भर देनेवाली है । इस काल की महिला लेखिकाओं ने सिर्फ नारी जीवन से संबन्धित विषयों को ही नहीं अपितु समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को भी अपने लेखन का विषय बनाया ।

पुरुषसत्तात्मक समाज में नारी सदियों से दोयम दर्जे का नागरिक बनकर रही है । इसीलिए वह सड़े मूल्य, मान्यताएँ, परंपराएँ, संबंध और रिश्ते-नाते चुपचाप सहती रही है । लेकिन समकालीन लेखिकाओं ने इन सब के प्रति प्रतिशोध करनेवाली स्त्री की छवि को उकेरने का प्रयास किया है ।

समकालीन हिन्दी कहानी लेखन के क्षेत्र में महिला कहानीकार भी पुरुष कहानीकारों के समान अपनी दक्षता और काबिलियत का परिचय देती है । "इन्होंने सामाजिक चुनौतियों को बड़ी कुशलता से समझा है और उनकी अभिव्यक्ति अपनी कहानियों में बड़ी सूक्ष्मता एवं कुशलत के साथ की है । ये समस्याएँ एवं चुनौतियाँ वैयक्तिक भी है और सामाजिक भी है ।"६ महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में नारी की वैयक्तिक एवं पारिवारिक समस्याओं को ही ज़्यादा ज़ोर देकर चित्रित किया है । सामाजिक अस्तित्व एवं अस्मिता की ओर उन्होंने ज़्यादा ध्यान नहीं दिया है । लेकिन चित्रा मुद्गल एक ऐसी कहानीकार है जिन्होंने स्त्री की सामाजिक चुनौतियों की ओर ध्यान देकर अपनी लेखनी चलाने की कोशिश की है ।

समकालीन महिला कहानीकारों में चित्रा मुद्गल का योगदान एवं उनकी कहानियों में नारी अस्मिता को खोजने से पहले उनके समकालीन कुछ प्रमुख लेखिकाओं की कहानियों में नारी अस्मिता की खोज करना ज़रूरी है ।

२.२ समकालीन महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी अस्मिता

नारीवाद नारी जीवन के सम्पूर्ण अस्तित्व को लेकर चिंतन करता है । वर्तमान युग में नारीवाद का बहुत ही प्रचलन हो रहा है । आज स्त्री अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व को

लेकर बहुत चिन्तित है । इसलिए अपनी अस्मिता का यह बोध उसके जीवन के हर पहलु को प्रभावित कर रहा है । वह पुरुष वर्चस्व को चुनौती दे रही है । “आजकल स्त्री-अधिकारों व अस्मिता के संधर्ष के घोष समाज में खूंज रहा है । लेकिन स्त्री-जीवन की जटिलताएँ कम होती नज़र नहीं आ रही । इस में घरेलू हिसा, अशिक्षा, प्रेम व विवाह में चयन का अभाव, पर्दा, दहेज, पितृसत्ता वर्चस्व के साथ देह, भोग, आर्थिक असमानता, लैगिक पूर्वाग्रह, यौन-शुचिता से जुड़े सवाल भी शामिल है ।”७ समकालीन महिला कहानीकारों ने इन सब को अपनी कहानियों का विषय बनाया है । उन्होंने ज़्यादातर नारी के यथार्थ रूप को ही चित्रित करने का प्रयास किया है ।

आज की नारी शिक्षित एवं अपने अधिकारों के प्रति सजग है । फिर भी वह पुरुष की तरह स्वतंत्र नहीं है । लेकिन समझौता करने केलिए वह तैयार नहीं है । प्राचीन समय से ही अपना आधिपत्य जमाने वाला पूरुष नारी को उतना अधिकार नहीं देना चाहता कि वह अपना अलग व्यक्तित्व रखे । वह आज भी पत्नी के रूप में नारी का समर्पित रूप ही चाहता है । “नारी अपने व्यक्तित्व की ठेस अब नहीं सहन सकती है । उसके लिए पति परमेश्वर नहीं एक सामान्य जन है, और वह दासी से ऊपर उठकर मानवी बन चुकी है । अर्थात् वह यह मानने लगी है कि सृष्टि का प्राणी मनुष्य है और मनुष्य की दो इकाइयाँ - पुरुष और नारी ।”८ इन्हीं टकराहटों के कारण पति-पत्नी साथ होते हुए भी विलग हो रहे हैं । क्योंकि दोनों का अपना अस्तित्व है अपनी अलग अस्मिता है । इन्हीं संबंधों एवं समस्याओं का सही चित्रण स्वान्त्र्योत्तर महिला कहानीकारों की कहानियों में मिलता है ।

मनुष्य को अपनी इच्छा के अनुसार जीने, काम करने एवं स्वतन्त्रता पूर्वक निर्णय लेने की आज़ादी है । प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक के समाज के इतिहास को देखा जाय तो पता चलता है कि नारी के पास अधिकार और सामर्थ्य होते हुए भी निर्णय लेने की क्षमता नहीं थी । निर्णय लेने की क्षमता नारी में भी है । यह क्षमता उसे स्वयं विकसित करनी पड़ती है । नारी का स्वयं निर्णय लेने का अधिकार एक परिवर्तनवादी कदम है । वर्तमान समाज में नारी को अपने अस्मिता एवं अस्तित्व की चिंता हो रही है । साथ ही साथ घर, परिवार एवं समाज में वह स्वयं के भरोसे संधर्ष करते हुए जी रही है ।

नारी की अस्मिता के तीन पहलुएँ है - वैयक्तिक अस्मिता, पारिवारिक अस्मिता, एवं सामाजिक अस्मिता । क्योंकि सब से पहले वह एक व्यक्ति है, उसके बाद उसका परिवार के

साथ का संबंध आता है - चाहे वह बेटी हो, बहु हो, प्रेमिका हो, या पत्नी हो । इसके साथ सामाजिक विषय भी आता है । इसलिए आगे यह देखते हैं कि हिन्दी महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में स्त्री के अनेक रूप को एवं इन रूपों में उसकी अस्मिता को किस तरह अपनी कहानियों में व्यक्त किया है।

२.२.१ मन्नु भण्डारी

नारी अंदोलन के ज़ोर पकड़ने के पहले ही नारी के अनेक आयामों को अपनी कहानियों के द्वारा प्रस्तुत करनेवाली महिला कहानीकारों में प्रमुख हैं "कृष्णा सोबती", "उषा प्रियंवदा", और "मन्नु भण्डारी" । यह सर्व विदित बात है कि स्त्री ही अपने और दूसरी स्त्री के दिल को सही ढंग से समझकर परख सकती है । "श्रीमती मन्नु भण्डारी ने नारी मन के ख्यालातों को सेंसर किये बिना ही कागज़ में उतारने की कोशिश की है ।"९ इसलिए उनकी कहानियों में सच्चाई दिखाई देती है ।

पुरुष का एक से अधिक स्त्रियों के साथ अनैतिक संबंध रखना कोई गुनाह नहीं है । लेकिन नारी जब एक से अधिक पुरुषों के साथ संबंध रखती है, तो समाज उसे गिरी हुई दृष्टि से देखता है । मन्नु भण्डारी की "यही सच्च है" ऐसी ही एक कहानी है । इस कहानी की नायिका दीपा दो पुरुषों के साथ संबंध रखती है । दीपा ने अठारह वर्ष की उम्र में निशीथ से प्यार किया था । लेकिन प्यार करने के बावजूद निशीथ ने उसका अपमान किया । बाद में उसकी वीरानगी ज़िंदगी में प्रेम के रजनीगंधा की महक के साथ संजय आता है । दीपा नाज़ुक मिज़ाज की युवती है । उसे दोनों से प्यार है । वह दोनों को चाहती है, पर एक दूसरे के अभाव में ।

प्रेम संबंधों के मामले में हमारा पुरुष मेधा समाज जो एकनिष्ठता की माँग स्त्री की तरफ से चाहता है, उसका पूर्णत: तिरस्कार मन्नु जी ने दीपा के माध्यम से किया है । यह पूर्णत: स्त्री सापेक्ष रचना है । "इस में एक युवती के विचारों एवं आचरणों को बिना एडिटिंग के चित्रित किया है । एक महिला ने कहानी लिखी है, इसलिए अप्रमाणिकता का सवाल ही नहीं उठता । इसीलिए महिला लेखन एवं स्त्री अस्मिता की पहचान के संदर्भ में "यही सच्च है" मील का पत्थर स्थापित होता है ।"१० शायद उस समय दीपा को स्वीकार करना पाठक केलिए कुछ मुश्किल हुआ होगा । लेकिन आज यह सर्वविधित बात है ।

मन्नु भण्डारी की "तीसरा आदमी" की पत्नी पति के द्वारा माँ न बन पाने के कारण अन्य व्यक्ति से संबंध रखती है । वह पति की कमी को स्वीकार नहीं करती । पुराने ज़माने में इस तरह सोचना पाप माना जाता था । लेकिन आज नारी के दृष्टिकोण में बदलाव आ गया है । यदि स्त्री के किसी प्रकार के अभाव में पुरुष किसी अन्य स्त्री की ओर दृष्टि घुमा सकता है, तो नारी भी अभावपूर्ण पुरुष को पाने पर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अन्य पुरुष से कर सकती है ।

"एक कमजोर लड़की" कहानी की लड़की बहुत कमजोर है । "वह अपने मन की बात कहने का साहस भी नहीं कर पाती और बड़ों के फैसले पर खुश भी नहीं है । वह किसी के दिल को तोड़ना नहीं चाहती और चाहकर भी तोड़ने का साहस नहीं कर, वह स्वयं भीतर टूटती रहती है ।"११ ऐसी कमज़ोर लड़कियाँ अपनी ज़िंदगी को दाव पर लगा देती हैं । अपने बारे में फैसले लेने का साहस उन में नहीं होता है ।

"गीत का चुंबन" की नायिका आधुनिक होने पर भी संस्कारों से जकड़ी हुई है । वह मन से पुरुष का चुंबन पाने को लालायित है । लेकिन ऐसा करने से डरती भी है । उसका ड़र है कि उसका बहुमूल्य संपत्ति जिसे पवित्रता कहते हैं, लूट न जाय । इसीलिए वह चुंबन करने पर निखिल को चाटा मारती है । मगर बाद में बुरा न मानने की बात भी कहती है ।

"बाहों का घेरा" कहानी की कम्मो अपने पति मित्तल के व्यवहार से दुखित है । वह हमेशा व्यस्त रहता है । उसके पास पत्नी के साथ बिताने केलिए वक्त ही नहीं है । अपने पति के उसके प्रति उपेक्षा भाव उसे ठेस पहूँचाता है । वह मित्तल में एक प्रकार की जड़ता एवं यांत्रिकता का अनुभव करती है । इस जड़ता एवं यात्रिकता के बीच वह अपनी अस्मिता खो बैठती है । वह चाहती है कि यह जड़ता एवं यांत्रिकता एक झटके से दूर हो जाय और वह पागलों की तरह उसे अपनी बाहों में कस लें । लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ ।

उनकी "एक प्लेट सैलाब" की पति-पत्नी एक दूसरे से भीतर ही भीतर विलग है । उनके बीच सिर्फ पति-पत्नी का संबंध है, प्यार नहीं । "पति-पत्नी के बीच का एक रूप-एक मन उनके भीतर नहीं है । दोनों में से शायद कोई भी नहीं सोया था - हाँ उनके बीच का प्यार और अपनत्व सो गया था -सो नहीं गया था, शायद मर गया था ।"१२ आज कल ऐसे पति-पत्नी ज़्यादा ही देखने को मिलते हैं, जो एक दूसरे के साथ होने का सिर्फ दिखावा ही करते हैं । दोनों अपनी दुनिया में व्यस्त होते हैं । दोनों अपनी मिली हुई एक दुनिया बनाने

में असमर्थ होते हैं । क्योंकि दोनों के बीच प्यार या अपनत्व नामक कोई चीज़ ही नहीं है ।

"उनकी(मन्नु भण्डारी की) कहानियाँ मूलत: वैयक्तिक चेतना से अनुप्राणित है ।"१३ उनकी कई ऐसी कहानियाँ हैं जिनकी नायिकाएँ बिना कोई सोच विचार के अपने जीवन के साथ समंजस्य करने की असफल कोशिश करती है - जैसे "अभिनेता", "ईसा के घर", "इंसान" आदि । मन्नु जी ने अपनी कहानियों में बदले हुए परिवेश में संस्कार एवं आधुनिकता के बीच उलझी हुई नारी के द्वन्द्व को चित्रित किया है ।

मन्नु भण्डारी की "नशा" कहानी की नारी अपनी सारी उम्र मेहनत कर पति को शराब पिलाती रही और पिटती रही । फिर भी वह उसके मोह को नहीं छोड़ पाती । अब बुढ़ापे में वह अपने बेटे के साथ खुशी से रह रही है । बुढ़ापे के इस हालत में भी वह मेहनत करके बेटे से छिपाकर पति को पैसा भेज देती है । पुराने ज़माने की स्त्रियों के समान वह पति की खुशी में अपनी खुशी को ढूँढती है ।

"क्षय" कहानी की कुंती और "घुटन" कहानी की मोना परिवार में अपने अस्तित्व खो बैठी हैं । वैयक्तिक रूप में वे अपने पैरों पर खडी हैं । लेकिन वे अपनी इच्छा की पूर्ति नहीं कर सकती हैं । क्योंकि दोनों पर अपने परिवार की ज़िम्मेदारियाँ हैं ।

२.२.२. उषा प्रियंवदा

भीड़ में हर एक एकाकी है और हर भीड़ एकाकियों की भीड़ है । यह तथ्य उषा जी की कहानियों के पात्रों केलिए समीचीन है । नारी की मनोव्यथा का यथार्थ चित्रण उनकी कहानियों में मिलता है।

"कितना बडॉ झूठ" की किरण दो लड़कियों की माँ और विश्वेश्वर की पत्नी है । ढाई महीने की छुट्टी के बाद घर लौटने पर उसे मालूम होता है कि अपने प्रेमी मैक्स की शादी उसकी असिस्टेंट तेईस वर्ष की मारिया के साथ हो चुकी है । वह अपना आंतरिक तनाव पति से छिपाती है । और बड़ी सहजता से पति के साथ बिस्तर का भाग लेती है ।

"नींद" कहानी की नायिका रात को डरती है । उसे एक साथी की आवश्यकता है । लेकिन लोग उसे बीमार समझते हैं । "जिस प्रकार पुरुष को स्त्री की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार स्त्री को भी पुरुष की आवश्यकता होती है । लेखिका ने नारी मनोविज्ञान को जान

युवा-स्त्री की इस आवश्यकता को महसूस किया है ।"१४ सामाजिक नैतिकता स्त्री एवं पुरुष केलिए अलग है । इसलिए पुरुष केलिए स्त्री की चाहत को समाज अलग दृष्टि से देखता है । समाज के इ़र से स्त्री अपनी वैयक्तिक आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पाती । उसे अपनी जरूरतों को दबाकर रखना पड़ता है।

"प्रतिध्वनियाँ" कहानी की वसु अपने आप को पाश्चात्य सभ्यता में ढलना चाहती है । वह अपना जीवन अपने ढंग से जीना चाहती है । मगर उसका भारतीय मन ऐसा नहीं करने देता । वह साहस कर पति से तलाक लेकर दूसरी शादी कर लेती है । लेकिन आज भी उसे पहले पति से लगाव है । उसी प्रकार वह अपनी बच्चों के मोह को भी छोड़ नहीं पाती । स्वतंत्र होने पर भी वह दु:खी है, और अपना निर्णय स्वयं लेने पर भी वह प्रसन्न नहीं है । इस तरह वह अपनी अस्मिता की तलाश में लगी है ।

"संबंध" कहानी की नायिका श्यामला आधुनिक नारी है । वह अपने पैरों पर खड़े होकर परिवार में अपने छोटे-बड़े भाई-बहनों की शादी करवाकर अंत में अपना शेष जीवन अपनी इच्छा के अनुसार जीने केलिए स्वतंत्र है । इस तरह कई स्त्रियाँ अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने के बाद ही अपनी ज़िन्दगी के बारे में सोचती है, खासकर अपनी शादी के बारे में । अगर किसी वजह से पुरुष शादी नहीं कर सकता है तो वह अपने शरीर के प्राकृतिक भूख को अन्य तरीके से बुझा लेता है । लेकिन इस तरह सोचनेवाली स्त्रियाँ कम ही होती है ।

"ए खाने आकाश नाइ" कहानी की नायिका सुषमा घर की ज़िम्मेदारियों की पूर्ति करने के बाद ही अपने बारे में सोचती है । जब वह अपने शादी करने की बात करती है, तो घर में कुहराम मच जाता है । उसके बाद जब वह अपने पति के घर चली जाती है, तो वहाँ भी उसे ससुराल की ज़िम्मेदारियाँ निभानी पड़ती है । उससे ससुरालवाले कई अपेक्षाएँ रखते हैं । उन्हें पूरा करने के चक्कर में वह अंदर ही अंदर टूटती रहती है । ज़िन्दगी की सुख के जिस आकाश में वह उड़ना चाहती थी, वह उसे न अपने मायके में, और न ही अपने ससुराल में प्राप्त होता है ।

उषा प्रियंवदा की कहानियों की नायिकाएँ ज़्यादातर शिक्षित हैं । शिक्षा प्राप्त करने के कारण वे अपनी प्रवृत्तियों को, विचारों को तर्क सहित प्रस्तुत करने में कामयाब होती हैं । बिना कारण के वे कुछ नहीं करेंगी ।

२.२.३.ममता कालिया

ममता कालिया की नारी, स्त्री-पुरुष केलिए बनायी गयी अलग सामाजिक एवं नैतिक मान-मर्यादा से विद्रोह करती है । “ममता कालिया की कहानियों में शिक्षित मध्यवर्गीय नारी की आशाओं, आकांक्षाओं, संधर्षों और स्वप्नों का यथार्थपरक अंकन है । नारी के प्रति परंपरागत जीवन दृष्टि को वह नकारती है ।”१५

ममता कालिया की “ज़िंदगी सात घंटे बाद” की आत्मीया आधुनिक विचारोंवाली कामकाजी नारी है । वह विवाह को बंधन मानती है । वह पुरुष का साहचर्य चाहती है, मगर विवाह नहीं । उसके पास अच्छी ज़िंदगी बिताने की सारी सुविधा हैं । लेकिन वह सुखी नहीं है । उसके अंदर एक रिक्तता है । यह रिक्तता उसे हमेशा सताती रहती है । उसका जीवन सिर्फ सात घंटे का बनकर रह गया है । हमारे समाज में ऐसी कई स्त्रियाँ हैं, जो आत्मनिर्भर होने के बाद भी अपने वैयक्तिक अस्मिता की खोज में रहती हैं ।

“दर्पण” कहानी की बानी अपनी अस्मिता खो बैठी है । वह कामकाजी होने पर भी अपने लिए एक दर्पण तक नहीं खरीद सकती है । आर्थिक रूप में स्वतंत्र माने जानेवाली स्त्री की यही विवशता है कि वह अपनी कमाई अपनी ज़रूरतों को पूरा करने केलिए खर्च नहीं कर सकती ।

“पच्चीस साल की लड़की” की नायिका पच्चीस साल की उम्र तक अविवाहिता रहने के कारण मिसेज शर्मा की निगाह में गंदी स्त्री है । पुरुष के समान सभी क्षेत्रों में कार्यक्षमता होने पर भी नारी आज भी समाज में पुरूष से हेय स्थान ही पाती है । अगर पुरुष की शादी नहीं हो जाती तो कोई बात नहीं । लेकिन स्त्री की शादी होना समाज केलिए ज़रूरी है । बिना शादी की लड़की को समाज अलग नजरिए से देखता है । उसे समाज के नैतिक नियम के अनुसार अपनी अस्मिता को बनाया रखना पड़ता है ।

“काली साड़ी” कहानी की नायिका अपने बच्चे के प्रति उचित व्यवहार न कर पाने से दु:खित है । सारा दिन भाग-दौड़, मेहनत करके भी वह अपने आप केलिए कुछ कर पाने में असमर्थ है । वह अपनी अस्मिता की खोज में भटकती रहती है । इसी वजह से वह न तो अपने में खुश है और न दूसरों को भी खुश रख पाती है । वह हमेशा व्यस्त रहती है, और यही व्यस्तता आधुनिक नारी का शाप है ।

ममता कालिया की कहानियों की नारी वैचारिक स्तर पर नयी चेतना लेकर आती है। घर-परिवार के संधर्ष में इनकी नारियाँ हमेशा पीसती रहती है । "मदिरा" कहानी की नायिका गृहस्थी एवं धन्धे में पीसती भारतीय नारी है । "जाँच अभी ज़ारी है" कहानी में बैक में कार्यरत महिला अधिकारी की पीड़ा एवं संधर्ष का चित्रण है ।

"मनोविज्ञान" कहानी की पत्नी बाहरी आडंबरों से आधुनिक लगती है । मगर पति के विचारों में वह १८वीं सदी की नारी ही मानी जाती है । पढ़ी-लिखी होते हुए भी उसका पति उसे हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करता है । उसके पति का विश्वास है कि पत्नी को हमेशा पति के एक कदम पीछे चलना है । लेकिन आज की नारी हमेशा पति के कदम से कदम मिलाकर चलने में विश्वास रखती है ।

"ऊँचे ऊँचे कंगूरे" की अनुभा अपने घर में पिता की मानहानी न कर पाने के ड़र से बंधी है । वह आज़ादी चाहती है । लेकिन वह उस के पहुँच के बाहर है । शादी के बाद ससुराल में भी उसकी स्थिति वैसे ही है । वहाँ सब सुख सुविधाएँ होते हुए भी वह दुःखी है । वहाँ भी वह आज़ाद नहीं है । इस तरह उसका जीवन मायके एवं ससुराल में घुटकर रह जाता है ।

"बिटिया" कहानी की बिटिया अपने पिता से प्रेमी के बारे में नहीं बता सकती है । क्योंकि उस में पारिवारिक सभ्यता है । और यह जाने बिना पिता उसकी शादी किसी दूसरे से कर देता है । दहेज में ससुरालवालों ने स्कूटर की माँग की तो पिताजी सब कुछ बेचकर उन्हें स्कूटर देता है । वह घर एवं ससुराल में सब कुछ सहकर चुप रहती है । ऐसे रहने से उसका अस्तित्व ही खो जाता है । उसे घर या परिवार में अपने अस्तित्व को बनाये रखना चाहिए था । लेकिन उससे यह हो न सका ।

ममता कालिया की "बीमार" कहानी की नायिका समाज से डरकर जीती है । उसकी कुंवारी बेटी बीमार है । वह उसे अस्पताल ले जाना चाहती है । लेकिन वह समाज से डरती है । क्योंकि उसकी कुंवारी बेटी की पेट की बीमारी को समाज गलत ही समझेगा । उसे अपनी बेटी की भविष्य को लेकर ड़र है कि कहीं लोग उसकी बेटी के बारे में गलत अफवाएँ न फैलाये । उसे शारीरिक तकलीफ से अधिक मानसिक तकलीफ सताता है ।

२.२.४.सुधा अरोडा

सुधा अरोडा ने नारी जीवन की विसंगतियों को विविध आयामों में अनुभूति की गहराई में ढाला । इनकी नारियाँ निर्णय लेने की क्षमता रखनेवाली हैं ।

“पति परमेश्वर” की नायिका केलिए पति परमेश्वर शब्द एक व्यंग्य जैसा है । उसकेलिए पति मानव है, जीवन साथी है । उसका मानना है कि पति अगर उससे बात मनवाने का अधिकारी है, तो वह भी अपनी बात उससे मनवाने की अधिकारी है। पति उसे अपने से नीचे स्थान पर रखना चाहता है । लेकिन उसे यह मंज़ूर नहीं है । आधुनिक नारी पति के रूप में ईश्वर को नहीं साथी चाहती है, जो उसके जीवन संधर्ष में उसका साथ दे सके ।

सुधा अरोडा ने अपनी कहनियों में नौकरी-पेश औरत के साथ घर की चहारदीवारी में पड़ी औरत की मनोव्यथा का भी चित्रण किया है ।

“महानगर की मैथिली” महानगर के नौकरी-पेश नारी की व्यस्थता की कहानी है । कहानी की नायिका चित्रा की बच्ची बीमार है । लेकिन पति-पत्नी दोनों छुट्टी नहीं ले सकते । इसलिए बीमारी की हालत में भी वे बच्ची को तारा बाई के यहाँ छोड़ने के बारे में सोचते हैं ।

बच्चपन से ही नौकरानियों के साथ रहने और पालने से उसकी बेटी की तबीयत कमज़ोर हो गयी थी । इसलिए चित्रा नौकरी छोड़ना चाहती है, किन्तु “हर बार महानगर का अर्थशास्त्र उसे मात दे जाता था ।”१६ कामकाजी होने के कारण उसे पति, बच्ची, और नौकरी इन तीनों के बीच एक साथ जूझना पड़ता है । वह इन तीनों के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयत्न करती है । इसी कारण पति-पत्नी के बीच टकराहट भी होती है । यह चित्रा की ही नहीं महानगर के हरेक नौकरी-पेश अणु परिवार की नारी की त्रासदी है।

सुधा जी “तानाशाही” कहानी की नायिका ममता कालिया की “बिटिया” की नायिका के समान घर में पिता के ड़र की वजह से चुप सी रहती है । उसे किसी से कोई शिकायत नहीं है । शादी करके जब वह ससुराल जाती है, वहाँ भी वह पति से ड़र कर ही जीती है । क्योंकि उसने इसको अपनी नियति मान ली है । हमारे समाज में बहुत सारी ऐसी लड़कियाँ है, जो शिक्षित होने पर भी इस तरह चुप होकर जीती है । वे अपने ऊपर होनेवाले दबाव

को, अत्याचार को नहीं पहचानती है, या उनमें उनकी सामना करने की हिम्मत नहीं होती है ।

सुधा जी नारी के संघर्ष को समाज के संघर्ष के बीच से गुजरते हुए दिखाती है । उनकी नारी परिवार से लड़ती है । साथ ही साथ समाज और समाज के ज्वलंत समस्याओं के साथ भी लड़ती है ।

२.२.५. नमिता सिंह

यह कहा जाता है कि नारी का स्वावलंबन तभी संभव हो सकता है, जब वह आर्थिक रूप से मजबूत और स्वतंत्र हो । लेकिन आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने केलिए यह ज़रूरी है कि वह पुरुष प्रधान समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं को भी तोड़ने केलिए संधर्ष करें ।

"गणित" कहानी की नायिका पुरुष के अत्याचार के विरुद्ध खड़ी होती है । वह तन-तोड़ मेहनत करके आजीविका कमाती है । उसके इस स्वभाव को देखकर ही रामलाल उसे अपने घर में आश्रय देता है । लेखिका रामलाल के नारी विषयक दृष्टिकोण को रेखांकित कर यह इंगित करना चाहती है कि नारी आज भी पुरुष पर आर्थिक रूप से आश्रित है, जिस से पुरुष के बहुत सारे काम साधते हैं । रामलाल का कहना है कि "लुगाई का आना कोई घाटे का सौदा न होगा, आनेवाली पूरा काम संभाल लेगी । खाने पकाने से लेकर बर्तन सफाई तक । न तनख्वाह की चिपचिप और न काम की झिकझिक, सिर्फ खाना और कपड़ा तक का मामला रहेगा । औरत से जो बाकी आराम होती है सो अलग । "१७ यह कथन दरअसल हमारी पूँजीवादी व्यवस्था के चरित्र की ओर संकेत करता है । पूंजीवाद ने स्त्री को एक वस्तु बना दिया है । परंतु इस मानसिकता से जब रामलाल नयी औरत पर अंकुश और आतंक का प्रयोग करता है तो वह रामलाल पर फटकार देती है । वह उसके हाथों से डंडा झपट कर कहती है - "....जबान संभाल कर रे । हराम का कुछ भी नहीं दिन भर हाड़ तोड़ती हूँ ।"१८ प्रस्तुत पात्र का प्रतिरोध इस बात का संकेत देता है कि चाहे पढ़ी-लिखी हो या अनपढ़ अब वह पुरूष के अत्याचार को बर्दाश्त नहीं करेगी ।

"गलत नंबर का जूता" कहानी में मध्यवर्गीय रिश्तों की विसंगतियों का चित्रण है । सुजाता और सुधीश पत्नि-पत्नी है । दोनों का दृष्टिकोण एवं विचार अलग है । इंजीनियर सुधीश केलिए पैसा ही सब कुछ है । पढ़ी-लिखी सुजाता अनैतिक और गलत मार्ग से पैसा कमाना नहीं चाहती । वह पति के व्यवहार से, उसके सोच-विचार से, परेशान है । यह नहीं

कि वह नौकरी करना नहीं चाहती । वह अपने पैरों पर खड़े होने केलिए नौकरी करना चाहती है, न कि पति की महत्वाकांक्षा की पूर्ति केलिए । "यहाँ नौकर के पैरों का गलत नंबर का जूता गलत रिश्ते का प्रतीक है । सुजाता एवं सुधीश की जोड़ी गलत नंबर के जूते में फंसे पाँव की तरह है । सुजाता केलिए अपना पति गलत नंबर का जूता है ।"१९ सुजाता अपने पति से अलग अपनी अस्मिता और अपने मूल्यों को बचा लेना चाहती है ।

" "या देवी सर्व भूतेषू" कहानी की देवयानी अपनी स्वतंत्र पहचान बनाये रखने वाली है ।"२० वह अन्याय और अत्याचार से लड़नेवाली है । उसकी इसी क्षमता के कारण जीजा जी ने देवयानी के नाम को देवी में बदल दिया था । घरवालों के विरोध होने पर भी उसने रोहन के साथ शादी की । लेकिन शादी के बाद ससुराल में वह कठपुतली की तरह रहने लगी । उसका पति कभी भी उसके साथ नहीं था । दूसरों को न्याय देनेवाली देवी स्वयं ही अन्याय का शिकार बनी । उसका जीजा जी उसकी संवेदनाओं को जगाता है और वह अपनी रक्षा स्वयं करती है । वह अपनी रक्षा केलिए पति से संबंध तोड़कर जीवन की नयी राह चुनती है । तलाक के बाद वह कोर्ट से घर आकर हँसती हुई कहती है- "मैं मुक्त हो गई दीदी, अम्मा, मैं मुक्त हूँ संपूर्ण मुक्त ।"२१ इस तरह देवयानी अस्तित्व की रक्षा और आत्मसम्मान केलिए पुराने संस्कार को तोड़ती है ।

नमिता जी की "एक बेताल कथा" कहानी की कल्पना पढ़ी-लिखी है और खूबसूरत भी है । वह नृत्य और संगीत में रुचि रखनेवाली है । वह घर में बच्चों को पढ़ाती है । अपनी जरूरतों को अपनी कमाई से पूरा करके स्वावलंबी बनती है । उसे शादी केलिए किये जानेवाले सौदा पसंद नहीं है । हमारे समाज एवं परिवार लड़की की शादी किये बिना छोड़ते नहीं है । उसकी शादी तय की जाती है । शादी के बाद दहेज को लेकर झगड़ा शुरू होता है । कल्पना को पैसे केलिए मायके भेजा जाता है । ससुरालवालों को सिर्फ पैसे चाहिए उसके गुणों का उन्हें कोई कद्र नहीं है । मायके आने के बाद वह ससुराल वापस जाना नहीं चाहती । वह घर में बच्चों को पढ़ाकर स्वावलंबी बनना चाहती है । लेकिन घरवाले उसे ज़बरदस्ती ससुराल भेज देते हैं । पैसे लिए बिना आने के कारण कल्पना को ससुरालवाले जला देते हैं । वह मायके एवं ससुराल के बीच अपने अस्तित्व को बचाने की कोशिश करती है । उस में रूप, गुण सब कुछ है । स्वावलंबी होकर जीने की काबिलियत भी है । लेकिन मायके एवं ससुरालवाले उसे समझते नहीं । दोनों परिवारों में उसकी अस्मिता की पहचान नहीं होती । लड़कियों के साथ अक्सर ऐसा ही होता है ।

"उबरनेवाले हाथ" कहानी की चंदो गरीब घर की कम पढ़ी-लिखी बेटी है । वह घर की बड़ी बेटी है । उसकी माँ बिन्नी के यहाँ काम करती है । जब माँ बीमार पड़ती है, तो वह बिन्नी के यहाँ काम करने जाती है । बिन्नी के भैया-भाभी चंदो को अपने साथ शहर ले जाना चाहते हैं । चंदो की माँ को खुशी है कि वे उसकी बेटी को कानूनी तौर पर गोद ले रहे हैं । लेकिन चंदो जाने से इन्कार करती है । वह अपनी माँ और भाइयों को छोड़कर जाना नहीं चाहती है । कम शिक्षित एवं कम उम्र के होते हुए भी वह अपना निर्णय स्वयं लेती है । वह स्वाभिमानी है । वह अपना अस्तित्व एवं अस्मिता की तलाश अपने परिवार के बीच में रहकर करना चाहती है ।

२.२.६. मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग की कहानियों में नारी के प्रति बदलते दृष्टिकोण को हम देख सकते हैं । प्रेम और काम संबंधी स्त्री-विषयक दृष्टिकोण को बदलने की कोशिश उनकी कहानियों में है । उन्होंने नारी-नारी के बीच के संबंधों को भी एक नये सिरे से देखने की कोशिश की है । उनकी कहानियों में पुरुष निरपेक्ष नारी का व्यक्तित्व एवं उनकी मानसिकता का खूब चित्रण हुआ है ।

"हरी बिंदी" उनकी बहुचर्चित कहानी है । इस कहानी की नायिका शादीशुदा है । वह आधुनिक नौकरी-पेश नारी नहीं है । उसकी रोज़ाने की ज़िंदगी अपने पति के ऊपर निर्भर है । "उसके हर आचरण पर पति का हस्तक्षेप है। वह अपनी पसंद के कपड़े पहनने, खाना खाने, फिल्म देखने, यहाँ तक कि बिंदी लगाने तक केलिए स्वतंत्र नहीं है । इसलिए पति की गैर हाज़िरी में एक दिन केलिए ही सही अपनी मर्ज़ी की ज़िंदगी जीती है ।"२२ पुरुष वर्चस्ववादी समाज में यह एक दिन की उसकी मर्ज़ी की ज़िंदगी बहुत मायने रखती है । पुरष हमेशा अपनी मर्ज़ी का मालिक है । वह अपनी इच्छा के अनुसार, अपनी रुचि के अनुसार पत्नी में बदलाव लाना चाहता है । वह उसकी इच्छा का कोई कद्र नहीं करता ।

डॉ. सौ. मंगल कप्पिकेरे के अनुसार उसकी "हरी बिंदी" नारी की बदलती मानसिकता का सशक्त प्रतीक है । "हरी बिंदी" की नायिका पुरुष सत्ता द्वारा स्त्री केलिए प्रचलित मान्यता से अपने आप को मुक्त करने केलिए हरी बिंदी डालती है । प्रश्न यह है कि क्या एक दिन हरी बिंदी डालकर निकालने से वह अपने स्वत्व को बचा सकती है । लेकिन वह

कम से कम एक दिन केलिए ही सही अपने अस्तित्व स्थापना का प्रयास तो करती है । उसकेलिए यह बहुत बड़ा कार्य है।

"संज्ञा" कहानी की नायिका पति से बहुत प्यार करती है। लेकिन जब पति उस पर हाथ उठाता है, तो वह उसे बर्दाश्त नहीं कर पाती । उसे अपना शोषण मंजूर नहीं है । इसलिए वह अपने पति को त्याग कर उसे सज़ा देना चाहती है । उसे अच्छी तरह मालूम है कि वह पूरी तरह पति पर आश्रित है । फिर भी वह उसे छोड़ देती है । क्योंकि उसकेलिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य अपने "स्व" की पहचान है । इसके विपरीत "वितृष्णा" कहानी की नायिका शालिनी अपने पति को त्याग नहीं पाती । लेकिन वह उससे दूर अकेले रहकर अपना रोष प्रकट करती है । इस तरह उनकी नायिकाएँ निरंतर अपनी वैयक्तिक अस्मिता की खोज में है । कई इसे पहचानते हैं, कई इसके बारे में सोचते हैं, तो कई इस के बारे में अंजान भी हैं ।

"मेरा" कहानी आज के मध्यवर्गीय परिवार के नौकरी-पेश स्त्री-पुरुष के बीच बच्चे के जन्म की समस्या को लेकर उत्पन्न तनाव की कहानी है । "मेरा" की मीता अपनी अस्मिता को, निजत्व को पति के पैरों पर गिरवी रखना नहीं चाहती है । उसका पति बच्चे को अपने भविष्य की प्रगति का बाधक मानता है । इसलिए मीता से "एबोर्शन" (गर्भपात) करवाने को कहता है । लेकिन मीता इसकेलिए बिलकुल तैयार नहीं है । पति की इच्छा से विवश होकर वह अस्पताल तो पहुँचती है, लेकिन जब उसे पता चलता है कि यह उसका बिलकुल निजी मामला है, "मेरा" मामला है, तो वह "एबोर्शन" नहीं करवाती है । वह किसी भी हालत पर अपने अस्तित्व को रौदना नहीं चाहती है । इस तरह वह अपनी अस्मिता को बनाये रखती है ।

"अवकाश" कहानी की स्त्री विवाह के कई सालों बाद पति से अलग होकर प्रेमी समीर के साथ रहना चाहती है । ऐसा नहीं है कि वह अपने पति एवं बच्चे से प्यार नहीं करती । उसे अपने पति एवं बच्चे से प्रेम है और समीर से भी । उसका पति उसे अपनी गृहस्थी न तोड़ने का सलाह तो देता है । लेकिन उसे तो किसी एक को चुनना था, और वह समीर को चुनती है । क्योंकि अब उसके व्यक्तित्व को समीर की ज़रूरत है।

वह अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहती है । हमारे समाज में ज़्यादातर स्त्रियाँ अपने लिए नहीं दूसरों केलिए जीती हैं । शादी से पहले माँ-बाप और भाई-बहन केलिए, शादी

के बाद पति, साँस-ससुर और बच्चों केलिए । लेकिन इस कहानी की नायिका अपने लिए जीना चाहती है । अक्सर अखबारों में ऐसी खबरें आती रहती है कि स्त्री अपने पति एवं बच्चों को छोड़कर प्रेमी के साथ भाग गयी । "स्त्री का ऐसा करना समाज एवं व्यवस्था की दृष्टि में मूल्यहीन एवं अनैतिक है । लेकिन कभी-कभी व्यक्तिगत सच्चाई व्यवस्था को लाँधकर आगे जाती है ।"२३ यहाँ "अवकाश" की नायिका अपने "स्व" को महत्व देती है, चाहे वह गलत हो या सही ।

"शहर के नाम" कहानी की नायिका मानती है कि प्यार का मतलब खुद को देना है, जिस्म हरगिज़ नहीं । जब कि उसके चारों ओर प्यार की जो बात की जा रही है, उसका मतलब जिस्म से है । वह अपने आप से कहती है - "मैं क्या सिर्फ जिस्म हूँ? जिस्म तो घर है । मेरा "मैं" उसके अंदर रहती हूँ । हर घर की एक आत्मा होती है । मेरे घर की भी ।"२४ कहानीकार इस समस्या को समाज के सामने रखना चाहती है । उसके अंदर के "उसे" देखने केलिए कोई तैयार नहीं है । क्योंकि आज भी स्त्री को सिर्फ जिस्म ही समझा जाता है । इसीलिए स्त्री के साथ इतने सारे अत्याचार हो रहे हैं ।

मृदुला जी की "खाली" कहानी की नायिका नौकरी करने के कारण बच्चा नहीं चाहती है । वह बच्चे को तब जन्म देना चाहती है जब उसके पास बच्चे को पालने केलिए समय हो । आर्थिक रूप से वह स्वतंत्र है । इसलिए पति के समान घर में उसका भी सम्मान है । उसके अनुसार खाना बनाना केवल स्त्री का कर्तव्य नहीं है । बल्कि खाना बनाने में पुरुष भी स्त्री की मदद कर सकता है । क्योंकि घर के हर काम में वह पुरुष का साथ चाहती है और हर क्षेत्र में पुरुष के साथ चलना चाहती है, न आगे न पीछे । इसी तरह आगे चलकर ही नारी अपनी अस्मिता को पहचान पाएगी और उसकी रक्षा भी कर सकेगी ।

मृदुला गर्ग की कई कहानियों में नारी अपनी अस्तित्वगत चेतना को पहचानकर आगे चलनेवाली है ।

"बाहरी जन" की नंदिनी औरों की चाहत को अपने ऊपर थोपकर जीना नहीं चाहती । उसकी शादी हुए सात साल हो गये । अभी तक बच्चा नहीं हुआ । इससे उसका ससुर बहुत चिंतित है । लेकिन इसके बारे में नंदिनी का सोचना है - "आप को मतलब । यह मेरी निजी मामला है । बच्ची चाहती हूँ या नहीं, मेरा निर्णय है । हो सकता है, या नहीं यह मेरा भाग्य है ; हो सकने केलिए कुछ करना मेरा काम है । आप को क्या अधिकार है मुझे

जिरह करने का? ।"२५ अक्सर बच्चा न होने से परिवार वाले बहुत चिंतित होते हैं । लेकिन नंदिनी के अनुसार उन्हें चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है ।

"बर्फ बनी बारिश" की बिन्नी अपनी अस्मिता को बनाये रखनेवाली है । उसका पति अमर दो बेटों के साथ अमरीका में बस चुका है । लेकिन वह अमरीका नहीं जाती । वह दिल्ली में एक छोटे स्कूल में टीचर के रूप में काम करती है ।

"चक्करघिनी" की विनीता आदर्श पत्नी और माँ बनना चाहती है । उसकी माँ के पास बच्चों को देने केलिए समय नहीं था । यह बात उसके मन में हमेशा थी । शायद इसीलिए पढ़ी-लिखी होते हुए भी वह शादी के बाद काम करना नहीं चाहती थी । लेकिन जब उसके दो बच्चे थोड़े बड़े हुए उसे लगा कि घर में बैठे रहना ही उसका काम नहीं है । वह अपने पापा के क्लिनिक में रिसप्शनिस्ट का काम करने का निश्चय करती है । इसी तरह "मिज़ाज" कहानी की श्वेता की माँ भी नारी की नौकरी की अहमियत् को समझती है । इसीलिए वह अपनी बेटी की नौकरी छुड़वाने की खबर से दु:खी होती है । उसके अनुसार स्त्री को नौकरी के बिना अपने अस्तित्व को बनाये रखना मुश्किल है ।

मृदुला जी की "एक ओर विवाह" की कोमल पति से प्यार की झूठे शब्द केलिए तरसती है । उसे मालूम है कि उसके पति के हृदय में उसके प्रति सच्चा प्यार नहीं हो सकता है । इसलिए वह पति की इच्छा के अनुसार सब कुछ करती है । वह चाहती है - "उसका पति उससे झूठ ही सही कह दें कि वह कोमल से प्रेम करता है । लेकिन उसके लाख कोशिशों के बावजूद ऐसा नहीं होता है ।"२६ मृदुला जी की "कोमल" मलयालमम् की कहानीकार माधविकुट्टी की नायिकाओं के समान प्यार की प्यासी है । वह प्यार केलिए कुछ भी करने को तैयार होती है । उसके बदले में वह सिर्फ प्यार ही चाहती है । लेकिन पुरुष कभी उसके मन की ओर देखता नहीं है । पुरुष की दृष्टि हमेशा उसकी देह की ओर ही है ।

"अदृश्य" कहानी की वीणा अपने पति केलिए सिर्फ माल है । उसका खून उसके पति के सामने ही होता है । लेकिन वह उसे पहचानता तक नहीं है । पत्नी की मृत्यु के बाद वह दूसरी शादी करता है । शादी नारी को प्यार एवं परिवार की सुरक्षा प्रदान करता है । लेकिन हमारे पुरुषवर्चस्ववादी समाज में स्त्री हमेशा इन सब से वंचित रहती है। वीणा भी यहाँ इन सब से वंचित रही ।

सामाजिक बंधनों के कारण ही पति-पत्नी अपनी मर्यादा को बनाये रखना चाहते हैं । व्यक्तिगत भिन्नता के कारण इनके बीच दरारें पड़ती हैं । लेकिन समाज के भय से नारी या तो चुप रहती है, या पति से विमुख होकर रहती है । मृदुला जी के नारी पात्र पुरुष की दासता को पसन्द नहीं करती, लेकिन पति को छोड़ने का साहस भी नहीं करते ।

"खरीदार" कहानी की नीना एक साहसी एवं आत्मनिर्भर नारी है । शादी के बाज़ार में वह अपने आप को बेचना नहीं चाहती । वह शिक्षा तथा नौकरी के द्वारा स्वावलंबी बनती है । अब उसमें सब कुछ खरीदने की ताकत है । वह अपनी इस ताकत को समाज के सामने रखती है । अब सब उसके व्यक्तित्व को स्वीकारने लगे हैं । वह अपनी ज़िंदगी अपनी मर्ज़ी के अनुसार जीने की दक्षता हासिल करती है ।

"वितृष्णा" कहानी की शालिनी अपने पति को पसंद नहीं करती है । लेकिन सामाजिक भय से उससे अलग नहीं हो सकती । उसे मालूम है कि अगर उसने पति को छोड़ दिया तो समाज उसका जीना हराम कर देगा । क्योंकि इस बारे में समाज का दृष्टिकोण अब भी नहीं बदला है । पति ने पत्नी को त्याग दिया हो, या पत्नी ने पति को, गलती पत्नी की ही समझी जाती है । इसलिए शालिनी पति से बातें किये बिना घुट-घुट कर जीती है । अपने अस्तित्व और अस्मिता को खोकर अपने जीवन बिताने केलिए वह विवश है ।

२.२.७ मृणाल पाण्डे

मृणाल पाण्डे ने अपनी कहानियों में साधारण भारतीय नारी के चित्रों को उनके परिवेश में चित्रित किया है । उन्होंने ज़्यादातर कहानियों में आभिजात वर्ग को केन्द्र में रखा है । उस वर्ग के जीवन में आयी कृत्रिमता, बनावटीपन, व्यर्थ के आडंबर खोखलेपन आदि को ही अपनी कहानियों का विषय बनाया है।

"यानि कि एक बात थी" कहानी की नायिका प्राध्यापिका है । पंद्रह वर्ष की वैवाहिक जीवन के बाद पति-पत्नी दोनों अलग हुए । एक दिन दोनों की मुलाक़ात एक होटल में होती है । उसका पति अपने प्रभुत्व को बनाये रखकर पत्नी को एक भोग वस्तु के रूप में ही देखता है । वह अब भी उसे स्वीकार करके उसके साथ जीने केलिए तैयार है । लेकिन पत्नी उसकी दया पर जीना नहीं चाहती । वह किसी व्यवस्था के आधार पर जीना नहीं चाहती । डॉ.सौ मंगल कप्पिकेरे के अनुसार " "यानि कि एक बात थी" मृणाल जी की स्त्री व्यक्तित्व की एक अलग पहचान बनानेवाली सफल स्त्रीवादी कहानी है ।"२७ इस की नायिका पुरुष की

केवल परछाई बनकर या भोग वस्तु बनकर जीना नहीं चाहती । बल्कि अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाना चाहती है । इसीलिए अपने अस्तित्व की रक्षा केलिए उसने पति को छोड़ा था ।

"व्यक्तिगत" कहानी की नायिका अपने व्यक्तित्व को समेटकर रखनेवाली है । वह यह नहीं चाहती कि उसका व्यक्तित्व किसी पर हावी हो । वह सभी को स्वतंत्र रहने की इज़ाजत देती है । साथ-ही-साथ अपने वैयक्तिकता पर ठेस पहुँचाती भी नहीं है ।

"चेहरे" की नायिका आधुनिक है । वह अलग अलग जगहों में अलग चेहरे लगाये रहती है । क्योंकि वह अपने को ऊँचा दिखाना चाहती है । इसकी कोशिश भी करती है । लेकिन इस कोशिश में वह अपना घर नहीं संभाल पाती।

"लकीरें" कहानी की नायिका गरीब और बदसूरत है । इसीलिए उसमें हीनता ग्रंथि है । वह अपने आप को हीन महसूस करती है । वह चाहती है कि कोई भी पुरुष उसे अपना लें, चाहें वह कैसा भी हो । लेकिन उसकी इच्छा पूरी नहीं हो पाती ।

मृणाल पाण्डे की "एक स्त्री का विदागीत" की सुषमा एक पढ़ी-लिखी स्वाभिमानी अध्यापिका है । वह परिवार में अपने अधिकार का पूरा प्रयोग करती है । परिवार में पति, बच्चे एवं सास के बीच उसकी एक अलग जगह है । उसने अपनी मर्ज़ी के अनुसार बेटों को ऊँची फीस वाली हॉस्टल में घर से दूर पढ़ने केलिए भेज दिया । उसकी ज़िद्द थी कि बच्चे अग्रेज़ी महोल में रहें । उसकी साँस एवं पति को उसकी बात काटने की हिम्मत नहीं थी । "पूरे परिवार में अपने लिए आदर तथा महत्व का निर्माण करना नारी केलिए एक उपलब्धि होती है जो सहसा प्राप्त नहीं पाती थी, पर अब प्राप्त हो रही है ।"२८ लेकिन हमारे पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में यह प्राप्त करना कोई आसान काम नहीं है, चाहे उसमें कितनी भी काबिलियत क्यों न हो ।

"तुम, वह और वे" कहानी की नायिका केलिए शादी एक बंधन है । इस बंधन में फँस जाने के कारण अपने प्रेम का इज़हार भी नहीं कर पाती है । उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है । उसी प्रकार "दरमियान" की नायिका का भी अपना कोई अस्तित्व नहीं है । वह अपने पति के इशारों पर ही चलती है ।

मृणाल पाण्डे की "प्रतिशोध" कहानी की नायिका विधवा है, और बेसहारा भी । वह

अपने बाप के उम्र के व्यक्ति के साथ रहती है और अपने पैरों पर खड़े रहने केलिए नौकरी पाने की कोशिश करती है । लेकिन वह आदमी ड़र जाता है कि अगर वह चली गयी तो वह अकेले न हो जाए । इसलिए वह उस पर गलत इल्ज़ाम लगाता है और समाज भी उसे सच्च मानता है, नारी केलिए खासकर विधवा स्त्री को समाज में अपनी अस्मिता बनाये रखना बहुत कठिन होता है ।

२.२.८ राजी सेठ

राजी सेठ की कहानियों में मध्यवर्गीय, शिक्षित, एवं आधुनिक विचारोंवाली नारी का चित्रण हुआ है । इनकी नारियाँ सीमा में रहकर ही विद्रोह करती है । सीमा को लांधने का साहस उनमें नहीं है ।

राजी सेठ की "अनावृत कौन" की नायिका के विचार उसके पति के विचारों से मेल नहीं खाता है । इसी वजह से वह पूर्ण रूप से अपने आप को पति के सामने समर्पित नहीं कर पाती । पुराने ज़माने की नारी के समान वह पति के अनुरूप अपने आप को बदलने में विश्वास नहीं रखती । इसी वजह से पति के साथ उसका संबंध औपचारिक हो जाता है ।

" "अपने दायरे", "अपने विरुद्ध", "अमूर्त कुछ", "अस्तित्व से बड़ा" आदि कहानियों की नायिकाएँ मन से कहीं न कहीं पति के विरुद्ध है। मगर विरोध नहीं कर पाते ।"२९ वे अपने अस्तित्व को पहचानती ज़रूर हैं । लेकिन "स्व" की रक्षा केलिए कुछ नहीं कर पाती ।

"एक बड़ी घटना" कहानी में राजी सेठ नारी की महत्ता पुरुष के द्वारा स्वीकार कराती है । पुरुष पात्र के द्वारा कहलाती है कि एक पुरुष सुलभ गर्व से आज तक वह यही समझता रहा था कि स्त्री हर तरह उस पर आश्रित है । लेकिन अब उसे मालूम हुआ कि वह कितना गलत था । वह भी आश्रित है उस पर छोटी छोटी जरूरतों केलिए - अखबार केलिए, दूध केलिए, दवा केलिए, उस सर्वग्राही एकांत केलिए जो उसकी सारी चेतना पर कुंडली मार बैठा है ।

"ढलान पर" कहानी की नायिका चारु एवं चेतन का प्रेम विवाह हुआ था । लेकिन काम में व्यस्त होने के कारण चेतन के पास चारु के साथ बिताने केलिए वक्त नहीं है । चारु अपने आप को अकेली ही नहीं उपेक्षित भी मानती है । चारु लेखिका को सारी बातें बताती है । लेखिका उससे अन्य किसी काम में मन लगाने का सुझाव देती है, जो उसे

अच्छा नहीं लगा । चेतन की दीदी चाहती है कि चारु माँ बने । लेकिन चारु इसकेलिए भी तैयार नहीं है । उसके अनुसार - "उनके वंश का जुआ उठानेवाला बैल नहीं हूँ मैं...जैसे मैं इंसान को नहीं घर को ब्याही आयी हूँ ।"३० जब लेखिका चारु को चित्रकार नलिन देव के साथ देखती है । तो लेखिका को मालूम हो जाता है कि चारु ने देव में उस व्यक्ति को देखा है, जो उसे आनंद दे सकें, साथ दे सकें और उसके व्यक्तित्व को पहचान सकें ।

चारु पुरानी परंपरा एवं मान्यता से हटकर जीने का नया उपाय सोचती है । वह प्रेम से भरी ज़िन्दगी चाहती है । उसके मन में प्रेम का अदम्य आग्रह है । जब इस चाहत की पूर्ति पति के द्वारा नहीं होती है, तब वह अलग विकल्प खोजती है । डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे के अनुसार " "ढलान पर" राजी सेठ की स्त्रीवादी कहानी है ।"३१

"सदियों से" कहानी की नायिका मिलन हेमंत से प्रेम करती थी । लेकिन वह उसे छोड़कर विदेश चला गया । उसकी शादी नरेश से होती है । विवाह के तीन साल होने पर भी वह हेमंत को भूल नहीं पाती । वह प्रेम और विवाह के बीच बंधी हुई है । वह न अतीत को भूल पाती है और न वर्तमान में अपने पति के साथ सहज भी हो पाती है । एक ही समय वह दो स्तर का जीवन जी रही है । यह भारतीय स्त्री की विवशता है कि वह शील एवं चरित्र के बीच पीसती रहे । क्योंकि हमारे समाज में स्त्री केलिए शील एवं चरित्र के नियम बहुत कठिन है । डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे के अनुसार "यह नारी मन की गहराई और सूक्ष्म सवेदना को व्यक्त करनेवाली सशक्त स्त्रीवादी कहानी है।"३२ सदियों के संस्कारों के कारण नारी हमेशा व्यवहार एवं मन के बीच पीसती रहती है । जब वह इसे तोड़ती है, तब वह विद्रोही एवं स्त्रीवादी बन जाती जाती है ।

राजी सेठ की "योग-दीक्षा" कहानी की नायिका कामकाजी है । कमाऊ लड़की माँ-बाप केलिए सोने की अंडा देनेवाली मुर्गी के समान है । इसीलिए वे उसकी शादी कराना नहीं चाहते । वे उसकी आय से उसकी छोटी बहनों की शादी करा देते हैं । "इस में लेखिका यह दिखने की कोशिश कर रही है कि स्वावलंबी होना नारी केलिए वरदान की जगह पर अभिशाप बन जाता है ।"३३ अर्थ की अधिकता या स्वावलंबी होने के कारण परिवारवाले उसे अर्थ केलिए ही चाहते हैं । वे उसकी संवेदनाओं एवं भावनाओं का ज़रा भी कद्र नहीं करते हैं ।

२.२.९ मेहरुन्नीसा परवेज़

मेहरुन्नीसा परवेज़ की नायिकाएँ ज़्यादातर मध्यवर्ग एवं निम्न वर्ग की है । उन्होंने नारी के दर्द को पहचान लिया है । उनके नारी पात्र पैसे के अभाव में यातनाएँ सहनेवाली होती है, या दो पुरुषों के बीच फाँसनेवाली होती है, या पति से सुख न भोगने के कारण और कहीं अपने शारीरिक एवं मानसिक संबंध रखनेवाली होती है । उनकी नायिकाएँ पति को छोड़ती नहीं पर भटकती रहती है ।

"बटवारे की फंस" की नायिका दो पुरुषों के बीच फंसी हुई है । एक से वह प्रेम करती है । दूसरे के बच्चे की माँ बनने वाली है । उसके अंदर यह संघर्ष होता है कि वह किसके साथ अपना जीवन बिताये । अंत में वह अपने मातृत्व को सार्थक करती हुई अपने बच्चे के पिता के साथ जीवन बिताने का फैसला करती है ।

"बीच का दरवाजा" की नायिका पति के अन्य पुरुष से संबंध होने के कारण उसका त्याग कर देती है । वह उसे महसूस करवाना चाहती है कि वह गलत कार्य पति का भी बर्दाश्त नहीं करेगी । इसकेलिए उसे समाज में व्यथित जीवन ही क्यों न व्यतीत करना पड़े।

"क्यों नहीं" कहानी की गुड़िया भावुक और कल्पना जगत् में जीनेवाली लड़की है । उसके पड़ोस में आई.ए.एस ट्रेनिंग केलिए आये दिनेश के साथ वह प्यार करती है । लेकिन दिनेश अपनी माँ की अंतिम इच्छा की पूर्ति करने केलिए किसी अन्य लड़की से शादी करता है । इस से गुड़िया टूट जाती है । लेकिन उसकी माँ उसे नयी राह दिखाकर भविष्य के प्रति सजग कराती है । वह खूब परिश्रम करके आई.ए.एस पास होती है । पुरुष के द्वारा धोखा खाने से ज़िंदगी समाप्त नहीं होती है । नयी राहें हमेशा सामने रहती है । लेकिन उसे ढूँढने एवं पहचानने की ज़रूरत है । अक्सर लड़कियाँ पुरुष से वंचित होने पर ज़िन्दगी से हार जाती है । लेकिन गुड़िया उच्च शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनती है ।

"शिनाख्त" कहानी की नायिका अपने पति की सभी बुरी आदतों को जानकर उसे सह लेती है । लेकिन नारी की सहनशीलता को वह भी पार करती है, जब अपनी बेटी के जीवन को बर्बाद होते देखती है ।

मेहरुन्नीसा परवेज़ के अनुसार नारी सदैव पुरुष के ही संदर्भों और रिश्तों-नातों से जानी जाती है । इसीलिए उनकी "साल की पहली रात" कहानी की नायिका पूछती है - "क्यों

रेशमा, क्या औरत हमेशा आदमी के ही नाम से जानी जाएगी ।"३४

मेहरुन्नीसा परवेज़ की कहानियों की निम्न एवं मध्य वर्ग की युवतियाँ घर के आर्थिक स्थिति में वृद्धि लाने वाली है । ये अविवाहित युवतियाँ काम काजी होने के कारण घर की आय को बढ़ाती है । इसी वजह से घरवाले उनकी शादी कराना नहीं चाहते हैं । क्योंकि वे घर की आय को बंद कराना नहीं चाहते । "ऐसी नारियों के दु:ख अकेलापन एवं उदासीनता का चित्रण उन्होंने "सज़ा" , "अकेला गुलमोहर" , "विद्रोह" आदि कहानियों में किया है ।"३५ ये नारियाँ चाहकर भी परिवार के इस बंधन से बाहर नहीं निकल पाती । ये अपनी पारिवारिक अस्मिता को कायम रखकर अपनी वैयक्तिक अस्मिता को खो बैठती हैं । दोनों को एक साथ लेकर चलने की शक्ति उनमें नहीं हैं । उन्हें तो किसी एक को न्योछावर करना पड़ता है ।

"पसेरी भर जवानी" की नायिका आदर्श पत्नी है । लेकिन आर्थिक तंगी की वजह से वह गलत रास्ते पर चलने केलिए विवश हो जाती है । उसकी सहेली भी उसे गलत रास्ते अपनाने की सलाह देकर कहती है - "काहे आँखें दिखा रही है । बड़े-बड़ों की नस देखी हूँ, तेरी गरीबी देखी नहीं जाती । वह पीली कोठी वाले साहिब कई बार तुम्हें याद करते रहे , हो आया कर । दो-चार रुपये हथेली पर आ जाऐंगे ।"३६ जिस तरह आर्थिक स्वावलंबी होकर भी नारी अपनी अस्मिता केलिए जूझ रही है उसी तरह आर्थिक अभाव भी उसे अपनी अस्मिता खोने में विवश कर रही है ।

"विद्रोह" कहानी में कामकाजी अविवाहित युवती की त्रासदी का चित्रण है । इस कहानी की नायिका नीना के सिर पर अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ थी । इसी कारण उसके लिए विवाह एक सपना बनकर रह गया । उसके घर में किसी को उसके विवाह की चिंता नहीं है । नीना अपने अस्तित्व के प्रति सचेत होने लगती है । वह नौकरी छोड़कर अपने आफिस के नायडू के साथ विवाह करना चाहती है, और इसकेलिए त्यागपत्र भी लिखती है । लेकिन उस दिन नीना के पिता उसके पास आकर रोता हुआ कहता है - "नए चश्मे से कुछ भी नहीं होगा, आपराशन करना होगा, वरना मैं अंधा हो जाऊँगा ।"३७ यह सुनकर वह मुट्ठी में रखे त्यागपत्र के टुकड़े-टुकड़े कर देती है ।

नीना अपने परिवार केलिए स्वयं आहुती देती है । कामकाजी लड़की परिवार का आश्रय बन जाती है और इस आश्रय को बरकरार रखना उसकी मजबूरी बन जाती है ।

"भारतीय समाज में विवाहित पुरुष अपने परिवार की ज़िम्मेदारी उठाता है लेकिन विवाहित नारी परंपरा के कारण ऐसा नहीं कर सकती । विवाह के बाद वह ससुरालवालों की होकर रह जाती है । इसी परंपरा के कारण नारी को या तो अविवाहित रहना पड़ता है, या विवाह के बाद अपने माँ-बाप की ज़िम्मेदारी को छोड़ना पड़ता है । यही परंपरा की त्रासदी है ।"३८ इसके विरुद्ध लड़ने केलिए नारी में आत्मविश्वास एवं शक्ति की ज़रूरत है, और पुरुष को भी इसकेलिए उसका साथ देना है ।

मेहरुन्नीसा जी की "कयामत आ गई है" कहानी की बेटी साहसी है । उसकी माँ ने अपने प्रेम को छिपाकर उसकी बली चढ़ा दी थी । लेकिन बेटी अपने प्रेम को न्योछावर करने केलिए तैयार नहीं है । वह अपने प्रेम को त्यागकर किसी दूसरे के साथ शादी करना नहीं चाहती है । क्योंकि उसकी माँ ने जो गलती की थी आज वह उसे दोहराना नहीं चाहती । उसे समाज से नहीं अपने आप से डर है । अपनी मोहबत का गला घोटकर जीवन भर घुट-घुट कर जीना उसे मंजूर नहीं है ।

"आकाशनील" कहानी की नायिका सक्षम होने पर भी समाज से डरती है । वह किसी से प्यार तो ज़रूर करती है, लेकिन अंदर ही । वह उसे प्रकट नहीं कर पाती । क्योंकि वह जानती है कि किसी पुरुष के नाम से अगर वह जुड़ गयी तो वह अपने बच्चों को समाज में सुरक्षित स्थान नहीं दिला पायेगी । समाज के अपमान के डर से वह अपने प्रेम को अंदर समेट कर मन ही मन घुटती रहती है । उसका प्यार आकाशनील के फूल की तरह है, जो ऊँचा होने के कारण तोड़ा नहीं जाता ।

"आकृतियाँ और दीवारें" की नायिका तलाक़शुदा है । वह भाई के साथ रहकर नौकरी करती है । नौकरी करने पर भी वह भाई के घर में एक बोझ बन जाती है । उसके अनुसार "लड़की जीवन भर माँ की दहलीज़ पर रह सकती है पर ब्याही लड़की आँख में पड़े बाल की तरह खटकती है ।"३९ यह हमारे समाज की सोझ है । इसलिए लड़कियाँ ससुराल में तकलीफें सहकर रहती है ।

२.२.१० शशिप्रभा शास्त्री

शशिप्रभा शास्त्री की कहानियों की नायिकाएँ अपने योग्यता के अनुसार सम्मान न पानेवाली है । उन्होंने अपनी कहानियों में बदलते हुए जीवन संदर्भ में स्त्री-पुरुष संबंधों का विश्लेषण किया । ज़्यादातर कहानियों में उन्होंने मध्यवर्गीय परिवार के पति-पत्नी के बीच

होनेवाले विसंगतियों को चित्रित करने की कोशिश की है । "इनकी कहानियों की नारियाँ शिक्षित और स्वतंत्र होने पर भी उतनी स्वतंत्र नहीं है, व्यथित ही अधिक है ।"४०

"एक-तूफान: एक सोता" की नायिका कामकाजी है । आर्थिक रूप से स्वस्थ है । फिर भी वह परेशान एवं दु:खी है । आर्थिक स्वावलंबन स्त्री की समस्याओं का समाधान नहीं है । कभी कभी यह उसके सामने समस्या भी खड़ा कर देता है ।

"काश ! मैं सुधा होती" कहानी की नायिका उचित वर न मिलने के कारण दु:खी है । उसमें सामाजिक बंधनों को तोड़ने की ताकत नहीं है । उसके पिता दहेज एवं जाति-पांति के कारण बार-बार उसके लिए वर ढूँढने में असमथ है । तब वह सोचती है कि "काश मैं सुधा होती" । उसकी सहेली है सुधा । सुधा ने अपनी इच्छा के अनुसार अन्य जाति के लड़के के साथ शादी की । सुधा ने कभी भी समाज की परवाह नहीं की । नायिका चाहती है कि सुधा की तरह वह भी किसी से प्यार करें, भाग कर शादी करें और खुशी से जिये । लेकिन उसमें वह ताकत नहीं है कि ऐसा कर सकें । वह अपने आप में अस्वतंत्र है।

"अग्निरेखा" कहानी की नायिका अपाहिज है । पति केलिए उसका कोई महत्व नहीं है । उसकी बहन को पति के साथ संबंध रखते देखकर भी वह कुछ नहीं कर पाती है । अपनी जगह पर अपनी ही बहन को देखकर वह मृत्यु से भी भयानक स्थिति में जी रही है । कोई भी औरत अपने पति के साथ अन्य औरत के संबंध को सहने केलिए तैयार नहीं होगी । जब वह औरत अपनी ही बहन हो तो उसके दिल की हालत क्या होगी यह एक औरत ही समझ सकती है ।

"गुंबद" कहानी की माँ युवावस्था में विधवा हुई । वह अपने बेटे की परवरिश केलिए रिश्तेदार एवं समाज से टकराती है । उसने सिलाई-कढ़ाई करके बेटे को पढ़ाया और अपनेलिए एक मकान भी बनवाया । बेटे का ब्याह होता है और उसके बच्चे भी होते हैं । लेकिन एक दुर्घटना में बहु की मृत्यु होती है, और वह बच्चों की देखभाल केलिए बेटे के साथ रहती है । माँ बेटे की दूसरी शादी करवाती है । माँ के पड़ोस के लोगों को सिलाई-कढ़ाई सिखाना, उनका आना-जाना नई बहु को पसंद नहीं है । माँ तो अब यह काम अपनी मानसिक सुख केलिए करती है, पैसे केलिए नहीं । पहले इसी काम से उसने अपने बेटे की परवरिश की थी । लेकिन अब बेटे एवं बहु को यह अच्छा नहीं लगता । इसलिए माँ अपने घर लौट आती है । जिस कला ने उसे ज़िन्दा रखा था, उसका अपमान वह सह नहीं सकती।

"अपने घर-परिवार केलिए वह सब कुछ सह लेती है । लेकिन जब उसके अस्तित्व पर संकट आता है तब वह उसके खिलाफ लड़ती है ।"४१ यहाँ माँ अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा केलिए बेटे का घर छोड़ती है । क्योंकि कढ़ाई-सिलाई की कला ही उसके अस्तित्व की पहचान है । उसे छोड़कर वह जीना नहीं चाहती ।

२.२.११ सूर्यबाला

सूर्यबाला ने अपनी कहानियों में नारी के मन के अंतर्द्वंद्वों का चित्रण किया है । इनकी कहानियों के बारे में डॉ. मधुरेश का कहना है - "वे मध्यवर्गीय समाज के परिचित यथार्थ का सादगी और विश्वसनीयता के साथ अंकित करती है ।"४२

"पुल टूटते हुए" कहानी की 'स्मिता' आधुनिक विचारोंवाली नारी है । वह पति की इच्छा के अनुसार जीना नहीं चाहती । वह अपनी ज़िन्दगी अपनेलिए जीना चाहती है । इसीलिए लंबी उम्र तक विवाह न होने पर भी वह ऐसे पति की तलाश में है, जो उसे समझ सके । वह अपनी पहचान बनाये रखना चाहती है । अपनी अस्मिता को दबाकर समाज में जीना नहीं चाहती ।

इसके विपरीत "रेस" कहानी की नायिका का कोई अस्तित्व नहीं है । पति केलिए वह सिर्फ शरीर है । वह पति की इशारों पर चलनेवाली एक कठपुतली की तरह है । वह चुपचाप सब कुछ सह लेती है । पति की सेवा करने के बाद प्यार की जगह उसे सिर्फ डांट ही मिलता है । पति केलिए ज़िन्दगी "रेस" के समान है । वह ज़िन्दगी में सिर्फ आगे बढ़ना चाहता है । जीवन की इस "रेस" में वह न पत्नी को देखता है, न उसकी भावनाओं को ।

सूर्यबाला की "निर्वासित" कहानी की साँस बहु के आने से निर्वासित होती है । बहु के आने के बाद वह सिर्फ एक जगह बैठने लायक हो गयी है । पहले घर में उसका रोब चलता था । अब वह घर में परायी हो गयी है ।

२.२.१२ मालती जोशी

मालती जोशी की कहानियों के नारी पात्र अपने परिवार में समस्याओं से जूझ रहे हैं । इनकी नायिकाएँ परिवार के बीच हमेशा पीसती रहती है । फिर भी वे अपने परिवार के बीच अपनी अस्मिता को कायम रखने की कोशिश तो ज़रूर करती हैं ।

"दंभ के घेरे" और "एक घर सपनों का" कहानियों के नारी पात्र अपनी इच्छाओं को लेकर ज़िंदगी को अलग नज़रिये से देखने की कोशिश करते हैं । "दंभ के घेरे" कहानी की बड़ी बेटी एक नौकरानी के बेटे से यह जानकार भी शादी करने से इन्कार करती है कि वह डाक्टर है । यह फैसला उसने अपनी इच्छा से किया है । लेकिन उसकी छोटी बहन उसी नौकरानी के बेटे से शादी कर सुख से जी रही है । दोनों ने अपने व्यक्तित्व को बनाये रखने की कोशिश की है ।

मालती जोशी सठोत्तर युग की एक सशक्त और संवेदनशील महिला कहानीकार है । उन्होंने नारी मन की तह तक उतरकर पारिवारिक जीवन में व्याप्त विभिन्न समयाओं को सहजता से प्रस्तुत किया है ।

उनकी "पराजय" कहानी की नायिका कामकाजी औरत है । काम के बोझ के कारण वह अपने बच्चे को प्यार नहीं कर पाती । उसका गुस्सा एवं घुटन हमेशा डांट के रूप में ही बाहर आता है । उसका पति उससे सम्मान चाहता है । लेकिन उसे भी वह दे नहीं पाती है । वह छोटी-छोटी बातों पर परेशान हो जाती है । उसकी यह परेशानी गुस्से का रूप धारण करती है, और वह झगड़ने लगती है । जब उसका पति किसी छोटे काम में लापरवाह होता है या भूल जाता है, तो वह गुस्से से कहती है - "बस यूँ ही कल-कल करते रहिए कल कह रह थे कि नंबर भूल गया । आज फोन करने की याद नहीं रही । कल और कोई बहाना मिल जाएगा । दफ्तर का काम पहले होना चाहिए । उसमें कोई भूल नहीं होगी । सारी लापरवाही तो मेरे लिए है ।"४३ कामकाजी नारी केलिए दफ्तर एवं परिवार की जिम्मेदारियों को एक साथ निभाना मुश्किल हो जाता है । किसी एक की लापरवाही वह नहीं कर सकती । दोनों के बीच में रहकर वह अपनी ज़रूरत और अपनी एहमियत भूल जाती है ।

"आनंदी" कहानी की "आनंदी" का पति निकम्मा है । इसलिए उस पर परिवार का बोझ है । नौकरी करके वह घर संभालती है । उसे घर का सारा काम भी करना है और बीमार पति की सेवा भी करनी है । वह अपनी नियति समझकर सब कुछ सह लेती है । बेटी भी भाग कर शादी करती है । आनंदी के अनुसार सीता को तो चौदह साल वनवास काटना पड़ा था । लेकिन उसे तो कितना साल यह भुगतना पड़ेगा मालूम नहीं है । आनंदी के समान ज़िंदगी भर परिवार की जिम्मेदारियाँ अपने कन्धों पर लेकर जीनेवाली बहुत सारी औरतों को हम अपने चारों तरफ देख सकते हैं ।

"मुट्ठी भर खुशी" की नायिका को माता-पिता की मृत्यु के बाद छोटे भाई-बहनों की ज़िम्मेदारी अपने कन्धों पर ढ़ोना पड़ता है । इसी वजह से छोटी उम्र में वह बुज़ुर्ग बनती है । आर्थिक रूप से स्वावलंबी होकर भी वह दु:खी है । घर में सब उसकी बुढ़ापे की चिंता करते हैं । किसी को उसकी शादी की चिंता नहीं है । "घर के भाई बहनों केलिए उसने अपना अस्तित्व खो दिया है ।"४४ किसी को उसकी परवाह नहीं है ।

"मध्यांतर" की नायिका शादी से पहले दहेज जुटाने केलिए नौकरी करती है । लेकिन शादी के बाद भी उसे नौकरी करना पड़ता है । क्योंकि नौकरीपेश होने के कारण ही उसकी शादी हुई थी । पहले अपनी शादी का बोझ उसके कन्धों पर था, तो अब उसकी ननंदों की शादी का बोझ उसके कन्धों पर है । आर्थिक संपन्नता उसे स्वावलबी एवं स्वतंत्र करने की बजाय उसे बंधन-युक्त कर देती है ।

"स्वयंवर" कहानी की "प्रभा" परिवार केलिए ही जीती है । वह परिवार केलिए निरंतर त्याग करती है । पहले वह परिवार केलिए कुंवारी रहती है । अंत में परिवार केलिए ही स्वयं "वर" चुनती है । "वह पारिवारिक खुशी एवं ज़िम्मेदारी केलिए अपने सपने और अस्तित्व को भुला देती है ।"४५ आर्थिक स्वावलबन होने से नारी की स्थिति कुछ खास नहीं बदलती । बल्कि अर्थ के कारण शोषण ज़्यादा होता है । कहानी की नायिका प्रभा इसका उत्तम उदाहरण है । वह अपने लिए स्वतंत्र रूप से फैसला नहीं लेती है । सब कुछ परिवार के मद्दे नज़र रखकर ही करती है । वह सिर्फ सब की जरूरतों को पूरा करनेवाली एक मशीन बन कर रह जाती है । उसका अपना कोई अस्तित्व या अस्मिता नहीं है ।

मालती जोशी की "छोटी बेटी का भाग्य" कहानी की छोटी बेटी छोटी होने के कारण अभागन है । उसे हमेशा बाकी बहनों का बचा-खुचा ही मिलता है । शादी के मामले में भी ऐसा ही हुआ । बड़ी लड़कियों की शादियों के बाद उसके पिताजी के पास कुछ बचा ही नहीं था । इसलिए उसने छोटी बेटी की शादी ऐसे पुरुष के साथ तय की कि वह विधुर एवं एक बेटी का पिता भी है । इस शादी केलिए वह तैयार नहीं थी । तब उसके घरवाले उसे मनाने केलिए कहते हैं - "कुछ तो अक्ल से काम लिया करो । दादा के बुढ़ापे का तो ख्याल किया होता । समय से शादी हो जाती तो तुम भी बच्चों वाली हो जाती कि नहीं अब तक? उनका क्या? मर्द मानुस है सौ रिश्ते लग जाएंगे । यही हमारी सामाजिक स्थिति है ।"४६ इस तरह वह उसकी शादी करा देते हैं । हमारी सामाजिक स्थिति ऐसी है कि लड़की हमेशा

माँ-बाप केलिए बोझ बन जाती है । वे तो इस बोझ को कहीं भी उतार देना चाहते हैं । इसकेलिए लड़की की मर्ज़ी की ज़रूरत नहीं है ।

२.२.१३ मंजुल भगत

मंजुल भगत की कहानियों की नारियाँ शोषित एवं पीड़ित है । "ले सर्वसुहागन करबरा" की बहु अपने सास द्वारा सतायी जाती है । क्योंकि उसका पिता गरीब है, और उसका पति उसे बहुत प्यार भी करता है । वह अपने मर्ज़ी से कुछ नहीं कर सकती है । अपनेलिए एक छोटी सी चीज़ खरीदने के कारण उसे जला दिया जाता है ।

"अपना अपना नशा" कहानी की माँ बच्चों को बड़े स्कूल में पढ़ाना चाहती है, और स्कूल में भर्ती भी करवाती है । लेकिन गरीबी के कारण लाख कोशिश करने पर भी वह फीस के अलावा बच्चों की ऊँची माँग को पूरा नहीं कर पाती ।

"खोज" कहानी की नीलिमा निजी अस्तित्व की खोज में है । नीलिमा शिक्षित कामकाजी एवं विवाहित नारी है । वह घर एवं दफ्तर की दोहरी ज़िम्मेदारी निभा रही है । वह अपने आसपास के परिवेश में अपने आप को खोजती है । उसको अपना परिचय बेटी, पत्नी, या दफ्तर की कॉपी राईटर मिज़ेज वर्मा के रूप में अपूर्ण लगता है । "....मिज़ेज वर्मा, नीलिमा, नीलु ये सब अलग-अलग नाटक में किये गये रोल हैं । उसके अंदर का जो "मैं" हूँ उसका क्या रोल है? ।"४७ नीलिमा जब माँ बनती है तब उसे पूर्णता का आभास होता है । "स्व" की खोज में बेचैन रहनेवाली नीलिमा मातृत्व को ही "मैं" समझकर संतुष्ट होती है । व्यक्तित्व की खोज आजीवन चलनेवाली प्रक्रिया है, जो कभी समाप्त नहीं होती है ।

मंजुल भगत की "निशा" कहानी की निशा बेटी होकर भी घर में बेटे का अधिकार और सम्मान हासिल करती है । पिता की मृत्यु के बाद बेटे की तरह वह परिवार का उत्तरदायित्व निभाती है । बेटे को लोग बुढ़ापे का सहारा समझते हैं और बेटी को बोझ । ऐसे लोगों केलिए निशा एक उदाहरण है । "मंजुल भगत की "निशा" कहानी की निशा के चरित्र का सृजन वर्तमान युग की नारीवादी मान्यताओं के अनुरूप हुआ है । निशा आधुनिक युग की युवती है, पुरानी मान्यताओं और परंपराओं को नकारते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना चाहती है ।"४८ यहाँ निशा के ज़रिए लेखिका पुरुष श्रेष्टता को नकारती है । शिक्षा प्राप्ति से आत्मनिर्भर बनकर निशा अपनी अस्मिता बनायी रखती है और आत्मसम्मान की ज़िंदगी जीती है । निशा पुरुष विरोधी नहीं है । वह पुरुष से कम भी नहीं है ।

मंजुल भगत की "संबंधहीन" कहानी की ललिता एक वेश्या है । वह साहसी नारी है । वह वेश्यावृत्ति के कारण प्राप्त बच्चे को जन्म देना चाहती है । वह बच्चे को अपने शरीर का हिस्सा मानती है । इसीलिए वह समाज के डर से उसे मारना या छोड़ना नहीं चाहती । वह जानती है कि समाज आसानी से उसके बच्चे को नहीं अपनायेगा और वह यह भी जानती है कि बच्चे के परवरिश केलिए उसे बहुत यातनाएँ भुगतना पड़ेगा । फिर भी वह अपनी गरीबी एवं अपमान को सहकर बच्चे को पालने का निर्णय लेती है ।

२.२.१४ मणिका मोहिनी

मणिका मोहिनी की नायिकाएँ बेचारी नहीं हैं । वे अपना रास्ता स्वयं तलाशती हैं । "मणिका मोहिनी के स्त्री-पात्र लिजलिजी भावुकता के वशीभूत हो अपना जीवन नष्ट नहीं करते । जीवन को देखने का इनका नज़रिया बौद्धिक और तटस्थ है ।"४९

"चुपके के दायरे" की पत्नी मीनल को पति ने पूरी आज़ादी दी है । लेकिन वह अपने आप को स्वतंत्र महजूस नहीं करती । उसकेलिए आज़ादी का मतलब उसके पति का दिया हुआ आज़ादी नहीं है । वह संस्कारग्रस्त भारतीय नारी है । इसलिए वह अपने पति की दी हुई आज़ादी से दुःखी है । आज़ादी किसी से उदारतापूर्ण दी हुई चीज़ नहीं है । वह हमारा हक है और उसे हम महसूस करते हैं ।

"आवाज़ों के प्रेत" की माँ अपनी बेटी को अपनी तरह बनाना नहीं चाहती है । वह चाहती है कि जो आज़ादी उसकेलिए सपना था, वह अपनी बेटी को मिले । वह अपनी बेटी को आत्मनिर्भर बनाना चाहती है । उसके अनुसार इसकेलिए शिक्षित होना ज़रूरी है । वह यह कभी नहीं चाहती कि बेटी उसकी तरह पुरुष के हाथ का खिलौना बने । सिर्फ शिक्षा प्राप्त होने से स्त्री आत्मनिर्भर नहीं बनेगी । इसकेलिए किसी का साथ होन भी ज़रूरी है । "आवाज़ों के प्रेत" की माँ अपनी बेटी का साथ देकर उसे आत्मनिर्भर बनाती है ।

"टूटने से पहले और टूटने के बाद" की नायिका कला में अभिरुचि रखनेवाली है । लेकिन उसके पिता को यह पसंद नहीं है । वह अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध नाटक में भाग लेती है। वह अपनेलिए, अपनी कला केलिए आज़ादी चाहती है । इसीलिए वह पिता के विरोध के परवाह किये बिना नाटक में भाग लेती है । लेकिन ऐसे करने पर वह पहले से भी अधिक गुलाम महसूस करती है । क्योंकि नाटक में भाग लेने के बाद सभी ने उससे बोलना बंद कर दिया । अपनी आज़ादी केलिए वह लड़ती है, लेकिन पराजित होती है ।

२.२.१५ कुसुम अंसल

कुसुम अंसल की ज़्यादातर कहानियाँ नारी मनोविज्ञान पर आधारित है । इनकी नायिकाएँ परंपराओं एवं रूढ़ियों को तोड़ना चाहती है । इसकेलिए मेहनत भी करती है । लेकिन वे वहाँ से निकल नहीं पाती हैं ।

"स्पीड ब्रेकर" कहानी की नायिका तनु विद्रोह करना चाहती है और मौका मिलने पर विद्रोह भी करती है । लेकिन उसे कुछ भी हासिल नहीं होता ।

"अपना आप" कहानी की नीना विश्व विद्यालय में पढ़ाती है । उसका पति फोटोग्राफर है । नीना के पति की नज़र में उसकी कोई अहमियत नहीं है । नीना की बहन उसे अपनी इच्छा के अनुसार जीने केलिए प्रोत्साहित करती है । नीना पर अपनी बहन का असर होता है । वह भी अपने व्यक्तित्व का विकास खुद करती है और अपनी उपलब्धि को प्राप्त करने केलिए पूरा जीवन उसमें केन्द्रित कर देती है । उसकेलिए अपना काम ही महत्वपूर्ण है । यहाँ नीना अपने जीवन में कुछ बनने केलिए एवं अपनी अस्मिता को बचाये रखने केलिए कोशिश करती है । आज की नारी केलिए अपनी अस्मिता सबसे मुख्य है ।

"उसी जंगल में" कहानी की नायिका ससुराल रूपी जंगल में कैद है । वह पति का अत्याचार खामोशी से सहती है । लेकिन जब पति अपने दोस्त केलिए पत्नी को परोसना चाहता है, तब वह पति का घर छोड़कर मायके आती है । उस क्त वह माँ बनने वाली थी । मायके आकर वह बच्चे को जन्म देती है, बच्चे में वह उस जगल(ससुराल) के वंश को देखती है । इसलिए उसके मन में बच्चे के प्रति कोई लगाव नहीं है । उसकी भाभी बच्चे की ज़िम्मेदारी लेती है । वह ट्रेनिंग पूरा करके किसी दूसरे गाँव में नौकरी करने लगती है । उसका पति तलाक की माँग करके उसे पेपर भेजता है । लेकिन वह इतनी आसानी से उसे तलाक देना नहीं चाहती । क्योंकि तलाक मिलने पर वह दूसरी शादी करेगा और एक ओर स्त्री की ज़िंदगी उजाड़ देगा । लेकिन जब उसे मालूम हो जाता है कि पति ने किसी विधवा की बेटी को अपने पास रख दिया है, और वह माँ बनने वाली है तब वह तलाक देने केलिए तैयार हो जाती है । "इस कहानी की नायिका पति को परमेश्वर नहीं साथी मानती है । साथी अगर संगत न हो तो वह उसे छोड़ना बेहतर समझती है ।"५० आज स्त्री सब कुछ सहकर अपनी विवाहित जीवन बचाने में विश्वास नहीं करती ।

"बस एक क्रास" की "ईबा" भी शादी करना नहीं चाहती है । वह शादी को एक तमाशा मानती है । उसके अनुसार शादी करने वाली हर औरत दुल्हन बनकर अपने अस्तित्व को एक परिहास में बदलती है । शादी के बाद मैं, हम, तुम कुछ भी नहीं रहता, औरत को सिर्फ मिजेज़ बनकर रहना पड़ता है । "कुसुम अंसल की अधिकांश कहानियों में पुरुष का अहं तथा उसके व्यक्तित्व का वर्चस्व नारी जीवन पर हावी है ।"५१ क्योंकि पुरुष कभी भी नारी के व्यक्तित्व को पहचानता नहीं है और नारी अस्मिता का महत्व उसकेलिए अपने अहं से बढ़कर नहीं है ।

कुसुम अंसल ने अपनी कहानियों में यह दिखाने की कोशिश की है कि किस प्रकार स्त्री पुरुष के द्वारा इस्तेमाल हो रही है । उन्होंने आभिजात वर्ग की मानसिकता को सूक्ष्मता से उकेरने की कोशिश की है । इस वर्ग के दोहरे चरित्र को तीखे व्यंग्यात्मक तेवर में उजागर करने में उनको बड़ी सफलता प्राप्त हुई है ।

"टूटी कुर्सी" कहानी की कांता अपने पति से अलग हो गयी है । कांता का चाचा चाहते है कि उसका पति नरेश सारा दहेज लौटा दें । इसकेलिए चाचा ने दहेज की झूठी लिस्ट बनाकर नरेश को दिया । कांता दोनों से छुटकारा चाहती है । क्योंकि उसे मालूम है कि दोनों के दिल में उसके लिए कोई जगह नहीं है । इसीलिए वह कहती है कि "अब नरेश चचा को उतना दहेज वापस नहीं कर सकता इसलिए मुझे अपने घर ले जाने को तैयार है ।"५२ उसका पति और चाचा दोनों ही अपने फायदे के बारे में ही सोचते हैं।

"इंतज़ार" की नायिका परिवार में सब के विरोध के बावजूद अपनी बेटी को अच्छे स्कूल में दाखिला कराने का निर्णय लेती है । वह सोचती है - "सब की इच्छा के विपरीत चुन्नी को मैं ने अच्छे स्कूल में पढ़ने डाला था.... । सब को लगा था कि लड़की पर इतना खर्च करना गलत है । ....बहुत सोचने पर मुझे नौकरी कर लेने का प्रस्ताव रखना पडा था ।"५३ वह अपने स्वयं निर्णय लेने के अधिकार को लेकर परिवार के बदलाव में अपना योगदान दे रही है । अपने पति के होते हुए भी वह मनुज के साथ कभी भी घूमने जाती है । उसके अनुसार यह शरीर उसका है और इस पर उसका अधिकार है । कभी-कभी वह इस पर काबू रखती है, तो कभी-कभी नहीं रख पाती । इसलिए उसे मनुज के साथ अपने संबंध को लेकर कुछ भी बुरा नहीं लगता ।

कुसुम अंसल की "मेरे आशिक का नाम" कहानी की नायिका अपने मित्र सलमान और

पुलिस इंस्पेक्टर के सामने पति को ज़ोर से थप्पड़ मारती है और पति द्वारा लगाये इल्ज़ाम को स्वीकार कर लेती है कि सलमान उसका प्रेमी है । आज नारी अपने जीवन को लेकर जो मान्यताएँ है, उसे समाज में रखती हैं । वह चाहती है कि उनकी मान्यताओं को समाज एवं परिवार स्वीकार करें । यह उसका सामाजिक अधिकार है । वह दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्था को बदलने की आकांक्षा रखती है । क्योंकि तभी वह समाज में अपनी अलग पहचान रख सकती है ।

"एक नई मीरा" की रत्ना विधवा होकर भी लोकलाज या किसी सामाजिक बंधन को नहीं मानती । जब पुरुष विधुर होकर भी जीवन का आनंद लेता रहता है, तब स्त्री भी आज उस आनंद का उपभोग कर रही है । वह जीवन को आसान बनाना चाहती है । वह कहती है "शायद मुझे लोकलाज है ही नहीं....मेरा मन नहीं लगा भगवान में, ढोंग मुझ से होता नहीं है और सच दुनिया पसंद नहीं करती ।"५४ विधवा होकर तथा तीन बेटियों की माँ होकर भी रत्ना शारीरिक तथा सांसारिक दु:ख से परे हो चुकी है । वह किसी सामाजिक बंधन का पालन नहीं कर पाती है । क्योंकि जिस से शादी की थी, उससे वह प्यार न कर सकी और जिस से प्यार किया था, वह उसका न बन सका ।

"अंधी यात्रा" की सीमा अविवाहिता है । उसे अपने व्यक्तित्व में कोई कमी नज़र नहीं आती । वह पुरुष-दृष्टि की खोल से बाहर निकलने की कोशिश कर रही है । पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्रियों की मानसिकता को कुचल कर रख दिया है । नारी को सिर्फ नर की संगिनी माननेवाले समाज की सोच को अब नारी खंडित कर रही है ।

उसी तरह "तुम्हारे मोहरे" की रूबी इक्कीसवीं सदी को चुनौती देनेवाली एवं उससे एक कदम आगे चलनेवाली है । रूबी अकेले जीवन को ही सत्य मानती है । वह अपने काम के प्रति सौ प्रतिशत ईमानदार है । इसीलिए वह किसी की परवाह नही करती । "पढ़ी-लिखी नारी अपना भविष्य खुद बनाती है । इस तरह नारी का आत्मविश्वास इतना अधिक बढ़ जाता है कि फिर वह किसी की भी परवाह करना छोड़ देती है ।"५५ तभी तो रूबी भी किसी की परवाह नहीं करती है ।

२.२.१६ कृष्णा अग्निहोत्री

अनुभूति की प्रामाणिकता इनकी कहानियों की विशेषता है । "अनुत्तर" कहानी की नायिका शीला गरीब है । इसलिए पिता ने उसकी शादी किसी ऐसे आदमी से करा दी, जो

शादीशुदा एवं चार बच्चों का बाप भी है । उन्होंने यह जानने की कोशिश नहीं की कि वह आदमी क्या कर रहा है? उन्हें तो बस बेटी रूपी बोझ को उतारकर रखना था । ससुराल की परिस्थितियों के कारण शीला को मजबूर होकर वेश्या बनना पड़ा । शीला चाहती है कि वह एक अच्छी ज़िंदगी बिता सके । लेकिन एक बार इस कीचड़ में पड़ने के बाद उससे बाहर निकलना मुश्किल है । शीला का कहना है - "मैं तो अभी से इस धंधे से घृणा करती हूँ । कोई मुझे आया बना ले तो मैं आज इस से उबर जाऊँ । लेकिन शंका और शंका । हमारे नियत पर किसे भरोसा ? ।"५६ इस में कृष्णा जी ने यह दिखाने की कोशिश की है कि किस तरह दहेज नामक सामाजिक प्रथा गरीब लड़कियों की ज़िन्दगी बरबाद कर देती है ।

"बया का घोंसला" की बया की माँ अपने बेटी के भविष्य एवं पति के इलाज केलिए नौकरी करती है और एक छोटा सा घर भी बनाती है जो "बया का घोंसला" था । बया शादी करके पति के साथ अमरीका चली जाती है । तीज या त्योहार पर वह अपने घर नहीं आती । माँ की बीमारी का पता चलने पर वह भारत आती है । लेकिन उसके आने से पहले ही माँ की मृत्यु हो जाती है । बया का पति माँ का घर बेचकर अमरीका जाने को कहता है । लेकिन अब उस घोंसले का मूल्य वह पहचानने लगी है ।

बया की माँ अपने अस्तित्व केलिए हमेशा संघर्ष करनेवाली है । इसीलिए वह बेटी के द्वारा अमरीका बुलाने पर नहीं जाती है । " "बया का घोंसला" आधुनिक आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी स्त्री की कहानी है, जो आधुनिक होते हुए भी स्त्रीसंवेदनाओं से युक्त है ।"५७ बेटी बया पहले भौतिकता की दौड़ में लगी हुई थी । लेकिन माँ की मृत्यु ने उसे बदल दिया । इसीलिए वह पति के विरोध में खड़ी होकर अपने घोंसले की रक्षा करती है । क्योंकि उसी में उसका अस्तित्व है ।

"मन के साथ मन के दूर" कहानी की नायिका हंसा की शादी चौदह साल की उम्र में हुई थी । शादी के छः साल के अन्तर वह दो बच्चों की माँ एवं विधवा बन गयी थी । अपने बच्चों की परवरिश केलिए वह घरेलू नौकरानी बनती है और साथ में पढ़ाई भी करती है । चालीस वर्ष के होते वह एक सफल कवयित्रि के रूप में विख्यात हो जाती है । कम उम्र का मानव नामक युवक जो उसका फैन था, उससे शादी का प्रस्ताव रखता है । हंसा मानव को दामाद बनाना चाहती थी । जब हंसा उसे समझाने लगती है, तब वह कहता है -"क्या बड़ी उम्र का व्यक्ति छोटी उम्र के लड़की से विवाह करके सुखी नहीं होता- कोई लड़की बच्चों वाले

पिता से विवाह नहीं करती? यदि लड़की के ऐसा करने से पाप नहीं तो लड़के के ऐसे निर्णय में पाप क्यों? ।"५८ यह ज़रूर आधुनिक सोच है । लेकिन विवाह के बाद एक दिन मानव हंसा को उसकी उम्र का एहसास दिलाता है । हंसा उससे अलग होने का निर्णय लेती है । उसके नाम एक पत्र लिखकर घर छोड़ देती है । हंसा का यह निर्णय हमारे पुरुष प्रधान समाज के विरोध में होगा । लेकिन हंसा आत्मनिर्भर एवं अपने निर्णय लेने में सक्षम नारी है ।

"गाऊन" कहानी की नायिका कामकाजी है । लेकिन वह अपने लिए एक गाऊन तक खरीद नहीं सकती । शादी के कई साल तक उसे माँ बनने से वंचित होना पडॉ । क्योंकि साँस-ससुर जानते है कि बच्चा होने के बाद उस पर भी खर्च होगा । काम करके धन कमाने पर भी परिवार में उसकी कोई जगह नहीं है । पैसा कमाना उसका फर्स है । लेकिन खर्च करने केलिए उसे अनुमति लेनी पड़ती है । अपने शरीर पर भी उसका कोई अधिकार नहीं है । गर्भ में बच्चे को धारण करने केलिए भी उसे अनुमति लेनी पड़ती है ।

"सिसकते सपनों की शाम" की मीरा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हुए भी पति का गुलाम है । परिवार केलिए वह अपने आप को समर्पित करती है । परिवार को ऊँचा दर्जा देने की कोशिश में उसका सुख और चैन समाप्त हो चुका है । पति के साथ उसका संबंध भी औपचारिक हो चुका है । उसकी कमज़ोरी की वजह से पति उससे कहता है - "टॉनिक ले लिया करो, तब वह झुझलाकर कहती है कि - टॉनिक तो दूर रहा थोडॉ चैन ही मिले तो, रात में गुड़िया के कारण नींद टूट जाती है । सुबह उसे दूध देने केलिए जल्दी ही उठना पड़ता है ।"५९ इस तरह वह घर एवं दफ्तर के बीच अपनी अस्मिता को ढूँढती है । जब इस में पराजित होती है, तो उसे अपनी ज़िंदगी वीरान लगती है ।

"औरत जात" की नायिका आज भी वही पुराने जमाने की नारी के समान अपने जीवन की सार्थकता पति एवं बच्चों की खुशी में ढूँढती है । उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है । वह अपने बच्चों एवं परिवार केलिए अपनी अस्मिता खो बैठती है । वह सेक्स से वंचित होने पर अपनी चाह को मिटा कर बच्चों के खातिर सब कुछ सहकर जीवन बिताती है ।

कृष्णा जी की "माथे का आँचल" कहानी की नायिका सुहास साहसी नारी है । वह समाज की लीक से हटकर, किसी की मर्ज़ी न होने पर भी दूसरा विवाह करती है । सुहास के अनुसार उसे भी इंसानों की तरह जीने का अधिकार है । वह समाज से बताना चाहती है

कि स्थितियों को सुधारकर खुली हवा में जीना कोई पाप नहीं । परंपराएँ अच्छी तो ज़रूर है । लेकिन मानव के विकास में बाधा नहीं डालनी चाहिए ।

"एक नया पाथेय" की नायिका शैला अपने पति के दुर्व्यवहार से दु:खी है । उसका पति की कन्याओं के साथ प्रेम संबंध रखनेवाला है । इसलिए वह अपने पति से तलाक चाहती है । लेकिन तलाक लेने के बाद अकेले जीने की हिम्मत जुटा नहीं पाती है । तलाक शुदा औरत समाज की नज़रों में हमेशा चरित्रहीन ही होती है । पति के बिना समाज में अकेले जीने केलिए हिम्मत की ज़रूरत होती है । तभी वह समाज में वह अपनी पहचान बना पाएगी ।

२.२.१७ ऋता शुक्ल

ऋता शुक्ल की "विकल्प"की नायिका रचना अपनी ज़िंदगी अपनी मर्ज़ी से जीना चाहती है । वह अपने पिता के इच्छानुसार शादी करके अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करना नहीं चाहती है । वह अपने पसंद के पुरुष के साथ शादी करना चाहती है । इसलिए उसने अपने विचारों से मेल खाते पुरुष से भागकर शादी की । वह किसी की परवाह नहीं करती है । वह अपने सहेली सितिया से कहती है कि "मैं कोई खरीदी-बिक्री की चीज़ नहीं हूँ कि कोई मुझे पसन्द या न पसन्द करने आये । वह तो तू ही थी सितिया कि गठरी बनी उस कसाई के पीछे-पीछे चली गयी थी। चुपचाप उसके अत्याचार बरदाश्त करती रही थी ।"६० वह अपनी सहेली की तरह पति से मार खाकर अपनी ज़िंदगी जीना नहीं चाहती है । वह आज की नारी है, जो अपने फैसले खुद करती है ।

ऋता शुक्ला की "कदली के फूल" की नायिका शिक्षित है । ज़िंदगी के बारे में, प्यार के बारे में उसके अपने विचार है । वह प्यार के ज़रिये अपना शरीर पति को समर्पित करना चाहती है । ज़बरदस्ती शरीर पर अधिकार ज़माना उसे पसंद नहीं है । इसी वजह से वह पति की नफरत का पात्र बनती है । परिवारवाले उसे हीन दृष्टि से देखते हैं । उसकी साँस उससे कहती है - "तुमने तिरिया जन्म का मोल नहीं समझा बहु, मर्द की इच्छा का मन जो औरत नहीं रखती उसका भी कोई जीवन है भला? ।"६१ हमारे समाज का मानना है कि पुरुष की इच्छा के अनुसार जीना ही स्त्री की नियति है । इसलिए हमेशा नारी को "अड्जस्ट" करना पड़ता है । लेकिन वह यह मनाने केलिए तैयार नहीं है । उसका कहना है - "मैं काठ-पथर की नहीं, ज़िंदा लाश भी नहीं, लेकिन तुम एक बलात्कारी ज़रूर हो । अंधेरे

कमरे में बाज की तरह झपटने से पहले तुमने मुझसे कुछ पूछा होता, क्या मेरी इच्छा-अनिच्छा कुछ भी नहीं थी । तुमने मुझे सही जानने की कोशिश कब की? तुम्हारे लिए मैं शरीर मात्र थी । मेरी आत्मा की एक भी पुकार सुनी तुमने? कभी तुमने पीछे मुड़कर देखा, मुझ पर क्या बीती? मेरी आत्मा की रिक्तता का अनुभव तुम्हें हुआ? ।"६२ आज की नारी सिर्फ पुरुष की इच्छा को महत्व देकर जीने वाली नहीं है । पुरुष की इच्छाओं के साथ वह अपनी इच्छा-अनिच्छा को भी महत्व देती है ।

"उपलब्धि" कहानी की चन्दा पुराने भारतीय परिवार की नारी है । उसका परिवार पुरुष-वर्चस्ववादी है । वहाँ सिर्फ पुरुष की मर्ज़ी ही चलती है । परिवार में उसका कोई व्यक्तित्व नहीं है । "उसकी ज़िंदगी पति के प्यार पाने में, पति की राय में सहमति देने में एवं साँस-ससुर को खुश रखने में है ।"६३ उसकी कोई अहमियत या अस्मिता नहीं है । आज भी हमारे समाज में ऐसी कई स्त्रियाँ है, जो अपने अस्तित्व को पुरुष के सामने रखने में जीवन की सार्थकता मानती है । समाज के हर स्तर में ऐसी स्त्रियों को देख सकते हैं ।

ऋता शुक्ल की "छुटकारा" कहानी की कमली एक दलित स्त्री है । बसन्तु मिसिर नामक उच्च जातीय अमीर व्यक्ति उससे शादी करता है । यह उसकी दूसरी शादी है । उसकी पहली पत्नी कनिया बसन्तु मिसिर की लात-मार को चुपचाप सहनेवाली है । उसने दलित लोगों के वोट प्राप्त करने केलिए ही कमली से शादी की थी । चुनाव में जीतने के बाद वह कमली को घर से निकाल देता है । बाद में राजनीति का पाठ सीखकर जब वह उसे लेने आता है, तो कमली उसके साथ नहीं जाती । वह एक बार फिर पुरुष सत्ता के हाथ का मोहरा बनने केलिए तैयार नहीं होती । स्त्री को ज़लील करनेवाली विवाह व्यवस्था को वह समाज की परवाह किये बिना हिम्मत के साथ तोड़ देती है । "कमली के द्वारा लेखिका यह दिखाना चाहती है कि दाम्पत्य के बाहर भी स्त्री का अस्तित्व है । दाम्पत्य जीवन का अंत होने से एकदम उसका जीवन नष्ट नहीं होगा ।"६४ पति के साथ के बिना भी नारी आज अपना पहचान बनाना चाहती है और उसके लिए कोशिश भी करती है ।

"मनोरमा नहीं मरियम" कहानी की मनोरमा दहेज नामक सामाजिक कुप्रथा से पीड़ित है । दहेज पूरा न देने के कारण वह दिन-रात ससुराल में ताने सुनती है । वह नौकरी करके उसे चुकाना चाहती है । लेकिन इस पर भी उसकी व्यथा समाप्त नहीं होती । यह सब वह इसलिए सहती है कि हमारे समाज ने शादी शुदा औरत को ससुराल से बाहर आकर जीने

की अनुमति नहीं दी है । सब कुछ सहने के बाद भी उसे मजबूर होकर कोख में बच्चे को लेकर बेघर होना पड़ा । इसका कारण यह है कि भारतीय समाज में आरंभ से ही स्त्री को इस प्रकार की शिक्षा दी जाती है कि वह अपने को हीन मानती है । इससे बाहर जाना उसकेलिए मुमकिन नहीं है ।

"अभियोग" की सुजाता गाँव के वातावरण में पली नारी है । वह भारतीय संस्कारों से घिरी एवं दबी हुई है । वह समाज में अपमानित होने के डर से अपना प्यार मन में छिपाकर अन्य पुरुष से शादी करती है । क्योंकि उसे मालूम है कि समाज कभी भी नारी के प्रेम को स्वीकार नही करेगा । अक्सर स्त्रियों के साथ ऐसा ही होता है । वे घरवालों के दबाव में आकर या समाज के डर से अपने प्यार को त्याग देती हैं और घरवालों के द्वारा चुने गये आदमी से शादी करती है । लेकिन इससे न तो वह खुश रह पाती है, न अपने पति को खुश रख सकती है । समाज से लड़कर अपने प्यार को बचाने की हिम्मत स्त्रियों में नहीं होती है । वे हमेशा समाज से लड़ती रहती हैं । समाज में अपना हक एवं अस्मिता खोये हुए जीती हैं ।

"बस आखिरी बार" कहानी की देवयानी अविवाहित नारी है । वह सच्चे प्रेम के कारण उम्र भर अपनी प्रेमी की याद में रहना चाहती है । लेकिन समाज को यह स्वीकार्य नहीं है । अविवाहित नारी को समाज शंका की दृष्टि से ही देखता है । इस कहानी का ओर एक पात्र है मिसेस सिन्हा । वह पढ़ी-लिखी है । फिर भी उसका पति उसे अपने दबाव में रखना चाहता है । इसके बारे में मिसेस सिन्हा कहती है - "मैं तो कहूँगी पढ़लिख जाने के बाद भी हिंदुस्तानी औरतों का कोई अलग सोशल स्टेटस नहीं हो सकता । मेरे पतिदेव जैसे पुरुषों के रहते, स्त्रियों की इंडिपेंडेट थिंकिंग कभी डेवलप नहीं कर सकती ।"६५ पितृसत्तात्मक समाज नहीं चाहता है कि नारी सोच समझ कर कार्य करें । क्योंकि नारी की सोच पुरुष केलिए खतरे की घंटी है । स्वतंत्र रूप से चिंतन करने वाली स्त्री को दबाकर रखना मुश्किल है ।

२.२.१८ मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा वह महत्वपूर्ण लेखिका है "जिसने हिन्दी कथा साहित्य को नगरों, महानगरों की बंद और दुहराव पीढ़ित दुनिया से निकालकर गाँवों, खेतों में पहुँचा दिया है ।"६६

"अब फूल नहीं खिलते" कहानी की "झरना" गाँव से अन्य छात्राओं के साथ पढ़ने केलिए शहर के स्कूल में जाती है । उसकी माँ विधवा है । प्राइमरी स्कूल टीचर की बेटी झरना निर्भीक है । इसीलिए उसने अपने साथ हुए शोषण के खिलाफ साहस के साथ आवाज़ उठायी । गुप्ता सर ने 'झरना' के कॉपी के पीछे अश्लील चित्र एवं शब्द लिखे । उसने इसके बारे में प्रिंसिपल से कहा । लेकिन उस अध्यापक के विरुद्ध कोई कारवाई नहीं हुई । "झरना" इस अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने केलिए गाँव के छात्रों को संघटित करती है । उसे अकेली एवं निस्सहाय समझकर ही उन्होंने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया था । लेकिन झरना को मालूम है कि खामोश बैठने से ऐसा व्यवहार अन्य छात्रों के साथ भी होगा ।

इस कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त शोषण और भ्रष्टाचार का चित्रण किया है । आजकल शिक्षा के क्षेत्र में इस तरह के नैतिक पतन की कई खबरें अखबार में अक्सर आती रहती है । गुरु पिता के समान होता है । लेकिन मूल्य-शोषण के कारण ऐसी घटनाएँ होती ही रहती है । इसका एक कारण यह भी है कि लड़कियाँ इसके विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाती है । उन्हें आत्मसम्मान एवं साहस के साथ ऐसी स्थितियों का सामना करना है । नहीं तो शोषण की यह स्थिति बढ़ती जाएगी ।

"पगला गई है भागो" की 'भागो' अनपढ़, गंवार बाल-विधवा है । वह माँ नहीं बन सकी । पर उसने अपनी बहन की बेटी का पालन-पोषण किया । वह उसे बहुत प्यार करती है । लेकिन उसके पिता उसे मरवा देता है । भागो इसे बर्दाश्त नहीं कर पाती । वह बहनोई के कत्ल के इल्ज़ाम को भरी सभा में खोल देती है । वह यह किसी विचार धारा से प्रेरित होकर नहीं करती । स्त्री सहज वात्सल्य एवं प्रेम से अभिभूत भागो नारीवादी आंदोलन से भिन्न अपना अस्तित्व रखनेवाली है ।

मातृत्व के संदर्भ में आज नारी चेतना ने व्यापक अर्थ खोजा है । मातृत्व का अर्थ अब अपने बच्चे को जन्म देना और पालना तक सीमित नहीं रह गया है । मातृत्व अब गोद लिए बच्चे को ही नही संस्था, समाज, और पर्यावरण सब का पोषण करता है ।

"तुम किसकी हो बिन्नी" कहानी की बिन्नी ऐसी बेटी है, जो बेटे की चाहत के स्थान पर जन्मी थी । उसकी माँ आरती गुप्ता की पहले ही दो बेटियाँ थी । उसने इन दो बेटियों को हताश एवं निरुपाय होकर स्वीकार किया था । बेटे की चाहत के कारण परीक्षण करके तीन बार गर्भपात कर लिया था । जब बेटे की रिपोर्ट आई, तब गर्भपात नहीं किया । लेकिन

इस बार भी लड़की ही हुई । आरती से यह स्वीकारा नहीं गया । अवांछित होने के कारण उसने बेटी की देखभाल तक न की । यहाँ तक कि उसने बेटी को दूध तक नहीं पिलाया ।

बड़ी बहनों के पुराने कपड़े पहनकर और डांट-मार खाकर वह बड़ी हुई । उसके साथ उसकी माँ का व्यवहार भी क्रूर है । उसके पिताजी ने उसे दादी के पास गाँव भिजवा दिया । वह वहाँ रहकर स्कूल भी जाती है । उसकी माँ कुछ ही महीनों में नये बच्चे को जन्म देनेवाली है और उसे आराम की ज़रूरत है । इसलिए पापा उसे लेने गाँव आता है । दादी उसे पापा के साथ भेजना नहीं चाहती है । क्योंकि दादी जानती है कि उसका एक साल बरबाद होगा । हमारे समाज में बिन्नी जैसी कई लड़कियाँ है जो घर, परिवार केलिए बोझ लगती है । लेकिन वे यह नहीं सोचते है कि वह भी इंसान है और उसका भी मन है।

नारी की मुक्ति तभी होगी जब उसे सामाजिक अधिकार प्राप्त होगा । मैत्रेयी पुष्पा की "केतकी" कहानी की केतकी के साथ गाँव के प्रधान ने बलात्कार किया है । लेकिन जब वह पेट से हुई तो किसी और के साथ उसकी शादी कराने की बात चलती है । तब "केतकी" भरी सभा में गाँव के प्रधान गंधर्व सिंह द्वारा अपने ऊपर हुए बलात्कार का पर्दाफाश करती है - "आपका अंश मेरे गर्भ में है । मुझे तो आप का ही हाथ पकड़ना चाहिए ।"६७ समाज में इस तरह के अनाचार का भरी सभा में उद्घाटन का अधिकार स्त्री को नहीं था । पर केतकी हिम्मत जुटाकर अपने ऊपर हुए अत्याचार का खुलासा कर देती है । आज स्त्री अपने ऊपर हुए अत्याचारों को चुपके से सहती नहीं है । वह बेझिझक अपने ऊपर हुए अत्याचारों का पर्दाफाश करती है ।

उनकी "रिजक" शीर्षक कहानी की "लल्लन" अपने पेशे के प्रति ईमानदार थी । उसने अर्थ के बल पर परिवार तथा खुद की काया पलट कर किया था । लेकिन उसे काम करने नहीं दिया गया । काम न करने जाने पर वह पछताती है । पति की अज्ञानता ने उसे कहीं का न छोड़ा । लल्लन जैसे अनपढ़ स्त्री भी यह जानती है कि आर्थिक स्वावलंबन के बिना वह जीवन में सुखी नहीं रह सकती है ।

"बहेलिया" की गिरिजा बचपन से ही अन्याय को बर्दाश्त करती आई थी । उसकी शादी पिता की उम्र के आदमी के साथ की गयी । वह चुप रही । लेकिन जब गाँव के भोली नामक स्त्री के साथ हुए अत्याचार को समाज दबाना चाहता है, तब वह निर्णय लेती है कि वह गाँव में हो रहे अत्याचार को खत्म करेगी और इसकेलिए वह गाँव के प्रधान पद को

प्राप्त करने की कोशिश भी करेगी । स्त्री अपने ज़मीन से जुड़ी हुई है । इसलिए वह अपने ऊपर एवं दूसरों के ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध लड़ती है ।

२.२.१९ दीप्ति खंडेलवाल

दीप्ति खंडेलवाल की "पार्वती की कहानी" की नायिका अपने परिवार केलिए अपनी खुशियाँ न्योछावर कर देती है । हर लड़की की तरह उसके मन में भी किसी से प्रेम करने का सपना है । वह एक पुरुष से प्रेम भी करती है । उसके साथ भाग कर शादी करने का अवसर भी उसे मिलता है । लेकिन वह ऐसा नहीं करती । अपने परिवार की स्थिति को देखकर वह यह निर्णय करती है कि वह अपने भाई, अंधी माँ एवं पिताजी की सेवा करेगी । किसी देवदास की पर्वती बनकर श्रृंगार करने की इच्छा को दबाकर परिवार केलिए सबकुछ समर्पित करने केलिए वह विवश है । हमारे समाज में ऐसी कई लड़कियाँ हैं ।

दीप्ति जी समकालीन कहानी में दाम्पत्य संबंधों को नये सिरे से अभिव्यक्त करनेवाली लेखिका है । उन्होंने जीवन की कई अनकही या अंछुई बातों का समकालीन परिवेश से जुड़कर कहानी में प्रस्तुत किया है।

"अर्थ" कहानी की नायिका कुमुद शादीशुदा है । वह अपने पति की तीसरी पत्नी है । पति के होते हुए भी वह एकाकी है । विवाह की पहली वर्षगांठ पर भी वह न उसके आलिंगन से पिघलती है, न स्वर से । इसलिए वह सोचती है कि "सेठ जी तो इस आग, इस प्यास का अर्थ नहीं समझ पाये हैं ।"६८ वह शरद के प्रेम में डूब जाती है और उसके हाथ पकड़ कर उसके साथ चली जाती है । पुराने जमाने की नारी की तरह आज की नारी सब कुछ सहकर पति के साथ जीने केलिए विवश नहीं है । वह समाज की परवाह किये बिना अपने बारे में सोचती है ।

२.२.२० नासिरा शर्मा

नासिरा शर्मा की "बावली" कहानी की सलमा घर की सब से छोटी बेटी है । उसके किस्मत में हमेशा कष्ट सहने को ही लिखा है । तीन बहनों की शादी के बाद उसकी शादी केलिए घर में कुछ भी नहीं बचा था । इसलिए अपनी शादी केलिए उसे पैसे स्वयं कमाना पड़ा । शादी के बाद भी उसकी मुसीबतें कम नहीं हुई । शादी के सात साल बाद भी वह माँ न बन पायी । उसकी साँस अपने बेटे की दूसरी शादी करवाना चाहती है । पति के चहेती

होते हुए भी उसके सिर पर सौतन का दुःख टूट पड़ा । तब उसे महसूस होता है - "मैं तो बावली ठहरी, प्यार के रिश्तों के नाम पर अपने को बांटनेवाली, मेरे दिल के दलालों में

थके-प्यासे परिंदे अपनी प्यास बुझाते रहेंगे, मगर आखिरी सांस तक जीने और मरने का साथ न निभा पाएंगे । मैं पानी से भरी बावली कहाँ जाऊँगी? मुझे तो अंतिम सांस तक खुले आसमान और ज़मीन के सीने में धंसे जाना है ।"६९ सलमा का उसके परिवार में चौथी होने के कारण कोई पहचान नहीं थी । ससुराल में भी बच्चा न होने के कारण वह अपना पहचान बना न सकी ।

२.२.२१ देवकी अग्रवाल

देवकी अग्रवाल की "घर लौटना" की निशा अपने माँ-बाप की इकलौती बेटी है । मायके में उसे काफी आज़ादी थी । यही नहीं वहाँ उसका रोब भी चलता था । लेकिन चाहने पर भी यह सब उसे ससुराल में प्राप्त नहीं होता है । वह ससुराल में अपना अस्तित्व एवं अस्मिता खोजती है । शायद इसी वजह से वह ससुराल एवं पति के नफरत का पात्र बनती है । अक्सर लड़कियों के साथ ऐसा ही होता । उन्हें अपने घर से भिन्न वातवरण में अपनी शादी-शुदा ज़िन्दगी पड़ती है । ससुराल के वातावरण से अड्जस्ट करने केलिए उसे समय की ज़रूरत है ।

आज भी गाँव में लड़की का अधिक पढ़ना उचित नहीं माना जाता है । अपनी पढ़ाई को लेकर संधर्ष करनेवाली लड़की की कहानी है "दहलीज़ पर" । इसकी नायिका पढ़ना चाहती है । लेकिन उसके सामने बहुत सारे मुसीबतें है जिसे पार करके ही वह अपनी पढ़ाई कर सकती है । भारतीय संस्कृति के अनुसार लड़की घर की दहलीज़ सिर्फ शादी के समय ससुराल जाने केलिए ही पार करती है । इसलिए पढ़ाई केलिए घर के बाहर कदम रखना परंपरा के विरुद्ध है । लेकिन दहलीज़ की नायिका अपनी पढ़ाई केलिए समाज के द्वारा बनाये गये दहलीज़ को पार करने की कोशिश करती है ।

२.२.२२ निरूपमा सेवती

निरूपमा जी ने अपनी कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों में आनेवाले बदलाव और अलगाव को विषय बनाया है । उनकी नायिकाएँ अपने परिवेश के प्रति पूरी तरह ईमानदार है ।

निरूपमा सेवती की कहानियों की नारी युग-युग से प्रताड़ित नारी व्यक्तित्व का बदला लेनेवाली है । उन्होंने अपनी कहानियों में नारी जीवन के अंतरंग का चित्रण किया है । "बद्ध मुष्टि" कहानी की लड़की अपने को अकेली महसूस करती है । वह परिवार में अपनी अस्मिता केलिए जूझती है, परिवार में वह किसी की सूरत देखना नहीं चाहती क्योंकि "एक भाई उसे बदचलन मान नाक-भोह सिकोड़ बात तक नहीं करना चाहता और दूसरा भाई और भाभी हर बार मिलने पर उससे खूब कीमती प्रेजेंट पाने की चाह रखते हैं ।"७० इस कहानी में निरूपमा जी स्त्री-पुरुष के दोहरे नैतिकता को चुनौती देती है ।

"साधारण-असाधारण" पच्चीस साल की अविवाहित सुधा की कहानी है । पंद्रह साल की उम्र में उसकी शादी रवि के साथ तय हो चुकी थी । लेकिन शहर में बढ़िया व्यापार के बनने के बाद रवि के पिता अपने बेटे की शादी किसी अमीर लड़की के साथ कराना चाहता है । इसलिए रवि के पिता पंडित जी से कहलवाता है कि ग्रहयोग न रहने के कारण रवि की शादी सुधा से नहीं हो सकती । रवि के साथ शादी न होने से सुधा के मन में घुटन है । लेकिन उसे दु:ख इस बात की है कि असाधारण ढंग से उसका शोषण हो रहा है ।

"तुम एक गुलमोहर हो" कहानी की नायिका शादी-शुदा व्यक्ति से प्यार करती है । वह सोमेश से प्यार तो ज़रूर करती है । लेकिन उसे ताजुब हो रहा कि सुंदर पत्नी एवं एक प्यारा सा बच्चा होने के बाद भी सोमेश क्यों उससे मिलने केलिए इतना उतावला होता है ।

"सब में से एक" कहानी में उन्होंने दिखाया है कि लड़कियों का समाज में अपना स्वतंत्र अधिकार है और वे नितांत मुक्त भी है । इस कहानी की नायिका नौकरी पेश है । वह अपने माता-पिता के द्वारा कराया गया संबंध तोड़ देती है । वह अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहती है । आज स्त्री अपनी ज़िन्दगी समाज से ड़रकर नहीं अपनी इच्छा के अनुसार जीना चाहती है । आखिर वह भी इस समाज का हिस्सा है ।

२.२.२३ प्रतिमा वर्मा

प्रतिमा वर्मा ने आज के बदलते माहौल में घर की चहारदीवारी से बाहर निकली संघर्षशील नारी की पीड़ा को विभिन्न कोणों से दृष्टिपात किया है ।

"किनारों से दूर" कहानी की नायिका 'रमा' परिवार में अपनी पहचान खोकर बैठी हुई है । रमा अपने पति से कम सुंदर है । पहले वह सोचती थी कि उसके पति के विचार कितने

अच्छे हैं, जिसने इतने खूबसूरत होते हुए भी उसे पसंद किया । लेकिन बाद में उसे पता चला कि उसके पति को पत्नी के रूप में सिर्फ एक स्त्री की ज़रूरत है । वह पत्नी को कोई महत्व नहीं देता है । उसे तो घर गृहस्थी चलाने केलिए एक औरत चाहिए थी । शादी के तेरह साल बाद भी अपनी आशाओं को मारती हुई वह एक लाश की तरह जी रही है । लेखिका के अनुसार वह अपने परिवार का प्रमुख अंग होते हुए भी अपने ही घर में अजनबी है । एक पत्नी के रूप में वह अपने पति के मन में जगह नहीं बना सकी ।

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य में महिला साहित्यकारों का अपना योगदान है । आधुनिक साहित्य में कहानी एक लोकप्रिय विधा है । इस विधा का विकास एवं लोकप्रियता इतनी बढ़ गयी है कि तीन पीढ़ियों के रचनाकर एक साथ सक्रिय रूप में रचना कार्य में जुड़े हैं । महिला साहित्यकार काफी सक्रिय है । उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों को तीव्र स्वर दिया और इस तरह साहित्य में नारी अस्मिता को नये आयाम देकर अपनी खास पहचान बनायी है । उन्होंने नारी के बारे में अनछूए विषयों पर लिखना शुरू किया है ।

हिन्दी की महिला कहानीकार जानती हैं कि नारी अस्मिता का प्रश्न समस्त मानव मुक्ति के साथ जुड़ा हुआ है । इसलिए नारी के विकास केलिए समस्त समाज का विकास ज़रूरी है । एक स्वस्थ समाज में ही नारी अपनी प्रगति कर सकती है । महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में नारी की देवी छवि को तोड़कर उसकी मानवी छवि को उभारने का प्रयास किया ।

घर, परिवार एवं समाज में नारी की अस्मिता को बनाने एवं बिगड़ने की जितने भी कारक हैं, उन पर प्रकाश डालने की कोशिश महिला कहानीकारों ने की है । व्यक्ति के रूप में नारी की अस्मिता को लेकर बहुत कहानियाँ लिखी गयी । पारिवारिक पृष्टभूमि पर भी नये अंदाज़ में उनके जीवन की आकांक्षाएँ, सपनें, संघर्ष एवं अपेक्षाएँ चित्रित की गयी हैं । आज नारी समाज में पुरुष के साथ हर क्षेत्र में मौजूद है, तो नारी की सामाजिक अस्मिता की ओर भी ध्यान देना ज़रूरी हो गया है । क्योंकि आज नारी अपने परिवार के अंदर बंधी हुई नहीं है । वह भी खुला आसमान चाहती है ।

लेकिन हमारी महिला कहानीकारों ने नारी की सामाजिक सरोकार एवं अस्मिता की ओर उतना ध्यान नहीं दिया है, जितना वैयक्तिक एवं पारिवारिक अस्मिता की ओर ।

सन्दर्भ

१. हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का श्रेय -पृ.सं. १७

२. नयी सदी को पहचान-श्रेष्ठ महिला कहानीकार (भूमिका)-ममता कालिया -पृ.सं. ४

३. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन -डॉ.गोरक्ष थोरात - पृ.सं. २१५

४. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन -डॉ.गोरक्ष थोरात - पृ.सं. २१४

५. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन -डॉ.गोरक्ष थोरात - पृ.सं. २१३

६. सठोत्तरी महिला कहानीकार - डॉ. मंजु शर्मा -पृ. सं. ८

७. स्त्री मन की व्यथा और कहानियां (समीक्षा) - रीनु गुप्ता - पृ.सं. ४५

८. स्त्री लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ.सं. १६६

९. नारी अस्मिता के विविध आयाम - डॉ.शनमुखन - पृ.सं. ६७

१०. नारी अस्मिता के विविध आयाम - डॉ.शनमुखन - पृ.सं.

११. स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियाँ -मालती - पृ.सं. १२१

१२. स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियाँ -मालती - पृ.सं. १६७

१३. नई कहानी;दिशा, दशा और संभावना -डॉ.इंद्रनाथ मदन - पृ.सं. ३२

१४. हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ.सं. १२२

१५. साठोत्तर हिन्दी कहानी - डॉ.मालती - पृ.सं. १३५

१६. महानगर की मैथिली - सुधा अरोडॉ - पृ.सं. ११४

१७. अपनी सलीबें (कहानी संग्रह) - नमिता सिंह - पृ.सं. ६६

१८. अपनी सलीबें (कहानी संग्रह) - नमिता सिंह - पृ.सं. ६९

१९. साठोत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ.सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १४५

२०. साठोत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ.सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १५३

२१. नील गाय की आँखें(क.सं) - नमिता सिंह - पृ.सं. ४०

२२. साठोत्तर महिला कथाकार - डॉ. मधु संधु - पृ.सं. ९५

२३. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १४७

२४. शहर के नाम -मृदुला गर्ग - पृ.सं. २६

२५. बाहरी जन - मृदुला गर्ग - पृ.सं. ३६

२६. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ.सं. ११२

२७. साठोत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १४९

२८. हिन्दी कहानी और नारी विमर्श - डॉ.शोभा निंबाल्कर - पृ.सं. १७६

२९. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ.सं. २७१

३०. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ. सं. १६१

३१. ढलान पर -(यात्रामुक्त)क.सं .- राजी सेठ

३२. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में ना री- डॉ.सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १४३

३३. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ.सं. ९५

३४. कहानीकार (पत्रिका) -साल की पहली रात - मेहरुन्नीसा परवेज़ - पृ.सं. १६८

३५. मेहरुन्नीसा परवेज़ की कहानियों में नारी - दक्षिण भारत -अक्तूबर-नवंबर -२००९

३६. पसेरी भरी जवानी - मेहरुन्नीसा परवेज़ - पृ.सं. ८९

३७. सोने का बेसर (क.सं) -विद्रोह - महरुन्नीसा परवेज़ - पृ.सं. १७७

३८. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ.सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १६८

३९. आकृतियाँ और दीवारें - महरुन्नीसा परवेज़ - पृ.सं. ३५

४०. हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ. सं. १५४

४१. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ.सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं.१३०

४२. हिन्दी कहानी: अस्मिता की तलाश - डॉ. मधुरेश - पृ.सं. ११०

४३. पराजय -मालती जोशी - पृ.सं. ३६

४४. हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ. सं. ९९

४५. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे -पृ.सं. १३५

४६. छोटी बेटी का भाग्य - मालती जोशी - पृ.सं. १६

४७. गुलमोहर का गुच्छा (क.सं.) - मंजुल भगत - पृ.सं. ११

४८. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १३८

४९. समकालीन हिन्दी लेखिकाएँ - रामकली सरफ - पृ.सं. १३८

५०. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १७३

५१. हिन्दी कहानी और नारीविमर्श - डॉ.शोभा निंबाल्कर - पृ.सं.१९९

५२. पत्ते बदलते हैं (क.सं) - टूटी कुर्सी - कुसुम अंसल - पृ.सं. ४१

५३. इक्कीस कहानियाँ (क.सं) - कुसुम अंसल - पृ.सं. ३५

५४. क्कीस कहानियाँ (क.सं) - कुसुम अंसल - पृ.सं. ३१

५५. हिन्दी कहानी और नारीविमर्श - डॉ.शोभा निंबाल्कर - पृ.सं. १५८

५६. अनुत्तर - कृष्ण अग्निहोत्री - पृ.सं. ३६

५७. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १६६

५८. मन के साथ मन के दूर - जै सिया राम (क.सं) - कृष्ण अग्निहोत्री - पृ.सं. ८६

५९. सिसकते सपनों की शाम - कृष्ण अग्निहोत्री - पृ.सं. ३८

६०. विकल्प - ऋताशुक्ल - पृ.सं. ३९

६१. कदली के फूल - ऋताशुक्ल - पृ.सं. ४६

६२. कदली के फूल - ऋताशुक्ल - पृ.सं. ३५

६३. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - रेणु गुप्ता - पृ.सं. १११

६४. समकालीन कहानी की स्त्री प्रतिरोधी उन्मुक्तता - प्रेरणा - षीबा एन.बी. - पृ.सं. ८६

६५. बस आखिरी बार - ऋताशुक्ल - पृ.सं. १०४

६६. दुर्ग द्वार पर दस्तकें - राजेंद्र यादव - हंस - दिसंबर २००० - पृ.सं. ६

६७. चिन्हार - मैत्रेयी पुष्पा - पृ.सं. १३

६८. नारिमान (क.सं) - अर्थ - दीप्ति खड़ेलवाल - पृ.सं. ४

६९. बावली - नासिरा शर्मा - पृ.सं. ११८

७०. बद्धमुष्टि - निरूपमा सेवती - पृ.सं. ४८

अध्याय तीन

मलयालम् महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता

३.१. मलयालम् कथा साहित्य में नारी

मलयालम् कथा साहिथ्य के प्रारंभिक काल से लेकर स्त्री साहित्य-रचना का विषय बनी है । आधुनिक मलयालम् कहानीकारों के जीवन-दर्शन गहन, अमूर्त एवं सूक्ष्म थे । उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा अमूर्त प्रतीक बिम्ब एवं मिथक के द्वारा मानव जीवन के आंतरिक सत्य को उजागर किया । "ओ. चंदुमेनन" की "इन्दुलेखा" और "शारदा", "अप्पू नेडुगडी" की "कुंदलता" आदि मलयालम् के प्रारम्भिक उपन्यास के मुख्य पात्र स्त्रियाँ ही हैं ।

"तकषी शिवशंकरा पिल्लै" एवं "केशव देव" की रचनाओं में पुरुष की प्रगति के पीछे की स्त्री की साझेदारी का ज़िक्र हुआ है । इन्होंने नारी जीवन की पीडॉ एवं यातनाओं का स्वाभाविक चित्रण अपनी कहानियों में किया है । "एस. के. पोट्टकाड" एवं "उरुब" ने स्त्री को मानसिक धरातल पर पेश किया । "कारुर नीलकंठ पिल्लै" की स्त्रियाँ अपने चरित्रगत विशेषताओं केलिए विख्यात् हैं । कारुर के "पूवन पषम्" कहानी की नायिका परिवार केलिए स्वयं समर्पित है । सामाजिक समस्याओं के बीच परिवार केलिए जीनेवाली नारी की दुर्दशा का चित्रण इस में हुआ है । "स्त्री पर समाज ने कुछ नियंत्रण रखे हैं । इस नियंत्रण के परे कुछ मानसिक प्रेरणाएँ उसे नियंत्रित करती है । स्त्री के इस रूप करूर के "पूवनप्पषम्" कहानी में प्रकट हुआ है । "१ समाज स्त्री के ऊपर अपना नियम थोपकर उसे अपने नियंत्रण में रखना चाहता है । लेकिन स्त्री की मानसिकता यह मानने केलिए तैयार नहीं होती । न चाहकर भी वह इसके खिलाफ सोचने लगती है ।

मलयालम् के विख्यात कहानीकार "वाइक्कम मुहम्मद बषीर" ने भी नारी की दुर्दशा का दयनीय चित्रण किया है । "एम.टी.वसुदेवन नायर" एवं "टी. पद्मनाभन" की कहानियों के नारी पात्र आदर्श स्त्रियों का नमूना प्रस्तुत करती हैं । एम.टी. की स्त्रियाँ अपनी पवित्रता से नायक को सही रास्ते में लाने की कोशिश करती हैं । उनकी नायिकाओं की पवित्रता गाँव की पवित्रता से जुड़ी हुई हैं । परिवार के पारंपरिक ढाँचे को नकारकर अकेले रहने का निश्चय करनेवाली स्त्रियों का चित्रण भी उन्होंने अपनी कहानियों में किया है । "असुरवित्त" उपन्यास का "कुंञ्जोपोल" , "कालम्" की "सुमित्रा" आदि नारी पात्र अपने निशब्ध सानिध्य से ध्यान का केन्द्र बन जाती हैं ।

आधुनिक साहित्य में स्त्री को एक वस्तु या चीज़ के समान दिखाने की कोशिश हुई हैं । "काक्कनाड़न्" एवं "वी. के. एन" की कुछ कहानियों में स्त्री को सिर्फ शरीर के रूप में

चित्रित किया है । "ओ.वी.विजयन" का "खसाक्किंडे इतिहासम्" आधुनिक काल के सबसे मशहूर उपन्यास माना जाता है । डॉमिनी प्रसाद उसमें स्त्री विरुद्धता ही देखती है । उन्होंने अपने "स्त्री, परिस्थिति, आत्मीयता" नामक किताब में इसका ज़िक्र किया है । "उनके अनुसार "ओ.वी.विजयन" का "खसाक्किंडे इतिहासम्" उपन्यास में स्त्री-विरुद्धता ही ज़्यादा हैं । लेकिन "चविट्टु वंडी" कहानी से लेकर आगे की कहानियों में उन्होंने स्त्री को देवी संकल्पना के साथ जोड़ दिया हैं ।"२

"एम.मुकुन्दन" की कुछ कहानियों के पुरुष स्त्रियों के साथ कामासक्ति रखनेवाले हैं । उनकी स्त्रियाँ सिर्फ पुरुष के काम पूर्ति के उपकरण मात्र बन जाती है । "मुकुन्दन" के पुरुष पात्र स्त्री से प्यार नहीं करते । उनके पुरुष पात्र स्त्रियों को चुन लेते हैं । अर्थात् स्त्री रूपी शरीर को उन्होंने चुन लिया है ।

"सक्करिया" की कुछ कहानियों को सूक्ष्मता से पढ़ने से पता चलता है कि उसमें स्त्री विरुद्धता ही ज़्यादा हैं । "टी.वी.कोच्चु बावा" के ज़्यादातर स्त्री पात्र पति के होते हुए भी अन्य पुरुष के साथ संबंध रखनेवाली हैं । उनकी स्त्रियाँ पारिवारिक ढाँचे को बिखेरनेवाली हैं ।

नारी को प्रमुखता देकर उसकी अनुभूतियों को उसके अपने नज़रिये से देखकर रचना करनेवाले आधुनिक साहित्यकार हैं - "एन. एस. माधवन" , "एन. प्रभाकरन" , "पी. सुरेन्द्रन", "के. ए. सेबास्त्यन", "संदोष एच्चिक्कानम्" आदि ।

"एन.एस. माधवन" के "कोणी" कहानी का मुख्य विषय पति एवं पत्नी के बीच का संघर्ष है । कहानी के पति को लगता है कि उसकी पत्नी उससे अच्छा साहित्य रचना कर रही है । तब उसके अहं पर चोट पहुँचता है । पति के इसी अहं के कारण उनके संबंध में दरारें पड़ती हैं ।

उनकी एक और कहानी है "लंदन बत्तेरियिले लुत्तीनियकल्" । इस कहानी की बच्ची के साथ अध्यापक लैंगिक शोषण करता है । इस के बारे में वह अपनी माँ से आकर कहती है । लेकिन माँ इस पर यकीन करने केलिए तैयार नहीं होती । बाद में माँ को पता चलता है कि बेटी ने जो कहा था वह सच्च है । उस वक्त वह बेटी से उसे छिपाने को कहती है । लड़की अपने साथ हुए अन्याय के बारे में किसी से कह नहीं सकती । यह समकालीन समाज का यथार्थ है । माँ-बाप लड़की के साथ हुए अन्याय को छुपाना चाहते हैं । क्योंकि उन्हें

समाज से जो डर हैं, यही इसका मुख्य कारण है । आये दिन इस तरह का शोषण लड़कियों के साथ होता रहता है ।

३.२ मलयालम् की महिला कहानी लेखन परंपरा

मलयालम् के मशहूर लेखक श्री "सच्चिदानन्दन" का नाम हमेशा स्त्री लेखन "पेण्णेषुत्" से जुड़ा हुआ है । क्योंकि सारा जोसफ की प्रतिष्ठित कहानी संग्रह "पाप का चबूतरा" (पापत्तरा) की भूमिका के रूप में पहली बार उन्होंने "पेण्णेषुत्" (स्त्री लेखन) के सौंदर्य शस्त्र का विस्तार से चित्रण किया है । उनके अनुसार हमारा समाज पुरुष केन्द्रित है । इसलिए स्त्री अपने विचारों को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर पाती है । जब भी स्त्री ने अपनी चुप्पी खोली है, तो उसे बड़े मुश्किलों एवं मुसीबतों का सामना करना पड़ा है । मलयालम् के "के.सरस्वती अम्मा" एवं "राजलक्ष्मी" जैसे लेखिकाओं की ज़िंदगी इसका उदाहरण है । "राजलक्ष्मी की आत्महत्या उनकी इच्छा शक्ति की कमी के कारण नहीं हुई है । बल्कि परिचित अनुभव क्षेत्र को सच्चाई के साथ चित्रण करने की एक स्त्री की कोशिश को पुरुष वर्चस्व समाज के विरोध का कारण भी है ।"३ सच्चिदानन्दन के अनुसार राजलक्ष्मी की आत्महत्या का कारण पुरुष-वर्चस्व वादी समाज का नज़रिया है, जो स्त्री को सच्चाई के साथ लिखने से रोकता है । पुरुष के समान स्त्री सब कुछ खोलकर लिख नहीं सकती । उसे हमेशा यह ड़र लगा रहता है कि कही उसकी अपनी पारिवारिक ज़िंदगी नष्ट-भ्रष्ट न हो जाय । वह समाज में खुलकर मिल जुल नहीं सकती । ये सभी बातें स्त्री के साहित्य क्षेत्र की प्रगति में बाधा बनकर रहती है ।

मलयालम् के महिला कहानीकारों के द्वारा लिखे गये साहित्य को हम तीन वर्गों में बाँट सकते हैं । पहले वर्ग में पुरुष कहानीकारों का अंधानुकरण करनेवाली रचनाएँ आती है । इस में उन्होंने अनजाने में ही सही ऐसी रचनाएँ की है जिस में स्त्रियों का लक्ष्य पुरुष प्राप्ति ही माना है । दूसरे वर्ग में सामाजिक समस्याओं का उल्लेख करनेवाली रचनाएँ आती हैं । ऐसी कहानियों में समस्या को समाज के साथ जुड़कर देखने की कोशिश की गयी है । ललिताम्बिका अंतरजनम् ,पी.वत्सला आदि की रचनाएँ इस कोटी में आती है । तीसरा वह साहित्य है जिसमें विभिन्न तरीकों से नारी स्वतन्त्रता की बात कही गयी है । "सरस्वती अम्मा" , "माधविकुट्टी" , "ग्रेसी", "सारा जोसफ" आदि की कहानियाँ इस कोटी में आती है । उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा स्त्री अस्मिता को उजागर करने की कोशिश की है । इसलिए इस अध्याय में "सरस्वती अम्मा" , "माधविकुट्टी" , "सारा जोसफ" आदि से लेकर

समकालीन “इन्दु मेनन”, “सितारा .एस”, “प्रिया” जैसे कहानीकारों की रचनाओं को केन्द्रित किया है ।

“सारा जोसफ” एवं “माधविकुट्टी” की कहानियाँ स्त्री एवं पुरुष के भिन्न संसार की भिन्नता को व्यक्त करने वाली है । उनका यह मानना हैं कि स्त्री को चुप नहीं रहना चाहिए । उसे तो अपने ऊपर थोपी गई इस चुपी का उल्लंघन करके एक नई भाषा की सृष्टि करनी चाहिए । यही सोच नारी विमर्श को नयी दिशा प्रदान करती है ।

३.२.१. के.सरस्वती अम्मा के पहले के महिला कहानीकार

डॉ.एम. लीलावती के अनुसार मलयालम् साहित्य में स्त्री रचनाओं के बारे में ज़्यादातर अध्ययन नहीं हुआ है । उनके अनुसार - “ पुरुषों के समान स्तर पर रचना प्रक्रिया में जुड़े महिला साहित्यकार हैं । लेकिन केरल के साहित्यिक आलोचकों ने उनका सही मूल्यांकन नहीं किया है ।”४ उन्होंने अपने “स्त्री सत्वाविष्कारम् -आधुनिक मलयला साहित्यत्तिल” नामक पुस्तक में स्त्री रचनाकारों की रचनाओं का सही मूल्यांकन किया है ।

उन्नीसवीं सदी के आरंभ से ही मलयालम् साहित्य क्षेत्र में महिला लेखिकाओं का प्रवेश हुआ था । उस समय मलयालम् के महिला कहानीकारों की कहानियाँ शारदा, लक्ष्मी भाई जैसे महिला मासिक में और भाषा पोषिणी, रसिक रंजिनी कैरली, मंगलोदायम् जैसे पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे । “१९०५ मई के शारदा में प्रकाशित “नानिच्चु पोई (लजाती गयी)” को एम. एम . बषीर मलयालम् के पहली स्त्री लेखिका द्वारा रची गयी कहानी मानते हैं ।”५ लेकिन आलोचकों के बीच इस को लेकर मतभेद है ।

पी.के.कनकलता “मलयालम् की पहली महिला कहानीकार “ “टी. सी. कल्याणी अम्मा” द्वारा रचित “राजपंकजम्” को पहली कहानी मानती है। ”६

“इसके अलावा “एम. सरस्वती भाई” की “तलच्चोरिल्ल्ता स्त्रीकल (बिना अक्ल की स्त्रियाँ)” , “चिन्नम्मू अम्मा” की “ओरु कुलकेस” , “पी. लक्ष्मी वारस्यार” की “इनी एन्दा चेयका (अब क्या करूँ)” , “वी. पार्वती अम्मा की पेशलांगियुड़े कौशलम् (बोलनेवाली की कुशलता)” , “तच्चाट् देवकी नेत्यारम्मा” की “ ओरु यथार्थ भार्या (एक असली पत्नी)” , “वैचित्य मार्गम् (विचित्र मार्ग)” आदि के. सरस्वती अम्मा के पूर्व के कहानीकारों की कहानियाँ है ।”७

सरस्वती अम्मा के पूर्व के कहानीकारों ने पारिवारिक समस्याओं को अपनी कहानी का विषय बनाया । इसके अलावा समाज सुधारक संबंधी विषय जैसे विधवा विवाह, दहेज आदि को लेकर भी उस समय कहानियाँ लिखी गयी।

३.२.२ आधुनिक काल के महिला कहानीकार

स्त्रीत्व के व्यक्तित्व के साथ जुड़ा हुआ एक अर्थ भी है । लेकिन इस ओर किसी का ध्यान अभी तक नहीं गया । हमारे साहित्यकार जब काल्पनिकता में डूबे तब महिला सहित्यकारों ने समाज की समानता एवं भिन्नता को आत्मसात् करके लिखने की कोशिश की । पितृसत्तात्मक समाज के सामाजिक व्यवहार की प्रतिक्रिया के रूप में उन्होंने अपना साहित्य लेखन शुरू किया । यह उनका सामाजिक दायित्व था । महिला कहानीकारों ने शोषण केलिए बाध्य करने वाले विभिन्न अवस्थाओं से गुज़रते नारी का चित्रण किया । उनकेलिए स्त्रीत्व केवल शरीर मात्र नहीं । स्त्री देवी या ऐश्वर्य की देवी ही नहीं । बल्कि उसमें मानव के सहज भलाई एवं बुराई भी है ।

स्त्रियों को समाज के मुख्य धारा में लाने का सब से पहला प्रयास "वी.टी. भट्टतिरिप्पाड" ने किया । उन्होंने नंबूतिरी समाज के पुरुषों को मनुष्य बनाने की कोशिश के साथ नंबूतिरी स्त्रियों को पर्दे के पीछे से बाहर लाने की कोशिश भी की । नंबूतिरी समाज एवं स्त्रियों के सुधार केलिए उन्होंने बहुत कोशिशें की । इस लक्ष्य केलिए उनके साथ बहुत लोग जुड़े हुए थे । लेकिन उस समय सुधारवादी पुरुषों ने अपनी इच्छा के अनुसार स्त्री को बदलने पर ज़ोर दिया गया । इसके कारण इस से जुड़ कर काम करने वाले स्त्रियाँ दुविधा में पड़ गयी ।

ललिताम्बिका अंतरजनम् ने हमारे समाज में सदियों से विध्यमान संकल्पनाओं को पुन: परिभाषित करने की कोशिश की है । के. सरस्वती अम्मा से लेकर राजलक्ष्मी, माधविकुट्टी, सारा जोसफ आदि से गुज़र कर मलमयालम साहित्य का नारी-लेखन के.शाहिना तक पहुँच गया है ।

३.२.२.१ ललिताम्बिका अंतरजनम्

कहानी संग्रह - "अंबिकांजली(अंबिका की अंजुरी)", "आद्यत्ते कथाकाल (पहली कहानियाँ)", "मुडुपड़त्तिल(नकाब में)", "तकरन्ना तलमुरा(बर्बाद पीढ़ी)", "किलिवातिलिलुड़े(झरोके से)",

“ग्रामा बालिका(गाँव की किशोरी-लंबी कहानी)”, “घने जंगल से”, “कन्नीरिंड़े पुंजिरी(आँसू की मुस्कान)”, “आग के फूल”, “चुनिंदा कहानियाँ”, “सत्यत्तिंड़े स्वरम(सच्चाई की आवाज़)”, “विश्वरूप”, “धीरेन्दु मजूमदार की माँ”, “पवित्र मोतिरम(पवित्र अंगूठी)” ।

उपन्यास - “अग्निसाक्षी”

बाल साहित्य - “कुञ्जोमना(छोटी लाड़ली)”, “सायी परञ्जा कथा(साधू की कहानी)”

निबंध - “सीता से सत्यवती तक”

स्त्री अस्मिता अवबोधक कहानी लिखनेवाली प्रथम कहानीकार है “ललितम्बिका अंतरजनम्” । १९०९ में कोट्टारक्करा के एक कट्टर ब्राह्मण परिवार में उनका जन्म हुआ । उस ज़माने में लड़कियाँ स्कूल जाती नहीं थी । इसलिए उन्हें औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं हुई । लेकिन उन्हें संस्कृत, मलयालम्, अग्रेज़ी एवं हिन्दी की शिक्षा घर पर ही दी गयी ।

“१९३७ में प्रकाशित “अंबिकांजली” उनका पहला कहानी संग्रह है ।”८ उन्होंने पहली बार नंबूतीरी समाज की स्त्रियों की समस्याओं को लेकर कहानियाँ लिखना शुरू की । उनके ज़माने में स्त्रियाँ इतने आज़ाद नहीं थी कि उन्हें अपनी अस्मिता के बारे में सोचने का वक्त ही नहीं मिला । उन्होंने अपनी “इत् आशास्यमाणो” , “प्रसादम्” आदि कहानियों में सामाजिक सुधारवाले पुरुष के द्वैत नीति पर तीखा व्यंग्य किया । क्योंकि पुरुषों ने स्त्री को पर्दे के पीछे से बाहर लाने की कोशिश के साथ अपनी इच्छा के अनुसार उसे बदलने की पुरानी रीति को कायम रखने की कोशिश भी की ।

आप पहले नंबूतीरी समाज की स्त्रियों के दु:ख भरी कहानियाँ लिखती थी । लेकिन बाद में उन्होंने मानव जीवन की समस्याओं की ओर मुड़कर कहानियाँ लिखी । “मनुष्य पुत्रन (मानव का बेटा)” इसका उदाहरण है ।

“इत् आशास्यमाणो(क्या यह सरहनीय है)” शीर्षक कहानी में बातों से स्त्री की आज़ादी को मानने वाले नंबूतीरी जाति के युवा लोगों का चित्रण हुआ है । इस कहानी का नायक एन.पी है । उसके अनुसार उसने अपनी पत्नी को आज़ादी दी है । क्योंकि उसका मानना था कि नंबूतीरी समाज की स्त्रियों को आज़ादी की ज़रूरत है । लेकिन उसकी माँ को यह बिलकुल पसंद नहीं था ।

एक दिन दोपहर की नींद के बाद कॉफी न मिलने के कारण वह अपनी पत्नी से नाराज़ होता है । उसके अनुसार उसकी पत्नी अपनी आज़ादी का दुरुपयोग कर रही है । लेकीन उसकी पत्नी पापी को यह अच्छा नहीं लगा । उसने कहा कि स्त्री केलिए ज़रूरी सम्मान एवं मदद के बिना मिली हुई आज़ादी से कोई फायदा नहीं है ।

कई दिनों के बाद एन.पी वापस समाज के रूढ़ियों के भीतर घुस जाता है । उसके अनुसार स्वतंत्र रूप से लिखने की क्षमता स्त्री में नहीं है । वह या तो पुरुष की कही हुई बातें लिख रही है या कोई पुरुष स्त्री के नाम पर कुछ लिख रहा है । लेकिन यह मानने केलिए उसकी पत्नी पापी तैयार नहीं थी । उसने अपने पति के द्वारा लिखे लेख की आलोचना करके एक लेख लिखा । अगले हफ्ते उस लेख के उत्तर के रूप में एन.पी एक लेख लिखना चाहता है । लेकिन वह अकेले लिख नहीं सकता था । वह अपने दोस्तों से सलाह मशवरा करके ही लेख लिखता था । अपने पति की विवशता देखकर पापी पति केलिए लेख लिखकर देना चाहती है । उस रात वह अपने पति से कहती है कि पति के लेख की आलोचना करके लिखनेवाली वही है । यह सुनकर वह दंग रह जाता है ।

इस कहानी में लेखिका नारी की शक्ति को उजागर करना चाहती है । सामुदायिक सुधार की क्रांति के समय पापी ने जिस आज़ादी का स्वाद चखा था, एवं उसके कारण उसकी अपनी क्षमता की जो पहचान हुई थी, पापी उसे बुला नहीं पाती है । उसका पति तो सब भूलकर वापस समाज के रूढ़ियों में आसानी से घुस गया । लेकिन पापी केलिए यह मुश्किल था । उसने अपने आप को पहचान लिया था । इसे वह किसी भी तरह से खोना नहीं चाहती थी । इसीलिए उसने पति के लेख की आलोचना करके घुमनाम लेख लिखा ।

“तिरिचु वारु (वापस आ जा)” कहानी की नायिका भानुमति ऊंचे कुल में जन्म लेने वाली है । लेकिन उसके मन में समाज के प्रति अपना दायित्व है । इसीलिए उसने अपना जीवन स्त्रियों की उन्नति केलिए न्योछावर कर दिया है ।

वह दिखाना चाहती थी कि बिना शादी के, बिना पुरुष के सहारे के एक स्त्री समाज की भलाई केलिए काम कर सकती है । इसकेलिए उसने एक घर ले लिया । वहाँ स्त्रियों को छोटे-मोटे काम सिखाया जाता था । समाज के सभी स्तर, जाती, पार्टी की स्त्रियाँ वहाँ आती थी । लेकिन कुछ समय बाद लेखिका को पता चलता है कि भानुमति कहीं दूर एक आश्रम में है । क्योंकि सामुदायिक सुधार की गति कुछ मंद हो जाने के कारण “सदनम्” की ख्याति कम होती गयी और स्त्रियाँ भी कम होती गयी ।

भानुमति के बारे में यह जानकारी प्राप्त होती है कि वह बिना शादी के माँ बन गयी है । यह जानने के बाद लेखिका चाहती है कि अगर ज़िंदगी के सफर में भानुमती ने कुछ गलत कर दिया है, तो भी वह उस गलती को सुधार सकती है । और आर्जित शक्ति के साथ अपने कार्य क्षेत्र में वापस आ सकती है । बिना शादी के माँ बनने की बात उस जमाने की सोच के बाहर की बात थी । ध्यान देने की बात यह है कि कहानी में इसे गलती माना गया है । जो भी हो यह प्रयास उस जमाने में नया था ।

"यात्रावसानम्(सफर का अंत)", "नकाब में", "विधि बलम्", "प्रतिध्वनि", "प्रतिकारदेवता(बदले की देवी)", "कुट्टसम्मतम् (गलती माननना)", "जीवितवुम मरनवुम (ज़िंदगी और मौत)", आदि कहानियों का विषय बाल विधवा विवाह, सपत्नीत्व, एवं " स्मार्त विचारम " ९ हैं । उन्होंने सामाजिक विषयों को प्यार के दृष्टि कोण से देखने की कोशिश की है । " उनकी "दूध से भरा थन" कहानी की "काली" मालकिन के बच्चे को दोंदूध देनेवाली है । इस में कहानीकार ने काली को विश्व-माता का रूप दिया है । "दूध का गंध" कहानी की अम्मिनी अम्मा बेटों की लडॉई के बीच में पड़कर घायल हो जाती है । उनके हज़ारों घावों से बहते खून से दूध का गंध फैलता है ।"१०

३.२.२.२ के. सरस्वती अम्मा

कहानी संग्रह - "पोन्नुम कुडम (स्वर्ण कुम्भ)", "स्त्री जन्म", "अधीनस्थ कर्मचारिणी", "कला मंदिर", "विवाहा सममानम्(शादी का तोफा)", "पेणबुद्धि(स्त्री बुद्धि)", "कनत्ता मतिल(मजबूत दीवार)", "प्रेम परीक्षण", "चुवन्न पूक्कल(लाल फूल)", "इडिवेटू तैलम", "एलाम तिकञ्जा बार्या", "चोल मरंगल(छायादार पेड़)" ।

निबंध - "पुरुषन्मार इल्लात्त लोकम(बिना पुरुषों का संसार)"

मलयालम् कथा साहित्य के इतिहास में उपेक्षित कहानी लेखिका है के. सरस्वती अम्मा । आप की कहानियों में स्त्री पक्षधरता एवं पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्मित मूल्यों का विरोध स्पष्ट हैं । शायद यही कारण है कि उनकी कहानियों को पुरुष विद्वेष कहानियों का छापा मार कर नगण्य स्थापित किया गया ।

के. सरस्वती अम्मा की पहली कहानी १९३८ मार्च को मातृभूमि में प्रकाशित हुई । उन्होंने लगभग ९० कहानियाँ, एक उपन्यास, एक नाटक और एक निबंध संग्रह की रचना की । उनकी ज़्यादातर कहानियों के केंद्र में अस्तित्व बोध अर्जित स्त्री है । "उनका साहित्य

हमेशा इस समस्या को उभरता है कि समाज में स्त्री एवं पुरुष एक साथ समान रूप से काम क्यों नहीं कर सकते । ऐसी सामाजिक स्थिति उनका सपना था कि जिस में स्त्री एवं पुरुष आज़ादी से जी सके ।"११ उस समय समाज उनकी इस राय से सहमत नहीं था । क्योंकि उस समय स्त्रियों केलिए घर के बाहर निकलकर काम करना मुमकिन नहीं था ।

१९४८ में लिखी उनकी कहानी है "पेण बुद्धि" । इस कहानी की नायिका विलासिनी पढ़ी-लिखी एवं अक़्लमंद औरत है । विलासिनी दिव्य प्रेम में विश्वास नहीं रखती । उसके अनुसार इस तरह के प्रेम केलिए नश्वर शरीर एवं लौक्कि शरीर की ज़रूरत ही क्या है? विलासिनी के संपर्क में आये सभी पुरुष विलासिनी से प्यार करते थे । लेकिन विलासिनी ने किसी से प्यार नहीं किया । क्योंकि "प्रेमिका प्यार के सहारे जी सकती है और उसमें आनन्द भी पा लेती है । लेकिन ज़िंदगी सिर्फ प्यार से नहीं चलता और बच्चों का पालन-पोषण सिर्फ प्यार से नहीं होगा ।"१२ प्रेम के बारे में उसके नज़रिये को समझना उस जमाने में मुश्किल था । लेकिन आज के बदलते नारीवादी दृष्टिकोण से इसे देखा जा सकता है । विलासिनी उनकी बोल्ड स्त्री पात्रों में से एक हैं । इस तरह की स्त्रियों को हम हिन्दी की महान लेखिका मृदुला गर्ग की कहानियों में देख सकते हैं । इस कहानी की नायिका समाज के आगे सवाल करती है कि रात को जल्दी घर पहुँचने एवं तंख्वाह की रकम बर्बाद न करने केलिए ही पत्नी की ज़रूरत होती है । इस से सरस्वती अम्मा ने शादी की सामाजिक परिवेश को व्यक्त किया है । रेडिकल नारीवादियों का मानना है कि नारी को परिवार नामक काल्पनिक व्यवस्था में कैद करने के समाज का षड्यंत्र है शादी । लग भाग यही विचार सरस्वती अम्मा की विलासिनी भी व्यक्त करती है । शादी को लेकर, नारी की गुलामी को लेकर उनकी चिंता इसमें व्यक्त है ।

उनकी "विलक्क्पेट्टा वषी" की विशालम् भी विलासिनी के समान शिक्षित एवं समझदार है । "ये दोनों पति पर निर्भर रहना नहीं चाहती है । ये अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की आवश्यकता के बारे में स्वतंत्र मत रखनेवाली है ।"१३ इसलिए वे अपने परिवेश में रहकर अपनी अस्मिता को बनाये रखने की कोशिश में जुड़ी रहती है । इस तरह अपनी वैयक्तिक आज़ादी के बारे में सोचनेवाली स्त्रियाँ उस समय के साहित्य में अपूर्व थी ।

सरस्वती अम्मा के अनुसार प्रेम में स्वामित्व या दासता की ज़रूरत नहीं । इसलिए "उनकी स्त्रियाँ पुरुष के सहारे के बिना अकेले जीने में एवं ज़िन्दगी की समस्याओं का सामना करने में विश्वास रखनेवाली हैं । "स्त्री जन्म" कहानी की शान्ति , "कर्तव्यतिनुमुंपिल

(कर्तव्य के आगे)" की शारदा और "चोलमरंगल" की फिलोमिना ऐसे ही पात्र हैं ।"१४ इन कहानियों के नारी पात्र समाज के पारंपरिक मूल्यों का विरोध प्रकट करती है, जो आधुनिक समाज की स्त्रियाँ शायद ही करने केलिए डरती हैं ।

सरस्वती अम्मा की कहानियों की चर्चा करते समय "मधुर पलहारम्(मीठा पकवान)" नामक कहानी का ज़िक्र किये बिना नहीं रह सकते । इस में उन्होंने यह दिखाया है कि किस तरह स्त्री को कानों कान खबर न लगाता कि प्रेमी कब पति में बदल गया है । इस कहानी की नायिका कनकलता की शादी सुरेन्द्रन से होती है । उन्होंने एक दूसरे से प्यार करके, घरवालों के आशीर्वाद से ही शादी की थी । शादी के कुछ दिनों बाद कनकलता को लगता है कि वह बिलकुल बदल गयी है । उसकी आदतें बदल चुकी है । उसकी पसंद-नापसंद सब कुछ बदल चुका है ।

"इस कहानी में लेखिका यह दिखाना चाहती है कि शादी के बाद किस तरह स्त्री धीरे-धीरे अप्रत्यक्ष होती है । उसका व्यक्तित्व पुरुष में मिल जाता है, और उसे (स्त्री को) इसकी भनक तक नहीं लगती ।"१५ समाज के निर्माण में स्त्री एवं पुरुष का हाथ है । उसी तरह विवाह संबंध को मजबूत बनाने केलिए दोनों को समझौता करना पड़ता है । लेकिन सवाल यह है कि हमेशा स्त्री से यह उम्मीद क्यों रखते हैं कि वह समझौता करें । शादी के बाद स्त्री का अस्तित्व खो जाता है । इस कहानी की नायिका परिवार में अपनी अस्मिता को खोजने की कोशिश करके अपनी वैयक्तिकता को बढ़ावा देना चाहती है ।

सरस्वती अम्मा कभी भी पुरुष के खिलाफ नहीं है । उनके अनुसार ज़िन्दगी का सौन्दर्य स्त्री-पुरुष के बीच के संबंध की खूबसूरती में ही निहित है । लेकिन उसकेलिए दोनों तरफ से कोशिशों का होना ज़रूरी है ।

दांपत्य असंबद्धता को चित्रित करनेवाली उनकी कहानियाँ है - "अविवाहितण्डे अश्रुक्कल (अविवाहित आदमी की आंसुएँ)" , "वीटिलूम पुरत्तुम (घर के अंदर और बाहर)" , "अवरुड़े कथा एषुत (उनका कथा लेखन)"

उन्होंने अपनी कहानियों में प्रेम, विवाह एवं दांपत्य को स्त्री के नज़रिये से देखने एवं परखने की कोशिश की है । क्योंकि इन तीनों में (प्रेम, विवाह एवं दांपत्य) हमेशा स्त्री ही शिकार बनती है ।

के.एस. रविकुमार के अनुसार "जब १९९० में मलयालम् कहानी में नया भावबोध का निर्माण हुआ और नयी पीढ़ी की महिला कहानीकारों ने अपनी रचनाओं के ज़रिये नारीवाद या नारी चेतना को विषय बनाया तब एक बार फिर वह (के. सरस्वती अम्मा) याद आने लगी ।"१६ क्योंकि उनकी कहानियाँ पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्मित नैतिक मूल्यों का प्रतिशोध करती है ।

३.२.२.३ माधविकुट्टी

कहानी संग्रह - मतिलुकल (दीवारें), नरिच्चीरुकल परक्कुबोल, तरिशु निलम्,(उर्वर भूमि), एंडे स्नेहिता अरुणा (मेरी सहेली अरुणा), चुवान्न पवाड़ा (लाल गागरा), पक्षीयूडे मणम् (चिड़िया का गंध), तणुप्पु (सर्दी), चन्दना मरंगल (चन्दन के पेड़), ओट्टयडिपाता, निरमातलम् पूत्ता कालम् ।

पुरस्कार - एशियन पोयट्री, एशियन वेल्ड प्राइज़, केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार, केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, एशुत्तच्छन पुरस्कार, वयलार पुरस्कार, केंट पुरस्कार जो एशिया के अग्रेज़ी साहित्यकारों को दिया जाता है ।

हर साल "नारी दिन" मनाया जाता है । एक साल तक स्त्री शाक्तिकरण के रूप में मनाया गया है । लेकिन जब भी स्त्री अपनी परंपरा के विरुद्ध कुछ लिखने लगती है, तो समाज उस पर उंगली उठता है और उसे हीन समझा जाता है । मलयालम् के मशहूर महिला साहित्यकार माधविकुट्टी के साथ ऐसा ही हुआ ।

माधविकुट्टी का जन्म ३१ मार्च १९३४ को केरल के एक कट्टर हिन्दु परिवार में हुआ । उनके पिता मलयालमम् के मशहूर दैनीकी "मातृभूमि" के स्थापक समय के मुख्य संपादक थे । उनकी माँ नालपाट् बालामणि अम्मा मलयालम् के विख्यात कवयित्रि है । आप अग्रेज़ी एवं मलयालम् के विख्यात लेखिका है । मलयालम् में वे माधविकुट्टी उपनाम से लिखती हैं । अग्रेज़ी में आप कमलादास नाम से जानी जाती है । १९९५ में ६५ साल के उम्र में उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार किया । तब से आप कमला सुरय्या नाम से जानी जाती हैं ।

उन्होंने अपनी माँ से प्रेरणा लेकर छोटी आयु में ही कविता लिखना शुरु किया "एन्टे कथा (मेरी कहानी)" नामक आत्मकथा में उन्होंने ईमानदारी के साथ प्यार एवं स्त्रीत्व को देखने की कोशिश की है ।

माधविकुट्टी मलयालम् साहित्य के भिन्न स्वर है । "प्रेम पिपासु और भग्न प्रणय की उपासिका माधविकुट्टी की तूलिका से जो कहानियाँ निकली वे आज भी प्रासंगिक हैं ।"१७ उनकी स्त्रियाँ प्रेम की प्यासी है । माधविकुट्टी ने विवाहित स्त्री के प्यार की तलाश के ज़रिये शादी की पवित्रता पर सवाल उठाया ।

माधविकुट्टी की कहानियों में नौकरी-पेश स्त्रियों का स्थान नगण्य है । उन्होंने घर के भीतर स्त्री के मेहनत पर ज़ोर दिया है । उनकी "कोलाड़" की नायिका सीधी-साधी है । वह तैंतालीस साल में बूढ़ी हो गयी है । असमय आये बुढ़ापे ने उसके स्वास्थ्य को बिगाड़ दिया । परिवार की ज़िम्मेदारियाँ एवं घर के काम की बोझ ने उसे बूढ़ी बना दिया । उसका बड़ा बेटा उसे कोलाड़ कहकर पुकारता है । अस्पताल में आधी नींद में वह कहती है - "लगता है दाल जल गयी है ।"१८ अस्पताल में भी उसे घर की चिंता लगी रहती है । जब वह आईने में देखती है, तो उसे अपने छिपका हुआ गाल नज़र आता है । उसे लगता है कि उसका छिपका हुआ गाल गोल मरोड़ हो जाएगा तो उसकी ज़िंदगी भी समृद्ध हो जाएगी । "इस कहानी के जरिये वह कहना चाहती है कि आईने में भी स्त्री वही देखना चाहती है जो पुरुष को पसंद है ।"१९ हमारे समाज ने नारी के मन को इतना गुलाम बना दिया है कि वह चाहकर भी इससे ऊपर उठ नहीं सकती । उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है । वह जानी जाती है पिता के नाम से, पति के नाम से, फिर बच्चों के नाम से ।

माधविकुट्टी की कहानियाँ नारी की अस्मिता को चित्रित करनेवाली है । जब इस अस्मिता पर कोई आँच आता है, तो वह अपना संतुलन खो बैठती है । उनकी नारियाँ रोगावस्था, पागलपन एवं मृत्युबोध प्रकट करनेवाली है ।

"चित्तभ्रमम्" कहानी की अरुणा पर पागलपन थोपा गया । उसके पति एवं साँस ने मिलकर उसके बच्चे को उससे हटाया । अरुणा अपनी सहेली विमला से कहती है - "आजकल कोई मुझ पर विश्वास नहीं करता, कहते हैं कि मैं पागल हूँ, बच्चे को मारूँगी.... ।"२० उसके घर की नेपाली नौकरानी ने उसकी जगह ग्रहण की है । नौकरानी के बारे में उसका कहना है - "अब वह इस घर की राणी है । उनके (पति के) बिस्तर पर भी वह सोने लगी है ।"२१ अरुणा अपने पति से बेहद प्यार करती है । इसीलिए वह यह सब सह लेती है।

प्यार के प्रति स्त्री एवं पुरुष के दृष्टिकोण इस में व्यक्त है । माधविकुट्टी ने इस में अरुणा के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाया है । उनकी स्त्रियाँ जब भी पति या प्रेमी के

द्वारा अपमानित या तिरस्कृत हो जाती है तो वह पागल हो जाती है या आत्महत्या कर लेती है । प्यार के प्रति उसके (स्त्री के) मन की प्यास उसे समाज से अलग कर देता है ।

"स्त्री के दूसरे स्तर के पद को लेकर माधविकुट्टी उत्कंडित है । चित्त भ्रमम् (पागलपन), कवीयुडे भार्या (कवि की पत्नी), एंडे स्नेहिता (मेरी सहेली), अरुणायुड़े सत्कारम् (अरुणा की दावत), चती(धोखा), पातिव्रत्यम् (पातिव्रत्य), सूर्यन (सूरज), चतुरंगम् (जुआ), आदि कहानियाँ इसका उदाहरण है ।"२२ इनकी नारियाँ विवाहित होते हुए भी घर के बाहर प्रेम को खोजती हैं ।

प्यार, मोहबत, इश्क ये शब्द पवित्र माने जाते हैं । लेकिन नर एवं नारी केलिए इसका अलग अर्थ है । शादी शुदा औरत जब प्यार की खोज में किसी दूसरे से प्यार करके प्यार और शादी को अलग से देखती है तो समाज उसे हीन दृष्टि से देखता है । लेकिन यही काम जब पुरुष करता है तो उसे पौरुष का दर्जा दिया जाता है । मलयालम् में माधविकुट्टी एवं हिन्दी में मृदुला गर्ग की नायिकायें पति से जब प्यार नहीं मिलता है तो बाहर प्यार की तलाश करती है । इनकी नायिकायें शरीर की पवित्रता से ज़्यादा मन की पवित्रता पर ज़ोर देती है ।

उनकी कहानियों में घर के अंदर एवं बाहर शोषित स्त्रियों का चित्रण हुआ है । "स्वयंवरम् (स्वयंवर)" की बूढ़ी औरत पागल है । वह अपने आप को अवंतिका राजकुमारी मानती है । तीन बदमाश लोग अपने आप को सम्राट कहकर उसके पास जाते हैं और उसका बलात्कार करते हैं । जब वह दर्द के कारण चीखती चिल्लाती है तो उसका मुँह और नाक बंद करके उसे मार देते हैं । यह बड़े दर्दनाक सच है कि स्त्री केलिए शरीर हमेशा उसका शाप बन जाता है । "किसी भी हालत में, किसी भी उम्र में कहीं भी और किसी से भी शोषित एवं पीड़ित होने वाला है उसका शरीर ।"२३ छोटी बच्ची से लेकर बूढ़ी औरत तक पुरुष के हवस का शिकार बन जाती है । क्योंकि ऐसे लोगों केलिए ये सिर्फ शरीर है । ये पागल औरत को भी नहीं छोड़ते ।

"इडनाषिकलिले कन्नाडिकल (गलियारे का आईना)" की माधवी वर्षा में भीगकर पति को देखने आती है । लेकिन पति उसकी ओर देखता तक नहीं । पति के रूखे व्यवहार एवं आवारेपन ने माधवी को पति के जनरल मानेजर सौम्यमूर्ति के पास पहूँचा देता है । वह माधवी के प्यार को पहचान नहीं पाता । वह सिर्फ उसका इस्तेमाल करता है । यह सच है कि माधवी के प्यार ने उसे बदल तो दिया । लेकिन वह समाज से डरकर माधवी से छुटकारा

पाना चाहता है । इसलिए उसने माधवी के पति को तबादला देकर अपनी समस्या का समाधान ढूंढ लिया लेकिन माधवी समाज से नहीं डरती । वह अपनी दुनिया में जीती है । कहानी के अंत में नदी में पैर फिसलकर उसकी मृत्यु होती है । तब सौंम्यमूर्ति का कहना है- "वह पागल थी, उसे कभी कभी पागलपन के दौरे पड़ते थे ।"२४ वह उसपर पागलपन थोप रहा है । क्योंकि किसी भी तरह माधवी के मामले से दूर रहना ही उसका उद्देश्य है ।

पुरुष समय के अनुसार प्यार की परिभाषा को बदलकर व्यावहारिक बना देता है । लेकिन स्त्री से ऐसा नहीं होता, यही उसकी त्रासदी है । पी.गीता स्त्री पर होनेवाले इस मानसिक एवं शारीरिक परिवर्तन को पुरुष की स्नेह हीनता के बदले अपने प्यार के ज़रिए देनेवाली कीमत मानती है । आधुनिक नारी पति की स्नेह हीनता यों ही नहीं सहती है । उसके मन की आशाएँ उसे किसी गैर तक पहूँचा देता है । कभी कभी प्यार की यह खोज उसकी ज़िन्दगी को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है ।

माधविकुट्टी की "लोकम् ओरु कवयित्रिये निर्मिकुन्नु (दुनिया एक कवयित्रि को जन्म देती है)" की नायिका के मन में हमेशा कविता है । इसकी "वह" ऐसे प्यार की खोज में है जिस में किसी प्रकार की कोई कपटता न हो, न कोई लेन-देन हो । लेकिन ऐसा प्यार उसे कहीं भी प्राप्त नहीं हुआ । "गलियारे का आईना" एवं "दुनिया एक कवयित्रि को जन्म देती है" कहानियों में माधविकुट्टी ने नारी मन की प्यास को चित्रित किया है । नारी अपने मन की प्यास को प्रकट नहीं कर सकती । क्योंकि उस के पैरों पर समाज के द्वारा बनाई हुई बेड़ियाँ है । पुरुष अपने प्यार को खुल्लमखुल्ला प्रकट कर सकता है । नारी को अपने प्यार के बारे में बोलने तक का अधिकार नहीं है ।

पी.गीता के अनुसार माधविकुट्टी की सब से प्रमुख विशेषता उनकी कहानियों के द्वारा सामने आनेवाला द्वंद है । "एक ओर वह शरीर के बदले आत्मा को श्रेष्ठ मानती है और पूजती भी है, तो दूसरी ओर सादे हुए शरीर को तिरस्कृत करने के साथ साथ वह उसे आकर्षक बनाने केलिए उसपर चन्दन लेप करने एवं शरीर को आभूषणों से सजाने की बात भी कहती है । प्यार को काम के रूप में समझने पर वह पछताने के साथ शरीर के आकर्षण पर गर्व भी करती है ।"२५ उनकी कहानियों के इस द्वंद का कारण शायद नारी मन के संघर्ष एवं द्वंद के ही है । यह द्वंद एवं संघर्ष नारी मन की विशेषता है । माधविकुट्टी इस सच्चाई को स्वीकार करती है ।

३.२.२.४ राजलक्ष्मी

राजलक्ष्मी ने पहली बार नौकरीपेश स्त्री का चित्रण अपनी कहानियों में किया । घर एवं दफतर के काम कर थकनेवाली स्त्री अपनी इस दौड़ में अपने आप को खो देती है । उनकी नायिकाएँ प्रतिरोध न करके निस्सहाय होकर रहनेवाली हैं । वे प्यार एवं सुरक्षा चाहनेवाली हैं । "आत्महत्या", "देवालयत्तिल मषा(गिरिजा घर में बरसात)" आदि कहानियों में परिवार के अंदर के स्नेह हीनता एवं उसमें स्त्री की दीनता का चित्रण हुआ है । उनकी ज़्यादातर नायिकाएँ या तो ज़िंदगी में पराजित होती या मृत्यु में अपने आप को सौंप देती हैं । उनमें ज़िंदगी का सामना करने का धैर्य नहीं है । राजलक्ष्मी की स्त्रियाँ अकेलेपन से जूझनेवाली हैं ।

उनकी पहली कहानी "मकल(बेटी)" उपन्यास के रूप में रूपायित करनेवाली लंबी कहानी है । कहानी की नायिका शारदा के कन्धों पर उसके पिताजी ने घर की सारी ज़िम्मेदारियाँ रख दी । उसके पिताजी ने कभी भी अपनी बेटी के बारे में नहीं सोचा । अपनी बेटी की इच्छा या उसके सपनों के बारे में उसे कोई परवाह नहीं । एक दूसरे से द्वेष रखनेवाले दो परिवार के अगली पीढ़ी (शारदा और उसका प्रेमी भास्कर मेनन) एक दूसरे से प्यार करते हैं । शारदा ने अपने प्रेमी भास्कर मेनन को अपने परिवार केलिए त्याग दिया । उसने अपने त्याग को घर-परिवार के प्रति प्यार माना । कुछ समय बाद वह इस दु:ख से बाहर आती है । लेकिन जब पिताजी ने किसी दूसरे आदमी से शादी करने केलिए ज़िद किया तो वह अपना आपा खो देती है । लेकिन उसके पिताजी इस इन्कार का सामना नहीं कर सके । इसी दौरान पिताजी की मृत्यु होती है । उसका भाई घर छोड़कर चला जाता है । जब सब अपने मनमानी करने लगे तो शारदा दु:खित होकर आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने 'गोवा' चली जाती है ।

उसका देशप्रेम एक तरह से ज़िन्दगी से पलायन था । "डॉ.लीलावती ने इस पलायन को प्रतिरूपात्मक आत्महत्या मान लिया है ।"२६

"पराजित" कहानी की निर्मला सात साल के बेटे की माँ है । उसका पति विदेश में रहता है, और बेटा बोर्डिग में । वह भी काम करती है । वह पातिव्रत्य के मूल्य को जानने वाली है । वह अपने दफतर के उच्च अधिकारी की ओर आकर्षित होती है । उसे ड़र है कि पति के गैर मौजूदगी में दूसरे पुरुष के सामने कहीं वह पिघल न जाय । अपने दफ्तर के

उच्च अधिकारी से पीछा छुड़वाने केलिए वह अपने बेटे के पास में जाती है । उसी ने बेटे को ज़बर्दस्ती बोर्डिंग भेजा था । पहले उसके बेटे को वहाँ का वातावरण अच्छा नहीं लगता था । तब निर्मला ने उसे वहाँ के वातावरण के अनुकूल होकर जीने का उपदेश दिया था । अब माँ उसकेलिए बिलकुल अजनबी बन चुकी है । अब जब वह अपनी पहचान बेटे में ढूँढना चाहती है, तो उसका बेटा उससे बहुत आगे चल चुका है । निर्मला अब बिलकुल अकेली हो गयी । अब उसके साथ अब न दोस्त है, और न परिवारवाले हैं ।

"डॉ .सुधीर किडंगूर के अनुसार यह कहानी नारीवादी कहानियों की दुनिया में एक पाठ परिवर्तन के समान है ।"२७ स्त्री केलिए प्यार भावात्मक सच्चाई का चिह्न है । अपने पति के होते हुए जब स्त्री अन्य पुरुष के साथ भावात्मक संबंध स्थापित करती है तब वह अकेली रह जाती है । उसका साथ देनेवाला कोई भी नहीं होता ।

"एक अध्यापिका जन्म लेती है" कहानी की इन्दिरा भी कर्तव्य के आगे प्यार को न्योछावर कर देती है । परिवार केलिए इन्दिरा एक-एक करके अपने सपनों का बली चढ़ा देती है । अपने प्रेमी रवि की मृत्यु की खबर सुनने के बाद ही उसे पता चलता है कि उसने क्या खोया था । अब उसके सामने ज़िन्दगी शून्य बन गयी है । लेकिन वह शारदा की तरह ज़िन्दगी से निराश नहीं होती । वह अपने विद्यार्थियों को बच्चों की तरह देखने एवं प्यार करने लगती है । उसे लगता है कि ये बच्चे रवि एवं उसके ही बच्चे हैं, चाहे उसकी कोख से उनका जन्म न हुआ हो ।

"तेट्टुकल (गलतियाँ)" कहानी की डाक्टर मालती गोपीनाथन नायर की पुरुषत्व की ओर आकर्षित थी । डाक्टर के द्वारा लिखा गया नुस्खा उसने प्रेमपत्र के समान संभालकर रखा । लेकिन इसे मानने केलिए वह तैयार नहीं है । क्योंकि यह उसके अहं पर चोट पहुँचा देता है । वह इस प्यार के एहसास को स्वीकारने केलिए तैयार नहीं होती ।

राजलक्ष्मी की स्त्रियाँ माधविकुट्टी के पात्रों की तरह प्यार केलिए तरसनेवाली हैं । वे प्यार के आग में माखन की तरह पिधलनेवाली हैं । राजलक्ष्मी का मानना है कि जिस तरह स्त्री से पुरुष मुक्त नहीं है उसी तरह पुरुष से स्त्री भी मुक्त नहीं है ।

३.२.२.५ पी.वत्सला

कहानी संग्रह - "पषया पूतिया नगरम् (पुराना नया शहर)", "अनुपमयूडे कावलक्कारन (अनुपमा का चौकीदार)", "आना वेट्टकारन (हाथी का शिकारी)", "अन्नामरिया का मुक्काबला

करना", "अरुंधति करयुन्निल्ला (अरुंधति रोती नहीं)", "काली", "मड़कम् (वापसी)", "वापसी ॥", "दुष्यंत एवं भीम के बिना की दुनिया", "मैथिलियुड़े मकल (मैथिली की बेटी)", "पूरम् (मेला)", "सुवर्ण कथकल (सोने की कहानियाँ)", "अशोकनुम् अयालुम् (वह और अशोक)" ।

उपन्यास - "नेल्लु (भात)","तकरचा (बरबादी)","आग्नेयम् (आग)", "अरक्किल्लम (लाक्षागृह)", "कनल (जलता कोयला)", "आरुम् मरिक्कुन्निल्ला (कोई मरता नहीं)", "विलापम् (रुलाई)", "रोज़मेरियूड़े आकाशम् (रोज़मेरी का आकाश)", "गौतमन (गौतम)", "संख्यकल (संख्याएँ)" ।

पुरस्कार - कुंकुमम् पुरस्कार (भात उपन्यास केलिए), केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, मुट्टत्तु वरकी पुरस्कार, सी.वी.कुंजी रामन मेम्मोरियल साहित्य पुरस्कार ।

४ अप्रेल १९३८ में उनका जन्म हुआ । पी.वत्सला नारी-लेखन में अपनी छाप छोडनेवाली लेखिका है । उनकी कहानियाँ नारी अस्मिता की संकट स्थिति को चित्रित करनेवाली है । "अनुपमयूडे कावल्क्कारन (अनुपमा का पहरेदार) की नायिका अनुपमा है । उसका पहरेदार है 'केलुवच्चन' । अनुपमा को लगता है कि उसके पूर्वज यानि माँ और दादी उससे ज़्यादा आज़ाद थे ।"२८ अनुपमा के चारों तरफ घर, परिवार एवं समाज के कायदे-कानून है । वह इन सब को तोड़कर आज़ाद होना चाहती है । इसलिए वह अपने पहरेदार केलुवच्चन को घर में बंद करके पति और बच्चों को छोड़कर जाती है । वह अनजान राहों से जाना चाहती है । उसके इस सफर में उसके साथ अंजान आदमी भी होता है, जिसने उसे पूरी तरह समझ लिया था । इस कहानी की अनुपमा घर, परिवार एवं समाज के द्वारा नारी पर थोपे गये गुलामी की ज़ंजीर को तोड़कर आज़ाद होना चाहती है । अभी तक वह अपने पूर्वजों द्वारा दिखाये गये रास्ते से चलती रही । अब वह अपना अलग अस्तित्व चाहती है एवं अलग पहचान चाहती है ।

"शिशिर ऋतु की चींटियाँ" की नायिका नौकरी पेश पत्नी है । आजकल चींटियों ने उसका जीना हराम कर दिया है । हर जगह उसे चींटियाँ ही दिखायी देती है । पहले तो सिर्फ रसोई के बर्तनों पर दिखायी देती थी । लेकिन अब सब कहीं चींटियाँ ही चींटियाँ है । उसके तन-मन में चींटियों का आक्रमण होता है ।

जब वह दफ्तर से आती है तो उसके घरवाले टी.वी. देख रहे थे । उसका पति उसकी ओर देखता तक नहीं और न उससे देर से आने का कारण पूछता, बल्कि पूछता है - "आज शाम की चाय रात के खाने के साथ ही मिलेगी क्या? ।"२९ उसे पत्नी के तकलीफ के

बारे में नहीं जानना है । उसे तो बस समय पर चाय मिलनी है । वह साड़ी बदले बिना चाय बनाने रसोई जाती है । उसकी साड़ी पर चींटियों का आक्रमण होता है । वह चींटियों को भगाने का प्रयास करती है । लेकिन कोई फायदा नहीं । चींटियों से तंग आकर वह अपनी साड़ी को जला देती है । वह अपनी साड़ी पर लगे सोने के रंग के आग की ज्वाला में विलीन हो जाती है ।

वह शारीरिक एवं मानसिक रूप में थक चुकी है । घर में किसी को उसकी फिक्र नहीं । वह घर के सभी सदस्यों की जरूरतों की पूर्ति का साधन बन कर रह गयी । आज की नौकरी पेश नारी की स्थिति यह है कि घर की बाहर की दुनिया को उसने अपने पति के साथ बाँट लिया है । लेकिन घर के अंदर की दुनिया सिर्फ उसके लिए रिसर्व है । "वह दफ्तर में छुट्टी की हकदार है । लेकिन रसोई एवं उससे उदभूत तनाव से उसे किसी भी हालत में छुट्टी नहीं मिलती ।"३०

चींटियों से इर कर अपने आप को जला देना घर-परिवार रूपी व्यवस्था की मान्यताओं को जला देना है । "उसके घर एवं दफ्तर के बीच की दूरी एक पीढ़ी की दूरी है । घर से दफ्तर एवं दफ्तर से घर तक वह दो पीढ़ियों की दूरी तय करती है ।"३१ नयी पीढ़ी की सोच यह है कि घर एवं बाहर की दुनिया स्त्री एवं पुरुष को मिलकर ही बाँटना है ।

"मंडकत्तिले देवी" कहानी की नायिका की शादी घर के सब से छोटे बेटे के साथ हुई । साँस उसे उसके पति से दूर रखती है । शादी की पहली रात के तीन दिन महीने बाद वह अकेले में पति से मिलती है तो उसे पता चलता है कि उसका पति बीमार है । शादी करना उसकेलिए मना है । उस वक्त उसे लगा कि उसके सिर पर एक भारी पत्थर रखा गया है । दिन बीतते चले गये उसके सिर पर रखा पत्थर बड़ा होता गया, और वह "मंडकत्तिले देवी" बन गयी । उसकी ज़िंदगी में जो दुख है, वही उसके सिर का पत्थर है । दुख बढ़ता गया और सिर का पत्थर या मन में पड़ा पत्थर बड़ा होता चला गया । इस तरह वह पत्थर की मूर्ति बनती गयी । पी.वत्सला के अनुसार हमारे गांवों में जितनी भी पत्थर की मूर्तियाँ है, वह सब स्त्रियों के दुख की ओर इशारा करती है ।

"शत्रु (दुश्मन)" कहानी में उन्होंने दलितों की गरीबी के साथ-साथ उन पर होनेवाले शोषण का भी चित्रण किया है । "दुश्मन" कहानी की नायिका को अपने पति से, उसकी संपत्ति से, उसके अधिकार से दुश्मनी है । क्योंकि उसका पति अब उसकी बहन को चाहने

लगा है । जब वह अपने छोटे भाईयों एवं माँ के बारे में सोचने लगती है, तो उसके अंदर का विद्वेष एवं दुश्मनी ठंडी पड़ जाती है । वह अपने पति को छोड़कर नहीं जा सकती क्योंकि यह उसकी विवशता है । भूख उसे ऐसा करने से रोक लेता है । इस कहानी में वत्सला ने दलित नारी की विह्वलताओं एवं शोषण को चित्रित किया है । भूख के सामने उसका प्रतिशोध फीका पड़ जाता है ।

"अरुंधति करयुन्निल्ला (अरुंधति रोती नहीं)" कहानी में अरुंधति पति की मृत्यु के बाद बच्चों को लेकर "त्रैलांबाल" के गाँव चली जाती है । पति का घर एवं संपत्ति को छोड़कर वह त्रैलांबाल के गाँव जाना चाहती है । त्रैलांबाल का गाँव उसके लिए सुरक्षा का जगह है जहां वह अपने बच्चों का देखभाल कर सकती है । "इस कहानी के द्वारा लेखिका यह दिखाना चाहती है की पति की मृत्यु के बाद पत्नी किस तरह ज़िंदगी का सामना करेगी ।"३२ प्यार एवं ममता की प्यासी पत्नी अपने बच्चों का देख भाल करनेवाली त्रैलांबाल के गाँव जाती है, जहाँ उसको नयी ज़िंदगी की उम्मीद है ।

पी.वत्सला का नया नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करनेवाली सर्वश्रेस्ठ रचना है "अम्मयुडे मकन (माँ का बेटा)" । "यह दाम्पत्य संबंध की अर्थहीनता एवं खोखलेपन को प्रस्तुत करनेवाली कहानी है ।"३३ इस कहानी की दुर्गा अपने प्रेमी अभिजीत से गर्भवती होती है, और माँ भी बनती है । लेकिन वह अभिजीत से शादी करना नहीं चाहती है । वह उसे बच्चे को नाम देने का हक तक नहीं देती । लेखिका के अनुसार वह दुनिया को यह दिखाना चाहती है कि एक औरत अकेली जी भी सकती है । वह अभिजीत से प्यार करती है । लेकिन समाज के नियमित दाम्पत्य के दायरे में रहना नहीं चाहती।

उनकी कहानियों की सब से बड़ी विशेषता यह है कि उनकी कहानियों में स्त्री अस्मिता पत्थर में खींचे गये लकीरों के समान व्यक्त है । "तिरक्किल अल्प समयम् (भीड़ में कुछ समय)" कहानी की नायिका "फेलसी" है । वह अपने प्रेमी के साथ भाग जाने केलिए रेलवे स्टेशन आती है । उसका प्रेमी सिपाही है । प्रेमी गाड़ी में चढ़कर उसे साथ ले जाने केलिए हाथ आगे बढ़ाता है । लेकिन इस वक्त वह पीछे मुड़ जाती है । घरवालों के बारे में सोच कर ही वह ऐसा करती है । हमेशा दूसरों केलिए जीना एवं दूसरों का आदेश मानना उसकी आदत बन गयी है । इस आदत्त के कारण वह प्रेमी के साथ नहीं जा पाती । स्त्री हमेशा फैसला लेने में चूक जाती है और यह भूल ज़िंदगी भर उसका पीछा करता रहता है । अपनी ज़िंदगी में फैसला लेने की आदत्त लड़कियों बचपन से ही डालनी चाहिए ।

३.२.२.६ सारा जोसफ

कहानी संग्रह - "मनसिले ती मंत्रम(मन का अग्निमंत्र)", "काडिन्दे संगीतम्(जगल का संगीत)", "पापत्तरा(पाप का चबूतरा)", "ओडुविलत्ते सूर्यकांति(आखिरी सूरजमुखी)", "निलावु निरयुन्नु (चंदिनी छा गयी)", "पुतु रामयनम्(नया रामायण)", "नन्म तिन्म कलुडे वृक्षम् (अच्छाई और बुराई का वुक्ष)", "काडितु कंडाया कांता (हे पति, जंगल देखा क्या)"

उपन्यास - "तायकुलम्(माँ का वंश)", "ऊरु कावल्(गाँव का पहरा)", "अलाहयूडे पेणमक्कल (ईश्वर की बेटियाँ)", "माट्टाती", "आँधी", "ओताप्"

पुरस्कार - केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं वयलार पुरस्कार (ईश्वर की बेटियाँ केलिए), मुट्टत्तू वर्की पुरस्कार (पाप का चबूतरा केलिए) ।

१९४६ में केरल के तृश्शूर जिले के एक कट्टर ईसाई परिवार में सारा जोसफ का जन्म हुआ । आप पहली स्कूल की अध्यापिका के रूप में काम करती थी बाद में एम.ए (मलयालम्) करके कालेज में प्रोफसर बनी ।

स्वतन्त्रता प्राप्त हुए पैसठ साल हो चुके । परंपरागत रूढ़ियों जड़ मर्यादाओं एवं कुप्रथाओं को समाप्त करने केलिए ज़ोर से कोशिशें हो रही हैं । लेकिन यह आसान काम नहीं है । जब तक समाज का नज़रिया और पुरुष मानसिकता में परिवर्तन नहीं होगा, इस से मुक्ति पाना आसान नहीं है । इसी के साथ नारी को अपने ऊपर होते ज़ुल्म, ज्यादती एवं अत्याचार के प्रति सचेत होना भी ज़रूरी है । तभी हमारा देश सच्चे अर्थ में प्रगति की ओर बढ़ेगा ।

मलयालम् की मशहूर आक्टिविस्ट एवं साहित्यकार सारा जोसफ ने अपनी कहानियों के ज़रिये परंपरागत रूढ़ियों एवं जड़ मान्यताओं के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठायी । उनकी नायिकाएँ अपने ऊपर होनेवाले शोषण को पहचानती है, और उनका विरोध भी प्रकट करती हैं ।

सारा जोसफ की "ऑरो एषुतुकारियूडे उल्लिलुम (हरेक लेखिका के भीतर), "पेण्णु पूक्कुन्ना नाडु (स्त्री पुष्पित होने वाला गाँव)" आदि कहानियों में उन्होंने स्त्री की काल्पनिक स्वतंत्र दुनिया का चित्रण किया है ।"३४ "ऑरो एषुतुकारियूडे उल्लिलुम" कहानी की नायिका 'मेबिल मामी' के घर जैसा घर चाहती है । जिसमें लिखने केलिए उसका अपना कमरा हो

और घर के अंदर से देखे तो समुद्र दिखाई देता हो । वह अपनी दुनिया की झंझट से दूर, बिना किसी परेशानी से स्वतंत्र रूप से बैठकर लिखना चाहती है । इस कहानी में उन्होंने महिला लेखिकाओं के अंदर मन के द्वंद को चित्रित किया है । वह अन्य पुरुष साहित्यकारों के साथ देर तक बैठकर बातें करना चाहती है । उनकी चर्चाओं में भाग लेना चाहती है । लेकिन उसके घर-परिवार की ज़िम्मेदारियाँ उसे इससे रोक लेती है । "क्योंकि सारा जोसफ के अनुसार उसके पैरों पर परंपरा एवं समाज के द्वारा बनायी गयी बेड़ियाँ है, जो उसके माँस को चीर कर अंदर तक चुभा हुआ है ।'३५ ये बेड़ियाँ उसे हिलने तक नहीं देती । इसके चुभने का दर्द उसके शरीर को चीरकर आत्मा तक पहुँच जाता है । समाज ने नारी को अपने कायदे-कानून से इतना जकड़ दिया है कि वह अपनी जगह से हिल नहीं सकती ।

मेबिल मामी का घर काल्पनिक घर है । उस घर में उसे पूरी आज़ादी है । वहाँ उसे पीछे खींचनेवाली कोई भी चीज़ नहीं है । उसका मन जयदेव जैसे दोस्त को चाहता है, जो उसे समझे, प्यार करें और साथ दें । लेखिका के अनुसार पुरुष साहित्यकार के शरीर में सोने के रंग के पंख होते हैं । जिसके सहारे वह जहाँ चाहे उड़ सकता है । लेकिन महिला साहित्यकार ऐसा नहीं कर सकती ।

"मुडित्तेय्यम्मुरयुन्नु' उनकी एक मशहूर कहानी है । इस में उन्होंने केश को स्त्री-मुक्ति का प्रतीक माना है । "हमारे लोक कथा, मिथक, महाभारत, रामायण आदि में बाल - काम, ऊर्जा, स्वतन्त्रता, स्त्री अस्मिता एवं उर्वरता आदि का प्रतीक है "३६ शायद यही कारण है कि पुरुष हमेशा स्त्री के बाल को पकड़ता है, चाहे वह मारने केलिए हो या प्रेम करने केलिए हो । पुरुष को लगता है कि बाल को अपने कब्जे में करने से उसने नारी-शक्ति को अपनी मुट्ठी में कर दिया है । रामायण में रावण ने सीता का हरण करते समय उनका बाल पकड़ा था । महाभारत में द्रौपदी ने दुश्शासन के विरुद्ध अपना बाल खुला छोड़ा था । द्रौपदी ने अपने खुले बाल के द्वारा भीम को बदले की याद दिलायी ।

मलयालम् के मशहूर कवि एवं आलोचक सच्चिदानंदन के अनुसार "यह कहानी (मुडित्तेय्यम्मुरयुन्नु) भाषाई विशेषता एवं प्रतीक की बनावट के कारण पाठकों के सामने एक नया दृष्टिकोण रखती है ।"३७ सच्चे अर्थ में यह मलयालम् कहानी संसार में नये प्रतिमान को लेकर आयी है ।

सारा जोसफ की ग्रामबू (लौंग) की नायिका राधा जानती है कि उसके पति माधवन कुट्टी की ज़िंदगी में उसके अलावा ओर कोई नहीं है । फिर भी वह दांत के डाक्टर के साथ

रागात्मक संबंध चाहती है । उसके सुंदर दाँतों की पंक्तियों में से एक में छेद पड़ने के कारण मुँह में दुर्गन्ध एवं दर्द होता है । वह दाँत के डाक्टर के पास जाती है । वह अपने एवं डाक्टर के बीच एक प्रेममय सुगन्ध के अनुभव का आग्रह रखती है । लेकिन जब डाक्टर झुककर दाँत देखने ही वाला था कि वह बाहर भागती है । लेकिन बाहर का रास्ता उसकेलिए संकीर्ण था । यह संकीर्णता स्त्री-पुरुष के संबंध के बीच की संकीर्णता है । "सारा जोसफ के अनुसार स्त्री-पुरुष केवल व्यक्ति नहीं व्यवस्था के प्रतिनिधियाँ है ।"३८ व्यवस्था का प्रतिनिधि होने के कारण समाज स्त्री से ज़्यादा उम्मीद रखता है । ये उम्मीदें उसकी ज़िंदगी को और संकीर्ण बना देती है ।

सारा जोसफ केरल में "मानुषी" नामक संस्था चलाती है । ये संस्था औरतों की उन्नति केलिए काम कर रही है । आप हमेशा केरल के नारीवादी आन्दोलनों में सक्रिय है । डॉ.के.एम. मालती के अनुसार "अपने समय और समाज के सच्च से मुठभेड़ करने का खतरा उठाने को हरदम तैनात रहनेवाली सारा जोसफ समाज के पीड़ित, उपेक्षित, दलित और सांप्रदायिकता से अलग रहनेवाले इन्सान के पक्ष में लिखती है ।"३९ उन्होंने अपनी कहानियों में समाज के पिछड़े वर्ग का दर्द चित्रित किया है ।

३.२.२.७ ग्रेसी

मलयालम् के प्रतिष्ठित महिला कहानीकार ग्रेसी यह दावा नहीं करती कि वह नारीवादी आंदोलन का कार्यकर्ता है । "उनकी कहानियाँ किसी भी पूर्व नियोजित संकल्पनाओं के दायरे के अंदर रखनेवाली नहीं है ।"४० क्योंकि उसमें अनुभवों की जो विविधता है, जिसे हम अनदेखा नहीं कर सकते ।

ग्रेसी के अनुसार नारीत्व आज बिकाऊ चीज़ बन गयी है । उनकी "पडि इरडीपोया पार्वती (देहरी लांधती पार्वती)", "नरक वातिल (नरक का दरवाज़ा)" आदि कहानियाँ इसका उदाहरण है । इन के ज़रिये उन्होंने नारी को बिकाऊ चीज़ समझने की बात पर अपनी आवाज़ बुलंद की है । "देहरी लाँधती पार्वती" कहानी की पार्वती अपनी युवा प्रेमी की भोगवादी आचरणों से ऊब चुकी है । उसने इसी प्रेमी केलिए अपने घर की दहलीज़ पार की थी । अब वह उससे प्यार नहीं करती क्योंकि उसके प्रेमी केलिए प्यार का अलग अर्थ है । इसलिए वह उसे अपने दिल से भगा देती है ।

"ग्रेसी की "शुभम्", "अब धरती में पतझड़ है", "सनकी फूल", "सितायनम्", "भिन्न संख्या" आदि की नायिकाएँ अपने देह को ही प्रतिरोध का माध्यम बनाती है ।"४१ क्योंकि उनके पास अपने प्रतिरोध को प्रकट करने केलिए और कोई उपाय नहीं रह गया है । कभी-कभी वे अपने इस प्रतिरोध में हार भी जाती है ।

उनकी "शुभम्" कहानी की लड़की को अपने दाहिने स्तन के प्रति गहरी वितृष्णा है । इसका कारण यह है कि उसके दाहिने स्तन पर किसी अंजान व्यक्ति ने ज़बरदस्ती हाथ लगाया था । शादी के बाद जब वह माँ बनी तो वह अपने बच्चे को दाहिने स्तन का दूध नहीं पिलाती है । जब इस स्तन को कान्सर हुआ तो डाक्टर ने इसे छाती से हटा देने की सलाह दी । स्तन को काट देने के बाद ही उसे राहत की सांस मिली । स्त्री-शरीर को लेकर हमारे समाज की कई नैतिक मूल्य एवं धारणाएँ हैं । ग्रेसी की नायिकाएँ अपने शरीर के माध्यम से इस का प्रतिरोध करती है ।

उनकी "धरती में अब पतझड़ है" की लड़की भी अपने ऊपर हुए बलात्कार का बदला अपने शरीर के ज़रिये ही करती है । वह अपने शरीर पर तेज़ छुरी घुसाती है और अपने आप को बेरहमी से फाँसी में लटका देती है । मरने के बाद उसकी आत्मा को पता चलता है कि उसकी बहिन के साथ भी यही होनेवाला है । अर्थात् यह सिलसिला ज़ारी ही रहेगा । यही नारी की नियति है । उसके चारों ओर उसके शोषण केलिए नये नये तरीके तैयार हो जाते हैं ।

"उनकी "सितायनम्" की नायिका भी अपने शरीर पर लगे दाग को मिटाने केलिए देह को जला देती है । वह आग में जलकर मांस-पिंड बन जाती है । जलकर मांस-पिंड के रूप में पड़े रहने पर उसे याद आता है कि वह पूर्व जन्म में सीता थी ।"४२ हर युग में स्त्री को अपने पातिव्रत्य का प्रमाण देना पड़ता है । यह समाज की माँग है । युग बीत गया परिस्थितियाँ बदल गयी । लेकिन आज भी समाज नारी से पातिव्रत्य का सबूत माँगता रहता है । समाज उसे शारीरिक उपभोग की वस्तु के रूप में ही देखता है ।

उनकी कहानियों का कथ्य स्त्री शरीर और लैंगिकता है । लेकिन वह हमेशा स्त्री शरीर को सिर्फ लैंगिक साधन मानने की विकृत दृष्टि के खिलाफ अपना विरोध प्रकट करती है ।

उनकी "पागलपन" कहानी की नायिका कॉलेज में पढ़ाती है । वह अपने दाम्पत्य में होनेवाले लैंगिकता का ज़िक्र इस प्रकार करती है कि उसके साथ लैंगिकता के समय उसका

पति हमेशा जारपुरुष के समान पेश आता है । "लैंगिक अनुभव स्त्री एवं पुरुष केलिए अलग है । पुरुष केलिए वह उसकी लैंगिक अवस्था का पहचान है, तो स्त्री केलिए वह नैतिक समस्या है ।"४३ पुरुष केलिए लैंगिकता अपने पुरुषत्व का प्रमाण है । लेकिन स्त्री उसके साथ प्यार को भी जोड़ देती है ।

"पति-पत्नी का आपसी संघर्ष, परस्पर प्यार एवं विश्वास में ह्रास की हालत, परिवार में रहते हुए भी अकेले होने का एहसास, अपने दु:ख व पीड़ा को बांटनेवालों का अभाव आदि अवस्थाओं ने आधुनिक औरत को विस्फोट की हालत में पहुँचा दिया है । "४४ "भिन्न संख्या" नारी की इस दुस्थिति को व्यक्त करती है । इस कहानी के पति-पत्नी नौकरी पेश है । "भिन्न सख्या" कहानी ही पत्नी तीन दिन से बीमार थी । लेकिन इस बीमारी की हालत में भी उसे घर का काम करना पड़ता है । साथ में बच्ची की पढ़ाई की ज़िम्मेदारी भी निभानी पड़ती है । वह पति से बच्ची की पढ़ाई को देखने केलिए कहती है । वह कहता है कि भिन्न संख्या, जो गणित का एक विषय है उसे मालूम नहीं । तब वह सब से पहले अपने पति को भिन्न संख्या सिखाने केलिए गले में साड़ी का फंदा डालकर अपने शरीर को दो भागों में विभाजित करती है ।

आधुनिक समाज ने घर के बाहर की दुनिया में स्त्री को भी जगह दी है, जहाँ वह नौकरी करके आर्थिक रूप में अपने पति का हाथ बाँटती है । लेकिन घर के अंदर की दुनिया में पुरुष उसका साथ नहीं देता है । दफ्तर के काम से उसे छुट्टी तो ज़रूर मिलती है । लेकिन रसोई एवं घर के दायित्व से उसे कभी भी छुट्टी नहीं मिलती ।

३.२.२.८ मानसी

कहानी संग्रह - "इडिवालिंडे तेंगल(बिजली की सिसकियाँ)", "वेलिच्चगलुड़े तालम (प्रकाश का ताल)", "मंजिले पक्षी (बर्फ का पक्षी)", "मानसियूडे कथकल (मानसी की कहानियाँ)"।

पुरस्कार - केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार, वी.टी.गोपाल कृष्णन पुरस्कार, यूनाइटेड रैटेज़ असोसियेशन (United Writers Association) पुरस्कार ।

उनके माता-पिता पी.शिव राम मेनन और पी.ए.मालती अम्मा है । उन्होंने इजिनीयरिंग कॉलेज की अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी । उन्होंने शांता गोखले के नाटकों का हिन्दी से मलयालम् में एवं रामु रामानन्द के नाटकों का अंग्रेज़ी से मलयालम् में अनुवाद किया ।

मलयालम् की मशहूर लेखिका मानसी कई सालों तक रचना काम से चुप रही । “उनकी “राजकुमारियूडे वाल(राजकुमारी का तलवार)” कहानी की नायिका अपने आप को राजकुमारी मानकर पति के सामने जाती है । लेकिन पति पागल कुत्ते के समान उस पर झपट पड़ता है । उसकी सारी काल्पनिकता वास्तविकता में बदल जाती है ।”४५ उन्होंने अपनी कहानियों के ज़रिए यह दिखाने की कोशिश की है कि नारी किस तरह समाज एवं घर-परिवार में अपनी दायित्वों के बोझ में दबी रहती है । इस दबाव एवं संघर्ष के कारण वह काल्पनिकता की एक दुनिया बना लेती है । लेकिन यह काल्पनिक दुनिया भी उससे छीन ली जाती है ।

वास्तविक दुनिया में कोई राजकुमार या राजकुमारी नहीं होती । लेकिन नारी कभी कभी काल्पनिक दुनिया में चली जाती है, ताकि वह वास्तविक दुनिया की समस्याओं से छुटकारा पा सके । नायिका का पति हमेशा पितृसत्ता का प्रतीक बनकर हमेशा अपनी पत्नी पर रोब चलाता है । इस से बचने केलिए वह काल्पनिक दुनिया में विचरण करती है ।

“इडिवालिन्डे तेंगल” की लड़की ने अपना सब कुछ एक ऐसे व्यक्ति को समर्पित किया जो उसके प्यार का हकदार नहीं है । इसलिए वह दु:खी है । यह सच्चाई उसे हमेशा कुरेदती रहती है । वह एक हिम्मत मर्द को चाहती थी ।

“तणल (छाया)” कहानी की नायिका जब भी अपने प्रेमी के बारे में सोचती है, तो वह पिघल जाती है । उसका मानना है कि प्यार के बारे में लोगों ने कितना कम कहा है । उसे लगता है कि लोगों के पास शब्दों की कमी है । इसीलिए प्यार के बारे इतना कम बोला गया है । वह हमेशा प्यार के काल्पनिक दुनिया में जीती है ।

३.२.२.९ अषिता

कहानी संग्रह - “अम्मा एन्नोडु परञ्जा नुनकल (माँ ने मुझ से कहे झूठ)” , “बच्चों की दन्त कथाएँ”, “निलाविण्डे नाटिल (चाँदनी के देशा में)”, “रूमी परञ्जा कथकल (रूमी के द्वारा बतायी कहानियाँ)”, “मयिलपीलि स्पर्शम् (मोरपंख का स्पर्श)”, “ओरु स्त्रीयुम परयात्तत् (किसी स्त्री ने अब तक न कही बात)”, “अषिता की कहानियाँ”, “मष मेखञ्जल (बरसात के बादल)”।

पुरस्कार - इडश्शेरी पुरस्कार, अंकणम पुरस्कार, तोपिल भासी फौडेशन पुरस्कार

अषिता स्त्री की विभिन्न अवस्थाओं को चित्रित करनेवाली कहानीकार है । “उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री की सनाथ-अनाथ, सुरक्षित-असुरक्षित अवस्थाओं को चित्रित किया है । “अपूर्णविरामंगल (अपूर्ण विराम)” स्त्री की असुरक्षित अवस्था को चित्रित करनेवाली कहानी है ।”४६ इस कहानी की नायिका अन्नम्मा बयालीस साल की शादी शुदा औरत है । उसका पति उसे मलयाटुर नामक तीर्थ स्थान के गिरिजाघर में ले जाने के बहाने रास्ते में छोड़ देता है । उसे अस्पताल में भर्ती करवाया जाता है । लेकिन अस्पताल के लोगों ने(कलक्टर एवं मजिस्ट्रेट के कम्मीटी) उसे यह कहकर वहाँ से निकाल दिया कि वह बिलकुल ठीक है, उसे कोई बीमारी नहीं है । लेकिन अस्पतालवाले इससे अंजान है कि उन्होंने उस युवती को एक ऐसे समाज में भेज दिया है जहाँ उसके शोषण केलिए लोग तैनात बैठे हैं । हमारे समाज में असहाय स्त्रियों पर आक्रमण करने केलिए तैयार बैठे भेड़िये हैं । इस कहानी में अषिता अनाथ अवस्था में नारी की दलित-पीड़ित ज़िंदगी को चित्रित करती है । नारी केलिए उसका शरीर हमेशा एक शाप या पाप बन जाता है ।

अषिता की “वरिकलक्किडयिल (पंक्तियों के बीच)”, “कल्लुवच्च नुणकल् (झूठा सच्च)” , “अम्मा एन्नोडु परञ्जा कथकल (माँ ने मुझ से कहे झूठ)” आदि कहानियाँ बच्चे एवं बड़ों की दुनिया के अंतर को व्यक्त करनेवाली है ।

“अम्मा एन्नोडु परञ्जा कथकल” कहानी “इस दुनिया में सब से ज़्यादा झूठ मुझ से माँ ने ही कहा है” वाक्य से शुरू होता है और कहानी का अंत “मैं ने सब से ज़्यादा झूठ माँ से ही कहा है” वाक्य से होता है । इस कहानी की नायिका अपनी बच्ची के सवालों का जवाब देकर थक जाती है । जब वह बच्ची से कहती है कि “झूठ मत बोलना, झूठ बोलना पाप है” तब बच्ची माँ से पूछती है कि क्या माँ कभी झूठ नहीं बोली? उस वक्त वह अपनी झूठी ज़िंदगी के बारे में सोचती है ।

“इस कहानी के जरिये अषिता कहना चाहती है कि आधुनिक पारिवारिक स्थिति में स्त्री को भिन्न एवं विरुद्ध दो पक्ष की ज़िंदगी जीना पड़ता है ।”४७ बच्ची से झूठ एवं सच्च के बारे बताकर उसे सही-गलत का फर्क बताकर सही रास्ता दिखाना स्त्री होने के नाते उसका फर्ज़ है । लेकिन घर-परिवार में वही स्त्री अपनी खुशहाल ज़िंदगी केलिए कभी-कभी झूठ का सहारा लेती है । यहाँ माँ-बेटी के बीच का जो फासला है, वह दो पीढ़ियों का फासला है ।

उनकी “शुद्धिकलशम्” कहानी की नारायणी वेश्या है । वह अपनी बेटी को अपने इस धंधे में घसीटना नहीं चाहती । इसलिए नारायणी ने अपनी बेटी को भीख माँगना सिखा

दिया । वेश्या होने के कारण नारायणी अपनी बेटी को लेकर चिंतित है । नारायणी के एक ग्राहक उसकी बेटी को कामपूर्ण दृष्टि से निहारते देखकर वह डर जाती है ।

अगले दिन नारायणी नहाने केलिए नदी के किनारे बेटी को लेकर जाती है । उसकी आँखों के सामने बेटी पैर फिसलकर पानी में डूब जाती है । वह बेटी की रक्षा नहीं करती । वह उसे डूब जाने देती है । नारायणी केलिए बेटी की सुरक्षा बहुत बड़ी समस्या है । इसीलिए उसने बेटी को पानी में डूब जाने दिया । यह नारायणी जैसी माँ की दर्दनाक अवस्था है । समाज के दरिंदों से सुरक्षा प्रदान न कर सकने के कारण माँ अपनी बच्ची को मृत्यु के हाथ में सौंप देती है ।

"मिन्नल पिणर(खड़कती बिजली)" कहानी की नायिका नौकरी-पेश एवं अविवाहित युवती है । वह एक अनाथ बच्ची को गोद लेती है । उस बच्ची का हाथ-पैर तुडवाया हुआ था । इस अवस्था में भी वह बच्ची को घर ले आती है । घरवाले उसे बच्ची के साथ घर से निकाल देते हैं । लेकिन वह हार मानने केलिए तैयार नहीं है । वह किराये के कमरे में बेटी के साथ जीने लगती है । यहाँ अषिता बदलते पारिवारिक संकल्प का चित्र प्रस्तुत करती है । परिवार का पुराना ढाँचा बदल चुका है । माँ-बाप एवं बच्चों से ही परिवार पूर्ण माना जाता था । लेकिन आज के बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में यह संकल्प बदलता नज़र आता है ।

अषिता समाज में स्त्री की स्थिति को लेकर चिंतित है । उनकी यह चिंता "तीर्थयात्रा" कहानी में देख सकते हैं । "तीर्थयात्रा" की नायिका "मणियम्मा" अपने दो बेटे एवं बेटी के साथ एक कमरे में रहती है । "मणियम्मा केलिए बेटे उसकी आगे की ज़िन्दगी की प्रतीक्षा है, और बेटी देवी उसकी चिन्ता है ।"४८ हमारी सामाजिक व्यवस्था में लड़की माँ-बाप केलिए बोझ है और इस बोझ को वे कहीं भी उतारना चाहते हैं । इस के कई सामाजिक कारण हैं । मणियम्मा ने अपने इस बोझ को सुंदरम् नामक आदमी के साथ तीर्थयात्रा के बहाने भेजकर उतारा ।

इस के अलावा उसके पास और कोई रास्ता नहीं था । उसे अच्छी तरह मालूम है कि सुंदरम अपनी बेटी को लेकर क्यों गया है । और उसके साथ क्या करनेवाला है । बेटी की सुरक्षा उसकेलिए हमेशा एक समस्या थी । वह इस बोझ को लेकर आगे जीना नहीं चाहती । देवी को पता नहीं था कि उसके साथ क्या हो रहा है, और आगे क्या होनेवाला है । वह तीर्थयात्रा केलिए उस अंजान व्यक्ति के साथ निकलती है । एक तरह देखा जाय तो हर लड़की की ज़िन्दगी अंजान व्यक्ति के साथ किया गया तीर्थयात्रा ही है ।

"ओत्तुतीर्पु(समझौता)" कहानी की नायिका सरला अपने पति का नया चेहरा देखकर दंग रह जाती है । उसने कभी भी पति का यह रूप देखा नहीं था । अपने मन का द्वेष वह प्रकट नहीं कर पाती । इसलिए खिड़कियों को ज़ोर से बंद करके अपने मन का भाव वह प्रकट करती है । बाहर से वह अपने पति के साथ समझौता कर लेती है । लेकिन अंदर की आँधी शांत नहीं होती । स्त्री को विवश होकर समझौता करना पड़ता है ।

३.२.२.१० प्रिया.ए.एस.

कहानी संग्रह - "ओरोरो तिरिवुकल (हरेक मोड)", "जागरुका (जागृत औरत)", "मञ्जा मरंगल चुट्टिलुम (चारों तरफ पीले पेड़)", "चित्रशलभङ्लुड़े वीडु (तितलियों का घर)", "ओषुक्किल ओरु इला (बहाव में एक पत्ता)"

पुरस्कार - गृहलक्ष्मी पुरस्कार, अंकणम पुरस्कार, एस.बी.आई. प्राइज़, वी.के.उन्निकृष्णन मेम्मोरियल पुरस्कार, रामू कार्याट स्पेशल प्राइज़, भीमा बल साहित्य पुरस्कार, केरल साहित्य अकादमी की श्री पद्मनाभस्वामि एंडोवमेंट पुरस्कार ।

मलयालम् की नयी पीढ़ी के कहानीकारों में प्रिया का प्रमुख स्थान है । स्त्री को सिर्फ शरीर के रूप में देखने के सामाजिक दृष्टिकोण के विरुद्ध प्रिया की कहानियाँ आवाज़ उठाती हैं ।

" "निषलुकलक्कप्पुरत् (परछाइयों के उस पार)" कहानी की नायिका ममता विद्रोही विकास से प्यार करती है । लेकिन शान्त स्वभाववाले अभय के साथ वह अपना सहारा ढूँढती है ।"४९ विकास जानता था कि कविता ममता की कमजोरी है । इसलिए उसने कविता के ज़रिये ममता को अपने ओर आकर्षित किया । विकास किसी से प्यार नहीं करता । उसे तो अपने फायदे से मतलब है । वह किसी को अपने रास्ते का रुकावट भी बनने नहीं देता । विकास के आदत के बारे में समझने केलिए ममता को वक्त तो ज़रूर लगा । शायद इसीलिए उसने विकास में नहीं, अभय में अपना सहारा ढूँढ लिया ।

आज की नारी जल्दी धोखे में नहीं पड़ती । वह शोषण को समझने लगी है । वह अपनी ताकत के बारे में भी समझने लगी है । इस में लेखिका पुरुष के धोखे एवं शोषण से बचने की स्त्री की स्वाभाविक शक्ति की ओर इशारा करती है।

" "स्नेहबहुमानप्पेटा अन्नम्मयक गीता लक्ष्मी एषुतुन्नुस्नेहादर से संपन्न अन्नम्मा को गीता लक्ष्मी लिखती है)" कहानी में प्रिया जी ने घरेलू काम करनेवाली गीतालक्ष्मी की कहानी चार चिट्ठियों के द्वारा प्रस्तुत किया है ।"५० इन चिट्ठियों में सिर्फ उसकी कहानी ही नहीं, बल्कि उसकी आशाएँ, निराशाएँ एवं सपने भी हैं । गीतालक्ष्मी अमृता नामक नर्सिंग होम एजन्सी (Nursing home agency) के ज़रिए होम नर्स का काम करती है । हरेक घर में तीन महीने रहने के बाद वह कुछ भी साथ नहीं ले जा सकती है । चाहे वह यादें हो, प्यार हो या वहाँ के रीति-रिवाज हो । लेकिन गीतालक्ष्मी कहती है कि हर परिवार से विदा लेते समय उसके अंदर कुछ न कुछ छिपका सा रहता है । हर तीन महीने में उसका नया जन्म होता है ।

इन तकलीफों के बीच वह अपने लिए कुछ भी नहीं कर पाती । अपनी शादी के खर्च केलिए ही वह काम कर रही है । इस बीच उसकी माँ का देहान्त होता है । शादी केलिए बटोरकर रखे हुए पैसे से उसने सोने की एक अँगूठी खरीदी थी । उसे बेच कर वह माँ का अंतिम संस्कार कर देती है । माँ की मृत्यु से हताश गीतालक्ष्मी वापस अपनी नौकरी में जुट जाती है । वह हमेशा सपना देखती रहती है । वह पति एवं बेटी के एक आदर्श परिवार को सपने में समेटकर रखती है । यही सपना उसकी ज़िन्दगी है । उसके लिए शादी शुदा ज़िन्दगी एक सपना ही है ।

डॉ.एम.लीलावती के अनुसार "स्त्री अस्मिता के आख्यान करने केलिए घोर स्त्री वादी के वक्ता होना ज़रूरी नहीं है माननेवाले कहानीकारों में प्रिया.ए.एस प्रमुस्ख है ।"५१ नारीवाद के वक्ता न होते हुए भी प्रिया अपनी कहानियों में स्त्री अस्मिता का चित्रण बखूबी करती है । "ओरोरो तिरिवुकल" कहानी की नायिका अपने पुराने अनुभव के आधार पर शोषण करने केलिए आए आदमी को बड़ी कुशलता के साथ टाल-मटोल देती है ।

"जागरुका (जागृत रहनेवाली)" कहानी की "मैं" तेरह साल लड़की है । वह छुट्टियाँ बिताने केलिए मुंबई से केरल के एक गाँव में आयी है । इस कहानी में उसकी छुट्टियों के दिन का ही ज़िक्र है । वह हर साल गर्मी की छुट्टियों में वह अपने दादा-दादी के पास आती रहती है । लेकिन इस बार उसे लगता है कि उसकी दादी उसकी हर बात को टाल रही है । उसे इसका कारण मालूम नहीं होता । उसे लंबी ड्रस पहनने केलिए मजबूर किया जाता है । कहीं पर जाने केलिए रोक-टोक लगा देती है । वह असमंजस में पड़ जाती है । अंत में उसे

मालूम हो जाता है कि उसकी दादी की इस तरह के रवैया का कारण अक्सर अखबारों में आनेवाली लड़कियों के साथ होनेवाले शोषण की खबरें ही है ।

आजकल चार साल की बच्ची से लेकर साठ-सत्तर साल की बूढ़ी औरतें तक शोषण एवं बलात्कार के शिकार बन जाती है । इसीलिए उसकी दादी अपनी पोती से जागरूक होने की बात कहती है । इस कहानी के अंत में तेरह साल की बच्ची अपने पिता से भी जागृत होने की बात सोचती है । यह कहानी हमारे समाज की मूल्य शोषण एवं दयनीय स्थिति की ओर इशारा करती है । स्त्री को अपनी एवं अपनी अस्मिता की रक्षा स्वयं करनी है ।

"अन्नयुम जोसफुम ओरु पिनक्कवुम (अन्ना जोसफ एवं एक तकरार)" नौकरी पेश अन्ना एवं बेरोजगार जोसफ की कहानी है । स्त्री हमेशा पुरुष पर निर्भर होती है । नारीवादी दृष्टिकोण में हमेशा स्त्री पर ही अत्याचार होता है । लेकिन यहाँ इसके उल्टे जोसफ अपनी जरूरतों की पूर्ति केलिए अन्ना पर निर्भर है । चंद्रमती की "सर्वे" कहानी की तरह इस में भी स्त्री एवं पुरुष के रोल को बदल दिया गया है ।

३.२.२.११ गीता हिरण्यन

"भीतर और बाहर" की नायिका सिलविया है । वह दिन में सपने देखनेवाली एवं कविता लिखनेवाली लड़की है । उसकी अपनी दुनिया है । उसकी ननद नहीं चाहती है कि उसकी शादी हो जाय । क्योंकि उसी से घर के काम और बच्चों का देखभाल हो जाता है ।

सिलविया मठवासिनी बनने केलिए सत्रह साल की आयु में मठ में भर्ती होने केलिए गयी थी । लेकिन वहाँ की दुनिया उसकेलिए बिलकुल नयी एवं अपरिचित थी । उस वातावरण से वह अपने आप को अड्जस्ट नहीं कर पायी । इसलिए मठ से वापस घर आ गयी । उसके पिताजी को यह अच्छा नहीं लगा । लेकिन बच्ची के मन की हालत को समझकर गिरिजाघर के फादर आलंगोड़ ने पिता से कहा कि अगर वह वहाँ रहना नहीं चाहती है तो ज़बरदस्ती करने से कोई फायदा नहीं । फादर ने सिलविया को स्कूल में एल.के.जी के टीचर एवं आया की नौकरी दिलवायी । यह नौकरी उसकेलिए एक तसल्ली थी ।

मठ का ड्राइवर सन्नी सिलविया से बहुत प्यार करता है । वह अनाथ है । सालों पहले किसी ने उसे मठ के आँगन में छोड़ा था । मठवासिनियों ने ही उसे पाल-पोसकर बड़ा किया । छोटे बच्चों को लेकर मठ के मदर एवं सिलविया चिड़िया-घर देखने जाते हैं । सन्नी ने मौका मिलते ही सिलविया से कहा कि तेरे ये दो तरफा खेल मुझे पसंद नहीं है । आज

गाड़ी गारेज (Garage)में लेकर जाने के बाद मुझे तेरा फैसला जानना है । यह खेल आज ही खतम करना है ।

सिलविया भी अच्छी तरह जानती है कि वह सन्नी के साथ दो तरफा खेल खेल रही है । एक तरफ उसके मन में सन्नी के प्रति प्यार है, तो दूसरी तरफ उसका अनाथत्व उसे परेशान करता है । वह यह तय नहीं कर पाती कि उसे क्या निर्णय लेना है । वह किसी भी हालत पर सन्नी को खोना नहीं चाहती । लेकिन कभी कभी वह सन्नी का इन्कार भी करती है । वह अपने आप को पहचान नहीं पाती है । उसका द्वन्द् व्यक्तित्व है । इसी द्वन्द् व्यक्तित्व के कारण वह सन्यासिनी न बन सकी । क्योंकि एक तरफ सपना देखनेवाली, कविता लिखनेवाली सिलविया है, तो दूसरी तरफ वेद पुस्तक में, ईसा में मन समर्पण करनेवाली सिलविया है । उसे अभी तक मालूम नहीं है कि उसे क्या चाहिए । वह दुविधा में है । उसके मन में सन्नी के प्रति प्यार तो ज़रूर है, लेकिन उस प्यार को पहचानने से वह इन्कार करती है ।

“घरे बयारे” कहानी की नायिका गृहिणी है । अपने प्रेमी से मिलकर वह जब घर आती है तो उसका मन व्यथित था । उसने निश्चय किया कि अपने मन के सारे दु:खों एवं सपनों को दरवाजे के बाहर रखेगी । वह झूठ बोलकर अपने प्रेमी से मिलने गयी थी । उसने पति से कहा कि वह अपने सहेली मिनी से मिलने गयी थी । उसका पति इंजिनीयर है । उसके अनुसार “उसका पति नहीं जानता था कि अपनी पत्नी के मन में अनछूए एवं अपरिचित जगहें हैं । वह यह कभी भी जान न सका कि पत्नी में भी उसके पति के ज़रूरत के वक्त ही नहीं, बल्कि बाकी समय में भी लाड़-प्यार चाहनेवाला एक शरीर एवं उसके अंदर एक मन भी है ।”५२ पुरुष कभी भी स्त्री को जानने की कोशिश नहीं करता । वह सिर्फ अपने बारे में ही सोचता है । तभी वह अपने आघूरे प्यार को, प्यास को बुझाने के लिए घर के बाहर जाती है ।

उसका प्रेमी हरिदास विदेश में काम करता है । जब भी वह अपने देश आता है, वह ज़रूर प्रेमिका से मिलने उसके घर आया करता है । क्योंकि नायिका का पति उसका दोस्त भी है ।

आज वह अपने प्रेमी से मिलने उसके घर गयी थी । क्योंकि उसकी माँ एवं पत्नी किसी रिश्तेदार से मिलने गये हैं । आज पहली बार मन के मिलन के साथ शरीर का मिलन भी हुआ । लेकिन उसे लगता है कि शारीर के मिलन के बाद मन का प्यार समाप्त हो जाता

है । उसे ये भी लगता है - "इस में कौन सा पाप है । प्यार करनेवाले को अगर शरीर भी दिया तो क्या हुआ ।"५३ लेकिन वह यह भी जानती है कि हमारा समाज कभी भी इसे स्वीकार नहीं करेगा । हमारी सामाजिक नैतिकता स्त्री को दो पुरुषों के साथ संबंध रखने की इज़ाजत नहीं देता । लेकिन पितृ-सत्तात्मक समाज ने पुरुष को इसकी अनुमति दी है ।

उस दिन नायिका अपने प्रेमी से पूछती है - "अगर तुम्हारी पत्नी किसी दूसरे के साथ ऐसे ही बैठी होती तो तुम्हें कैसा लगेगा ।"५४ उसने कहा कि मैं उसे जान से मार डालूँगा । यह सुनकर उसे बहुत बड़ा धक्का लगा । उसने अपने प्रेमी के इन शब्दों में पितृसत्तात्मक समाज के पुरुष को ही सुना । पुरुष अपनी पत्नी से पातिव्रत्य चाहता है । वह किसी दूसरे की पत्नी के साथ प्यार कर सकता है, छेड़-छाड़ कर सकता है और सो भी सकता है । लेकिन अगर उसकी पत्नी ने ऐसा किया तो उसके अहं पर चोट लगेगी ।

इसीलिए नायिका आगे प्रेमी से न मिलने का निश्चय करके अपने मन का दरवाजा ज़ोर से उसकी ओर बंद करने का निश्चय करती है । लेकिन वह जान जाती है कि उसके प्रेमी ने उसके शरीर पर ही नहीं उसके मन पर भी दाग छोड़ा दिया है, जिससे कभी उसे मुक्ति नहीं है ।

"घरे बायरे" मशहूर सिनेमा निर्देशक "सत्यजित राय" की एक सिनेमा का नाम है । यह सिनेमा "रबीन्द्रनाथ ठागोर" के "घर के अंदर और बाहर" नामक कहानी पर आधारित है। इस कहानी में घर के अंदर एवं बाहर की स्त्री का चित्रण हुआ है ।

घर के अंदर नायिका परिवार में अपनी अस्मिता को तलाशती है । तभी तो उसे लगता है कि उसके पति ने उसके मन एवं शरीर को पहचाना नहीं । पुरुष हमेशा अपनी इच्छा के अनुसार ही स्त्री शरीर को चाहता है । वह कभी स्त्री की शारीरिक इच्छा या ज़रूरत के बारे में सोचता नहीं । पुरुष के शरीर की भूख के अनुसार या शारीरिक ज़रूरत के अनुसार ही स्त्री की शारीरिक जरूरतें होनी चाहिए । नहीं तो नैतिक दृष्टि से वह बुरी स्त्री बन जाती है । घर के बाहर भी उसकी इच्छा के विरुद्ध ही उसके साथ उसका प्रेमी भी बर्ताव करता है । घर के बाहर भी वह अपनी अस्मिता को ढूंढती रहती है ।

"दैवत्तिनु दाक्षिन्यमिल्ला (ईश्वर निर्दयी है)", "ओट्टा स्नापिल ओतुक्कावुन्नतल्ला ओरु जन्म सत्यम् (एक जन्म की सच्चाई एक स्नाप में बंद नहीं कर सकते)" आदि उनकी चर्चित कहानियाँ है ।

"एक जन्म की सच्चाई एक स्नाप में बंद नहीं कर सकते" कहानी की नायिका स्कूल की पढ़ाई की अग्रेज़ी जाननेवाली नौकरानी है । वह गरीबी के कारण पढ़ाई अधूरी छोड़कर चार-पाँच घर का काम करके अपना गुज़ारा करती है । वह समझदार एवं काबिल है । लेकिन घर की मालकिन उसकी काबिलियत को उसकी गलती मानती है । गीता जी की नायिकाएँ पढ़ी-लिखी एवं साहित्य में अभिरुचि रखनेवाली होती है । लेकिन पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ उनकी प्रगति में बाधा डालती है ।

"उन्निकुट्टन्डे अम्मयुडे ओरु दिवसम् (उन्निकुट्टन की माँ का एक दिन)" कहानी की माँ नौकरी पेश होने के साथ लेखिका भी है । डॉ.एम.लीलावती के अनुसार "इस कहानी में नारी के अंदर की गृहणी एवं लेखिका के बीच का संघर्ष चित्रित हुआ है ।"५५

नायिका अपने छोटे बच्चे को क्रष में पहुँचकर दफ्तर चली जाती है । दफ्तर के दुर्गंधपूर्ण शौचनालय में उसे अपने स्तन से दूध निचोड़कर निकालना पड़ता है । यह कितना दर्दनाक अवस्था है । यह नौकरी पेश नारी की दयनीय स्थिति है । पुरुष को कभी भी ऐसी स्थिति का सामना करना नहीं पड़ेगा । उसी तरह लेखिका होने के नाते वह अपने बच्चे की रुलाई को नज़र अंदास करके साहित्य रचना केलिए अनुकूल जगह ढूँढती है । पुरुष साहित्यकार को इसकी ज़रूरत नहीं होती । वह जब चाहे अपनी रचना प्रक्रिया के अनुकूल वातावरण बना सकता है ।

३.२.२.१२ सितारा.एस

कहानी संग्रह - "अग्नियूम् शालाभगलूम् (आग और तितली)", "वेशपकर्चकल", "नृतशाला (नाट्यगृह)"

सितारा के पात्र चाहे पुरुष हो या स्त्री, ज़िन्दगी से धावा करनेवाले नहीं हैं । वे हमेशा एक दिवास्वप्न के आलस्य में डूबते रहते हैं । लेकिन इस आलस्य में भी वे समाज से प्रतिशोध करनेवाले हैं ।

सितारा की " "अग्नि(आग)" कहानी बलात्कार के बारे में समाज के व्यवस्थापित मिथ्या धारणा के प्रति अपरिचितत्व रखनेवाली कहानी है ।"५६ इस कहानी की नायिका प्रिया दफ्तर से घर लौट रही थी । तीन आदमियों ने उसका रास्ता रोक दिया । एक उसके दफ्तर के पास टेलिफोन भूत चलानेवाला संजय था । बाकी दोनों को प्रिया पहचान ही रही थी कि दोनों ने उसे पास के झाड़ी में पटक दिया । दोनों ने उसे ज़ोर से पकड़ा और तीसरे

ने एक एक करके उसके कपड़े उतारे । दूसरा आदमी रवि था और तीसरा एक नाबालिक । बलात्कार के बाद तीनों उसे वहाँ छोड़कर चले गये ।

प्रिया वापस घर आती है । माँ रसोई में थी । बहिन टी.वी. देख रही थी और पिताजी तो घर में नहीं थे। उसने अपने आप को कमरे में बंद कर दिया। दो बार नहाने के बाद भी उसे कुछ अच्छा नहीं लगा । उसे लगा कि गंदगी अभी साफ नहीं हुई है । उसने घर में किसी से यह बात नहीं बतायी । दूसरे दिन संजय एवं रवि उसका इंतज़ार कर रहे थे । उन्होंने उसे धमकी देकर कहा कि अगर वह किसी से यह बात बतायेगी तो उसे ही नहीं उसके घरवालों को भी मार देंगे । उसके बाद संजय ने प्रिया से पूछा - "कल कैसा था? ।"५७ तब प्रिया ने उसकी आंखों में आँखें डालकर कहा - "तू तो उतना अच्छा नहीं था । तुझ में ताकत की कमी है । मुझे नहीं लगता कि तू एक स्त्री को पूर्ण रूप से तृप्त कर पाएगा ।"५८ उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया । उसके बाद उसने रवि से कहा - "मुझे तू बहुत अच्छा लगता है । तू तो सचमुच मर्द है ।"५९

प्रिया ने संजय के पुरुषत्व पर कमी लगाकर उससे अपना बदला लिया । क्योंकि अब जब भी वह किसी स्त्री के पास जाएगा यह हीनता ग्रन्थि उसका पीछा नहीं छोड़ेगा ।

उसके बाद वह हमेशा रवि को देखकर मुसकुराती थी । पहले तो वह उसका सामना कर न सकने के कारण गर्दन झुकाकर चला जाता था । एक दिन वह प्रिया से बातें करता है तो प्रिया कहती है कि उसे रवि पसंद है । कुछ दिन बाद वह प्रिया से आकर कहता है कि उसे भी प्रिया से प्यार हो गया है । लेकिन उसके मन में संदेह है कि कहीं प्रिया उससे बदला तो नहीं ले रही है । प्रिया के अनुसार " तेरा यह प्यार ही मेरा बदला है ।"६० इस तरह प्रिया अपने आंसुओं को अपने अंदर समेट कर अपने तीखे शब्दों से पुरुष समाज का सामना करती है । डॉ. सुधीर किडंगूर के अनुसार "यहाँ सितारा ने अपमानित स्त्रियों की अस्मिता को स्थापित करने केलिए एक दर्द को दूसरे दर्द से पराजित करने का कलात्मक प्रयोग किया है ।"६१ यह सही है कि एक दर्द से छुटकारा पाने केलिए दूसरा दर्द ही सहायक होता है । मलयालम् में एक कहावत है "उष्णम् उष्नेन शांति" अर्थात्गर्मी से ही गर्मी शान्त होती है ।

बलात्कार के शिकार प्रिया ज़िंदगी को एक नये तरीके से देखने की कोशिश करती है । सीता को अपनी पवित्रता का प्रमाण आग में प्रवेश करके देना पडॉ । आधुनिक नारी अपने स्त्रीत्व का प्रमाण अपनी चिताओं से, बदला लेने के नये तरीकों से देना चाहती है ।

उनकी "अपरिचिता (अपरिचित)" कहानी की फातिमा अपने पति को सिर्फ शारीरिक संबंध से ही जानती एवं पहचानती है । यही उसकी नियति है । इसे वह निर्विकार रूप से सह लेती है । फातिमा उसके पति अली की तीसरी पत्नी है । उसे अपने पति से प्यार नहीं प्राप्त होता है । शरीर के साथ संबंध रखनेवाला उसका पति उसकी आत्मा से मुँह मोड लेता है । फातिमा अपने सत्व को पहचानती है । लेकिन उसे बनाये रखने की उसकी सारी कोशिशें नाकामयाब होती है ।

उनकी "देवविली (ईश्वर की पुकार)" कहानी की षेरली हरी से शादी करने केलिए नाम बदलकर सीता बन जाती है । लेकिन बाद में वह षेरली बनने का निश्चय करती है । क्योंकि वह अपने "स्व" या अस्तित्व को भुला नहीं पाती । धर्म परिवर्तन से वह हिन्दु तो बन गयी । लेकिन वह अपने विश्वासों को छोड़ न सकी । धर्म उसकेलिए एक जीवन चर्या है । उसे वह एक मुखौटे के रूप में नहीं पहन सकती । धर्म के अतीत होकर प्यार करना कोई गुनाह नहीं । लेकिन इसके नाम पर एक जीवन चर्या या संस्कार को बदलना मुश्किल है । "सितारा के अनुसार धर्म एक चिह्न या एक रात से बदलाव लानेवाली चीज़ नहीं । यह पीढ़ियों से आर्जित की हुई चीज़ है ।"६२

३.२.२.१३ बी.एम.सुहरा

उपन्यास - "किनाव् (सपने)", "मोषी (शब्द)", "इरुट् (अंधेरा)", "निलवु (चाँदनी)", "निषल (छाया)", "आकाश भूमिकलुड़े ताक्कोल (धरती और अंबर की चाबी)"

कहानी संग्रह - "चोईच्ची", "भ्रान्त (पागलपन)", "कुहु...कुहु..." , "करच्चा पेट्टी"

बाल साहित्य - "मलमुकलिले अप्पूप्पन (पहाड़ में रहनेवाला नाना)", "कुट्टिकलूडे अरबी कथकल (बच्चों की अरब कहानियाँ)", "सात भाई और एक बहन", "पविष पुट्टु, पंजतंत्रम कथकल", "मत्र मोतिरम् (जादू की अंगूठी)"

अनुवाद - "अमृत पूरी", "कोट्टार तेरुव", "साइनिंटे कल्याणम"

पुरस्कार -१९९२ में युवा सहित्यकारों केलिए निर्दिष्ट "ललितांबिका अंतर्जनम्" से पुरस्कार आप सम्मानित हुई । केबलकृष्णन स्मारक पुरस्कार (२००४), केरल साहित्य अकादमी पुरस्कार (२००८)

उनकी "भ्रांत(पागलपन)" कहानी में एक स्त्री की दिनचर्या में ज़रा सा बदलाव आने पर स्त्री की अवस्था को चित्रित किया गया है । कहानी की नायिका को लगता है कि आज सबेरे न उठने से क्या होगा? इसलिए वह देर से उठती है और उठने के बाद पति से चाय बनाने को कह कर अखबार पढ़ने लगती है । पति को यह बिलकुल अच्छा नहीं लगा । क्योंकि हमेशा पत्नी चाय बनाकर उसे देती थी और वह चाय पीकर अखबार पढ़ता था । ज़्यादातर घरों में यही दिनचर्या होती है । लेकिन यहाँ आज सब कुछ उल्टा हो गया है ।

अखबार पढ़ने के बाद वह पति को रसोई में जाकर खाना बनाने एवं बच्चों को चाय देने को कहती है और नहाने केलिए जाती है । पति को यह अटपटा सा लगा । उसे लगा कि उसकी पत्नी पागल हो गयी है । इसलिए वह पगलखाने में फोन करके गाड़ी मँगवाता है ताकि पत्नी को पागलखाने भेज दें । फोन करने की आवाज़ सुनकर वह चिल्लाकर कहती है कि मैं पागल नहीं हूँ । लेकिन उसकी बात सुननेवाला कोन है? हमारे पारिवारिक दिनचर्या में औरत का बहुत बड़ा हाथ है । उसमें ज़रा सा बदलाव किसी को बर्दाश्त नहीं । नायिका अपने व्यस्त एवं उबाऊ ज़िंदगी से एक दिन की मुक्ति चाहती है । अपनी आवाज़ बुलंद करने के कारण उसे पागल घोषित किया गया । पितृसत्तात्मक समाज के द्वारा सिर्फ पुरुष केलिए रखे गये शब्द एवं दिनचर्या जब स्त्री दोहराती है, तो उसका अंजाम बहुत बुरा होता है । अपनी आवाज़ बुलंद करने के कारण उसे पागल घोषित किया गया ।

उनकी "अवने नरकाग्नियिल एरिक्युविन् (उसे नरक की आग में जलाओ)" कहानी की नायिका चार भाईयों की इकलौती बहन है । पिता एवं भाईयों ने मिलकर उसकी शादी करा दी । वह अपने पति की दूसरी शादी करने के इरादे के विरुद्ध खड़ी होती है, और दूसरी शादी करने पर मर जाने की धमकी भी देती है । लेकिन जब उसका शरीर आग में जलने लगता है, तो उसे एहसास होता है कि यह आग उसकी लगाई हुई आग नहीं है । फिर भी बिना किसी शिकायत के वह स्वयं अपनी नियति को स्वीकार करती है ।

उसे किसी से कोई शिकायत नहीं न पिता से, न भाईयों से, और न ही अपने पति से । हटे-खटे चार भाईयों की एकलौती बहिन होते हुए भी उसे किसी की दूसरी बीवी बनना पड़ा । आज स्त्रियों के साथ इस तरह की दुर्घटनाएँ होती रहती हैं । इसके बहुत सारे कारण हैं । लेकिन स्त्री ही हमेशा इसकी शिकार बनती है । किसी ने ठीक ही कहा है कि घर की आग की विशेषता है कि वह बहु या पत्नी पर ही लगती है, बेटी पर नहीं । यह भी सच है कि बहु एवं पत्नी किसी की बेटी ही है । लेकिन यह कोई सोचता नहीं ।

३.२.२.१४ इन्दु मेनन

इन्दु मेनन की कहानियों को हम सामाजिक धरातल पर चर्चा कर सकते हैं । “उनके अनुसार स्त्री को पुरुष से नहीं बल्कि समाज से आज़ाद होना चाहिए ।” ६३ समाज ने स्त्री के पैरों पर परंपराओं, रूढ़ियों एवं नैतिकता की बेड़ियाँ पहना दी है, जिसे तोड़ना उसकेलिए आसान नहीं है ।

इन्दु मेनन की “लेसबियन पशु” कहानी की नायिका महरुन्नीसा दूसरी स्त्री के लैंगिक अतिक्रमण से बचने केलिए हरी पर निर्भर होती है । वे दोनों शादी किये बिना एक साथ रहने का निश्चय करते हैं । “कोहाबिटेशन(cohabitation)” नामक इस व्यवस्था स्त्री-पुरुष के समत्व भावना पर आधारित है । तीन साल एक साथ रहने के बाद दोनों शादी कर लेते हैं । शादी के बाद हरी का स्वभाव बिलकुल बदल जाता है । वह पुरुष-वर्चस्व वादी समाज के पुरुष के समान बर्ताव करने लगता है । शादी के बाद उसका अहं जाग उठता है और वह साधारण पुरुष के समान महरुन्नीसा पर पति होने का अपना हक जताने लगता है । हमारे सामाजिक व्यवस्था के अनुसार शादी में स्त्री पर पुरुष का स्वामित्व हमेशा रहता है । इसका असर हरी पर भी पड़ता है । स्वयं चाय बनाकर महरुन्नीसा को भी देने वाला हरी पत्नी से चाय बनवाना चाहता है ।

उनकी “मम्मी” कहानी की सिस्टर रोज़ अपनी मर्ज़ी से धर्म संघिनी (मठ वासिनी) नहीं बनी थी । उसकी माँ ने मन्नत माँगी थी कि अगर “अलब्युमिनियम” नामक बीमारी से अपने परिवार को छुटकारा मिल जाय तो वह अपनी बच्ची को धर्म संघिनी बना देगी । रोज़ को मठ का महोल अच्छा नहीं लगता । उसने देखा कि धर्म संघिनी मठों में अनैतिक संबंध के ज़रिये जन्मे बच्चों को कूड़े-दान में फेंक दिया जाता है । उस दुनिया से बचने केलिए वह अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है । लेकिन एक दुर्घटना में दोनों की मृत्यु होती है ।

“इस कहानी में यह दिखने की कोशिश की है कि मनुष्य के विकारों को दबाकर जीने का शिक्षण किसी भी धर्म शिक्षण से नहीं होगा ।”६४ मनुष्य के मन में विकारों का होना स्वाभाविक है । यह प्रकृति का नियम है । उसे दबाने का काम किसी धर्म की सहायता से नहीं होगा । बल्कि मानव इस पर अपने आप काबू पा सकता है । अगर ज़बरदस्ती इस पर पाबंदी लगाई गयी, तो मम्मी कहानी में चित्रित मठों के समान अनैतिक संबंध होता रहेगा । यह एक सामाजिक आपत्ति है ।

"आन् वन्डिकल" कहानी की लड़की अपने प्रेमी के साथ होटल में पकड़ी जाती है । लेकिन आम लड्कियों की तरह वह ड़रती नहीं । होटल में कमरा लेने केलिए अपने प्रेमी के साथ जाती है, तो वह होटल मानेजर को अपना असली पता बता देती है । "इन्दु मेनन प्यार को कभी भी अपराध नहीं मानती । इसलिए प्यार करने केलिए किसी भी प्रकार की शर्त, कानून या लिंग-विभेदीकरण की ज़रूरत नहीं मानती ।"६५ उनके अनुसार प्यार स्त्री एवं पुरुष केलिए ज़रूरी है । स्त्री भी प्यार की माँग कर सकती है । स्त्री होने के कारण उसे अपने प्यार को दबाकर रखने की ज़रूरत नहीं है ।

रति उनकी कहानियों का विषय है । लेकिन उनकी कहानियों में अश्लील कतई नहीं है । आजकल रति एवं अश्लीलता को एक जैसा माना जाता है । और रति के नाम पर अश्लीलता का चित्रण होता रहता है । इन्दु मेनन की नायिकाएँ कभी अपने प्यार के इज़हार में हिचकती नहीं । वे अपनी आत्मा की नग्नता के बारे में परेशान हैं ।

उनके अनुसार इस धरती में सिर्फ स्त्री को अपने शरीर पर किसी भी प्रकार का हक नहीं । हमेशा उसके शरीर पर पुरुष का ही अधिकार रहा । वह अपने शरीर को पुरुष की दृष्टि से देखती रही । लेकिन जिस प्रकार स्त्री का शरीर उसकी कमज़ोरी है उसी प्रकार चाहे तो उस शरीर को वह अपनी ताकत भी बना सकती है ।

३.२.२.१५ के.पी.सुधीरा

कहानी संग्रह - "आकाशचारिकल(आसमान के मुसाफिर)" , "स्नेहस्पर्शङ्गल (प्यार के स्पर्श)" , "चोलमरंगल इल्लात्त वषी"

जीवन मूल्यों के प्रति आस्था सुधीरा की कहानियों की विशेषता है । आप स्त्री के सतीत्व की खोज में लगी कहानीकार हैं ।

"उमयूडे मकन(उमा का बेटा)" कहानी की उमा किसी दूसरी औरत से बच्चे की ज़िम्मेदारी लेती है । इस ज़िम्मेदारी के कारण वह अपने पति से दूर चली जाती है । उसका पति उस बच्चे को साथ रखने नहीं देगा । लेकिन वह तो उस बच्चे को छोड़ भी नहीं सकती । अपने ज़िम्मेदारी एवं बच्चे से प्यार के कारण वह पति को छोड़ने केलिए तैयार हो जाती है । "स्पुरणम्" कहानी की नायिका कल्याणी एक आदमी से बेहद प्यार करती है तो किसी दूसरे से भ्रातृ स्नेह भी रखती है । उनकी "ताजमहल", "कुंजिम्मा" आदि कहानियों में भी प्यार एवं ममता का झलक देख सकते हैं ।

"अवलुड़े विट्टू (उसका घर)" नामक कहानी का पति अपनी पत्नी की ख्याति सह नहीं पाता । वह दूसरों के द्वारा अपनी पत्नी के आदर प्राप्ति को मानने वाला नहीं । वह नहीं चाहता है कि उसकी पत्नी साहित्य रचना करके सब के आदर प्राप्त करें । लेकिन पत्नी तो अपने लेखन की प्रक्रिया ज़ारी रखती है । वह अपने पति से छिपाकर लिखती रहती है, और उसमें विजय भी प्राप्त करती है । शायद यह कहानी नारीवादी या नारी अस्मिता के उदाहरण रूपी कहानी नहीं है । लेकिन इसका ज़िक्र इसलिए किया गया है कि यह उनकी एक अच्छी कहानी है । इसमें उनकी रचना प्रक्रिया की नई लेखन शैली दर्शनीय है ।

निष्कर्ष

मलयालम् साहित्य की महिला साहित्यकार स्त्री की समस्याओं को पहचाननेवाली है । उन्होंने अपनी कहानियों में नारी की बेचैनी एवं आत्मिक खोज का चित्रण किया है । नारी समस्याओं के प्रति उनका रोष उनकी कहानियों में चित्रित है । माधविकुट्टी, सारा जोसफ, ग्रेसी आदि लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में नारी अस्मिता का चित्रण किया है ।

मलयालम् कहानी में कई ऐसे कहानीकार हैं, जो अपने आप को कभी नारीवादी नहीं मानते । लेकिन उन्होंने अपनी कहानियों में नारी की समस्याओं का चित्रण सूक्ष्म दृष्टि से किया है । इंदुमेनन, के.आर.मीरा जैसे कहानीकारों की रचनाओं में पुरुष सत्ता के नीचे दबी ज़िंदगी से ऊपर उठने की कोशिश करनेवाली नारियों का चित्रण मिलता है ।

नारी संबंधी सामाजिक विवेचन का चित्रण के.सरस्वती अम्मा की कहानियों में प्राप्त है । के.सरस्वती अम्मा के बाद राजलक्ष्मी एवं माधविकुट्टी ने नारी की पीडॉ तथा बेचैनी को अपनी कहानियों में वाणी दी । इनके अतिरिक्त पी.वत्सला, सुहरा, सितारा आदि कहानीकारों ने अपनी कहानियों में नारी अस्मिता का चित्रण प्रस्तुत किया है ।

मलयालम् के महिला कहानीकारों ने नारी की ज़िंदगी की जटिलाताओं को अपनी कहानियों में बड़ी सच्चाई के साथ चित्रित किया है । पुरुष सत्तात्मक समाज ने हमेशा नारी को दमित कर रखा है । इसके खिलाफ नारी का आक्रोश इनकी कहानियों में व्यक्त है ।

संदर्भ

१. स्त्री , परिस्थिति , आत्मीयता - डॉ. मिनी प्रसाद - पृ.सं. १०

२. स्त्री , परिस्थिति , आत्मीयता - डॉ. मिनी प्रसाद - पृ.सं. ११

३. पापत्तरा - सारा जोसफ - पृ.सं. १५

४. स्त्री सत्वाविष्कारम् -आधुनिक मलयला साहित्यत्तिल - डॉ.एम.लीलावती - पृ.सं. ९

५. हमारी महिला कहानीकार - एम.एम. बषीर - पृ.सं. ५३

६. चरितरम् विस्मरिच्च आध्याकाल कथाकारिकल् - पी.के.कनकलता - मातृभूमि-जून-जुलाई - २००६

७. स्त्री - शास्त्रम्, समूहम् -(सं)टी. के. आनंदी & के. एन. गणेश - पृ.सं. ५३

८. स्त्री सत्वाविष्कारम् -आधुनिक मलयला साहित्यत्तिल - डॉ.एम.लीलावती - पृ.सं. ८

९. अन्य पुरुष के साथ अनैतिक संबंध स्थापित होने का इल्ज़ाम लगाने के बाद ऊँचे कुल के, खास कर नंबूतीरी स्त्रियों के साथ किये जाने वाले पूछ्ताछ (सामाजिक पैरवी) को 'स्मार्त विचारम्' कहते हैं ।

१०. स्त्री सत्वाविष्कारम् - आधुनिक मलयला साहित्यत्तिल -डॉ.एम.लीलावती - पृ.सं. १९

११. पेण बुद्धियूम मटु प्रधान कृतिकलुम् - के. एस. रविकुमार - पृ.सं. ७३

१२. के. सरस्वती अम्मा - सी. एस. चंद्रिका - पृ.सं. ५३

१३. के. सरस्वती अम्मयूड़े कथकलेकुरीच्चुल्ला पढनम् - के. सी. माधविकुट्टी - पृ.सं. ३५

१४. स्त्री - शास्त्रम्, समूहम् (सं) -टी. के. आनंदी & के. एन. गणेश -पृ.सं. ७३

१५. देवदूतिकल माञ्जुपोवत् - पी.गीता - पृ.सं. ६१

१६. पेण बुद्धियूम मटु प्रधान कृतिकलुम् - के. एस. रविकुमार - पृ.सं. ७८

१७. सठोत्तरी हिन्दी-मलयालम् कहानी - संग्रथन - जुलाई २०११ - पृ.सं. ३०

१८. माधविकुट्टियुड़े स्त्रीकल - माधविकुट्टी - पृ.सं. ३३

१९. कन्नाडिकल उड़क्युन्नतेंद - पी.गीता - पृ.सं. १४

२०. माधविकुट्टियुड़े स्त्रीकल - माधविकुट्टी (सं) कलरकोड वसुदेवन नायर - पृ.सं. १२४

२१. माधविकुट्टियुड़े स्त्रीकल - माधविकुट्टी (सं) कलरकोड वसुदेवन नायर - पृ.सं. १२४

२२. फेमिनिज़म - पी.वत्सलयुडे नोवलुकलिल - के. पी. रविचन्द्रन(अप्रकाशित शोध प्रबंध)

२३. देवदूतिकल माञ्जुपोवत् - पी.गीता - पृ.सं. ३३

२४. माधविकुट्टियुड़े स्त्रीकल - माधविकुट्टी - (सं) कलरकोड वसुदेवन नायर - पृ.सं. २१२

२५. देवदूतिकल माञ्जुपोवत् - पी.गीता - पृ.सं. ३९
२६. राजलक्ष्मी - रति मेनन - पृ.सं. ४८
२७. चेरुकथायिले स्त्री पक्षम - डॉ.सुधीर किडंगूर - पृ.सं. ११७
२८. पेण्णेषुत्त -(सं) केरल भाषा संस्थान - पृ.सं. १२४
२९. शिशिर ऋतु की चींटियाँ - पी.वत्सला - पृ.सं. ३२
३०. कन्नाडिकल उड़क्युन्नतेद - पी.गीता - पृ.सं. २१
३१. कन्नाडिकल उड़क्युन्नतेद - पी.गीता - पृ.सं. १७
३२. पेण्णेषुत्त - (सं) केरल भाषा संस्थान - पृ.सं. १२६
३३. पेण्णेषुत्त - (सं) केरल भाषा संस्थान - पृ.सं. १२६
३४. फेमिनिज़म - पी.वत्सलयुडे नोवलुकलिल- के. पी. रविचन्द्रन - पृ.सं. ५३
३५. पाप का चबूतरा - सारा जोसफ - पृ.सं. ५४
३६. पाप का चबूतरा(भूमिका) - सारा जोसफ - पृ.सं. १९
३७. पाप का चबूतरा(भूमिका) - सारा जोसफ - पृ.सं. २१
३८. देवदूतिकल माञ्जुपोवत् - पी.गीता - पृ.सं. ६७
३९. स्त्रीविमर्श - भारतीय परिप्रेक्ष्य - डॉ.के.एम.मालती - पृ.सं. १५०
४०. अंधेरे में सितारे की तलाश - डॉ. षणमुखन - पृ.सं. १८
४१. अंधेरे में सितारे की तलाश - डॉ. षणमुखन - पृ.सं. १८
४२. अंधेरे में सितारे की तलाश - डॉ. षणमुखन - पृ.सं. २२
४३. कन्नाडिकल उड़क्युन्नतेद - पी.गीता - पृ.सं. २१
४४. अंधेरे में सितारों की तलाश - डॉ. षणमुखन - पृ.सं. २१
४५. पेण्णेषुत्त - (सं) केरल भाषा संस्थान - पृ.सं. १३८
४६. पेण्णेषुत्त - (सं) केरल भाषा संस्थान - पृ.सं. १३९
४७. देवदूतिकल माञ्जुपोवत् - पी.गीता - पृ.सं. ७१
४८. देवदूतिकल माञ्जुपोवत् - पी.गीता - पृ.सं. ११८
४९. पेण्णेषुत्त - (सं) केरल भाषा संस्थान - पृ.सं. १५३
५०. पेण्णेषुत्त - (सं) केरल भाषा संस्थान - पृ.सं. १५४
५१. स्त्री सत्वाविष्कारम् - आधुनिक मलयला साहित्यत्तिल - डॉ.एम.लीलावती - पृ.सं. १८५
५२. गीता हिरण्यन्डे कथकल - गीता हिरण्यन - पृ.सं. ७६
५३. गीता हिरण्यन्डे कथकल - गीता हिरण्यन - पृ.सं. ८२

५४. गीता हिरण्यन्डे कथकल - गीता हिरण्यन - पृ.सं. ८२

५५. स्त्री सत्वाविष्कारम् - आधुनिक मलयला साहित्यत्तिल - डॉ.एम.लीलावती - पृ.सं. १७९

५६. तारुण्यत्तिंडे कथांदरंगल - एस.श्रीजित - पृ.सं. ३२

५७. अग्नियुम कथकलुम - सितारा .एस - पृ.सं. १४

५८. अग्नियुम कथकलुम - सितारा .एस - पृ.सं. १४

५९. अग्नियुम कथकलुम - सितारा .एस - पृ.सं. १४

६०. अग्नियुम कथकलुम - सितारा .एस - पृ.सं. १४

६१. चेरुकथायिले स्त्री पक्षम - डॉ.सुधीर किडंगूर - पृ.सं. १११

६२. तारुण्यत्तिंडे कथांदरंगल - एस.श्रीजित - पृ.सं. ३२

६३. तारुण्यत्तिंडे कथांदरंगल - एस.श्रीजित - पृ.सं. ७

६४. तारुण्यत्तिंडे कथांदरंगल - एस.श्रीजित - पृ.सं. १४

६५. तारुण्यत्तिंडे कथांदरंगल - एस.श्रीजित - पृ.सं. १०

अध्याय चार

चित्रा मुद्गल की कहानियों में

नारी अस्मिता

४.१ नारी अस्मिता

व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास एक जैसा नहीं होता । उसका विकास परिवार एवं समाज के विकास के साथ जुड़ा हुआ है । व्यक्ति होने के नाते नारी का विकास भी इन सब से जुड़ा हुआ है । नारी के पूर्ण रूप में स्वाधीन न होने के पीछे तीन कारण है । एक ओर उसके ऊपर घर की जिम्मेदारियाँ हैं । दूसरी ओर बाह्य परिवेश के कारण उत्पन्न परिस्थितियाँ उस पर भी असर करता है । तीसरी ओर इन बदलते परिवेश एवं परिस्थितियों के कारण वह अपनी वैयक्तिक चेतना के प्रति सजग रहती है, और यह सजगता उसकी अपनी अस्मिता की तलाश के रूप में सामने आता है । इसलिए उसकी अस्मिता की चर्चा वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक धरातल पर परखने की ज़रूरत है । यहाँ हिन्दी की कहानीकार चित्रा मुद्गल एवं मलयालमम् की चंद्रमती की कहानियों में चित्रित नारी की अस्मिता को इन तीन धरतालों पर परखने की कोशिश की गयी है ।

४.२ चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी अस्मिता

हिन्दी में स्त्री लेखन के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि नारी लेखन घर-परिवार, प्रेम, दाम्पत्य एवं बच्चों तक ही सीमित है । इसके आगे जाने की हिम्मत उसमें नहीं है । लेकिन असली बात तो यह है कि आलोचक हमेशा नारी-लेखन को इसी नज़र से देखने की कोशिश करते हैं । समकालीन महिला लेखिकाओं ने खासकर कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में दाम्पत्य जीवन की जटिलता, नारी की सामाजिक स्थिति, पुरुष मानसिकता और विभिन्न स्तरों के स्त्री-पुरुष संबंधों एवं उनकी कुंठाओं का चित्रण उनके परिवेश के साथ करने की कोशिश की है ।

डॉ.रामचन्द्र तिवारी के अनुसार "चित्रा मुद्गल उन महिला कहानीकारों में अग्रणी है जिन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों के दायरे से बाहर निकालकर महानगरों में संघर्षरत नौकरीपेश नारियों एवं झोंपड पट्टियों में पिसते हुए निम्नवर्गीय लोगों के जीवन में भी झाँक कर देखा ।"१ उन्होंने अपनी कहानियों में सिर्फ स्त्री-पुरुष संबंधों की समस्याएँ ही नहीं बल्कि समाज के निम्न वर्ग के लोगों की समस्याओं का भी चित्रण किया है । उन्होंने उनकी ज़िंदगी को बहुत करीब से देखा है । इसलिए उनकी कहानियों में अनुभवों की सच्चाई है ।

आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य के महिला कहानीकारों में चित्रा मुद्गल एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं । उनकी कहानियों के कई आयाम हैं । यहाँ उनकी कहानियों को घर,

परिवार एवं समाज में उनकी पहचान एवं अस्तित्व की दृष्टि से परखने की कोशिश की गयी है ।

चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानियों में नारी की अस्मिता को उसकी सारी खूबियों के साथ चित्रित किया है । आज हमारा समाज स्त्री को सिर्फ उपभोग की चीज़ समझता है । चित्रा जी ने इसके विरोध में स्त्री की ऐसी छवि प्रस्तुत की है जिसने स्त्री को पुरुष की ज़िंदगी को सार्थक बननेवाले पूरक रूप में देखने की परंपरा को तोड़ दिया है ।

४.२.१ चित्रा मुद्गल की कहानियों में वैयक्तिक अस्मिता

आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में स्त्री अपने पूर्ण व्यक्तित्व को ढूँढ रही है । इस खोज की प्रक्रिया में चित्रा मुद्गल ने अपनी कहानियों में नारी को अनेक रूपों में चित्रित किया है । आज व्यक्ति अधिक से अधिक आत्मकेंद्रित होता जा रहा है । व्यक्ति के अंतरंग संबंधों में भी एक अलगाव और परायापन का बोध आ जाता है ।

स्त्री हमेशा पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में कैद रहती है । इसलिए उसे अपने बारे में सोचने का फुर्सत नहीं मिलता । लेकिन जब भी वह अपने बारे में सोचती है, उसे इस बात का एहसास होता है कि वह अब तक दूसरों केलिए ही जी रही थी । वह पहचान जाती है कि खुद केलिए उसने वक्त ही नहीं निकाला, और न ही अपने अस्तित्व को लेकर सोचा ।

आज नारी बेटी, बहन, पत्नी और माँ होने पर भी अपने व्यक्तित्व की ओर अधिक ध्यान देने लगी है । वह पत्नी भी है, माँ भी है, लेकिन इन सब से अलग होकर उसका अपना एक अलग व्यक्तित्व है । वह अब अपने इस व्यक्तित्व को मानकर चलने लगी है । साथ में पुरुष को भी यह मानने केलिए मजबूर कर रही है । ऐसी नारी का चित्रण चित्रा मुद्गल की कहानियों में मिलता है । उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन की संवेदनाओं का सूक्ष्म रूप से व्यक्त किया है ।

आर्थिक स्वावलंबन एक हद तक नारी को आत्मनिर्भर कर रहा है । लेकिन दूसरी तरफ यह उसके सामने नयी परिस्थितियाँ भी उत्पन्न करती है ।

४.२.१.१ शून्य

नारी मन की संवेदना को प्रकट करनेवाली उनकी सशक्त कहानी है “शून्य” । चित्राजी ने मध्य-निम्न दोनों ही वर्गों की नारियों को अपनी कहानियों का पात्र बनाया है । इनके पात्र

समाज की दुष्प्रवृत्तियों को मानने से इन्कार करती है । उनकी "शून्य" कहानी की सरला पति द्वारा परित्यक्ता है । वह अपनी ज़िंदगी से पलायन करना नहीं चाहती है ।

"शून्य" कहानी के राकेश की शादी सरला से हुई थी । शादी से पहले ही वह बेला नामक शादीशुदा औरत से प्यार करता था, और उससे शादी भी करना चाहता था । इसके बारे में उसने शादी के पहले ही सरला के घरवालों को एक गुमनाम खत लिखा था । लेकिन सरला की जीजी के कहने के कारण घरवालों ने इस पर अधिक ध्यान नहीं दिया । "क्योंकि जीजी ने यही सोचा होगा - कुछ होगा भी तो शादी के बाद सब ठीक-ठाक हो जाएगा । शायद बाबूजी ने भी, शायद माँ जी ने भी (राकेश की माँ) शायद सभी ने ...और वह लड़की न होकर प्रयोग हो गई ।"२ लेकिन इसका फल भोगना पडा है सरला को । अगर लड़के के स्वभाव में कुछ बुराई है तो सब यह सोचते हैं कि शादी के बाद सब ठीक हो जाएगा । अगर ठीक नहीं हुआ तो ? इसका उत्तर किसी के पास नहीं होता । आज भी हमारे समाज का यह नज़रिया नहीं बदला है । शादी से पहले वे लड़के के बारे में ज़्यादा कुछ पूछ-ताछ नहीं करते । घरवालों को बस लड़की की शादी कराने की जल्दी होती है । जैसे वे अपने सिर का बोझ जितना जल्दी हो सके उतार देना चाहते हैं ।

बेला के साथ अटूट संबंध के कारण एक बेटे के जन्म के बाद भी उनके बीच का रिश्ता पक्का नहीं हुआ। । राकेश सरला से सख्त होता गया । नारी सब कुछ सहने को तैयार रहती हैं । लेकिन अपने पति के द्वारा किसी अन्य स्त्री के प्रति प्रेम-संबंध कोई आत्मनिर्भर नारी बर्दाश्त नहीं कर सकती है । जब बेला को अपने पति से तलाक मिलता है तो राकेश पूर्ण रूप से सरला को अपने जीवन से हटाता है । सरला भारतीय नारी-संकल्प के 'सर्वम सहा' धरती के समान नहीं है । आज की नारी पुराने जमाने की नारी की तरह सब कुछ बर्दाश्त कर पुरुष के पाँव तले दबकर पड़नेवाली नहीं है ।

सरला पति से तलाक लेती है । राकेश सरला को छोड़ कर बेला से शादी कर लेता है । सरला अपने पिता के पास जाकर नौकरी करने का निर्णय लेती है । वह अपने बच्चे को साथ रखना नहीं चाहती है । क्योंकि उसके अनुसार "वे(राकेश और बेला) दोनों स्वच्छंदता से मौज मस्ती मारें और वह बच्चा पालती, बिसूरती रहें? फिर नौकरी कहीं दूसरी जगह लगी तो बच्चे को कौन संभालेगा? संभाले न बेला । बच्चा तो राकेश का ही है । एक तलाक़शुदा औरत का निभाव समाज में सहज है? फिर जिसकी गोद में बच्चा टंगा हो उसकी ज़िंदगी में तो यूँ ही सैकड़ों पूर्णविराम लग जाते हैं...उसके जीने के सारे हक खत्म हो जाते हैं । चारों

तरफ होती हैं संदिग्ध , लांछित करती निगाहें , सैकड़ों प्रश्नचिह्न.... ।"३ उसे अच्छी तरह मालूम है कि एक तलाक़शुदा औरत केलिए समाज में अकेले जीना कितना मुश्किल है । आर्थिक रूप में स्वावलंबी बनने केलिए उसे नौकरी करनी पड़ेगी । तब बच्चा अडचन बन जाएगा । वह अकेले कैसे बच्चे को लेकर नौकरी करेगी । इसीलिए सरला चाहती है कि बच्चा राकेश के साथ रहें ।

लेकिन अदालत ने राकेश के आग्रह पर, बच्चे के माँ के साथ रहने के तर्क से फैसला दिया - "बच्चा सात साल का होने तक माँ के संरक्षण में रहेगा। खर्च राकेश देता रहेगा ।"४ पहले तो सरला के मन में बेटे के प्रति कोई लगाव नहीं था । एक दिन रात को "उसने रोते हुए दीपू की गर्दन दबोच ली थी । पर तभी बच्चे की घिघियाने की आवाज़ सुनकर बगलवाले सहन(कमरे) में जाग रहे बाबूजी दौड़ पड़े । उनके हाथों का करारा थप्पड़ खाकर ही उसे होश आया कि वह किस अनर्थ की भूमिका गूँथ रही थी । अजीब सी विक्षिप्तावस्था हो गयी थी उसकी ।"५ शायद बच्चा उसे पति की बेवफाई की याद दिलाता होगा । लेकिन बाद में उसके मन में अपने बेटे दीपू के प्रति इतना प्रेम और ममता भर गया कि वह दीपू के बगैर एक पल भी नहीं रह पाती । उसकी जीजी ने एक बार उसे लिखा था कि एक स्कूटर दुर्घटना में राकेश और बेला पूरी तरह से जख्मी हो गये हैं । बेला के पाँच महीने का गर्भस्थ शिशु भी नहीं बचा और तो और उसकी बच्चादानी भी निकालनी पड़ी । इस कारण बेला कभी भी माँ नहीं बन सकेगी । इस तरह उनके समृद्ध दाम्पत्य में एक ऐसा शून्यता पैदा हो गया है, जिसे वे किसी उपाय से नहीं भर सकते थे ।

इसी वजह राकेश संरक्षण अवधि से पूर्व ही दीपू को लेने आया है । इसलिए नहीं कि उसके मन में पिता का स्नेह अचानक टूट पड़ा है । बल्कि इसलिए कि अब उनकी ज़िंदगी की शून्यता को भरने केलिए दीपू ही एक विकल्प है जिससे उनकी ज़िंदगी पूर्ण बन सकती है । लेकिन सरला दीपू को देने से साफ इन्कार करती है । उसने मन में निर्णय लिया - "राकेश और बेला से अब वह कोर्ट में ही मिलेगी और देखेगी कि दुनिया का कौन-सा कानून, कौन-सी ताकत उससे उसका बच्चा छीनकर बेला की गोद भर सकती है....चाहे उसे सुप्रीम कोर्ट तक क्यों न लड़ना पड़े ।"६ वह अपने बच्चे केलिए पूरी दुनिया से लड़ने केलिए तैयार हैं । लेकिन दीपू को राकेश के हाथों में सौपने केलिए तैयार नहीं है ।

डॉ. सौ मंगल कप्पिकेरे के अनुसार "इस में (शून्य) दाम्पत्य का टूटन और उससे उपजी समस्या को नारी मनोविज्ञान के आधार पर रूपायित किया गया है । व्यक्ति को जीने

केलिए प्रेम, पैसा, संतान और परिवार जैसे ठोस अवलंबन की ज़रूरत होती हैं । इस में से किसी एक की कमी से ज़िंदगी शून्यवत् होती है ।"७ राकेश और बेला की ज़िन्दगी में बच्चे की कमी है । वे अपनी ज़िंदगी की शून्यता को दीपू से पूरा करना चाहते हैं । इसकेलिए वे चाहे एक माँ की गोद को क्यों न शून्य कर दें ।

सरला का पति हमेशा उससे "तू अपनी जगह हो....बेला अपनी...."८ कहकर उसे अपने हाथ की कठपुतली बनाना चाहता है । लेकिन लाख कोशिश करने पर भी वह अपने पति की बनाई इस व्यवस्था का हिस्सा नहीं बन पायी कि वह दोनों को एक साथ रखे और अपना मनमानी करें । क्योंकि वह हमेशा अपने "स्व" के प्रति जागरूक थी । तभी तो वह अपनी अस्मिता बनाए रख सकी । उसकी ज़िंदगी में भी एक शून्यता है - पति के प्रेम की शून्यता । क्योंकि हर औरत चाहती है कि उसे प्यार करनेवाला एक पुरुष हो । कहानी के प्रारम्भ में हमें यह सूचना मिलती है । लेकिन बेटे के प्रति उसके मन में जो प्रेम है, उसके भविष्य को लेकर उसका जो सपना है और नौकरी के ज़रिये उसने जो आत्मनिर्भरता प्राप्त किया है, इन सब ने मिलकर उस शून्यता को भर दिया है । इन सबसे बढ़कर ज़िंदगी ने जो अनुभव दिया हैं, यही अनुभव उस शून्यता को ज़रूर भर सकेगा ।

दीपू की ज़िंदगी में भी एक शून्यता है जिससे वह अंजान है, वह पिता के प्यार की शून्यता है । उस शून्यता को सरला ने दीपू से यह कहकर भर दिया है कि उसके पापा विदेश में है । क्योंकि सरला नहीं चाहती कि दीपू के कोमल मन में किसी भी प्रकार का कड़वाहट हो । सरला अपनी ममता एवं प्यार से उस शून्यता को भरने का प्रयास कर रही है ।

प्रत्येक मनुष्य की ज़िन्दगी में इस तरह की शून्यताएँ होती हैं । और हम सब उस शून्यता को भरने की कोशिश करते रहते हैं । शून्यता को भरने की कोशिश में आदमी यह भूल जाता है कि उसकी ज़िन्दगी में कितनी और चीज़ें हैं जिनकी ओर उसका ध्यान गया ही न हो । आम आदमी को अपनी कमियों को अपनी खूबियों से भरने का प्रयास करना चाहिए । सरला इसका एक उत्तम उदाहरण है । पति के द्वारा परित्यक्ता हो जाने पर वह कुछ समय तक ज़िन्दगी में बिना किसी लक्ष्य के भटकती रही । लेकिन अपने परिवार से उसे जो हिम्मत प्राप्त हुआ उसके सहारे उसने अपनी ज़िन्दगी को संवारा । शिक्षा के ज़रिये वह ज़िन्दगी में आगे बढ़ी । अब उसके सामने एकमात्र लक्ष्य है - अपना बेटा । उसने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो जाय अपने बेटे को वह राकेश को नहीं देगी ।

चित्रा जी हमेशा स्त्री को लेकर आशावादी दृष्टिकोण ही रखती है । उन्हें पूरा विश्वास है कि अगर दिल एवं दिमाग लगाकर नारी अपने हक केलिए लड़ेगी तो ज़रूर उसे सफलता प्राप्त होगी । इसलिए वह आशा करती है कि सरला का बेटा हमेशा उसके पास हो ।

४.२.१.२ प्रमोशन

स्त्री एवं पुरुष दोनों नौकरी करते हैं । नौकरी में सफलता दोनों को प्राप्त होती है । लेकिन स्त्री एवं पुरुष की सफलता को अलग-अलग दृष्टि से आँका जाता है । जब पुरुष की पदोन्नति होती है तो वह उसकी लगन और मेहनत का परिणाम है । लेकिन स्त्री अगर अपनी लगन और परिश्रम से पदोन्नति प्राप्त करें तो वह उसकी अपनी प्रतिभा नहीं किसी की अनुकंपा है और बीच में शरीर भी आ जाता है । अर्थात् यह कहा जाता है कि उसने नौकरी में पदोन्नति शरीर का इस्तेमाल करके ही प्राप्त की है । उसकी काबिलियत को किसी प्रकार का महत्व नहीं दिया जाता । "प्रमोशन" चित्रा जी की पितृसत्तात्मक समाज के इस नज़रिए को व्यक्त करनेवाली कहानी है ।

इस कहानी के मुख्य पात्र सुभाष की मन:स्थितियों से कहानी आगे बढ़ती है । उसकी पत्नी ललिता का प्रमोशन हुआ है । इसे लेकर वह परेशान है । ललिता दवाइयों की कंपनी के पाकिंग विभाग में काम करती है । उसके बॉस डॉ. कोठारी ने इंचार्ज का पद देकर उसे प्रमोशन दिया है । ललिता अपनी पदोन्नति को लेकर बहुत खुश है । इस खुशी के उपलक्ष्य में वह बॉस के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहती है । इसकेलिए वह उन्हें घर खाने पर आमंत्रित करना चाहती है । ललिता ने उनसे आग्रह भी किया है कि वे खाने केलिए घर आए । लेकिन वह चाहती है कि भद्रता वश उसका पति भी एक बार उनको फोन करके आमंत्रित करें ।

ललिता के कहे अनुसार उसका पति डॉ. कोठारी को फोन तो करता है । लेकिन बात नहीं करता और पत्नी से कहता है कि कोई फोन उठाता नहीं है । असल में वह डॉ. कोठारी को घर बुलाना ही नहीं चाहता है । क्योंकि उसे लगता है कि उसकी पत्नी की पदोन्नति किसी गलत तरीके से हुई है । इसकी वजह उसका अपना अनुभव है ।

उसने अपने दफ्तर में रेखा नामक टाइपिस्ट को जिस तरह प्रमोशन दिया है उसे लगता है कि वैसे ही उसकी पत्नी को भी प्रमोशन प्राप्त हुआ है । इसीलिए पत्नी के प्रमोशन को लेकर उसके मन में इतनी सारी बातें हो रही हैं । उसे अच्छी तरह याद है -

“प्रिया गेस्ट हाउस के कमरा नंबर ग्यारह में उसने अपनी टाइपिस्ट रेखा को एक साथ दो खुश खबरियाँ दी थीं....कल तुम्हें आधिकारिक तौर पर पदोन्नति-पत्र मिल जाएगा, अब तुम टाइपिस्ट से स्टेनोग्राफर हो जाओगी । लेकिन तुम्हें जल्द-से-जल्द शार्टहैंड में निपुणता पा लेनी होगी....और हाँ मैं इस पहली तारीख से मुख्यालय में स्थानांतरित हो रहा हूँ, मेरी कोशिश होगी, कुछ दिनों के भीतर तुम्हें भी वहीं बुला लूँ ।”९ उस ने अपने दफ्तर की रेखा नामक टाइपिस्ट को उसके शरीर का उपयोग करके उसके बदले में उसे प्रमोशन दिया था । इसलिए उसे लगता है कि शायद उसकी पत्नी का प्रमोशन भी वैसा ही हुआ होगा ।

अपने मन में पत्नी के प्रमोशन को लेकर जो तनाव एवं कुंठा है, उसके बारे में पहले वह कुछ कहता नहीं है । ललिता अगले दिन फिर डॉ. कोठारी को फोन करने की बात उठाती है और कहती है -“नाश्ता खत्म कर तुम डॉ. कोठारी को फोन ज़रूर कर लेना । दिन में उनका फोन पर उपलब्ध हो पाना मुश्किल है, संडे की दोपहर का ही पक्का कर लो (खाना) ।”१० तब वह उस पर बरस पड़ता है - “....मैं किसी कोठारी-वोठारी को फोन नहीं करता । जनता हूँ, डॉ. कोठारी तुम पर इतने मेहरबान क्यों है....इस कंपनी में नौकरी करते हुए तुम्हें तीन साल भी पूरे नहीं हुए तीन साल में इतना बडॉ प्रमोशन? विभाग में तु म्हारी बनियस्त अनेक वरिष्ठ, अनुभवी, योग्य व्यक्ति पड़े हुए हैं । इतने वर्षों से उनका नंबर नहीं लग रहा है, तुम अचानक तीन सौ लोगों को पछाड़ विभाग की इंचार्ज हो गई? ।”११ सुनकर ललिता स्तब्ध हो उठी । अपने पति के इस स्वभाव से वह पहले से ही परिचित थी । उसके छोटे-मोटे उलाहनों और मुँह-फुलौवन को उसने पति के अधिकारों का नोक-झोक माना था । लेकिन आज उसे मलुम हुआ कि उसके पति के मन में कितना घृणित शंका है । वह चुप रहना नहीं चाहती थी । क्योंकि अगर वह खामोश रह गयी तो वह उसके द्वारा लगाए गए आरोप की स्वीकृति होगी । यह उसे हार्गिज़ बर्दाश्त नहीं था ।

उसके पति के साथ शादी की बात चलते समय वह बहुत खुश थी । उसने सोचा था - “....कोई ऐसा लड़का तो मिल गया जो स्त्री की स्वतन्त्रता और उसके स्वावलंबन का पक्षधर है ।”१२ लेकिन उसे क्या मालूम था कि यह सब दिखावा है । असलियत कुछ और है । वह सिर्फ इसलिए पत्नी से काम करवाना चाहता है कि जिससे पैसे मिले और आर्थिक स्थिति कुछ बहत्तर हो । पुरुष अपनी आर्थिक सहायता केलिए ही पत्नी को नौकरी करने की अनुमति देता है । क्योंकि दोनों की आमदनी से घर-गृहस्थी अच्छी तरह चलेगी ।

यह कहानी चित्रा जी ने १९८७ में लिखी है । आज २५ साल के बाद भी स्थिति वैसी ही है । जब मेहनत और लगन से स्त्री एवं पुरुष का प्रमोशन होता है तो स्त्री के प्रमोशन को अस्वीकृति दी जाती है । क्योंकि प्रमोशन के बाद उसे नौकरी केलिए ज़्यादा वक्त देना पड़ता है । तब वह परिवार केलिए अपनी पदोन्नति त्याग देती है । यह हमेशा स्त्री के साथ ही होता है । पुरुष कभी भी परिवार केलिए अपनी पदोन्नति त्याग देना नहीं चाहता ।

यहाँ बात ललिता के पति की हीन मानसिक कुंठा की है । डॉ. कोठारी के साथ ललिता का काम करना उसके पति को बर्दाश्त नहीं है । इसीलिए उसका पति उससे परिवार के हित केलिए नौकरी छोड़ने की बात कहता है । लेकिन ललिता काम छोड़ने केलिए तैयार नहीं है । उसके अनुसार "न नौकरी मैं ने तुम से पूछ कर की थी , न तुम्हारे कहने पर छोड़ूँगी ।"१३ सुभाष ललिता से घर एवं नौकरी में से किसी एक को चुनने पर ज़ोर देता है । लेकिन ललिता किसी भी हालत पर नौकरी छोड़ने केलिए तैयार नहीं है । क्योंकि उसके अनुसार "....सोचना मुझे नहीं है, सुभाष!सोचना तुम्हें है....मानसिक तौर पर रुग्ण तुम हो, मैं नहीं । कान खोलकर सुन लो, तुम्हारी कुंठाओं द्वारा रचा हुआ सत्य मेरी नियति नहीं बन सकता ।"१४ वह अपने पति की रुग्ण मानसिकता का शिकार बनना नहीं चाहती । पुरुष की यह मानसिकता हमेशा स्त्री की ज़िन्दगी को बर्बाद कर देती है ।

अक्सर ऐसे अवसर पर स्त्री नौकरी छोड़कर अपने घर को चुनती है । क्योंकि स्त्री हमेशा अपने से ज़्यादा अपने घर एवं परिवार को ही प्रमुखता देती है । स्त्री के भाग्य में हमेशा यही लिखा जाता है कि वह दूसरों की खुशियों केलिए अपनी खुशी का गला घोट दें । व्यावहारिक रूप में समाज एवं परिवार उससे यही उम्मीद रखते हैं ।

नारी अपनी गृहस्थी को बचाने केलिए लाख कोशिश करती है । दाम्पत्य के टूटने से समाज में उसका जीना मुश्किल हो जाएगा । क्योंकि पुरुष के बिना स्त्री का समाज में रहना मुश्किल है । उसके सामने कई सवाल उठेंगे । उन सब का समना वह नहीं कर पाएगी । इसलिए किसी भी हालत पर वह पति को छोड़ नहीं सकती । गृहस्थी पति-पत्नी दोनों से ही बनती है, एक से नहीं । तो एक से उसे संभालने की उम्मीद क्यों की जाती है?

"इस कहानी में पुरुषों की संकुचित एवं रुग्ण मानसिकता के अनुकूल अपनी नियति बनानेवाली स्त्रियों को सचेत करने का कार्य कहानीकार करती है ।"१५ स्त्री हमेशा पुरुष के अनुकूल अपने को बदलने की कोशिश करती है । पति की इच्छा के अनुसार ही वह ज़िन्दगी

में फैसला लेती है । लेकिन ललिता ऐसी नहीं है । वह अपनी स्वतन्त्रता किसी के पैरों पर रखने केलिए तैयार नहीं है । क्या पता, नौकरी छोड़ने के बाद भी उसकी गृहस्थी कहीं सही सलामत हो । क्या ग्यारटी है कि उसके पति की रुग्ण मानसिकता ललिता को चैन से रहने देगी । अगर वह नोकरी छोड़ देगी तो कैसे जिएगी? आर्थिक स्वावलंबन स्त्री-पुरुष दोनों केलिए ज़रूरी है, और यह भी सच्च है कि केवल आर्थिक स्वावलंबन से वह आत्मनिर्भर नहीं बनेगी । इसकेलिए उसे अपने निर्णय स्वयं लेने की आदत डालनी चाहिए ।

४.२.१.३ सफेद सोनारा

"सफेद सोनारा" पुरुष के द्वारा छली गयी औरत की कहानी है । इस कहानी की नायिका शुभा हिन्दी की लेक्चरर है । जब वह कालेज पढ़ती थी तब उसका परिचय शरद नामक लेखक से होता है । दोनों के बीच प्रेम होता है । शुभा जब अपनी बुआ के यहाँ शिमला रहने केलिए जाती है, तो शरद भी "कस्बों का शहर" नामक उपन्यास लिखने केलिए शिमला आता है । वहाँ काफी वक्त दोनों एक दूसरे के साथ बिताते हैं । शुभा किसी भी परिस्थिति में उसके साथ जीने केलिए तैयार थी । लेकिन वह शुभा से कहे बिना बंबई चला जाता है । उस वक्त शुभा उसकी बच्चे की माँ बनने वाली थी । शरद ने बंबई जाने से पहले शुभा से कहा था - "मरो या सडो, मुझे इससे कोई मतलब नहीं ।"१६ लेकिन शुभा ने मरने की बजाय दुनिया से लड़ना अधिक मुनासिब समझा । "कस्बों का शहर" उपन्यास पर शरद जी को बड़ी सफलता प्राप्त हुई ।

शुभा ने बच्चे को पालने का निश्चय किया और वह घर से अलग होकर बंगलूर आकर बस गयी । वहाँ के एक कॉलेज में हिन्दी की लक्चरर बनी । शरद से अलग होने के बाद ही उसे मालूम हुआ कि उसकी पहले से ही शादी हो चुकी थी । उससे उपेक्षित पत्नी गाँव में अपने माँ-बाप के साथ रहती है । वह भी सिर्फ इसलिए कि वह अनपढ़ थी ।

अब शरद को उनकी "खंडहरों का दर्द" नामक कृति पर विद्यापीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है । इस पर उसको सम्मानित किया जा रहा है । शुभा भी वहाँ पहुँची है । वह सब कुछ चुपचाप देख रही है । शुभा को शरद के बारे में लोगों की प्रशंसा सुनकर अजीब-सा लगता है । लोगों की बातचीत से मालूम हो जाता है कि वह एक बाल-विधवा (धनी) से शादी करने जा रहा है, जो उसके साथ आज आई है । तब शुभा सोचती है -"आप जैसे ख्याति-प्राप्त व्यक्ति की अर्द्धांगिनी होने का सौभाग्य जो उन्हें प्राप्त होने वाला था । कितनी भाग्यवान हैं वे! लेकिन सोच रही थी कि उनकी देह पर इतने हीरे-मोती न दमक रहे होते तो क्या इतनी

सौभाग्यशाली होती? जिस चमचमाती गाड़ी से सभास्थल पर उतरे थे आप, वह भी तो उन्हीं की थी! ।"१७ शुभा को अच्छी तरह मालूम है कि उस विधवा औरत की संपत्ति के कारण ही शरद उससे शादी करने जा रहा है ।

शुभा उसकी शादी में जाना चाहती है और अपने बच्चे को उपहार के रूप में देने का निश्चय भी करती है । वह आशा करती है कि उसके द्वारा दिया जानेवाला उपहार वह ज़रूर स्वीकार करेगा ।

चित्रा जी की ज़्यादातर कहानियाँ बहुत कुछ अनकहे छोड़ देनेवाली हैं । उन में हमें पूरा करने केलिए बहुत कुछ है। नारी के प्रति उनके मन में हमेशा आशावादिता है । वह आशा करती है कि नारी के साथ हमेशा भलाई ही हो । पुरुष से धोखा खाने के बाद भी औरत के मन के एक कोने में हमेशा उसके प्रति एक अनकहा, अनछुआ भाव छिपा रहता है, जिसका अर्थ स्वयं वह समझ नहीं पा रही है । तभी तो शरद से इतना बड़ा धोखा खाने के बाद भी वह उसे आँख-भर के देखना चाहती है - "अब भी एक बार आँख-भर देख लेने की सघ मिटी नहीं है....अब भी कहाँ तुम पराए हुए हैं ! ।"१८ इसका कारण नारी सुलभ, नारी की ही समझ में आने वाली उसका कोमल भाव ही है ।

शरद के बच्चे की माँ बनने के कारण शुभा को घर-परिवार से अलग होना पड़ा । अकेली औरत का जीना कितना मुश्किल है । यहाँ शुभा अकेली ही नहीं, बिन-ब्याही एवं एक बच्चे की माँ भी है । ये तकलीफें स्त्री को ही सहनी पड़ती है । इसलिए शुभा को शायद समाज से बहुत कुछ कहना-सुनना पड़ा होगा । लेकिन कहानी में इसका ज़िक्र नहीं हुआ है । कहानी में शुभा के अकेले अपने आप के संधर्ष का ही चित्रण हुआ है ।

शरद जी के द्वारा उपेक्षित होने पर भी वह अपने बच्चे को जन्म देती है और उसकेलिए जीती है । शुभा हार मानकर आत्महत्या नहीं करती, जो आजकल की लड़कियाँ करती हैं । वह शरद से बदला लेना चाहती है । शुभा का बिन-ब्याही बच्चे की माँ बनना स्त्रीवाद के नज़र में शायद ठीक होगा । लेकिन हमारा समाज आज उतना आधुनिक नहीं बना है कि इसे स्वीकारें ।

शुभा शरद को यों ही छोड़नेवाली नहीं है । शरद के बारे में लोगों की बातें सुनकर उसे हंसी आती है । क्योंकि शरद की असलियत सिर्फ उसे मालूम है । वही उसके छल-कपट से वाकिफ है । शरद की ज़िंदगी में तीन औरतें आई । पहली पत्नी को उसने गाँव में रखा सिर्फ इसलिए कि वह पढ़ी-लिखी नहीं थी । दूसरी औरत थी शुभा । वह तो पढ़ी-लिखी थी

और वह उससे प्यार भी करता था । लेकिन शुभा से शादी करके वह अपनी आर्थिक स्थिति सुधार नहीं सकता था । इसलिए वह उसे भी छोड़ देता है । अब उसने एक बाल-विधवा से शादी करने का फैसला किया है, सिर्फ धन-दौलत केलिए । लेकिन लोग समझते हैं कि विधवा के साथ शादी केलिए तैयार होकर उसने बहुत बड़ा धन्य काम किया है ।

इस कहानी का एक और पहलू भी है । डॉ.के.वनजा के अनुसार "चित्रा जी कुछ कहानियों में साहित्य तथा कला के क्षेत्र के विभिन्न लोगों के छद्म का खुलासा किया गया है तो और कुछ में काला के शुद्ध रूपों के प्रति अपनी तरफदारी ज़ाहीर कर दी गई है "१९ इस कहानी का नायक एक छदम साहित्यकार है । उसने अपनी मीठी बातों में कहानी की नायिका शुभा को फँसा दिया । अब जिस बाल विधवा से शादी करने जा रहा है उसे भी उसने अपने आदर्श छवि से प्रभावित किया है । शरद में किसी भी प्रकार का आदर्श नहीं है । उसकी असलियत किसी को मालूम नहीं । आज के हमारे समाज में भी सब कुछ दिखावा है और शरद जैसे कलाकार इसका फायदा उठाते हैं ।

४.२.१.४ सौदा

"सौदा" कहानी की नायिका मंगला अनपढ़ एवं निम्न वर्ग के होते हुए भी ऊँचे विचारवाली है । वह अपने एवं परिवार का फिक्र किए बिना गेंदा नामक किशोरी बाला की रक्षा करती है । आधी रात को गेंदा नामक लड़की गुंडों से भागकर मंगला के घर पहुँचती है । मंगला ने अपने पति की आहट समझकर दरवाज़ा खोला था । दरवाजा खोला तो देखा कि एक किशोरी बाला है । वह मंगला के पाँव पकड़कर रोती हुई कहती है - "बड़ी मुश्किल से पिरान बचाय के भागे हैं ।....इज्ज़त बचाय लो हमारी....हमरी माई समान हो....तोहार उपकार जिनगी भर न बिसरब..... ।"२० गेंदा गुंडों को धोखा देकर उनसे बचकर आयी है । वह किसी तरह उन लोगों के पीछा छुड़ाके आयी है । मंगला ने सोचा कि रात भर सहारा देने के बाद वह या तो अपने पति चंदू के साथ या खुद उसे लेकर उसके घर चली जाएगी ।

मंगला ने उससे उसके घर-परिवार के बारे में पूछा । उसने बताया कि वह गोरखपुर जिले के दीनागंज में रहनेवाली है । वहाँ सूखा पड़ने के कारण खेती नहीं हो पाती थी । काम की तलाश में सोहनबा नामक आदमी के होटल में गई थी । वहाँ उसकी मुलाक़ात एक ड्राइवर से हुई । उसने उसे सेठ के घर काम दिलवाने की तसल्ली देकर साथ चलने को कहा । पाँच सौ रुपया तंख्वाह मिलेगी । खाना-रहना सेठ के घर पर ही । उसने सोचा कि पैसा माँ के नाम भेज देगी और वह ड्राइवर के साथ चली आई ।

यहाँ आने पर उस ड्राइवर ने उसे लल्लू दलाल के हाथों चार हज़ार रुपये की कीमत पर बेच दिया । दलाल उससे धंधा करवाना चाहता है । इसलिए वह वहाँ से भाग आई । मंगला ने उससे चुपचाप बच्चों के साथ सोने केलिए कहा । पलंग के सामने वाली दीवार पर चंदू की तस्वीर देखकर वह चीख पड़ी । मंगला ने पूछा तो उसने चंदू की फोटो दिखाकर बताया कि यही वह ड्राइवर है जिसने उसे लल्लू दलाल के हाथों बेच दिया था । पहले मंगला को इस पर विश्वास नहीं हुआ । लेकिन गेंदा ने साफ कह दिया - "खूब पहचानते हैं इस पापी को ठेला चलता है....साथ का मनई चंदू नाम से बुलाता है उसको....हमको कहाँ मालूम था ये मनई के भेष में भेड़हा है....ढ़ेर लड़िकिन को बहिका-फुसला के उनका जीवन बर्बाद किया है ।"२१ चंदू की सूरत वह कभी नहीं भूल सकती थी । उसने कई लड़कियों को इस तरह बर्बाद किया था।

अविश्वास और उत्तेजना से भरा मंगला का हृदय काँप उठा । उसे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें । पहले उसने सोचा कि वह गेंदा को चंदू के हवाले कर दूँ । चंदू चाहे कुछ भी करें । लेकिन उससे यह हुआ नहीं । उसने अपने पति के आने से पहले गेंदा को वहाँ से हटाना बेहत्तर समझा । इसलिए घर को ताला लगाकर वह गेंदा को लेकर पटवर्धन ताई के घर की ओर निकली । पटवर्धन ताई "दलित स्त्री उद्धार समिति" नामक संस्था चलाती है ।

मंगला पहले झोपड्पट्टी में रहती थी । उसका पति बेकार था । वह घर-घर बर्तन माँजकर घर चलाती थी । चंदू को ड्राइवरी सिखाने केलिए उसने ऐसे ही एक सेठानी से उधार लेकर पैसे भरे थे । वह बरसों से अभावों के मार खाकर ही पली थी । बाद में अचानक चंदू की आमदनी बढ़ती गयी । झोंपड़ी से खोली में तबादला हो गया । बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ने लगे । खाना, कपड़ा सब कुछ बेहत्तर होता चला गया । उसके पूछने पर चंदू ने बताया कि उसकी ईमानदारी की वजह से सेठ ने गोदाम की ज़िम्मेदारी उसे सौप दी है । मंगला को भी विश्वास हो गया।

लेकिन अब मंगला को पता चला कि उसका पति किस तरह का घिनौना काम कर रहा है । वह छोटी बच्चियों से धंधा करवाने केलिए उन्हें दलालों के हाथ बेच रहा है । गेंदा को लेकर गोवर्धन ताई के घर के रास्ते से चलते समय मंगला के मन में संघर्ष होने लगा । अगर गोवर्धन ताई पुलिस में रपट लिखवाएगी तो पुलिस गेंदा से पूछताछ करके उस अड्डे पर छापा मारेगी । यही नहीं पुलिस चंदू को भी पकड़ेगी । चंदू को अगर सज़ा मिल गयी तो

वह कैसे जिएगी - “बरसों बाद अभावों की मार से वह अपनी पीठ बचा पाई है ! एक झटके में सारा खेल खत्म हो जाएगा । फिर वही दल दल ! घर-घर बर्तन घिसना! स्वामिनियों के व्यंग्य-बाण झेलना! लौट सकेगी उसी ज़िंदगी में? ।”२२ यह सब सोचकर वह अपने काम से मुकर जाती है । अपनी ज़िंदगी की बरबादी के बारे में सोचकर वह विचलित हो जाती है ।

वह गेंदा को लेकर गोवर्धन ताई के घर के सामने से मुड़कर वापस चलती है, तो उसे लगता है - “....तन पर लिपटी कीमती नौवरी माहेश्वरी साड़ी से लपटें फुट पड़ी है....उन लपटों की लपलपाती तेज आंच में उसकी पूरी देह “चिड़-चिड़” करती सुलग रही है और अपने ही मांस की चिरांध उसके नथुनों में भर्ती जा रही है ! ।”२३ उसे लगा कि वह स्त्री होकर स्त्री के दुर्भाग्य में साझीदार हो रही है । यही नहीं उसे लगा कि गेंदा के बदले अगर उसकी बेटी शिब्बू होगी तो क्या होगा? इसलिए उसने मन ही मन यह तय किया कि बेरोजगारी तो बरसों से उसकी गृहस्थी में उसके धैर्य को चुनौती देती रही थी तब वह कमजोर नहीं हुई । अब क्यों? वह पटवर्धन ताई के घर की ओर दौड़ी नहीं, उड़ती हुईसी गयी ।

इस कहानी के बारे में समालोचक लता शर्मा कहती है - “चित्रा मुद्गल की कहानी “सौदा” अभिनव कथ्य उठाती है, समाज-कल्याण वगैरह सदा ठीक है । पर क्या स्त्री अपने पति के स्वैराचार के विरुद्ध खड़ी होगी? ऐसा स्वैराचार जिसका लाभ पत्नी और परिवार को मिल रहा हो ! नाबालिक लड़कियों के दलाल की पत्नी को क्या करना चाहिए? अपरिचित शरणागत लड़की केलिए अपनी सुखी गृहस्थी पर आग लगा दे? इस धंधे से जुड़े लोग न पति को बख्शेंगे, न परिवार को ! तीखे तड़पते मानसिक द्वंद में आखिर प्रतिबद्ध स्त्री जीतती है, जो आज अपरिचित लड़की के साथ हुआ, वही कल उसकी बेटी के साथ हो सकता है । अत: एड़ियाँ गाढ़ कर प्रतिरोध करने का यही समय है, यही स्थान ”२४ ।

मंगला एक ऐसी नारी है जो अपने परिवार की परवाह किए बिना एक किशोरी बाला की सहायता करती है । उसके अंदर द्वंद है । उसे लगता है कि धंधा तो धंधा ही होता है चाहे वह चमड़े का हो या चमड़ी का । पहले वह तय करती है कि गेंदा को वह चंदू के हवाले कर देगी । चंदू जो भी करें उसकी मर्ज़ी । लेकिन बाद में अपने अंदर की स्त्री को वह पहचानती है । एक स्त्री होने के नाते उसके कुछ फर्ज है जिसे वह बखूबी निभाती है । उसे अच्छी तरह मालूम है कि चंदू के पकड़े जाने के बाद उसे दर-दर की ठोकरें खाने पड़ेंगे । फिर भी वह अपना साहस नहीं छोड़ती । ऐसा करना उसकेलिए आसान नहीं था । फिर भी उसने अपने अंदर की आग को बुझने नहीं दिया ।

ऐसी बहुत सी स्त्रियाँ है जो लड़कियों से धंधा करवाने केलिए उन्हें फँसाती है । लड़कियों से धंधा करवाकर यानि चमड़ी का व्यापार करके अपनी जीविका चलाती है । लेकिन मंगला केलिए यह हरगिज़ मंजूर नहीं है । वह चमड़ी के व्यापार से अपनी गरीबी मिटाना नहीं चाहती है । उसकेलिए गेंदा की रक्षा ही सबसे एहम चीज़ है । अगर मंगला की तरह सोचनेवाले लोगों की संख्या बढ़ती जाएगी तो स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचार भी कम होते जायेंगे । परिवार की सुख-सुविधा से ज़्यादा मंगला अपने मन की बात सुनती है । क्योंकि तभी तो वह चैन से जी सकेगी । चाहें उसके आगे की ज़िंदगी में उसे दर-दर की ठोकरें क्यों न खानी पडी । यही उसकी अपनी पहचान है, या यही गेंदा है ।

४.२.१.५ इस हमाम में

इस हमाम में नामक कहानी में दो नारियाँ हैं - अंजा और दिवा । दिवा ऊँचे वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है और अंजा निम्न वर्ग का । इन दोनों के बीच के रिश्ते के माध्यम से चित्रा जी ने नारी-मन को मापने का प्रयास किया है । दोनों का स्तर अलग है । फिर भी दोनों के बीच एक ऐसा रिश्ता हो जाता है उसे दोस्ती कहूँ या और कुछ । दोनों एक दूसरे को समझने लगते हैं । दोनों का परिवेश अलग है, संस्कार अलग है और दृष्टिकोण भी अलग है ।

अंजा दिवा के फ्लाट में कचरेवाली का काम करती है । दिवा पढ़ी-लिखी है । लेकिन वह नौकरी नहीं कर सकती । उसके पति को दिवा का नौकरी करना पसंद नहीं है । क्योंकि उसका पति सोमेश कई वहमों का शिकार है । उन दोनों की शादी जन्मपत्री के मिलने और बत्तीस गुणों तक मिलने पर ही तय हुई थी । दिवा का पति पुराने पितृसत्तात्मक समाज के पुरुष का प्रतिनिधि है । वह घर में उसके इशारों पर नाचनेवाली बीवी चाहता है । वह पत्नी के अस्तित्व को नहीं मानता । वह ऊँचे वर्ग के लोगों के दिखावे के अनुसार जीनेवाला है । दिवा बच्चे को साथ रखकर उसकी देखभाल एवं पढ़ाई कराना चाहती थी । लेकिन पति ने उसे बोर्डिंग में भरती करवाया । क्योंकि उसके अनुसार बड़े-बड़े लोग बच्चों को अच्छी शिक्षा देने केलिए उन्हें बोर्डिंग में भेज देते हैं ।

पति के दफ्तर चले जाने के बाद दिवा के पास बहुत समय था । इसीलिए अंजा दिवा से किसी दफ्तर में काम पर जाने की सुझाव देती है । उसके अनुसार पति जो कहता है, उन सब को ऐसे ही मान लेने की ज़रूरत नहीं है । जितना स्त्री उसके कहे अनुसार जिएगी पुरुष उसपर ज़्यादा दबाव डालेगा । तभी तो वह दिवा से कहती है "....साब जोभी बोलता हाय,

तुम गुप्चुप काय को मान लेता हाय? तुम शिखेला-पढेला है न, परवा मत करो । जितना परवा करेगा न उतनाच वो तुमको आँख दिखाएगा, समझ ।"२५ अंजा के अनुसार पति की सभी बातों को मानने की ज़रूरत नहीं । अगर स्त्री सब कुछ सहने लगेगी तो पुरुष ज़्यादा सताएगा । स्त्री जितनी चुप रहेगी पुरुष उसे ज़्यादा सताने लगेगा । अनपढ़ होते हुए भी अंजा अपने अनुभवों से समझदार हो गयी है ।

अंजा अनपढ़ है । लेकिन उसके विचार आधुनिक है । वह पुरुष के दबाव में स्त्री के रहने की परंपरा को नहीं मानती । इसके विरुद्ध दिवा पढ़ी-लिखी होते हुए भी अपने पुराने भारतीय संस्कार के नीचे दबी हुई है । लेकिन अंजा की बातों से प्रेरित होकर वह एक स्कूल में अध्यापिका के पद केलिए प्रार्थना पत्र भेजती है । सोमेश से बताए बिना साक्षात्कार भी दे आती है । जब स्कूल से एक हफ्ते के अंदर नौकरी में प्रवेश करने का पत्र प्राप्त हुआ तो वह सोमेश को यह खुश खबरी सुनाती है । लेकिन खुश होने के बजाय सोमेश उस पर गुस्सा करता है । इस तरह उसके साथ बर्ताव करता है कि मानो उसने कोई बहुत बड़ा अपराध किया हो । इस पर दिवा अपने आप से पूछती है - "क्या मैं मात्र सोमेश की उंगलियों का संकेत-भर हूँ? यही और बस, इतनी ही मेरी पहचान है । और मेरे होने की शर्त?....क्यों पेट में निवाले डालने की मजबूरी को जीवन का तालमेल और आपसी समझदारी जैसे अर्थहीन शब्दों की आड़ में जी रही हूँ? ।"२६ वह अच्छी तरह जानती है कि घर में उसका स्थान सजावट की चीज़ के समान ही है । उसके अंदर प्रतिशोध है । लेकिन अपने ऊपर होने वाले अत्याचार के खिलाफ लड़ने की हिम्मत नहीं । वह पति की इच्छा के अनुसार जीती है । इस चक्कर में उसे पता ही नहीं चलता कि कब उसकी ज़िंदगी उसके हाथों से खिसकती गयी ।

उसका पति कभी उसके बारे में सोचता नहीं कि दिन-भर घर में बैठी रह कर वह कैसी महसूस करती होगी । वह कोई चिड़िया नहीं है कि उसे पिंजरे में (घर)बन्द करके रखा जाए । उसका भी मन है, हाव-भाव, विकार सब हैं । वह भी बाहर की दुनिया देखना चाहती है । दिवा मन में चाहती है कि इस के खिलाफ बोलूँ । लेकिन उसका संस्कार "जो नारी के पैदा होते ही समझना शुरू कर दिया जाता है कि उम्र के हर टुकड़े को दूसरों की सुविधाओं के अनुकूल आत्मसात् करके जीने में ही उसका जीना है "२७ - उसे बोलने से रोक देता है । यही नारी की नियति है । उसे बचपन से ही यह समझा दिया जाता है कि उसे दूसरों केलिए अपनी इच्छाओं को दबाकर जीना है और घर-परिवार के अन्य लोगों की खुशी में ही उसकी खुशी है । इस तरह उसके स्वाभाविक प्रगति को रोक दिया जाता है । वह मान बैठती है कि उसे परिस्थिति के अनुकूल अपने आप को डालना है ।

औरत की भूमिका हमेशा बदलती रहती है । उसकी अनेक भूमिकाएँ होती है - माँ, बेटी, बहू, पत्नी....। पितृसत्तात्मक समाज उसका इतना टुकड़ा करता है और उसे समझाया जाता है कि हरेक टुकड़े की अपनी भूमिका होती है । उसे सब कुछ सहकर दूसरों केलिए जीना पड़ता है । लेकिन आदमी हमेशा वैसा ही रहता है । उसकी भी अनेक भूमिकाएँ है जैसे पिता, बेटा, पति । लेकिन इन सब भूमिकाओं से परे वह मर्द है ।

अंजा अब अपने तीसरे पति के साथ रहती है । शादी के छः साल बाद पहले पति को उसने छोड़ दिया । वह उसके पैसे से दारू पीकर उसे मारता था । उसके तीन बच्चे भी थे । उसने सोचा - "मर्द के साथ भी तो अपने हाथ का कमा के खाना पड़ता है । अकेले ही बच्चा लोग को पालेगा ।"२८ पति-पत्नी दोनों ही मिलकर घर चलाते हैं । लेकिन यहाँ अंजा को अकेले घर चलाना पड़ता था । साथ में पति की मार भी खानी पड़ती थी । इसलिए उसने पहले पति को छोड़ दिया । लेकिन समाज तो औरत को अकेले रहने नहीं देता । इसलिए वह भट्टीवाला सेठ सदधू के साथ रहने लगी । कुछ दिन बड़े प्यार से रखने के बाद उसने अंजा एवं उसके दो बच्चों को दारू के काम में लगा दिया । एक बार उसके बच्चों को पुलिस ने पकडॉ । वह उन्हें छुड़वाने तक नहीं गया । अगली बार सदधू को भी पुलिस ने पक्ड़ा तो अंजा छोटे बच्चे को लेकर वहाँ से भाग निकली । अब वह अपने तीसरे मर्द के साथ रहती है ।

अंजा भाड़े पर घर लेने केलिए दिवा से कुछ रुपये उदार माँगती है । अंजा को वह खुशी से रुपये देती है क्योंकि दिवा चाहती है कि अंजा अपना घर बसा लें । उसे तो अपना फ्लाट कभी भी घर की तरह लगता नहीं है । घर एवं मकान में फरक है । मकान ईंट एवं पत्थर से बनता है और घर अपनों से और अपनों के बीच के प्यार से बनता है । उसे अपना घर दौड़ती हुई ट्रेन के स्लीपर कम्पार्टमेंट का हिस्सा जैसे लगता है । उसे खुशी है कि अंजा को अपना मन पसंद घर मिल रहा है ।

अंजा सबेरे कुछ समय केलिए ही कचरा लेने केलिए आती है । फिर भी पड़ोसवाले फ्लाट की सारी खबरें उसके पास हैं । आस-पड़ोस में रहनेवाले लोगों के बारे में अंजा दिवा को बताती है । दिवा उससे पूछती है कि उनके बारे में ये सारी बातें उसे कैसे मालूम होता है । अंजा के अनुसार " कचरे के साथ बहुत सारी बातें ये लोग खुद ही बाहर फेंक देते हैं ।"२९ घर में काम करनेवाली स्त्रियाँ ऐसी बातें यों ही समझ लेती हैं । पड़ोस में रहने के बाद भी दिवा उनके बारे में कुछ भी नहीं जानती है । ये शहर के फ्लाट का संस्कार है ।

सब अपनी-अपनी दुनिया में व्यस्त हैं । वे एक दूसरे के बारे में जानना नहीं चाहते और अपने बारे में किसी से कुछ बताना भी नहीं चाहते । पास हकर भी वे अजनबी जैसे रहते हैं ।

एक दिन अंजा की जगह एक बूढ़ा आदमी कचरा लेने केलिए आता है । तो दिवा उससे अंजा के बारे में पूछती है । तब वह बूढ़ा आदमी कहता है कि अंजा अस्पताल में है । वह आदमी बताता है - "जिसकी एक के साथ नहीं निभी, दस के साथ क्या निभेगी! फिर आदमी और जगह बदल लेने से ज़िंदगी थोड़े ही बदल जाती है ।"३० रात को अंजा और उसके पति के बीच झगड़ा हुआ । उसके पति ने उसकी पिटाई की तो उसने ताव में आकर आत्महत्या करने की कोशिश की । सुनकर दिवा सन्न् रह गयी । शायद दिवा ने सोचा होगा कि अंजा में वह ताकत और धैर्य है, जो उसमें नहीं है । मर्द के सामने औरत हमेशा कमजोर ही होती है ।

अंजा के बारे में कहे तो उसने तीन आदमियों के साथ ज़िंदगी गुज़ारी । लेकिन सभी के साथ ज़िंदगी एक जैसा ही रही । पितृसत्तात्मक आदत हर आदमी में मोजूद है । तभी तो हालात् एवं आदमी के बदलने के बाद भी उसकी ज़िंदगी नहीं बदली ।

यह चित्रा जी की नारीवादी कहानी है । इसकी दिवा पुराने संस्कारों वाली है । वह अपने अस्तित्व को पहचानती है । लेकिन उसे बनाए रखने की ताकत एवं धैर्य उसमें नहीं है । सिर्फ नारी के दृष्टिकोण बदलने से कुछ नहीं होता । साथ में पुरुष के आदत का बदलना भी ज़रूरी है । तभी स्त्री अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बनाए रख सकती है ।

४.२.१.६ लेन

"लेन" कहानी की महेंदरी तमाम विपरीत परिस्थितियों में हिम्मत के साथ आगे बढ़ने वाली है । उसके पति को अंधेरे में किसी ने छुरा घोंप दिया था । वह तीन दिन अस्पताल में बेहोश पडॉ । उसके बाद जब उसे होश आया, तो पुलिस वाले उससे पूछताछ करने केलिए आये । उसने बताया कि रात को नो बजे गली में से लोगों के दौड़ने की आवाज़ सुनकर वह खाना छोड़कर पत्नी के मना करने पर भी वहाँ पहुँचा । उस वक्त उसने देखा कि दो आदमी एक तीसरे को पीट रहे थे और उसके हाथ से कुछ छीनने की कोशिश भी कर रहे थे । उसे मालूम नहीं था कि वे तीनों गुंडे हैं और ये मार-पीट उनके आपस का मामला है । उन गुंडों ने उसे बीच में न पड़ने की धमकी दी । लेकिन उसने नहीं माना और तीनों में से किसी

एक ने उस पर छुरा घोंपा । उसकी पत्नी महेंदरी इसकी एक मात्र गवाह है । पति की चीख सुनकर जब वह आयी तो उसने देखा कि तीनों भाग रहे थे और एक के दाहिने हाथ में छुरा था । पत्नी की चीख सुनकर जब वे अचानक पलटे तो बिजली की रोशनी में उसने पति पर हमला करनेवाले को देखा था ।

पूछ-ताछ केलिए महेंदरी को कई बार पुलिस चौकी जाना पड़ा । पहले तो अस्पताल एवं पुलिस चौकी जाने केलिए पास-पड़ोस के लोग उसके साथ जाया करते थे । लेकिन धीरे-धीरे वह भी बंद हुआ । इस में किसी का दोष नहीं है । सब अपने-अपने काम में व्यस्त हैं । चौकी जाने पर एक दिन की कमाई का मोह वे कैसे त्याग सकते हैं ।

महेंदरी लेन (घरों का लेन)में साफ सफाई का काम करती है । पति के अस्पताल में होने के कारण पाँच दिन से वह लेन में काम करने नहीं जा सकी । अस्पताल से घर जाते वक्त वह पास की कोठी का चौका-बर्तन करने वाली नागम्मा से मिली । नागम्मा ने कहा कि कोठी वाले उस पर नाराज़ हो रहे हैं । उन्होंने नागम्मा से कहा - “कल अगर वह काम पर नहीं आई तो हम उसे जीना नहीं चढ़ने देंगे । अच्छी अंधेर मचा रखी है । पैसे ढीले करके भी तकलीफ उठाते रहो और इनके नखरे भी सहो, क्यों भला? ।”३१ उन्हें तो बस उनके काम का फिक्र है । अपनी नौकरानी की दिक्कतों के बारे में वे सोचते नहीं ।

नागम्मा की बातें सुनकर उसे बहुत बुरा लगा ।अब तक उसने बिना किसी रुकावट के कोठीवालों का काम निपटाया था । कभी किसी से कुछ नहीं कहा । लेकिन अब पाँच दिन काम केलिए नहीं गयी तो उनका तेवर बदलने लगा । वह कहती है - “उनका कर्तव्य नहीं बनता था कि वह मर रही है या जी रही है, कोई आकर पता कर लेता जली-कटी सुनने की बजाय! लेकिन... ।”३२ काम वाली के बारे में कोई सोचता नहीं । उन्हें तो बस उनके काम से मतलब है । चाहे उनका कोई मरे या जिए इससे उनका क्या संबंध । नौकरी करनेवाले भी मनुष्य है और उनकी भी अपनी मजबूरियाँ हैं । लेकिन आज सब को अपने-अपने काम से मतलब है ।

महेंदरी अगले ही दिन काम पर जाने का निश्चय करती है । क्योंकि अगर वह नहीं गयी तो वे दूसरी काम वाली रख लेंगे । पुलिस चौकी पर बड़े साहब ने बताया कि उसके पति को पीटनेवाले दो लोग पकड़े गये हैं । तीसरा भी जल्दी हाथ लग जाएगा । यह सुनकर महेंदरी ने कहा - “सा”ब उसको छोड़ेगा नहीं, सा”ब ....फांसी चढ़वाण उसको, फांसी....कोई दोष था मेरे मरद का? कुछ बिगाडॉ था उसका?जाण लेणे में कसर छोड़ी थी उसणे -वो तो

भगवान णे गरीब बेसहारे की प्रार्थणा सुण ली....नहीं तो.... ।"३३ वह अपने पति की बुरी हालत करने वालों को सज़ा दिलवाना चाहती है । उन गुनाहगारों को वह कभी माफ नहीं करेगी ।

जब महेंदरी घर लौटी तो बच्चों ने बताया कि उससे मिलने दो आदमी आये थे । रात को वे फिरउससे मिलने आए । उन्होंने कहा कि तीसरा आदमी भी पकडॉ गया है । अगर महेंदरी हत्यारे को पहचानने से इन्कार करेगी तो उसकी कीमत के रूप में वे उसे पाँच हज़ार रुपये देने को तैयार हैं । और अगर ज़्यादा चाहिए तो वह भी दे देंगे । यह सुनकर वह क्रोध और उत्तेजना से काँप उठी और उन लोगों ने जो पैसे दिये उनकी गड्डी बनाकर उनके मुँह पर मारते हुए चीखने लगी - "मज़ाक उड़ाने आए मजबूर माणस का । अरे, कोई कितना भी गिर जाएगा, अपने मर्द की जाण की कीमत खाएगा....उठाओ गड्डी....सिद्धा रास्ता णापो आपण! आगे मेरी कोठनी में पांव न रखणा....कमीणे, कुत्ते! ।"३४ वह अपने पति की जान की कीमत नोट से लगाना नहीं चाहती । उसका पति ही उसका एवं उसके बच्चे का एकमात्र सहारा था ।

अगले दिन सुबह दस-ग्यारह के बीच दोबारा आने के बारे में कहकर वे चले गये । वह अगले दिन अस्पताल जाकर पति से यह बात बताने ही वाली थी कि अचानक उसके पति की तबीयत बिगड़ गयी । बड़े डाक्टरनी ने बताया - "दत्तूराम (उसका पति) घर जाने की छुट्टी चाहता है । पड़े-पड़े इसका जी ऊबता होगा, पर अभी दस-पंद्रह रोज़ तक तो कुछ कह पाना मुश्किल है । एक बात गांठ बांध लो, यह ठीक हो जाए, फिर भी इसे रिक्षा न खींचने देना । रिक्षा खींचना इसके लिए प्राणघातक है । रीढ़ की हड्डी बढ़ गई है । किसी भी प्रकार का ज़ोर सहन नहीं होगा ।"३५ यह सुनकर महेंदरी सन्न रह गयी । उसकी समझ में कुछ आता नहीं था कि क्या करें? आगे की ज़िंदगी कैसे चलाए उसे कुछ मालूम नहीं था । घर में तंगी चल रही है । उसके एक लेन के काम से वह अपना घर नहीं चला सकती है । लेन में से कुछ घर ज़्यादा पैसे माँगने के कारण हाथ से छूट गये हैं । तभी तो उसे अपनी सहेली "कटोरी" की बात याद आई । "कटोरी" के पास तीन लेन का काम है । उस में से एक को वह तीन हज़ार में किसी को देना चाहती है । क्योंकि उसकी बेटी की शादी होनेवाली है, और रुपयों की ज़रूरत है । यह लेन तो महेंदरी की लेन के सामने ही है । इसलिए "कटोरी" पहले उससे पूछने आई थी ।

सब कुछ सोचने के बाद महेंदरी अपने पति से कुछ बताये बिना घड़ी देखकर बाहर निकली ताकि उन लोगों के आने से पहले घर पहुँच सके । डॉ. थोरात के अनुसार - "महेंदरी के माध्यम से चित्रा जी ने सामान्य जन की उस तकलीफ को स्वर दिया है, जो अपनी इच्छा को दर-किनारे करके प्रतिकूल स्थितियों में समझौता करने को विवश हो जाता है । यह कहानी आर्थिक मार से बचने केलिए किसी भी स्थिति से समझौता करनेवाले लोगों के विषय में सोचने को बाध्य कर देती है ।"३६ हमारे समाज में आम आदमी की यही स्थिति है । वह हलातों से विवश है ।

चित्रा जी ने इस कहानी में महानगर के झोंपडपट्टी में रहनेवाली महेंदरी की ज़िंदगी की त्रासदी प्रस्तुत की है । इस की नायिका सभी विपरीत परिस्थितियों से लड़ती रही है । ऐसे वैसे वह अपनी गृहस्थी की गाड़ी खींचने की कोशिश कर रही थी तभी उसके पति के साथ यह हादसा हुआ । उसकी ज़िंदगी अब और मुश्किल हो गयी है । वह प्रायोगिक भी है इसीलिए पति के शरीर पर छुरा घोंपने वालों से पैसा ले कर उन्हें पहचानने से इन्कार करने का निश्चय करती है । अगर उसने अपराधियाओं को पहचान लिया तो भी क्या ग्यारंडी है कि उन अपराधियों को दंड मिलेगा । महेंदरी जैसी स्त्री को इस समाज में अपनी इच्छा के अनुसार जीने तक का हक नहीं है । उसकेलिए आर्थिक तंगी बहुत बड़ी चीज़ है और वह इससे बाहर निकलने की कोशिश कर रही है । उसके सामने ओर कोई रास्ता दिखायी नहीं देता । उसे तो प्रतिकूल परिस्थितियों से समझौता करना पडॉ ।

४.२.२ चित्रा मुद्गल की कहानियों में पारिवारिक अस्मिता

वर्तमान समय में हमारे सामने समाज का एक परिवर्तित रूप सामने आ रहा है । पुराने जमाने के संयुक्त परिवारों का विघटन होने के साथ सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों के परंपरागत रूप में परिवर्तन होता जा रहा है । इन सब के बीच नारी अपनी पहचान को बनाए रखने की कोशिश करती है । स्त्री का मनुष्य के रूप में अपनी गरिमा एवं प्रतिष्ठा को परिवार में बनाए रखना भी तो ज़रूरी है । आर्थिक रूप में स्वतंत्र होने मात्र से वह अपनी पहचान नहीं बना पाएगी । उस केलिए स्त्री के प्रति घर-परिवार एवं समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता का बदलना भी ज़रूरी है ।

जब व्यक्ति परिवेश में अपने अनुरूप जीना चाहता है, जी नहीं पाता है तब वह अपने परिवेश में अपने अस्तित्व की तलाश करता है । जब पुरुष की परंपरागत पितृसत्तात्मक दृष्टि और नारी की बदली हुई सोच के बीच टकराहट होती है तब अस्मिता की तलाश गहरी

हो जाती है । स्त्री एवं पुरुष के प्रेम में अंतर है । पुरुष प्रेम में सिर्फ स्त्री को पाना चाहता है । लेकिन इसके विरुद्ध स्त्री उस प्रेम में समर्पण चाहती है । उस समर्पण में पहले मन आता है, बाद में शरीर ।

समकालीन कहानियों में नारी जागरण एवं नारी अस्मिता संबंधी समस्याएँ पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में ही ज़्यादातर चित्रित की गयी हैं ।

४.२.२.१ लाक्षागृह

"लाक्षागृह" प्रौढ़ वय की युवती के विवाह की समस्या पर आधारित कहानी है । सुनीता चालीस वर्ष की प्रौढ़ अविवाहित कामकाजी युवती है । वह रेलवे में काम करती है । रूप की कमी के कारण उसकी शादी नहीं हुई । उसकी छोटी बहिनों एवं बड़े दादा ने अपनी-अपनी गृहस्थी बनायी । वह अकेली माँ-बाप के साथ रहती है । उसने अपने को एवं माँ-बाप को लोकपवाद से मुक्त कराने केलिए एक उपाय सोचा । उसने अपने लिए एक घर खरीदने एवं उस घर के आँगन में खेलने केलिए अनाथाश्रम से बदशकल बच्ची को गोद लेने का निश्चय किया । पिताजी ने माँ के कहने के अनुसार उसके सामने देवेन्द्र से शादी करने का प्रस्ताव रखा । लेकिन सुनीता देवेन्द्र से शादी करने से इन्कार करती है । देवेन्द्र रूप, शिक्षा, व्यवसाय आदि हर स्थिति में उससे कम था । देवेन्द्र से शादी करना उसकेलिए अपने आत्मसम्मान के खिलाफ है । उसके अनुसार अविवाहित रहना इससे बहत्तर है ।

इस बीच सुनिता के विभाग में सिन्हा नामक व्यक्ति आता है । दोनों के बीच गहरा परिचय होता है । सिन्हा सुनिता से विवाह का प्रस्ताव रखता है । इस प्रस्ताव से उसे लगा- "सिन्हा ने उसकी हथेली को नही भीड़ में उसके समूचे अस्थित्व को संदली बाहों के घेरे दे दिए । सहमति की हज़ार-हज़ार घुंघुरुओं की रुनझुन उसके तन्मन में झनक उठी । शब्द भीतर-ही भीतर गले में घुमड़कर रह गए । अनिश्चय नहीं था, न कोई घुंधलका । उसने हामी में हौले-से सिर को जुंबिश दी ।"३७ वह सिन्हा के प्रस्ताव से बहुत खुश हुई । क्योंकि उसकेलिए यह एक सपने का साकार होना था । उसने कभी नहीं सोचा था की सिन्हा उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखेगा । सिन्हा विवाह के पहले घर लेना चाहता था । इसलिए दोनों ने मिलकर तीन कमरे का फ्लाट ओनरशिप पर बुक किया । फ्लाट केलिए सारा पैसा सुनिता ने ही भर दिया और घर सिन्हा के नाम पर लेने का निश्चय किया । प्यार में अंधी सुनिता को इस में कुछ गलत नहीं लगा ।

सुनिता दफ्तर में सिन्हा वं उसके दोस्त स्वामिनाथन के बीच की बातचीत सुनती है । सुनिता के साथ शादी करने की बात से उसका दोस्त स्वामीनाथन हैरान है । स्वामिनाथन के अनुसार कोई सुनीता के साथ चाय पीने का वक्त तक बिताना नहीं चाहता, सिन्हा ने तो उससे शादी करने की बात सोची । तब दोस्त से सिन्हा कहता है - "सोच आठ सौ रुपये महीने कमानेवाली कहाँ मिलेगी? सौदे की कोई शक्ल-सूरत नहीं होती मेरे यार । मैं जीवन और व्यावहारिकता को एक दूसरे का पूरक मानता हूँ । नहीं तो देखने में ठीकठाक आशा घर चलाने के मामले में अधिक सही लड़की है । मौसी अभी भी चाहती है कि मैं आशा से ब्याह कर लूँ ।"३८ ये बातें सुनकर सुनिता स्तब्ध रह जाती है । सिन्हा की बातों ने उसके आत्म सम्मान को चोट पहुँचा दिया । वह यह निशय करती है कि वह सिन्हा से शादी नहीं करेगी और नौकरी भी छोड़ेगी । उसने यह कहकर त्याग पत्र अपने अफसर को दिया कि वह शादी करने जा रही है । उसकी बातों से कुछ अटपटा लगने के कारण अफसर ने उससे एक बार और सोचने को कहा ।

घर आकर वह किसी से कुछ नहीं कहती । तभी सिन्हा का फोन आता है । वह कहता है - "तुम बदशकल ही नहीं, बेअक्ल भी हो । रिज़ाइन क्यों कर दिया? घर पर बैठी भद झोंकोगी! और मुझसे बिना पूछे? कोई ज़िक्र नहीं । बोलती क्यों नहीं? शादी के बाद भी तुम्हें नौकरी करनी है, सुन्नी ! पारिवारिक जिम्मेदारियाँ मैं अकेले नहीं ढ़ो सकता, सुन रही हो....हैलो ! हैलो.... ।"३९ सिन्हा के इन बातों से साफ मालूम पड़ता है कि वह किस तरह का आदमी है । उसके मुँह से ये बातें सुनने के बाद सुनीता ने सिन्हा से शादी न करने के अपने फैसले को और ज़्यादा मजबूत बना दिया । उसने सिन्हा से कहा - "मुझे शादी नहीं करनी है तुम से! इसलिए नौकरी छोड़ दी! ।"४० सिन्हा को उससे नहीं उसकी नौकरी से प्यार था । यह जानकारी उसे बहुत बड़ा सदमा पहुँचाती है । उसकी नौकरी के कारण ही अभी तक उसकी शादी नहीं हुई थी क्योंकि उसकी आमदनी से ही घर चलता था । वह माँ के पास आकर कहती है कि देवेन्द्र से शादी करने केलिए वह तैयार है । माँ बेटी को सहलाती है लेकिन यह बता नहीं सकती कि देवेन्द्र की सगाई हो चुकी है और अगले आठ-दस दिनों में उसकी शादी है ।

सिन्हा को सुनिता से नही बल्कि उसकी आर्थिक सुरक्षित स्थिति एवं नौकरी से प्यार था । यह सुनिता को मंजूर नहीं था । इसीलिए उसने सिन्हा से शादी करने से इन्कार किया । अपने घर-परिवार केलिए नौकरी करें उसे मंजूर है । लेकिन सिर्फ कमाऊ चीज़ बनना उसे स्वीकार नहीं है । सिन्हा ने महाभारत के पांडवों केलिए कौरवों ने जो "लाक्षगृह" बनाया

था उसी तरह सुनिता केलिए भी “लाक्षगृह” बनाया । अगर एक बार उसमें फस जाय तो उससे बाहर निकालना या बच पाना मुश्किल है । लेकिन स्वाभिमानी सुनिता पांडवों की तरह उससे बच निकलती है और अपनी अस्मिता की रक्षा भी करती है ।

डॉ.सो.मंगल कप्पिकेरे के अनुसार - “लाक्षगृह नारी संवेदना को प्रकट करनेवाली सशक्त कहानी है ।”४१ सुनीता संवेदनशील नारी है । वह पुरुष से मुक्ति नहीं चाहती है, पुरुष की मानसिकता से मुक्ति चाहती है । स्त्री अस्मिता पुरुष के समान स्त्री का समान अधिकार एवं स्त्री के प्रति विवेकपूर्ण दृष्टिकोण चाहती है । न कि पुरुष के पैरों तले अपने अरमानों की कुर्बानी । सुनिता ने भी वही किया, जो एक आत्मसम्मान के साथ जीनेवाली औरत करती है । परिवारवाले नौकरी करनेवाली स्त्री को पैसा कमानेवाले मशीन समझकर उसकी भावनाओं को नज़र अंदाज़ करते हैं । हमारे पुरुष-वर्चस्ववादी समाज में नारी-शोषण के कई तरीके हैं । स्त्री का आर्थिक शोषण इनमें से एक है । सिन्हा सुनीता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करके उसका आर्थिक शोषण करना चाहता था । लेकिन सुनीता इसे पहचान पायी । नहीं तो ज़िंदगी भर वह इसी धोखे में रहती कि सिन्हा को उससे प्यार था । अगर स्त्री इस शोषण को पहचान पाती है, तो अपना बचाव भी वह खुद कर सकती है । लेकिन होता यह है कि वह शोषण को पहचान नहीं पाती और ज़िन्दगी भर शोषण का शिकार बनती चली जाती है ।

४.२.२.२ प्रेतयोनि

“प्रेतयोनि” में चित्रा जी ने एक टैक्सी ड्राइवर की हवस से बचकर आयी अनीता गुप्ता(नीतू) नामक लड़की की अस्मिता की लड़ाई का चित्रण किया है । कहानी में अनीता के साथ हुए अत्याचार के बारे में अखबार में आई खबर से मालूम हो जाता है । खबर के अनुसार दिल्ली विश्वविध्यालय की बी.ए ओणर्स अंतिम वर्ष की छात्रा अनीता एक टैक्सी ड्राइवर के हवस का शिकार हुई । लेक्नि उसने बड़ी बहदुरी से टैक्सी ड्राइवर का सामना किया और वह उस दरिंदे के चंगुल से निकल कर भाग गयी । इतना ही नहीं, उसने निकट के पुलिस-थाने में उस टैक्सी ड्राइवर के विरुद्ध रपट भी दर्ज करवाई । पुलिसवालों ने उसे सुरक्षित अपने घर भी पहुँचा दिया॥

इस भाग-दौड़ के दौरान अनीता के घुटनों पर मोच आया । वह अपना पैर हिला नहीं सकती थी । घुटनों पर लेप लगाने केलिए उसकी माँ कठोरी में हल्दी और चूने का लेप मलती है, और उससे पूछती है - “महीने का कितने दिन शेष है ।”४२ लेकिन माँ से वह कुछ

भी नहीं कह पाती । वह माँ से कहना चाहती थी - “अम्मा, तुम जिस आशंका से पीड़ित होकर यह प्रश्न पूछ रही हो, वैसा कुछ उस कामुक राक्षस की पूरी कोशिश के बावजूद संभव नहीं हो पाया । मैं प्राणपन से लड़ी हूँ... ।”४३ लेकिन घुटनों की पीड़ा ने उसे बोलने की मोहलत नहीं दी ।

अगर माँ-बेटी के बीच खुलकर बातें होती तो माँ ज़रूर अपनी बेटी के दर्द को समझ पाती । यह भी जान चुकी होती कि उसके साथ क्या हुआ है । अनीता भी माँ से खुलकर बातें नहीं कर पाती है । इसीलिए उनके बीच दरारें आ जाती हैं, जो आजकल अक्सर माँ-बेटी के बीच होती हैं । यहाँ इसी दरार एवं गलतफहमी की वजह से माँ अपनी बेटी को काढ़ा पिलाना चाहती है ताकि उसका महीना किसी भी हालत में न रुके । तब वह माँ से कहती है कि उसके साथ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है । लेकिन माँ यह मानने केलिए तैयार नहीं है । माँ का कहना है - “हाथ आई को मर्द छोड़ता है कहीं?”४४ यह माँ का विश्वास है । बदले में वह माँ से कहती है कि उसे काढ़े की जगह जहर पिला दें । अनीता किसी भी हालत में काढ़ा पीने केलिए तैयार नहीं है । क्योंकि काढ़ा पीना उसके आत्मसम्मान के खिलाफ है ।

माँ-बेटी के बीच एक तरह का खुलापन होना चाहिए था । अनीता पहले ही अपनी माँ से सारी बात कह सकती थी लेकिन ऐसा नहीं हुआ । बाद में जब वह सम्झाने की कोशिश करती है तब माँ समझने केलिए तैयार नहीं होती ।

पिता एवं बेटी के बीच जो रिश्ता इसमें चित्रित किया गया है, वह पुरुष वर्चस्ववादी समाज का है । पहले अनीता के पिता का मानना था कि लड़कियाँ माँ-बाप के बुढ़ापे का सहारा बन सकती है । वह अपनी पत्नी से कहता था कि अगर वह अपनी लड़कियों को दहेज में कुछ दूँगा तो सिर्फ शिक्षा । क्योंकि शिक्षा ही उन्हें आत्म निर्भर बनाएगी । शिक्षा से ही वह अपनी ऊंच-नीच स्वयं निपटेंगी । उनका यह भी मानना था कि माँ-बाप जीवन भर साथ बैठकर उनकी रक्षा तो नहीं कर सकते ।

अनीता जब हवलदार के साथ घर आती है तब पिता का कहना था - “भूल जा बेटी,जो कुछ तुम पर बीती, सोच ले, दु:स्वप्न था । हमारे लिए यही बहुत है कि तू जीवित है....हमारी आंखों के सामने हैं । तू एक नहीं, दो-दो यमराजों को पछाड़कर आ रही है ।”४५ पिता जी की ये बातें अनीता को अपना दर्द कम करने में ज़रूर सहायक हुआ, और लगा था कि वह किसी भी हालत में अपनी बेटी के साथ है । लेकिन वही पिता अखबार में उसकी

संघर्ष की गाथा पढ़कर एकाएक संवेदनशून्य हो जाता है और उससे बड़ी सख्ती से पेश आता है ।

अखबार में खबर आने के बाद उसके पिताजी यह जताने की कोशिश करते हैं कि जिसके साथ यह हादसा हुआ है वह उसकी अपनी बेटी अनीता गुप्ता नहीं और कोई है । वह यह नहीं चाहता कि लोग उसके घर आकर अपनी बेटी के कसीदें उसे सुनायें और अफसोस के बहाने उसके जले पर नमक छिड़ें । ये खबर अगर बिरादरी में फैल जाय तो किसी को मुह दिखाने लायक न रह जाएगा । इसलिए अनीता को कमरे में बंद करके रखा जाता है, और सब से यह कहा जाता है कि अनीता बड़ी बेटी मुक्ता के साथ भोपाल में है ।

इसके बारे में अनीता यही सोचती है कि बापुजी ऐसे क्यों कह रहे हैं । उसे लगता है कि शायद लोकापवाद के भय से वे इस प्रकार कहते हैं । उसकी बड़ी दीदी मुक्ता ने जब मुंबई जाकर नौकरी करने का निश्चय किया तो सगे-स्ंबंधियों ने आलोचना की थी । तब तो बाबूजी तनकर खड़े हो गये थे ।

अनीता के अनुसार उसने अपना ऊँच-नीच पूरी जीवटता के साथ निपटा दिया है । और इसकेलिए उस ने जो आत्मबल संचित किया था वह अपने पिता से ही पाया था । वह पूछती है - “क्यों नहीं बाबूजी छद्मखोल से बाहर आ, अपने भीतर के छटपटाते मनुष्य को मुखौटे की विवशता से मुक्त कर, साहस दिखाते कि अखबारों में कैद अनीता गुप्ता और कोई नहीं, उनकी अपनी बेटी नीतू ही है ।”४६ उसे लगता है कि उसके पिता जी ने समाज के भय से अपने चेहरे पर मुखौटा पहना है । वह चाहती है कि उसके पिता जी अपना इस मुखौटा फेंक कर उसका साथ दें ।

घरवालों को अनीता का पिता सख्त निर्देश देता है कि अनीता का किसी से बातचीत न हो सके । घर में एक ऐसा माहोल बनाया जाता है कि वह वहाँ है ही नहीं । इस तरह घरवाले उसके अस्तित्व पर फॅशन चिह्नलगा देते हैं । वे कभी यह नहीं सोचते हैं कि हादसे के कारण अनीता किस मानसिक स्थिति से गुज़र रही है ।

उसका पिताजी सिर्फ अपनी बदनामी के बारे में सोचते हैं । वे कभी यह नहीं सोचते हैं कि वह किस तरह उस टैक्सी ड्राइवर से लड़कर आयी है । उन्हें अपनी बेटी की कोई परवाह नहीं । उन्हें परवाह है समाज में उनकी मर्यादा से, अपनी बदनामी से । इसीलिए उसके पिताजी अनीता पर यह आरोप लगाता है कि उसे (अनीता) एफ.आई.आर (F.I.R) दर्ज

कराते समय यह कहना चाहिए था कि यह लड़की का मामला है । इसलिए उसकी सुरक्षा और भविष्य का ख्याल कर दे और मामले को गुप्त ही रखें ।

पुलिस अभी तक टैक्सी ड्राइवर को नहीं पकड़ सके । इसलिए उसके साथी पुलिस के अकर्मण्यता के विरोध में दिल्ली विश्वविध्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं ने आई.टी.ओ स्थित पुलिस मुख्यालय के समक्ष विरोध प्रदर्शन करने का आह्वान किया । ये खबर जब पड़ोस की सुशीला आंटी आकर बता देती है तो माँ उनके हाँ में हाँ मिलाकर बातें करती है । लेकिन उनके चले जाने के बाद पिताजी अनीता पर भरस पड़ते हैं । उन्हें लगा कि उसी ने अपने साथियों को कहीं से इशारा कर दिया है । तबी तो वे ऐसे करने केलिए तैयार हुए ।

घर के अन्य सदस्यों को (छोटे भाई एवं बहन) यह समझाया जाता है कि वे अनीता पर कड़ी नज़र रखें । उसे घर में जेल की तरह बंद करके रखा जाता है । अगर घर में कोई आ जाय तो उसे कमरे में चुपके से बैठना पड़ता है । ऐसे महोल में उसे अपने आप को संभालने में कुछ समय लगता है ।

घर में उसकी जो हालत है इसके बारे में वह अपनी सहेली नम्रता को खत लिखना चाहती है । पाखाने जाकर चुपके से खत भी लिखती है और छोटे भाई के हाथ लेटर बंक्स में डालने केलिए देती है । मगर लेटर बंक्स में डालने के बजाय वह खत पिताजी के हाथ में थमा देता है । फोन करने की कोशिश में भी वह असफल हो जाती है । वह अपने आप से पूछती है - “एक लंबी गिरवी जीवन ऐससी ही नज़रबंदी की चीथती संकरी सुरंग से बंदी होकर बिताना होगा उसे । बिता सकोगी? ”४७ अपनी आज़ादी को नष्ट कर जीना उसे मंजूर नहीं है । उसे मालूम है कि उसके साथ जो नज़रबंदी हो रही है, वह हफ्ते भर केलिए नहीं है । वह इस महोल से स्वतंत्र होना चाहती है । उसकेलिए उसकी आज़ादी ही सब कुछ है ।

अनीता घरवालों से प्रतिवाद करना चाहती है । लेकिन कर नहीं पाती । उसके सारे प्रतिवाद अपने आप से है । इन सब से ऊब कर निराश होकर वह आत्महत्या करने का निश्चय करती है, और गले में फंदा डाल भी देती है । लेकिन यह सोचकर मुखर जाती है कि उसकेलिए कल सबेरे पुलिस थाने के समक्ष विरोध-प्रदर्शन करनेवाले छात्र-छात्राएँ जब उसके आत्मघात की सूचना पढ़ेंगे तो स्वयं को कितना अपमानित और ठगा हुआ महसूस करेंगे । क्या वे यह नहीं सोचेंगे कि वे एक निहायत कमज़ोर और कायर लड़की केलिए अपनी लडॉई लड़ रहे थे, जो उन्हें लड़ने से पहले ही हार मानने को विवश कर गयी ।

यहाँ अनीता को सब से पहले अपने आप से लड़ना है । एक हद तक वह उसमें सफल भी हो जाती है । गले से फंदा निकालकर वह निर्णय कर लेती है कि कल सुबह पुलिस मुख्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन केलिए एक जुट होती अपनी पीढ़ी के साथ वह भी होगी ।

जब किसी लड़की के साथ इस तरह का अत्याचार होता है । तब अखबारवाले उसे बढ़ा चढ़ाकर सेन्सेशनल (sensational) बनाते हैं । टी. वी चानल उस पर कहानियाँ बनाते हैं, और कई दिनों तक यह खबर ताज़ा रखी जाती है । लेकिन जब और कोई सेन्सेशनल खबर मिलती है तब बाक्स ऐटम से यह एकदम गायब हो जाती है । लोग भी उसे भूल जाते हैं । सिर्फ मसालेदार खबरें ही छपती है । आजकल अखबार लड़कियों के साथ होनेवाले अत्याचरों की खबरों से भर जाता है । लेकिन कारवायी नहीं होती ।

कोई यह नहीं सोचता कि उस लड़की पर क्या बीतती होगी । ऐसे अवसर पर वह मानसिक एवं शारीरिक रूप में कमजोर हो जाती है । क्यों कि सबसे पहले उसे अपने आप से लड़ना पड़ता है । उसके बाद उसे उस अत्याचार से लड़ना पड़ता है,जो उसके साथ हुआ है । इसकेलिए घर परिवार एवं समाज को उसका साथ देना है ।

यहाँ अनीता को अपने आप से ही नहीं बल्कि परिवार से भी लड़ना पड़ता है । क्योंकि उसके साथ देनेवाले ही उसके खिलाफ हो गये हैं । वह अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्शित रखना चाहती है । समाज में इज्ज़त खोने के ड़र से उसकी माँ भी उसके खिलाफ हो जाती है । हालांकि उसे तो अनीता का साथ देना था । लेकिन अनीता तो अपने अधिकार को लेकर सजग है । इस अधिकार को वह अपने पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर भी वह प्राप्त करती है ।

चित्रा जी चाहती है कि घरवालों के लाख कोशिशों के बावजूद अनीता घर से बाहर निकलकर समाज के साथ अपने साथियों से मिलकर नारी के खिलाफ होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध लड़ें । यह उनकी आशावादी दृष्टिकोण है । आज के बदलते सामाजिक स्थिति में माँ-बाप की ज़िम्मेदारी बढ़ गयी है । उन्हें अपने बच्चों को खासकर अपनी बेटी को परिवार एवं समाज में आत्मसम्मान के साथ जीने केलिए तैयार करना है ।

“अनीता के लौटे आत्मविश्वास को देखकर यह कहना सही लगता है कि नारी योनि में जन्म लेना “प्रेतयोनि” में जन्म लेने के सदृश्य नहीं है । बल्कि उसका आत्मबल उसे इस योनि के भेद से कहीं ऊपर उठा ले जाता है ।”४८ ऐसा विश्वास है कि अतृप्त इच्छाओं के

साथ मरा हुआ व्यक्ति प्रेतयोनि में भटकता रहता है । अगर अनीता ने आत्मविश्वास प्रकट नहीं किया होता तो वह भी जीते जी प्रेतयोनि में भटकती रहती । लेकिन उसने आत्मविश्वास के साथ अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ने की कोशिश की, और अपने अधिकारों को पहचान सकी ।

४.२.२.३ अभी भी

"अभी भी" कहानी की नायिका शिल्पा परिवार में अपना अस्तित्व खोज रही है । वह पढ़ी लिखी है । लेकिन नौकरी नहीं करती । उसके पहले पति मुकेश की मृत्यु के बाद पिता जी चाहते थे कि उनकी बेटी नौकरी करें । इससे वह व्यस्त रहेगी और उसके घावों पर भी मरहम लग जाएगा । लेकिन उसके साँस ने इसका विरोध किया । वह अपने दूसरे बेटे सुरेश से उसकी शादी करवाना चाहती थी । इस प्रस्ताव से शिल्पा के परिवारवालों को उसकी साँस की उदारता ही दिखाई दी । क्योंकि साँस ने अपनी मीठी बातों से शिल्पा के घरवालों को मनाया । शिल्पा को उसके पति की मृत्यु एवं दूसरी शादी के बीच कुछ सोचने का समय नहीं मिला या उसे सोचने का समय नहीं दिया गया । वह अपने पति की मृत्यु के दुख में डूबी हुई थी । अपने साथ हुए नियति के क्रूर मज़ाक से वह ऊपर उठी नहीं थी । इसीलिए वह न वर्तमान के बारे में सोच पाती न भविष्य के बारे में । पढ़ी-लिखी होने के कारण वह शादी के बाद भी नौकरी कर सकती थी लेकिन ऐसा नहीं हुआ ।

सुरेश से शादी करने के बाद शिल्पा को पता चलता है कि उसके पति के मुआवज़े के पाँच लाख रुपये एवं संपत्ति को हड़पने केलिए ही साँस ने उसकी शादी अपने दूसरे बेटे से करवायी थी ।

छोटा देवर अनिल शिल्पा का पैसा वसूल करने केलिए तरह-तरह का मार्ग अपनाता है । उसके पैसे से अनिल के मकान की किश्तें भर गयी, ननदों की जरूरतें पूरी कर दी गयी । उस में से सिर्फ सवा-डेढ़ लाख ही बचा है । अब अनिल को नये दुकान केलिए अस्सी हज़ार रुपयों की ज़रूरत है । इसलिए वह शिल्पा से चेक पर हस्ताक्षर करने को कहता है । लेकिन शिल्पा इसकेलिए राज़ी नहीं होती । वह चाहती है कि बाकी जो भी पैसा बचा है, वह अपने बेटे किंशु की पढ़ाई केलिए रखा जाय । इसलिए वह रुपया देने से इन्कार करती है । इससे क्रुद्ध होकर अनिल ने उसकी इतनी पिटाई की कि वह बेहोश हो जाती है और उसे अस्पताल में भर्ती किया जाता है । होश में आने के बाद वह सोचने लगती है - "जीने के नाम पर जो जीवन उसे सौपा गया है, पिछले पाँच वर्षों से उसे मंझा-मंझा कर वह रोया-रोया

निचुड़ चुकी है...सामाजिक और पारिवारिक सुरक्षा प्रदान करने की आड़ में कितनी पटुता से उसकी भावनाओं और विवेक को छला गया ।"४९ ऐसा मानना है कि शादी स्त्री केलिए पारिवारिक एवं सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है । लेकिन हमेशा घर-परिवार के अंदर ही स्त्री के साथ ज़्यादातर अन्याय एवं शोषण होता है । शिल्पा को तो अपने ससुराल में किसी भी प्रकार की सुरक्षा या प्यार प्राप्त नहीं हुआ ।

यह पहली बार नहीं है कि वह ससुरालवालों के विरुद्ध प्रतिशोध कर रही है । इसके पहले भी उसने अपने ऊपर होनेवाले आर्थिक शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई थी । बंबई के उपनगर की सोसाइटी में मुकेश (पहले पति) ने शिल्पा के नाम से घर आरक्षित करवाया था । उस घर को बेच देने केलिए उस पर दबाव डाला गया । लेकिन वह नहीं मानी । अपने साँस के दुर्व्यवहार पर उसने कई बार अपने पति सुरेश से शिकायतें की । लेकिन सुरेश के अनुसार वह दुर्व्यवहार नहीं, बल्कि पारिवारिक अनुशासन है । सुरेश उससे एकांत में जो कुछ भी कबूलता है, माँ एवं अनिल के सामने मुँह खोलता नहीं ।

अस्पताल में लेट कर वह निश्चय करती है कि उसे इस लोभी सियारों की माँद से बाहर निकलना है । अगर सुरेश में हिम्मत है तो वह उसके साथ आकर खड़ा होगा । नहीं तो भी उसे कोई शिकायत नहीं । अभी तक वह जान चुकी है कि सुरेश दब्बू व्यक्तित्व का, हीनत्व बोध से आक्रांत व्यक्ति है । अस्पताल में भी साँस उसे अपनी मीठी बातों में फँसाकर समझाती है कि अपने देवर अनिल को माफ कर दे और पुलिस के सामने बहाना बना दे कि चक्कर आने पर वह गिर गई थी । लेकिन शिल्पा अपने पिता एवं पुलिस के सामने सच्चाई बयान करती है और कहती है - "प-पड़ोसियों ने गलत इत्तिला नहीं दी, बाबूजी ! मुझे जीवित देखना चाहते हैं तो यहाँ से फोरण निकाल ले चलिये....अभी भी वक्त है, अभी भी.... ।"५० वह अपने पिता जी के साथ जाना चाहती है । उसे ससुराल की ज़िंदगी से ड़र लगता है । उसे मालूम है कि अब उसकी ज़िंदगी खतरे से बाहर नहीं । यही नहीं वह अपने बेटे केलिए, अपने लिए आगे की ज़िंदगी जीना चाहती है । अगर उसका पति सब कुछ समझकर उसका साथ देगा तो खुशी की बात है । लेकिन अगर साथ नहीं देगा तो भी उसे कोई फरक नहीं पड़ता है ।

शिल्पा के ज़रिये लेखिका शोषित एवं पीड़ित स्त्रियों से कहना चाहती है कि देर नहीं हुई है "अभी भी" वक्त है । अपने ऊपर होनेवाले शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने में हिचकने की ज़रूरत नहीं । वक्त किसी का इंतज़ार नहीं करता । अगर देर हुई तो कोई भी आप

को बचा नहीं सकता । उसे यह सोच कर चुप नहीं रहना चाहिए कि बचाने केलिए कोई आ जाएगा । नारी की बचाव उसी के हाथों में है ।

सिमोन द बौवर मानती हैं - "अस्तित्व की प्रामाणिकता अभिव्यक्त होती है व्यक्ति की कार्यों से ।"५१ शिल्पा ने अपने अस्तित्व की स्थापना ठोस निर्णय लेने के अपनी ताकत से व्यक्त की है। मूल रूप में शिल्पा विद्रोही नारी नहीं । उसके अपने स्वतंत्र विचार है । लेकिन अपने विचारों को प्रकट करने की हिम्मत उसमें नहीं थी । वह भारतीय परंपराओं को माननेवाली है । वह भी सामाजिक एवं पारिवारिक सुरक्षा चाहती है । स्त्री हमेशा सामाजिक एवं पारिवारिक रूप में अपना पहचान चाहती है । साथ ही साथ वह औरत के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण से भी वाकिफ है । शायद इसी वजह से शिल्पा सब कुछ सहती चली आयी थी । लेकिन सहनशीलता की भी हद होती है । ससुरालवालों ने जब इस हद को पार किया, तब वह इसके खिलाफ आवाज़ उठाती है । यहाँ वह शब्दों के बोछारों से अपना विद्रोह प्रकट नहीं करती । अपने ठोस विचारों से, निर्णय लेने की ताकत से वह परिवार में अपनी अस्मिता बनाए रखना चाहती है ।

४.२.२.४ ट्रेन छूटने तक

हमारे पुरुष प्रधान समाज में नारी-शोषण के कई आयाम हैं । आधुनिक युग में कामकाजी महिला को घरवाले पैसे कमानेवाले मशीन की तरह ही देखते हैं । पुरुष की दृष्टि में स्त्री ऐसी चीज़ है जिसके साथ कभी भी किसी भी तरह का संबंध स्थापित कर सकता है । लेकिन "ट्रेन छूटने तक" कहानी की शुभा पुरुष के इस मानसिकता को मानने केलिए तैयार नहीं है ।

शुभा नौकरी करनेवाली युवती है । उसकी माँ स्कूल में काम करती है । पापा की मृत्यु के बाद शुभा को घर का खर्चा पूरा करने केलिए पढ़ाई छोड़कर पैकिंग में सर्विस करना पडॉ था । लेकिन इंटर में कई बार फेल हो जाने के बाद भी उसकी माँ ने भाई सुरेश की पढ़ाई नहीं छुड़वाई । सुबह घर से निकली शुभा शाम को घर लौटती है । एक दिन जब वह शाम को घर वापस लौटी तो उसने जाना कि सुरेश ने एक बच्चे की माँ एवं तलाक़शुदा गोवानी लड़की से शादी की है और घर छोड़कर उसके घर में रहे चला गया है । सुरेश के ऐसे करने से घर के आर्थिक स्थिति पर कोई बदलाव आनेवाला नहीं है । क्योंकि पिछले नौ महीने से सुरेश काम करता रहा । लेकिन कभी भी एक भी पैसा उसने घर खर्च केलिए नहीं दिया ।

शादी के बाद जब कभी सुरेश अपने बच्चे एवं पत्नी के साथ घर आता है, तब उसे अचानक कुछ रुपयों की ज़रूरत पड़ जाती है, और माँ उसे पैसे दे भी देती है । लेकिन माँ शुभा से इसके बारे में कुछ भी नहीं कहती । उसकी छोटी बहनें छाया और तनु उसे इसकी खबर देती है ।

शुभा रवि से प्यार करती थी और दोनों शादी भी करना चाहते थे । लेकिन रवि किसी दूसरी लड़की के साथ शादी करने का फैसला करता है । इसके बारे में वह शुभा को एक खत लिखकर अपनी मजबूरी का ज़िक्र कर देता है । यह खत पढ़कर वह अंदर ही अंदर टूट जाती है । लेकिन यह खबर सुनकर उसकी माँ खुश हो जाती है । माँ के अनुसार ऐसा करके रवि ने अपने एवं शुभा के प्रति समझदारी का काम किया है । पहले वह इसका मतलब समझ नहीं पायी । लेकिन अब वह सब कुछ समझ गयी है । शायद उसकी माँ नहीं चाहती कि अन्य लड़कियों की तरह वह अपना घोंसला बनाए ।

अब कई दिनों बाद रवि का खत आया है । उसने उसके एवं उसकी पत्नी के बीच तलाक देने की संभावना के बारे में लिखा है, और यह भी दोहराया है कि उसने शुभा से शादी करने का निश्चय किया है । उसने आगे लिखा है कि वह शुभा से मिलने केलिए आ रहा है । लेकिन शुभा उससे मिलना नहीं चाहती । वह चाहती है कि घर में वह रवि से न मिल सके और बाद में पत्र के द्वारा यह जवाब दें - “इतना साहस दिखाने की अब क्या ज़रूरत है? दिखाना था तो पहले दिखा सकते थे मजबूरी शब्द की आड़ मात्र पलायन है ।”५२ रवि को अब शुभा की ज़रूरत है । इसीलिए वह उससे शादी करना चाहता है । उसने शुभा की मर्ज़ी जानना ज़रूरी नहीं समझा । यह साहस अगर उसने पहले दिखा दिया होता तो कितना अच्छा होता । पुरुष अपनी इच्छा के अनुसार स्त्री को गले लगाता है और उसके बाद अपने जीवन से बाहर फेंक देता है । स्त्री को तो बस उसकी हाँ में हाँ मिलानी है । लेकिन शुभा इसकेलिए तैयार नहीं है ।

शुभा की माँ केलिए वह कमाऊ लड़की है । घर का खर्च उसकी नौकरी से भी पूरा होता है । इसलिए माँ उसकी शादी कराना नहीं चाहती । घरवाले नौकरी करनेवाले लड़कियों को पैसा कमाने की मशीन ही समझते हैं । उसकी इच्छाओं का किसी को कोई कद्र नहीं है । शुभा को अच्छी तरह मालूम है - “नौकरी का जुआ उसके कन्धों पर से शायद कभी नहीं हट सकेगा ।”५३ इसीलिए दफ्तर से मिस लालचंदानी अपने मंगेतर के बारे में कहती है - “वह नहीं चाहता, शादी के बाद में सर्विस करूँ ”५४ - सुनकर वह रोती है । क्योंकि वह भी उससे

प्यार करनेवाले पति को चाहती है जो उसे नौकरी न करने दें । उसे यह भी मालूम है कि उसकी ज़िंदगी में ऐसा कोई भी आनेवाला नहीं है ।

जब शुभा रवि से प्यार करती थी तब रवि के साथ उसका संबंध इतना खुला था - "रवि हौले-से शुभा की झुकी छुपी गर्दन को चूम लेता । एक झनझनाती सनसनाहट गर्दन से होती हुई शुभा की देह में व्याप्त हो जाती । तब कोई देख लेगा, ऐसी परवाह नहीं होती शुभा को- सनसनी जो बाहों में भींचे रहती ।"५५ स्त्री का स्वभाव है कि प्यार के सामने वह सब कुछ भूल जाती है । प्यार में उसे सब ठीक ही लगता है । इसी वजह से पुरुष नारी को आसानी से अपने चंगुल में फँसाता है । यही उसकी दुर्बलता है ।

रवि ने मज़बूरी का बहाना बनाकर शादी की थी । शादी के बाद भी वह शुभा से मिलने आता है और मिलते समय इस तरह मिलता था कि उनके बीच कुछ हुआ ही नहीं । वह शादी के बाद भी शुभा से पहले की तरह संबंध रखना चाहता है । यह उसका प्यार या प्रेम नहीं है । अगर प्यार सच्चा था तो वह पहले ही शुभा से शादी करने का साहस दिखाता । कोई बहाना नहीं बनाता । पहले शुभा को यह बात समझ में नहीं आयी । लेकिन बाद में वह समझ पाती है । जब उसे इसका पता चलता है तब वह रवि की दूसरी पत्नी का पद स्वीकार करने से इनकार करती है ।

४.२.२.५ लकड़बग्घा

स्त्रियों को हमारा समाज हमेशा दोयम दर्जे का स्थान ही देता है । चाहे शहर में रहनेवाली हो या गाँव में रहनेवाली, इस में कोई अंतर नहीं है । अशिक्षित होने के कारण गाँव में रहनेवाली स्त्रियाँ घर,परिवार एवं समाज के द्वारा ज़्यादा शोषित एवं पीड़ित हैं ।

"लकड़बग्घा" कहानी की पछाँहवाली ऐसी नारी है जो अपने परिवार से शोषित है । विधवा होने के कारण घर की बहु होने पर भी वह बंधुआ मज़दूरिन की तरह काम करने केलिए अभिशप्त है । घर का सारा काम उसे ही करना पड़ता है । वहाँ उसकी बात सुननेवाला कोई नहीं है । वह अपने जेठ द्वारा हुए शोषण को अपनी एकलौती बेटी पुनिया केलिए ही सह लेती है । वह चाहती है कि अपनी बहन की बेटी की तरह उसकी बेटी भी पढ़-लिख कर अपने पैरों पर खड़ी हो जाए । लेकिन उसका जेठ लबरदार उसकी बातों को अमल करना तो दूर उसे सुनता तक नहीं है ।

पछाँहवाली ने बहुत कोशिश की कि उसकी बात लंबरदार तक पहुँचा सके । लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । अंत में अपमानित पछाँहवाली घर का सारा काम छोड़कर अपने कमरे में बिना खान-पान के बैठी रही । इस तरह चार दिन बीत गए । लंबरदार ने उससे काम करवाने का प्रयास किया । लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । लंबरदार उसकी बातें सुनने केलिए राज़ी हो गया । उसने उसकी बातें तो सुनीं । लेकिन वह उस पर अमल करना नहीं चाहता था । तब पछाँहवाली ने घर की अलगा-अलगी की बात की । क्रोधित होकर जेठ ने उसे मारने केलिए बंदूक उठा ली । घर के बाकी लोगों ने लंबरदर को चुप कराने की कोशिश की ।

लंबरदार उस वक्त तो चुप रहा । लेकिन जब घर की अलगा-अलगी की बात उठी तो उसे अच्छा नहीं लगा । क्योंकि वह जनता था - "उनकी सत्ता को चुनौती देता यह मुंह एक बार खुल आया है तो फिर न जाने कितनी दफे कहाँ-कहाँ खुले....एक कोशिश ओर आज़मा देखें....घर की चिंगारी घर के चूल्हे में ही तुपी रहे तो बेहत्तर होगा ।"५६ वह यह भी जनता था कि अलगा-अलगी का मतलब है पूरे अठारह बीघे के चक से हाथ धोना, जो इतने सालों से उसके पास है । उसी के भरोसे पर तो उसका घर-परिवार निर्भर है । उसके भी चार बेटे और दो बेटियाँ हैं । उनकी भी काफी जिम्मेदारियाँ हैं । पछाँहवाली का बंदोबस्त करना आवश्यक हो गया । अगली सुबह पता चला कि पछाँहवाली अरहर के खेत में टट्टी करने गई थी और वही उसे लकड़बग्घा उठा ले गया ।

जिस तरह साँप की पूंछ पर पाँव पड़ने से वह आदमी को ड़स लेता है उसी तरह लंबरदार रूपी नागराज ने पछाँहवाली को ड़स लिया । इस कहानी में चित्रा जी ने अपने ऊपर होने वाले शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाली एक गाँव की स्त्री का चित्रण किया है । वह जब अपनी बहन के घर जब जाती है तो उसे बहिन का घर एवं वहाँ का महौल इन्द्रधनुषी सपना जैसा लगता है । बहन का बड़ा बेटा डाक्टरी पढ़ रहा है । मँझली बेटी एम.ए. में पढ़ रही है । पढ़ाई के बाद जल्द ही उनकी नौकरी भी लग जाएगी । उसकी बहन उससे कहती है कि उसकी ज़िंदगी देखकर ही उसने अपनी बेटियों को पढ़ाने का निश्चय किया था । वह कहती है - "हमने तो तुम्हारी परवशता देख अपनी बेटियों केलिए सीख गठियाई मुन्नी कि लड़कियों को कुछ देना है तो विद्या देनी चाहिए माँ-बाप को ।"५७ लग भग यही बात प्रेतयोनि का पिता भी कहता है - "मैं अपनी लड़कियों को कुछ दहेज में दूंगा तो सिर्फ शिक्षा । शिक्षा ही उन्हें आत्मनिर्भर बनाएगी ।"५८ क्योंकि शिक्षा एक ऐसी चीज़ है जो स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाती है ताकि वह सही रास्ता अपनाकर ज़िंदगी में आगे बढ़ सकें ।

इस कहानी में पछाँहवाली अपनी बेटी को पढ़ाना चाहती है । क्योंकि उसे पता है कि अगर वह पढ़ी-लिखी होती तो उसकी यह हालत कभी नही होती । इसीलिए वह लंबरदार से कहती है - "....पुनिया हमारी भांति जाहिल-काहिल न रही, आज हम चार अक्षर पढ़ी-लिखी होतीं तो कोहू के आसरे चौका-बसन निबटवाती पड़ी रही होतिन ! हमार जिनगी कढिलत-घसिटत बीतती गई । हमार भाग्य....मगर हम अपनी बिटिया क पढेबै, वाहिका अपने बाप की नाई डाकदरी पढेक है....पुनिया डाकदर बनी! ।"५९ अगर वह पढ़ी-लिखी होती तो पति की मृत्यु के बाद उसकी ज़िन्दगी इतनी दर्दनाक नहीं होती । इसीलिए वह अपनी बेटी को शिक्षित करवा कर उसके जरिये अपनी बेटी की ज़िंदगी में खुशियाँ भरना चाहती है । वह बहिन की बेटी की तरह अपनी बच्ची को भी वह पढ़ा-लिखाकर आत्मनिर्भर बनाना चाहती ।

डॉ.शोभा निंबालकर के अनुसार - "चित्रा जी की कहानी "लकड़बग्घा" की पछाँहवाली विधवा, गँवार और अनपढ़ होते हुए भी अपने जेठ लंबरदार से विरोध कर बैठती है । ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में प्रतिरोध का यह स्वर असंभव सा है "६० ज़्यादातर लोग यही सोचते हैं कि प्रतिरोध आधुनिक एवं शिक्षित लोगों तक ही सीमित है । असल में अपने "स्व" को पहचानने केलिए शिक्षित होना ज़रूरी नहीं । अनुभव से भी मनुष्य बहुत कुछ सीख लेता है । पछाँहवाली में बातों को समझने एवं परखने की क्षमता है । यही नहीं उसने अपनी एवं अपनी बहिन की ज़िंदगी को भी देखा है । वह दोनों की ज़िंदगी के अंतर को पहचनाती है । यही कारण है गँवार एवं अनपढ़ होते हुए भी उसने अपने हक केलिए अपनी आवाज़ बुलंद की ।

नारी चेतना या नारिवाद शिक्षित स्त्रियों तक सीमित नहीं होती है । यह चेतना तभी सार्थक होती है जब अनपढ़ स्त्री भी पुरुष के निरंकुश एकाधिकार के नीचे दबने से इन्कार करती है । गाँव की पछाँहवाली-जैसी अनपढ़ स्त्री भी जानती है कि वह अपने जेठ के द्वारा शोषित है । वह अपने ऊपर होनेवाले शोषण से वाकिफ है । लेकिन वह चाहती है कि उसकी बेटी इस शोषण का शिकार न बने । इसलिए उसे पढ़ाना चाहती है । इसकेलिए वह अपने जेठ लंबरदार के विरोध में विद्रोह करने को तैयार होती है । चित्रा जी की पछाँहवाली अनपढ़ है । लेकिन साहसी स्त्री है । अगर उसका प्रतिशोध सही दिशा में होता या उसका साथ देनेवाला कोई होता तो ज़रूर वह अपनी कोशिश में सफल होती ।

वेद प्रकाश अमिताभ के अनुसार "लकड़बग्घा की पछाँहवाली को अपने अधिकारों की लड़ाई खुद लड़नी है । अपनी बिटिया को पढ़ाने के संकल्प के साथ लंबरदार की राइफल के

सामने खड़ी पछाँहवाली चित्रा मुद्गल का यथार्थ और अद्भुत नारी चरित्र है । हालांकि सामंती निरंकुशता के नागराज को चुनौती देने का फल उन्हें मृत्यु के रूप में प्राप्त हुआ है । लेकिन उनका विद्रोह भाव, उनकी निर्णयात्मक संघर्ष मुद्रा देखते ही बनती है । इसमें सवाल सिर्फ पुनिया की पढ़ाई का नहीं है, यह तो नारी मात्र की अस्मिता से जुड़ा प्रश्न है ।"६१ वास्तव में अपने हक केलिए लड़ना बहुत बड़ी बात है । खासकर एक अनपढ़ औरत का अपने जेठ के विरुद्ध । स्त्री अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों को सह लेती है । लेकिन अपने औलाद पर वह कोई आँच न आने देती । पछाँहवाली तो अपनी बेटी केलिए ही जीती है । इसीलिए उसने अपने जेठ से अपना हक माँगा । यह कोई भीख नहीं है, जो उसकी छोली में डाल दें । यह उसका हक है ।

४.२.२.६ स्टेपनी

"स्टेपनी" कहानी में चित्रा जी ने कामकाजी औरत के अनेक पहलुओं में से एक का चित्रण किया है । कामकाजी औरत घर-परिवार एवं दफ्तर के बीच हमेशा पिसती रहती है । उसे घर में अपने दायित्वों को निभाना है साथ में दफ्तर में भी ईमानदारी के साथ नौकरी करनी है ।

आभा और उसका पति विनोद दोनों नौकरी करते हैं । इसलिए छोटी-सी बच्ची चिंकी को दिन भर क्रेष में रहना पड़ता है । बताशा नामक घर की नौकरानी के साथ विनोद के अनैतिक संबंध के बारे में पड़ोसिन श्रीमती खन्ना ने बताया - "बताशा के लक्षण मुझे ठीक नहीं लग रहे । तुम तो चिंकी के साथ साढ़े सात बजे घर छोड़ देती हो । तुम्हारे पीछे घर में कैसे-कैसे चमेली के मंडवे सजते हैं, तुम्हें क्या भनक! ।"६२ उन्होंने उससे यह भी बताया कि शायद उनका अनुमान गलत भी हो सकता है । लेकिन आभा को सतर्क रहना है । उन्होंने यह भी बताया कि बताशा अब उनके घर काम करने नहीं आती है । यह आभा केलिए नई खबर थी । क्योंकि बताशा पहले से ही श्रीमती खन्ना के यहाँ काम करती थी उन्होंने ही बताशा को आभा के यहाँ नौकरी दिलवाई थी।

पहले तो विनोद ही चिंकी को क्रेष में छोड़ने जाता था । बच्चे को क्रेष में छोड़ते समय बताने केलिए कई बातें आभा विनोद से कहती है, और हरेक चीज़ को बार-बार बता भी देती । लेकिन विनोद हमेशा कुछ न कुछ भूल जाता । बच्ची के खाने से लेकर दवाई तक कई ऐसी बातें होती हैं, जिसका ध्यान वह रखती है । पूछ-ताछ केलिए उसे कई बार विनोद को फोन करना पड़ता था । विनोद को तो इस तरह आभा का फोन करना अच्छा

नहीं लगता । कोई बात अगर विनोद भूल जाता तो उसको बेचैनी होती थी । यह स्त्री एवं पुरुष के बीच का फर्क हैं । बच्चे एवं पति की छोटी-छोटी बातों पर उसका ध्यान रहता है । लेकिन विनोद हमेशा इन सब का नज़र अंदाज़ करता ही रहा।

स्त्री की नज़र बहुत बारीक होती है । इसलिए छोटी-छोटी बातों पर उसका ध्यान रहता है । ये छोटी बातें उसे खुशी प्रदान करती हैं । इन्हें भूल जाना उसे मंज़ूर नहीं है । पुरुष का नज़रिया कुछ अलग है । छोटी-छोटी चीज़ें उसे दिखाई नहीं देती हैं । उसका ध्यान हमेशा बडी चीज़ों पर ही रहता है । स्त्री हमेशा अपनी खुशी दूसरों में ढूँढती हैं । पति एवं बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के बाद उसके पास अपने लिए वक्त ही नहीं होता । उसे सब के पसंद-नापसंद मालूम है । लेकिन उसके पसंद का किसे खबर है । कभी-कभी वह भी अपने पसंद से अंजान रह जाती है ।

अब आभा चिंकी को क्रेष में छोड़ने जाती है । इसलिए उसे साढ़े सात बजे घर से निकलना पड़ता है ।

अगले दिन से आभा ने बताशा पर नज़र रखना शुरू कर दिया । तब उसे मालूम हुआ कि जो बात पड़ोसिन कह रही थी वह बिलकुल झूठ नहीं है । बताशा विनोद के मामलों में कुछ ज़्यादा ही दिलचस्पी लेने लगी है । सबेरे विनोद केलिए जब आभा चाय बनाने लगी तो उसे परे हटाकर बताशा साधिकार कहती है - "लाओ बीबी, मैं चढ़ाती हूँ चाय । बाबूजी को गाढ़ी चाय भाती....आप तो खलीस पानी खौला के धर दें ।"६३ और किसी दिन होता तो बताशा की यह बातें उसे मीठा परिहास मात्र लगता । लेकिन आज उसे इस में कुछ खलता है । उसी तरह उसे लगता है कि विनोद भी बताशा में गहरी दिलचस्पी ले रहा है।

उसके ध्यान में आया कि पहले तो बताशा इतनी अच्छी साड़ियाँ नहीं पहनती थी । लेकिन पूछने से क्या फायदा । वह कहेगी कि बीबीजियों ने अमुक अवसर पर दी है । इसलिए साड़ियों के बारे में आभा चुप रही ।

जब आभा गर्भवती थी तो उसने नौकरी छोड़ने के बारे में सोचा था क्योंकि बच्चे की देखभाल एवं नौकरी दोनों साथ-साथ करना मुश्किल था । लेकिन विनोद ने कहा - "अभी तो तुम्हारे हाथ में दो-दो व्यक्तियों की आय आ रही है, खुलकर खर्च कर पाती हो, फिर पैसे-पैसे केलिए सोचना होगा । कल किसी बात केलिए तुम्हें मना करेंगा तो तुम्हें ही लगेगा कि ज़िंदगी फीकी और बेस्वाद हो उठी है । और फिर तुम अपने होने सार्थकता भी तो जीना

चाहोगी ।"६४ उस वक्त विनोद की बातों में कोई बुराई नहीं लगी थी । लेकिन आज उसे लगता है - "उसके घर से निकलते ही उन्हें अपनी मनमानी करने की बेखटके सुविधा प्राप्त हो ।"६५ इसीलिए विनोद उसे नौकरी करने केलिए भेजता है ।

आभा ने निश्चय किया कि जब वह सबेरे काम केलिए आएगी तो "चोटी पकड़कर ढकेल देगी सीढ़ियों पर ठीक श्रीमती खन्ना के सामने-चल निकाल घर से, कहीं जाकर मुँह काला कर अपना, मालकिन बनने के ख्वाब देख रही? ।"६६ उसकी सारी नाराज़गी नौकरानी से थी । उसने सोचा कि बताशा को नौकरी से निकालना है और यही उसकी समस्या का समाधान है ।

बताशा से निपटने से पहले वह विनोद से बातें करना चाहती थी । आभा की बातें सुनते ही विनोद ने साफ इनकार किया और कहा - "तुम उसे ही लांछित नहीं कर रही हो, बल्कि मुझ पर भी तो कींचड़ उछाल रही हो । औरतबाज़ी करनी होगी तो वह नौकरानी ही बची है मेरेलिए? कमी हैं औरतों की? दूर जाने की भी ज़रूरत नहीं । यहाँ मयूर विहार में ही न जाने कितने फ्लेटों में में ये सारे धंधे चलते हैं । ....हर रोग का इलाज है आभा, मगर शक का इलाज हाकिम तुकमान के पास भी नहीं है....? ।"६७ आभा कोई तर्क वितर्क कर न पाई । इससे क्या फायदा? क्योंकि वह जानती है कि बताशा को नौकरी से निकाल देने से उसकी समस्या का समाधान नहीं होगा । अगर पति के मन में कुछ गलत विचार है तो उसे जो भी करना है वह करेगा । आभा उसे थोड़े ही रोक सकती है । यही नहीं बताशा को नौकरी से निकाल देने पर दूसरी नौकरानी का प्रबंध करना भी आसान नहीं है ।

अगर बताशा नहीं आएगी तो उसे सुबह दो घंडे पहले उठना होगा । वह तो उलझन में पड़ गयी । उसकी "अजीब स्थिति है । न नौकरी छोड़ने की सुविधा है उसके पास, न नोकरी करने की ।"६८ यह नौकरी पेश औरत की दयनीय स्थिति है । वह चाहकर भी इस चक्रव्यूह से बाहर निकल नहीं सकती । इसलिए आभा ने बताशा को नौकरी से न निकालने का निश्चय किया । क्योंकि "शायद कोई विकल्प नहीं है उसके हिस्से । गृहस्थी और आत्मनिर्भरता के मध्य अपने स्व का संतुलन खोजते हुए कब वह अपने ही घर केलिए स्टेपनी हो गई और बताशा मुख्य छक्का - कौन जाने ।"६९ आभा अपने ही परिवार में अपनी जगह ढूँढ रही है । वह अपनी अस्मिता की तलाश में है । वह अब घर में नौकरी करके आर्थिक संतुलन लानेवाली एवं बच्चों की देख भाल करनेवाली बन गयी है । घर

गृहस्थी की दौड़ में वह यह नहीं जान पायी कि उसकी जगह कहाँ है? और क्यों है? यह सोचने का समय भी उसके पास नहीं है ।

नारी सब कुछ सह लेती है और अडजस्ट करती है । लेकिन मर्द को सारी सुविधाएँ एक साथ चाहिए । पत्नी की नौकरी वह छुड़वा नहीं सकता क्योंकि उससे घर में पैसे आते हैं । आर्थिक स्थिति में सुधार आ जाता है । कहीं कुछ कमी रह गई तो वह दूसरी औरत की खोज में निकल पड़ता है, चाहे वह नौकरानी ही क्यों न हो । वह यह कभी नहीं सोचता कि नौकरी और गृहस्थी के बीच पिसकर वह इतनी थक जाती है कि हर दिन उसे देह का सुख नहीं दे पाती । औरत की मजबूरी या थकान के बारे में वह सोचता नहीं ।

४.२.२.७ अपनी वापसी

"अपनी वापसी" में चित्रा जी ने अकेलेपन से उत्पन्न पीड़ा को चित्रित करने की कोशिश की है । कहानी की नायिका शकुन प्रौढ़ावस्था की हो चुकी है । उसके पति का अच्छा खासा व्यवसाय है और वह हमेशा अपने काम में व्यस्त रहता है । उसके दो बेटे एवं एक जवान बेटी है । इस तरह शकुन का परिवार भरा-पूरा है । लेकिन इस भरे-पूरे परिवार के बीच वह अपने आप को अकेली महसूस करती है ।

इस में शकुन के मन का बारीकी के साथ देखने एवं परखने की कोशिश की गयी है । वह पारिवारिक संबंधों में आये नये बदलाव एवं नये मूल्यों के साथ एडजस्ट नहीं कर पाती । लेकिन इसके विपरीत उसका पति हरीश अपने आप को समय के अनुकूल ढाल देता है और बच्चों के साथ पिता से ज़्यादा दोस्त की तरह पेश आता है, जो आज के युग की माँग है । वह बच्चों के बीच खुल-मिल जाता है । वह अपनी बेटी रिन्नी के कैरियर को लेकर गर्व महसूस करता है । उनकी बेटी एक मॉडल है । हरीश उसे फिल्मों में अपना कैरियर बनाने केलिए प्रोत्साहित करता है । इसके विरुद्ध शकुन की आपति प्रकट करने पर वह कहता है - "किस जमाने की बातें कर रही हो? अपने जमाने में तुम्हारा कांलेज जाना क्या सबसे बडॉ दुस्साहसी कदम नहीं था ।"७० उस समय लड़की का कॉलेज जाना साहसी कदम था । लेकिन आज लड़कियों का स्कूल या कॉलेज जाना विद्रोह नहीं । क्योंकि आज की माँग और है । जमाने के अनुसार विद्रोह बदलता रहता है । कल जो विद्रोही कदम था आज वह मामूली सी बात बन जाती है ।

शकुन के मन में अपनी प्रौढ़ावस्था के बोध के कारण हीनता ग्रंथि जन्म लेती है । इसी कारण वह सोचती है - "प्रौढ़, बुढ़ापे की ओर बढ़ती, श्रीहीन मन से, शरीर के बालों में सघनाती सफेदी, जिसे रंगने की इच्छा होते हुए भी वह क्या करना है? किसी दिखाना? सोचकर टाल जाती । चेहरे की मालिश करेगी, यह निश्चय करके भी वह फिर उसी विरक्ति में डूब जाती - अब किसे उस में दिलचस्पी होगी? किसे परवाह? ।"७१ शकुन के मन में हमेशा अपने तैंतालीस की ही चिंता लगी रहती है । वह यह नहीं सोचती कि ज़िंदगी के अनेक मोड एवं अनेक रंग होते हैं । और हर मोड एवं हर पल का अपना रंग होता है । हमें तो सिर्फ उस पल को जी भर के जीना है । लेकिन वह इसे समझ नहीं पाती ।

अक्सर स्त्रियों को लगता है कि चालीस पार करने से वे बूढ़ी हो गयी हैं और वे उसी में समेटकर रहना चाहती हैं । पति की बढ़ती हुई जिम्मेदारियों के कारण शकुन का पति अपनी पत्नी को ज़्यादा समय नहीं दे पाता । इसे समझने के बजाय उसे लगता है कि हरीश उससे ऊब गया है और बच्चों को भी उसकी ज़रूरत नहीं है । वह सिर्फ सब की उपयोगिता की चीज़ थी ।

सब केलिए अपने-अपने कमरे का होना, बीमारी पर डाक्टरों को घर बुलाकर दिखाना आदि सुख सुविधाएँ शकुन को बुरा ही लगता है । पति एवं बच्चों का नौकरों पर निर्भर होने पर भी उसे अपनी उपेक्षा ही दिखाई देती है । वास्तव में यह उम्र का तक़ाज़ा एवं उसके कारण उत्पन्न भ्रम है और कुछ नहीं । लेकिन इस बात का एहसास उसे तब होता है जब हरीश एवं शकुन का दोस्त मेजर अपनी पत्नी के बारे में उस से क़हता है ।

शकुन जान लेती है कि मेजर जिन बातों को लेकर अपनी पत्नी से परेशान है, ये सब बातें उस में भी मौजूद हैं । अकेले में वह अपनी पत्नी सुनीता के बारे में शकुन से कहता है - "पता नहीं, कैसे पहलेवाली सुनीता अब संशय, विरक्ति, उपेक्षा और स्वार्थ की प्रतिमूर्ति बन गयी । बहुत निकालने की कोशिश करता हूँ वह अपने खोल से बाहर आना ही नहीं चाहती। ....सोचती है कि उसके जीने के दिन चूक गए ....उसने अपने चारों ओर जड़ता की दीवार खड़ी कर ली है, मैं इस जड़ता से ऊब चुका हूँ ।"७२ मेजर की पत्नी सुनीता ने अपने आप को एक ऐसे खोल में बंद कर दिया है, जिससे बाहर आना उसकेलिए मुश्किल हो गया है । वह उससे बाहर आना नहीं चाहती । शकुन की तरह मेजर की पत्नी सुनीता भी अपनी प्रौढ़ावस्था को लेकर परेशान है । यह सुनीता एवं शकुन की ही नहीं बल्कि आम नारी की भी स्थिति है ।

मेजर की बातें सुनने के बाद वह अपने आप को परखने की कोशिश करती है । वह अपने को संभालती है । अभी तक अपने परिवार में वह अपनी अस्मिता को लेकर परेशान थी । उसे लगता था कि परिवार में उसका कोई पहचान नहीं है । लेकिन अब वह समझने लगी हैं कि यह सब उसका भ्रम था । वह अपनी हार मानने केलिए तैयार नहीं है । पति एवं बच्चों के बीच अपनी अस्मिता को ढूंढ रही थी । लेकिन अब वह अपनी अस्मिता को पहचानने लगी है तो वह ज़रूर उसे कायम रखने की कोशिश करेगी ।

आधुनिक ज़माना माँ-बाप एवं बच्चों के बीच दोस्ती का संबंध रखने की माँग करता है । हरीश आज के युग की माँग के अनुसार बच्चों के साथ खुल-मिल गया है । उसके अनुसार "बच्चे बड़े हो गये हैं । उनसे बराबरी पर मिले, बोले, बैठे, बतियाए ।"७३ बच्चों के साथ पति की दोस्ती उसे पसंद नहीं । पति के प्रति रूखे व्यवहार का एक मनोवैज्ञानिक कारण भी है । अपनी जवान बेटी के साथ पति का व्यवहार उसे अच्छा नहीं लगता । बेटी की मैक्सी के बारे में जब हरीश प्रशंसा करता है तो उसे लगता है कि हरीश को उसकी साड़ी नज़र नहीं आई । बेटी के ड्रस एवं सौन्दर्य की प्रशंसा उसे असंस्कारी लगता है । लेकिन जब बेटी माँ की सुंदरता का वर्णन करती है - "अंकल मामा को देखेँगे तो बस स्तब्ध देखते ही रह जाएंगे । ....मैं और पापा तो मामा को तैयार देख बेहोश होते-होते बचे । सच कहूँ, अंकल मुझे तो मम्मी से जलन हो रही ।"७४ यह सुनकर वह लजाती गयी । आज उसे बेटी रिन्नी की बातों में अन्य दिनों के जैसा बेहयापन नहीं लगा । क्योंकि आज तारीफ बेटी की नहीं उसकी हो रही है ।

शकुन की परेशानी की एक ओर वजह यह है कि चालीस पार करने के बाद स्त्रियों को लगता है कि वे बूढ़ी हो चुकी है और उनके पति तो अब भी जवान है । उन्हें ये भी लगता है कि सेक्स के मामले में वे अपने पति को खुश नहीं रख सकती है । शकुन के न बोलने के कारण उसका पति कहता है कि वह उसकी चुप्पी से ऊब गया है तो शकुन सोचती है - "आ गये न अपनी असली औकात पर ! ऊब तो होगी ही । अब पहले जैसा सुख देने का सामर्थ्य जो नहीं रही उसमें ।"७५ शकुन के मन में तरह-तरह के वहम है । वह हमेशा अपने में खोयी रहती है । बातें करने से ही मन की शंकाएँ दूर होगी । लेकिन वह बातें करने केलिए तैयार नहीं है । वह अपनी दुनिया में अपनी गलतफहमी को लेकर जीती है । अगर उसकी मुलाक़ात मेजर के हुई नहीं होती और मेजर ने अपनी पत्नी के बारे में उससे नहीं कहा होता तो वह अपने लिए ही नहीं दूसरों केलिए भी बोझ बन जाती ।

४.२.२.८ ताशमहल

"ताशमहल" की नायिका शोभना ने निशीथ के साथ दूसरी शादी की । निशीथ पहले ही शोभना को चाहता था । लेकिन जब उसने दिवाकर से शादी की तो निशीथ ने अपनी भावनाओं को दबा दिया । जब शोभना दिवाकर से अलग होकर अपने बेटे बच्चू के साथ अकेली रहने लगी, तब निशीथ ने शोभना से शादी करने का आग्रह प्रकट किया । लेकिन वह शादी केलिए तैयार नहीं थी । शोभना उसके एवं बच्चे के बीच तीसरे को नहीं चाहती थी । निशीथ के ज़िद के आगे उसने सिर झुकाया । उसने शादी केलिए निशीथ के सामने एक शर्त रखी कि बच्चू के अलावा वह किसी दूसरे बच्चे को चाहूँगी नहीं । निशीथ ने शर्त मंजूर की ।

जब वह गर्भवती हुई तो वह गर्भपात करवाना चाहती थी और इसकेलिए निशीथ के साथ अस्पताल भी गयी । लेकिन निशीथ के बातों से पिघल कर वह गर्भपात किए बिना घर वापस आ गयी । गर्भपात न करने केलिए निशीथ ने बहुत से तर्क प्रस्तुत किए । उसका तर्क था - "क्या हम अपनी मान्यताओं को बच्चू के ऊपर जबरन थोपकर बच्चू के संग ज़्यादती नहीं कर रहे हैं? बड़े होकर उसे अकेलापन अनुभव हो सकता है । बड़े होकर क्या, अभी नहीं लगता होगा? एक और बच्चे के आ जाने से बच्चू कितना खुश होगा । अगर कहीं बहिन हुई तो इस घर में लड़की की कमी भी पूरी हो जाएगी ।"७६ शोभना को भी लगा कि बच्चू केलिए एक बहन या भाई की ज़रूरत है । निशीथ जो कह रहा है वह बिलकुल ठीक है । पुरुष अच्छी तरह जानता है कि किस तरह वह अपनी बातों में स्त्री को फँसा सकता है । निशीथ ने भी वही किया । अपनी मीठी बातों से शोभना को विश्वास दिला दिया कि निशीथ बच्चू केलिए एक अच्छा पिता बन सकेगा ।

शोभना को लगा कि स्वयं निशीथ पिता बनना चाहता है । उसने सोचा - "संभवत: स्वयं पिता बन कर निशीथ बच्चू केलिए अधिक संवेदनशील और उदार पिता साबित हो ! शायद आनेवाला बच्चा उन तीनों को अधिक सुदृढ़ता से जोड़ने वाला सेतु सिद्ध हो ।"७७ उसने अपने रिश्ते को और मजबूत बनाने केलिए दूसरे बच्चे को जन्म देने का निश्चय किया । लेकिन बच्चा होने के बाद निशीथ का स्वभाव बिलकुल बदल गया । वह संवेदनशील पिता बना सिर्फ दूसरे बेटे रोनु केलिए । बचचू के साथ उसका व्यवहार और सख्त होता चला गया ।

शोभना के साथ निशीथ की शादी से उसकी माँ रूठी हुई थी । लेकिन जब रोनु का जन्म हुआ तो माँ उनके साथ रहने केलिए आ गयी । जब से माँ आयी माँ ने रोनु को क्षण भर में छोड़ने नहीं दिया । माँ यह भी नहीं चाहती कि शोभना नौकरी करें । लेकिन शोभना नौकरी छोड़ने केलिए तैयार नहीं थी ।

दो हफ्तों से बच्चू बीमार है । उसका बुखार चढ़-उतर रहा था । जब बुखार टाइफाइड सिद्ध हुआ तो डाक्टर ने बच्चू को नर्सिंग्होम में दाखिल करवाने को कहा । कार्यालय में शोभना की कार्यशाला शुरू हो रही थी । पिछले तीन महीने से वह इस कार्यशाला की योजना को कार्यान्वित करने केलिए मेहनत कर रही है । इसलिए उसका कार्यालय जाना ज़रूरी था । वह जानती है कि निशीथ की पूरी कैजुयल बकाया बाकी है । लेकिन उसने निशीथ से कुछ भी नहीं कहा ।

शोभना को तो कार्यालय जाना था इसलिए उसने माँ को बच्चू की दवाइयों की खुराक समझायी । बच्चू की उल्टी के बारे में सुनते ही माँ के चेहरे पर घृणा का भाव स्पष्ट दिखायी देने लगा । लेकिन रोणु की उल्टी-टट्टी साफ करते वक्त शोभना ने कभी भी माँ के चेहरे पर रत्ती भर घिन नहीं देखी है ।

रोणु के पैदा होने के बाद निशीथ का स्वभाव बिलकुल बदल गया । या यों कहें तो पहले जो धुंधला सा दिखाई देता था अब साफ-साफ दिखाई देने लगा । वह चाहता है कि बच्चू को हॉस्टल में भर्ती करवाएँ । इसकेलिए उसने फार्म भी मँगवा लिया । उसे लगता है कि दिवाकर उसका अतीत नहीं वर्तमान है । बच्चू में वह दिवाकर को देख रहा है । इसीलिए शोभना के साथ सोये बच्चू को उसने निर्दयता पूर्वक पलंग से पटक दिया । शोभना के पूछने पर कहता है - "....बच्चू मात्र दिवाकर का अंश ही नहीं, उसकी शक्ल में तुम प्रतिपल अपने भीतर दिवाकर को ही जी रही हो ! दिवाकर तुम्हारे अतीत नहीं, अब भी वर्तमान है । ....वर्तमान....वह तुम्हारे जीवन से आज भी नहीं निकाल पाया ।"७८ यह निशीथ की हीनता ग्रंथि ही है कि वह उस बच्चे में दिवाकर को देखता है, शोभना को नहीं । वह बच्चू को शोभना से हटाकर सिर्फ उसका अपना एक परिवार बनाना चाहता है । उस में वह बच्चू को स्थान देना नहीं चाहता । वह बच्चू को अपना न सका । शायद पहले भी निशीथ ने उसे पराया ही समझा होगा । शोभना से अपने चाह के कारण उसने उसे बर्दाश्त किया है । अब जब उसका अपना बेटा पैदा हुआ तो वह किसी भी तरह बच्चू से छुटकारा पाना चाहता है ।

दिवाकर से अलग होकर शोभना सिर्फ अपने बच्चे केलिए ही जी रही थी । उसके सामने अपने बच्चे के भविष्य को लेकर एक लक्ष्य था । लेकिन आज उसे पता चला है कि उसके बच्चे के साथ उसके सिवा और कोई नहीं है । शोभना अच्छी तरह जानती है - "सत्य इतना-भर है कि इस घर में रोणु केलिए दादी है, पिता है, माँ है, किन्तु बच्चू केलिए सिर्फ माँ-भर है । इस घर में ही क्या संभवत: पूरे संसार में....और मैं उससे उसकी माँ छीनने का अपराध नहीं कर सकती ।"७९ वह किसी भी हालत में अपने बच्चे को छोड़ने केलिए तैयार नहीं है । इसीलिए उसने बच्चू को हॉस्टल में भर्ती करवाने की निशीथ की बात पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की ।

वह निशीथ के साथ अपने रिश्ते को भी बचाना चाहती है । इसकेलिए उसने बहुत प्रयास भी किया । लेकिन निशीथ इसे समझ नहीं पाया । पुरुष के स्वार्थता के कारण वह बच्चू को अपना न सका । वह बच्चू में हमेशा दिवाकर को देखता, शोभना को नहीं । इसीलिए शोभना उससे कहना चाहती थी - "जो व्यक्ति मेरे जीवन से निकल चुका है, उसे तुम इस अबोध बच्चे में खोज रहे हो । यह दिवाकर का अंश ज़रूर है, निशीथ, किन्तु यह मेरा भी तो अंश है ! तुम मुझे क्यों नहीं खोज सके बच्चू में और उसे क्यों नहीं अपना सके ।" ८० लेकिन वह कह न सकी और चुप रही । उसे मालूम है कि निशीथ से इसके बारे में बातें करने से कोई फायदा नहीं । जहाँ तक शोभना ने उसे समझ लिया है, किसी भी हालत पर वह बच्चू को अपना नहीं सकेगा ।

शोभना अपने अस्तित्व को खोना नहीं चाहती । वह एक साथ घर एवं दफ्तर में अपनी पहचान ढूँढ रही है । उसका तबातला शिमला में हो गया था । लेकिन वह शिमला जाना नहीं चाहती थी । क्योंकि यहाँ दिल्ली में नौकरी होने के कारण निशिद उसके साथ शिमला नहीं जा सकता था । इसलिए उसने तबादला रद्द करने केलिए निर्देशक के नाम दो खत लिखे । लेकिन कोई असर नहीं हुआ । कार्यालय के गुप्ता जी के कहने के अनुसार प्रतिवाद में वह तीसरा विरोध पत्र लिखती है । लेकिन कुछ समय बाद सोच विचार करके वह शिमला जाने केलिए तैयार हो जाती है ।

इस कहानी के निशीथ के बारे में वेद प्रकाश अमिताभ की राय है -"निशीथ के मन में जो आधारहीन संशय है वस्तुत: ये आधारहीन संशय ही कहीं न कहीं शोभना के स्वावलंभी और अपने फैसले खुद करने की प्रतिक्रिया में उत्पन्न हीनता ग्रंथि की देन लगते हैं ।"८१ शिमला जाने के निश्चय के पीछे का कारण यह है कि वह बच्चू को शिमला साथ ले जा

सकती है । दिल्ली में नौकरी होने के कारण निशीथ उसके साथ शिमला नहीं जा सकता । लेखिका आशा करती है कि शिमला जाने के बाद शोभना की समस्याओं का समाधान हो ।

शोभना निशीथ से दूर चले जाना चाहती है । निशीथ स्त्री को वस्तु के रूप में देखने की पुरुष मानसिकता का उत्तम उदाहरण है । विजयश्री.के.वी. के अनुसार - "प्रस्तुत कहानी में विवाहपूर्व प्रेम, उससे उत्पन्न संतति और उस संतति के कारण निर्मित तनाव और तनाव की परिणति की अभिव्यक्ति हुई है ।"८२ दोनों के बीच का तनाव ही दोनों को एक-दूसरे से दूर कर देता है । शोभना पति को छोड़ने का निश्चय नहीं करती बल्कि वह कुछ समय तक उससे दूर रहना चाहती है ताकि निशीथ को उनके रिश्ते के बारे में सोचने का वक्त मिल जाय ।

शोभना अपनी ज़िंदगी निशीथ की हीनता ग्रंथि में निछावर करके जीना नहीं चाहती । उसे मालूम है निशीथ के मन में जो शंका है वह उसके दाम्पत्य जीवन को बर्बाद कर देगा । हर रिश्ते की बुनियाद भरोसे पर निर्भर है - चाहे वह पति-पत्नी, प्रेमी-प्रमिका, माँ-बेटे या भाई-बहन की क्यों न हो । निशीथ के मन में यह विश्वास दृढ़ हो गया है कि शोभना के मन में अब भी दिवाकर है या बच्चू में शोभना दिवाकर को देखती है । शोभना के लाख कोशिशों के बावजूद भी बच्चू को अपनाने केलिए वह तैयार नहीं है । इसलिए वह अपमान सहकर आँसू पीकर अपनी बाकी की ज़िंदगी गुज़ारना नहीं चाहती । वह तबातला लेकर शिमला जाने का साहसपूर्ण फैसला लेती है ताकि आगे की ज़िंदगी वह अपने बलबूते पर जिये ।

४.२.३ चित्रा मुद्गल की कहानियों में सामाजिक अस्मिता

आज स्त्री का सामाजिक स्वरूप पूर्णत: परिवर्तित हो चुका है । समाज ने उसे अबला नहीं सबला माना है । फिर भी समाज के नैतिक एवं परंपरागत रूढ़ियों में ज़्यादातर बदलाव नहीं आया है । शिक्षित एवं समझदार नारी ने घर एवं परिवार के साथ समाज में भी अपना स्थान ऊँचा कर दिया है । इस परिवर्तित स्थिति में स्थूल रूप से देखने पर नारी पुरुष से कही कम नहीं दिखाई देती । लेकिन सूक्ष्म रूप से देखने पर पता चलता है कि भीतर से वह आज भी पितृसत्तात्मक समाज के पुरुष का गुलाम ही है । स्वावलंबित होने पर भी वह अपने लिए पुरुष का साथ एवं सहारे की ज़रूरत को महसूस करती है ।

वह समाज में केवल पारिवारिक संबंध को लेकर नहीं आई है, बल्कि अपनी स्वतंत्र सत्ता को लेकर आई है । इसलिए वैयक्तिक एवं पारिवारिक अस्मिता की तरह सामाजिक अस्तित्व एवं अस्मिता को बनाये रखना उसके लिए बहुत ज़रूरी है ।

नारी ने अपनी अस्मिता की खोज विवाह पूर्व संबंधों में भी की है । पुरुष की परंपरागत दृष्टि और नारी की बदली दृष्टिकोण ने समाज के नैतिक मूल्य को बदलने की ओर ज़ोर दिया है ।

४.२.३.१ गिल्टी रोज़ेस

गिल्टी रोज़ेस कहानी में चित्रा जी ने आजीवन कारावास प्राप्त दो महिलाओं की दु:ख-पूर्ण कहानी बतायी है । लेखिका अपने तीन परिचित महिलाओं के साथ जेल में जाती है ताकि किसी आजीवन कारावास या मृत्युदंड प्राप्त महिला बंदिनी से मिले । वे जानना चाहती हैं कि ये महिलाएँ किन परिस्थितियों में वहाँ पहुँच गयी थी । नागपुर के केन्द्रीय कारागार के अधीक्षक चौधरी साहब की सहायता से जेल में उनकी मुलाक़ात दु:खना एवं गुनाबाई नामक दो कैदियों से होती है, जो आजीवन कारावास का दंड भुगत रही है ।

इस कहानी में चित्रा जी ने समाज एवं परिवार से पीड़ित एवं शोषित दो नारियों की जीवन-गाथा का चित्रण किया है । उसमें पहली है दु:खना । उसने अपने सौत की पाँच औलादों में से बचे इकलौते बेटे की हत्या की थी । उसके पति ने पहली बीवी को छोड़कर उसके साथ शादी की थी । लेकिन अब पहली बीवी लौटकर आयी है और उसके साथ रहने लगी है । सौत का जवान बेटा दु:खना के साथ बद्सलुखी से पेश आता है । उसने उसे बहुत समझाया कि वह उसकी माँ समान है । लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । उसने दु:खना के खिलाफ पति का कान भर दिया । विवश होकर अपने साथ बत्तमीज़ी करनेवाले पति के जवान बेटे पर उसने चुरा भोंक दिया ।

पुलिस के सामने दु:खना ने ज़ुर्म कबूल किया । उसके पति ने पुलिसवालों के सामने यह कहकर उसकी पिटायी की कि उसने उसका वंश-नाश कर दिया । अब दो साल की सज़ा बाकी हैं । लेकिन दु:खना वापस अपना गाँव जाना नहीं चाहती । उसका पति उसे बदचलन मानता है । उसे लगता है कि बेटे के मुँह बंद करने केलिए ही उसने उसे मारा था । इसलिए वह दु:खना से बदला लेना चाहता है ।

चौधरी साहब ने उसे सांत्वना दी कि सज़ा खतम होने के बाद उसे कहीं नौकरी पर लगा देगा । लेखिका ने उसे अपनी एवं समाज-सेविका शालिनी ताई का पता लिखकर दिया । दु:खना की दु:खपूर्ण कहानी सुनने के बाद लेखिका अपने आप से पूछती है - "विकल्पहीनता की स्थिति में आत्मरक्षा केलिए उठाया गया कदम क्या उतना ही संगीन जुर्म है, जितना स्त्री के साथ किया गया बलात्कार? ।"८३ दु:खना ने अपने मान की रक्षा केलिए ही ऐसा किया था । अगर वह चाहती तो पति के जवान बेटे के साथ संबंध रख सकती थी । लेकिन यह उसके आत्मसम्मान के खिलाफ था ।

स्त्री के साथ होने वाले अत्याचार का दो स्तर होते हैं - एक मानसिक और दूसरा शारीरिक । शरीर के साथ हुए अत्याचार का दर्द जब उसके मन को चीर डालता है, तो वह कुछ भी कर बैठती है । धोने से, नहाने से या पट्टी बांधने से शरीर का दर्द या गंदगी शायद कम होगी । लेकिन मन पर लगी चोट पर मरहम लगाना मुश्किल है । शायद समय के साथ उसका दर्द भी कम होगा ।

दु:खना को अपने साथ हुई ज़बरदस्ती को पहले ही दिन उजागर करने का साहस दिखाना था । लेकिन ऐसा नहीं हुआ । हमारे भारतीय समाज की स्त्रियाँ इसकेलिए हिम्मत जुटा नहीं पाती या लोक मर्यादा के खातिर चुप रहती है । अपने परिवार के खातिर वह सब कुछ सह लेती है । लेकिन बाद में सब कुछ उसके पहुँच के बाहर हो जाता है ।

अपने चारों ओर हम दु:खना जैसे कई स्त्रियों को देख सकते हैं, जो अपने परिवार में पिड़ित एवं शोषित है । घर-परिवार, बच्चों एवं स्त्रियों को सुरक्षा प्रदान करता है । लेकिन आजकल वहीं पर उनके साथ बद्सलूकियाँ होती रहती हैं । आये दिन अखबारों में खबर आती रहती है कि स्त्रियाँ घर के चार दीवार के अंदर भी असुरक्षित है । घरवालों के विरुद्ध जाने की हिम्मत स्त्रियों में नहीं होता है । इसलिए उनके साथ शारीरिक शोषण घर के अंदर ही ज़्यादा होता है । समाज सोचता है कि जो कुछ भी अपने चारों ओर हो रहा है, वह उनकी अपनी बात है । इस से हमारा क्या लेना-देना ।

इसके बाद उन तीनों की मुलाक़ात चौधरी साहब की अनुपस्थिति में गुनाबाई से होती है । वह आजीवन कारावास प्राप्त कैदी है । उसके मृत्युदंड को संभवत: उनके स्त्री होने की वजह से आजीवन कारावास में परिवर्तित कर दिया था । गुनाबाई ने जेल में बड़े आकार के सुर्ख गुलाब उगाए है और उसे नाम दिया गया "गिल्टी रोज़ेस" । शहर में जब किसी बच्ची

का जन्मदिन होता है, माँ-बाप अपने बच्ची केलिए विशेष रूप से शुभकामना केलिए "गिल्टी रोजस" का गुलदस्ता मंगवाते हैं । गुनाबाई बड़े चाव से इस गुलदस्ते को बनाती है ।

गुनाबाई नासिक की रहनेवाली थी । उसकी तीन बेटियाँ थी । बड़ी छठे दर्जे में पढ़ रही थी । उससे छोटी जुड़वा बेटियाँ दूसरे दर्जे में पढ़ती थी । वह घरों में रसोई बना कर, चौका-बर्तन कर अपने परिवार की गुज़ारा करती थी । उसका पति पहले क्लीनर का काम करता था । लेकिन अब एकदम निठल्ला और दारुडिया हो गया है । गुनाबाई अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर आत्मनिर्भर बनाना चाहती थी । उसके पति के अड्डेबाज़ दोस्त हमेशा घर में आया करते थे । उसने इसका विरोध किया । लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, सिवाय मार-पीट के ।

एक दिन उसके पति ने उससे अपने दोस्त के मशहवरे के रूप में बड़े बेटी को "कालगेल" बनाने की बात कही । गुनाबाई ने उसका मुँह नोच कर इसका उत्तर दिया - "तू बाप है कि दल्ला, चीखल के मुँह पे जाके मूत । बोल उसको, अपनी छोकरी को ले जाके बैठा दे कोठे पे । रोटी मिलती न तेरे को? दारू पीने को मिलती है न? और क्या चाहिए तेरे को? मांस पकाके खाएगा तू छोकरियों का? ।"८४ यह एक माँ की अपनी बेटियों के प्रति चिंता व्यक्त थी, जिसे बाप समझ नहीं सका । पति के मुँह से ऐसी बातें सुनकर वह ड़र गयी थी । वह अपनी बेटियों की सुरक्षा चाहती थी । लेकिन रक्षक से ही अब ड़र लगने लगा है । रक्षक भक्षक बनने के ताक में था ।

एक दिन शाम को जब वह घर लौटी तो उसने देखा कि बड़ी बेटी मुट्ठी में पचास-पचास के तीन नोट खुसे हुए चटाई पर बेहाल पड़ी है । जुड़वा बेटियों ने बताया कि बाप उनकी दीदी को टैक्सी में बैठाकर ले गया था । उस रात वह बहुत सोचती रही । एक नहीं उसकी तीन-तीन बेटियाँ है । वह कैसे इन तीनों की रक्षा करेगी, वह भी अपने बाप से । पहले उसका पति अपने चचेरे भाई रमाकान्त से डरता था । रमाकांत ने उसे डरा-थमका दिया था । लेकिन जब से रमाकान्त की मृत्यु हुई, उसकी ज़्यादतियाँ बढ़ती ही गयी है । उसने अब तक अपने पति की ज़्यादतियाँ यह सोचकर सह लिया था - "उसकी बेटियाँ पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर हो जाए तो उसकी नियति बदल जाए ।"८५ वह अपनी बेटियों को अच्छी शिक्षा देकर आत्मनिर्भर बनाना चाहती थी । क्योंकि उसे मालूम है कि शिक्षा ही नारी की स्थिति में सुधार लाकर उसे समाज में अपनी जगह दिला देगी । लेकिन अब सब कुछ खतम हो गया है । उस बेड़िये ने खून का स्वाद चख लिया है । अब वह छोड़ेगा नहीं ।

उसने मिट्टी का तेल शतरंजी पर पड़ी सो रही लड़कियों पर उड़ेल कर माचिस की तीली से उन्हें जला दिया । बाकी तेल उसके ऊपर भी डाल दिया । तीली लगते ही बच्चियाँ उनकी ओर दौड़ी । तभी जाकर वह होश में आ गयी । उसने दरवाज़ा खोला । पड़ोसियों ने उस पर पानी डाला और पानी डालकर घर को भी आग से बचा दिया । लेकिन उसे अकेले छोड़कर तीनों बच्चियाँ वहाँ से निकल पड़ी, जहाँ किसी तरह का अत्याचार न हो । उसने कोर्ट में अपना ज़ुल्म कबुल किया । लेकिन इसका कारण नहीं बताया । उसे लगता है कि अगर वह बच्चियाँ बच भी जाती तो शायद वह उनकी दोबारा हत्या कर देती । क्योंकि उसके अनुसार यह समाज उनके रहने लायक नहीं है ।

चित्रा जी की "जब तक बिमलाऐं है" कहानी की बिमला की बेटी के साथ भी बलात्कार हुआ था । बिमला हारने केलिए तैयार नहीं थी । वह परिस्थितियों से, समाज से लड़ती है और अपनी बेटी को लेकर किसी दूसरे शहर में आकर जीने की कोशिश करती है और वह उस में सफल भी होती है । लेकिन "गिल्टी रोजस" की गुनाबाई में यह हिम्मत नहीं है कि वह अपनी बेटियों की रक्षा कर सकें । इसका कारण शायद यह है कि उसे अपने पति से लड़ना था । वह तो पहले से ही अपने पति के अत्याचार से पीड़ित थी । उसे मालूम था कि पति के समान क्रूर गिलड़ों के पंजों से अपने मासूम बेटियों की रक्षा करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है । अकेली औरत लड़ें तो किन-किन से लड़ें ।

इसमें चित्रा जी ने समाज के निम्न वर्ग की स्त्री का चित्रण किया है । लेकिन शिक्षित एवं संस्कृत कहलाने वाले मध्य वर्ग के घर एवं परिवार की स्थिति भी ऐसी ही है । घर के अंदर एवं बाहर स्त्री के साथ अत्याचार होता रहता है । घर के अंदर बेटियों के साथ होने वाले अत्याचारों के बारे में जब माँ को पता चलता है तब तक बहुत देर हुई होती है । इसका कारण हमारा सामाजिक मूल्य-शोषण है । अपनी बेटी को लेकर हर माँ चिंतित है । उसे मालूम नहीं है कि वह कैसे अपनी बेटी की रक्षा इन सामाजिक विकृतियों से करें । ज़रूरी है लड़कियों को अनचाहे स्पर्श एवं दृष्टि से अवगत कराना । साथ ही साथ अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज़ उठाने केलिए भी अवगत कराने की ज़रूरत, न कि सब कुछ चुपचाप सह लें ।

४.२.३.२ जब तक बिमलाएँ हैं

"जब तक बिमलाएँ है" एक मामूली संघर्षरत औरत की कहानी है । यह औरत मामूली होकर भी अपने दुश्मनों को पछाड़ने वाले सैनिकों से अधिक बहादुर है । उसने अपने मासूम बच्ची के साथ हुए अन्याय के खिलाफ लड़ने की हिम्मत दिखायी है ।

बिमला इस कहानी की नायिका है । उसकी बे-सहारा विधवा माँ ने गमकु नामक आदमी के साथ उसकी शादी करवायी । शादी के एक साल के अंदर ही माँ चल बसी । उसका पति रिक्शा चलाता था । जो भी पैसा रिक्शा चलाकर मिलता है उससे किराया देने के बाद देशी शराब खरीदने पर जो भी बचता है वह बिमला के हाथ में थमा देता । बिमला ने पहले से ही उससे हिसाब-किताब करना छोड़ दिया था । क्योंकि हिसाब पूछने से दोनों के बीच जंग शुरू होती थी । उसने अपने पति को पटरी पर लाने की बहुत कोशिश की । लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ ।

वह खुद काम करके गृहस्थी चलाती है । वह मौसम के अनुसार अपना रोज़गार बदलती है । बारिश में भुट्टा भूनकर बेचती, तो कभी साग-सब्जियाँ टोकरी में लेकर बेचती ।

एक दिन रात को गली के पाखाने में गयी उसकी बेटी सुरसती बहुत देर बाद भी वापस नहीं आयी । वहाँ औरत और मर्दों के पाखाने साथ-साथ ही बनाये हैं । बिमला बेटी को ढूंढकर वहाँ गयी । लेकिन उसने वहाँ बेटी को नहीं देखा । पानी का डिब्बा जो वह लेकर गयी थी वहाँ पडा हुआ था ।

मुहल्लेवालों के साथ मिलकर वह बेटी को ढूँढने लगी । सुरसती बस्ती के पास के घने जंगल में अधमरी स्थिति में पायी गयी । बच्ची के साथ अनर्थ (बलात्कार) हुआ था । उसने कहा कि वह बच्ची को लेकर सीधे पुलिस स्टेशन चलेगी । सभी लोगों ने उसे वहाँ जाने से मना किया । उन्होंने बच्ची को घर ले चलने की सलाह दी । लेकिन बिमला माननेवाली नहीं थी । उसने निश्चय किया कि वह उस कुकर्मी को हथकड़ियाँ लगवाएगी ।

पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करा दी और जाँच केलिए बच्ची को सरकारी अस्पताल में भेजा । बेटी को पाँच बोतल ग्लूकोज चढ़ाया गया । पाँच टीके लगावाए । तभी जाकर उसको चेत आया । लेकिन मानसिक आघात के कारण वह बोल नहीं सकती थी । तीन दिन बाद तो उसकी आवाज़ लौट आयी । बच्ची को लेकर जब वह वापस घर आयी तो उसके पति ने उसका जीना हराम कर दिया । उसके अनुसार बिमला ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करके उसे

बिरादरी में मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा है । इस हादसे के बाद उसका पति कहीं चला गया । बाद में पता चला कि वह उत्तर काशी में रहता है । उस दिन से बिमला ने तय किया कि वह उसके नाम पर पहनी चूड़ियाँ तोड़कर बाकी की ज़िंदगी विधवा के रूप में जिएगी । लेकिन बच्चों के खातिर उसने वह भी नहीं किया । उसका विश्वास है - "खनकती चूड़ियाँ छोरा-छोरी को भरमाए रहती हैं कि उनका बापू कहीं है और कभी उनकी भेंट-मुलाक़ात होगी ही ।"८६ वह मन से विधवा हो चुकी थी । जो पुरुष पति या पिता होने का फर्ज निभा नहीं सकता उसेके रहने या न रहने से क्या फर्क पड़ता है । उसने अपनी सुहाग की निशानी बच्चों केलिए ही पहनी है ।

बिमला ने अपने आप से यह वादा किया था कि वह अपने बच्ची के साथ बत्तमीज़ी करनेवाले को कभी नहीं छोड़ूँगी । इसीलिए वह कहती है - " हल्दी-चुना से ऐसे गहरे घाव नहीं भरते । टांके डलवाने न ले जाती तो क्या मासूम चोरी का जीवन बरबाद करती? कोरट-कचहरी के इर से बच्ची के संग जबरई करनेवाले को छुट्टा घूमने को छोड़ देती ! न सूली चढ़वाया रक्षस को तो वह अपनी माई की जायी नहीं । उसे नहीं लड़ना तो न लड़े । वह अकेली काफी है ।"८७ बिमला उस बदमाश को माफ करनेवाली नहीं है । किसी भी हालत पर वह उसे दंड दिलवाकर ही छोड़ेगी । यह एक माँ का फर्स है । बिमला को इस बात पर खुशी है कि उसने उस राक्षस को देर से ही सही पुलिस से पकड़वाया । उसके पति ने उसका साथ नहीं दिया लेकिन कोई बात नहीं उसके अनुसार वही अकेली काफी है । उसमें परिस्थितियों से लड़ने की ताकत है ।

उसने अपनी बच्ची के मन के घाव भरने केलिए जगह बदलने का निश्चय किया । इसकेलिए उसने दूर के रिश्ते की एक परिचिता की सहायता ली और वह लेखिका के घर मयूर विहार के पास के चिल्ला गाँव में आकर बस गयी ।

लेखिका कहती है कि बिमला से मिलने से उन्हें नयी शक्ति और स्फूर्ति मिल जाती है । चित्रा जी के अनुसार "समाज में जब तक बिमलाऐं हैं, औरत की अस्मिता अपने अधिकार से वंचित नहीं रह सकती, न कोई उसे वंचित कर सकता है ।"८८ हमारे समाज में बिमला जैसी स्त्रियों की ज़रूरत है । स्त्री को अपने अधिकार के बारे में सतर्क रहना चाहिए । उसके लिए और कोई लड़ने वाला नहीं है । उसे स्वयं अपने अधिकार के लिए आवाज़ उठानी है और लड़ना भी है ।

जहाँ एक और "प्रेतयोनि" की अनीता अपनी अस्मिता केलिए परिवार से लड़ रही है तो "जब तक बिमलाऐं है" की बिमला अपनी अस्मिता को बनाए रखती है सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि अपनी बच्ची केलिए भी । अपनी बच्ची के साथ हुए नाइनसाफी की खिलाफ लड़ने की जो हिम्मत बिमला ने दिखायी है उसकेलिए लेखिका बिमला से "उत्तर प्रदेशीय महिला मंच" की ओर से स्त्री-चेतना केलिए सम्मानित कराने की बात करती है । बिमला इससे साफ इन्कार करती है और कहती है - "हम को तो यही लगे कि ठीक यही ठहरा कि छोटी की इस बाबत याददाश ही कमजोर पड़ जाए । भूल जाए, जो हुआ । आम ही बोलो, तमगा पहनूँगी बहदुरी का तो तमगा छोटी को याद नहीं दिलाता रहेगा कि माँ ने तमगा काहे पहना था? ।"८९ बच्चों के साथ इस तरह का अनर्थ होता है तो उनके मन से ये बातें जल्दी नहीं निकल जाएगी । बिमला को प्राप्त सम्मान हमेशा उसकी बेटी को उसके साथ हुए हादसे की याद दिला देगी । वह अपनी जगह छोड़कर इसलिए आयी थी ताकि उसकी बेटी सब कुछ बुलाकर ज़िंदगी में आगे बढ़ सके ।

घनंजयकुमार के अनुसार "पति और समाज की उपेक्षा के बीच पूरी जीवटता के साथ अपनी आन और इज्ज़त को संघर्षरत बिमला की यह कहानी सचमुच एक नजीर है पुरुष-वर्चस्व वादी समाज के ठेकेदारों केलिए और उनके लिए जो इस तरह के अपराधों को मौन होकर सहन कर जाते हैं ।"९० बिमला को एक साथ अपने परिवार एवं समाज से लड़ना है । फिर भी उसने हिम्मत नहीं छोड़ी । उसने अपराधी को कानून के सामने लाकर खडॉ कर दिया । लेकिन सब में यह ताकत नहीं होती । घनंजय कुमार के अनुसार बिमला की तरह सब को हिम्मत के साथ काम करना है । अपने आंखों के सामने जब अन्याय होता दिखाई देता है तो उसके खिलाफ आवाज़ उठाने की हिम्मत दिखानी चाहिए । बेजुबान होकर जुल्म सहना जुल्म को बढ़ावा देने के समान है ।

आजकल दिल्ली एवं भारत के अन्य प्रान्तों में लड़कियों के साथ हुए अत्याचार की खबर आती रहती है । उनके शरीर पर हुए घाव तो शायद कुछ दिनों में भर जाएगे, लेकिन उनके मासूम मन में जो घाव होता है, वह इतना गहरा होता है कि उसे भूल जाना बहुत मुश्किल है । हमेशा शरीर पर हुए घाव का ही इलाज होता रहता है । मन की ओर कोई ध्यान नहीं देता । कुछ महीने पहले उत्तर प्रदेश के एक बारह साल के बच्ची ने बलात्कार के कारण आत्महत्या करने की कोशिश की । समय पर उसे अस्पताल में पहुँचा दिया गया और वह बच गयी । उस बच्ची ने अस्पताल में रहते समय एक बार फिर आत्महत्या करने की

कोशिश की । उसके मन में हुए घाव की गहराई का अंदाज़ा हम नहीं लगा सकते । जब वह उस अत्याचार को भूलने की कोशिश करेगी उसके मन में उसकी याद उतनी ही साफ होती है । इसीलिए बिमला अपने बेटी के मन से उस खोफ को दूर भगाने की कोशिश करती है ।

बिमला जैसी स्त्री अपने साहस और धैर्य से समाज को बदलने की कोशिश करती है । उस में तो वह सक्षम भी है । सम्मानित किए जानेवाले समस्त स्त्री और पुरुष वर्ग केलिए बिमला का कथन एक मूल्य बोध की स्थापना करता है ।

शिक्षित मध्य वर्ग के होते हुए भी "प्रेतयोनी" कहानी की अनीता की माँ एवं परिवार वालों को समाज से डर था । इसीलिए वे अनीता के साथ हुए अन्याय को दबा देना चाहते थे । लेकिन अशिक्षित निम्न वर्ग की बिमला चाहती थी कि वह अन्यायी पकड़ा जाय ताकि वह ओर किसी के साथ ऐसा कुकर्म न कर सके ।

४.२.३.३ केंचुल

"केंचुल" कहानी की कमला अपना परिवार चलाने केलिए दारू का धंधा करती है । उसका पति निकम्मा है । उसकी बड़ी बेटी सरना को वह बानी की दुकान में शराब बनाने केलिए ज़रूरी गुड लाने केलिए भेजती है । लेकिन माँ के लाख कोशिश एवं पिटाई के बाद भी वह बानी के दुकान पर जाने केलिए तैयार नहीं होती । काफी पिट चुकने के बाद कमला के पूछने पर वह कारण बताती है - "मांगता वो कर । पर मैं न जाने कि माल लाने । गंदा-गंदा बात करता वे मेरे से...बोलता....बोलता....मेरे पिशाब कु हाथ में पकड़....अठन्नी देगा तेरे को ।"९१ छोटी बच्चियों के साथ अगर कोई ऐसा व्यवहार करता है तो उन्हें इनके प्रति अवगत करना ज़रूरी है । उन्हें अनचाहे स्पर्श एवं दृष्टि के बारे में बताना है । उनसे यह भी बताना है कि अगर किसी ने उनके साथ ऐसा बर्ताव किया है तो उसे घर में आकर बताना चाहिए ।

अपनी बच्ची के साथ हुए इस व्यवहार को सुनकर गरम मिजाज वाली कमला आक्रोश में दौड़ती हुई जाती है कि उस दुकानदार के मुंह पर थूकेगी और गालियाँ देगी । लेकिन वहाँ जाकर उसका गुस्सा ठंडा हो जाता है । क्योंकि वह दुकानदार के मदद से विवश है । वह उसे वक्त-बेवक्त सामान उदार देकर उसका मदद करता है । यही नहीं वह सोचती है - "किसके बूते पर लड़े? अपने? एकली अपने? है ताकत लड़ने की? मजाल थी बानी की छीछालेदर किए बगैर ही लौट पड़ती? पर लौटती कैसे न ! बानी के एहसान जो छाती पर

लदे बैठे है ।"९२ उसका साथ देने वाला कोई नहीं है । उसका पति तो निकम्मा है । वह किस के बलबूते पर बानी से लड़ती । इसलिए वह एक पढ़रपुरी तंबाकू लेकर वहाँ से चुपचाप वापस आती है।

बानी से झगड़ने से बात बिगड़ भी सकती है । अगर बात बिगड़ गयी तो वह अकेली पड़ जाएगी । साथ ही साथ उसकी बेटी का नाम भी बदनाम हो जाएगा । क्योंकि भला-बुरा तो लड़की को ही सुनना पड़ता है । समाज के इस दृष्टिकोण के कारण ही माँ अपनी बेटी के साथ हुए अन्याय को दबाना चाहती है । कमला के अंदर अन्याय के विरुद्ध लड़ने की आग है । लेकिन अपने परिवेश के कारण उसने उस आग को दबाकर रखा ।

इस घटना के बाद कमला ने सरना को बानी के दुकान में नहीं भेजा । वह अपनी बेटी को दारू के धंधे से दूर रखना चाहती है । इसलिए बेटी के कहने पर वह उसे साग-सब्जी बेचने के काम में लगा देती है । गरीबी एवं अभाव में ज़िंदा रहने का संघर्ष ज़्यादातर स्त्रियों में ही होती है । इसीलिए वह हर हाल में संघर्ष करके अपना काम करती है, और अपने परिवार के प्रति ज़िम्मेदारी भी निभाती है।

उसकी बेटी का कल्पू नामक युवक से प्रेम होता है । कमला को डर है कि उसकी बेटी भी उसी राह पर चल रही है, जिस पर कभी वह चली थी और उसने धोखा भी खाया था । वह नंदू नामक एक भैया से प्यार करती थी और शादी भी करना चाहती थी । लेकिन अपने पिताजी की ड़र से उसने विष्णो से शादी की । शादी के बाद भी नंदू की मीठी बातों से प्रभावित होकर उसने उसके साथ संबंध ज़ारी रखा । सिर्फ कमला जानती है कि सरना नंदू की बेटी है । नंदू की मृत्यु के बाद उसे पता चलता है कि नंदू ने उसे धोखा दिया था । वह शादीशुदा था और उसके बच्चे भी थे, जो गाँव में रहते हैं । नंदू से उसने सिर्फ प्यार किया था, और नंदू ने उसका इस्तेमाल किया । वह नहीं चाहती कि उसके साथ जो हुआ वह अपनी बेटी के साथ हो । इसलिए हर हाल में वह कल्पू के साथ सरना के संबंध का विरोध करती है ।

वह बेटी को ताने सुनाती है, मारती है । लेकिन सरना पीछे हटनेवाली नहीं थी । सरना अपने प्रेमी कल्पू के साथ शादी करने का दृड निश्चय करती है । वह किसी भी हाल में अपने प्यार को छोड़ने केलिए तैयार नहीं है । इसीलिए माँ के इन्कार करने एवं मार-पीठ के बाद भी अपने निशय पर अडिग रहती है और माँ से कहती है - "मैं भोड़ी-कटका नई

करेगी....तेरे सरखा भट्ठी नई सुलगाएगी....तेरे सरखा नौरा(दूल्हा) नई मांगता, मेरे को.... ।"९३ शादी को लेकर नारी की परंपरागत दृष्टिकोण बदल गया है । वह शादी अपनी मर्ज़ी से करना चाहती है । अंत में कमला अपने विश्वास का, परंपरा का, ज़िद का, डर का केंचुल उतारने की कोशिश करती है । वह सरना से शादी करने के बारे में कल्पू से कहती है - "कब से क्या मतलब? बनाना है तो जल्दी बना । ठेरा काय को? हां पेसा नई होएगा मेरे से ले, पैन जल्दी कर शादी । देर नहीं मांगता भरोसा नई तेरा....कभी मुलुक को चला गया तो वापस नई आएगा तेरा....बाइया लोगों का एतबार नई मेरे को ।"९४ जितनी जल्दी हो सके वह अपनी बेटी की शादी कल्पू के साथ कराना चाहती है । अनुभव ही सब से बडा गुरु होता है । उसी अनुभव के कारण वह पुरुष पर विश्वास करना नहीं चाहती । उसने अपनी चारों तरफ स्त्री का वस्तु की तरह इस्तेमाल होता ही देखा है । यही नहीं उसके लिए अपनी बेटी की सुरक्षा सब से बड़ी बात है । इसीलिए वह जितनी जल्दी हो सके अपनी बेटी को किसी सुरक्षित हाथों में सौपना चाहती है ।

इस कहानी में चित्रा जी ने कमला का विद्रोही रूप ज़रूर प्रस्तुत किया है । लेकिन उसका विद्रोह अपने विचारों से है और अपने अंदर है । डॉ. गोरक्ष थोरात के अनुसार "केंचुल की कमला जो अपने भीतर कहीं विद्रोह की आग दबाए बैठी है, लड़ना चाहती है समाज के उस तबके से जो कहीं विवशता का नाजायस फायदा उठाना अपना हक समझ बैठा है ।"९५ यह स्त्री की त्रासदी है कि उसे अपने अंदर की आग को दबाकर रखना पड़ता है । वह पुरुष के समान वक्त-बेवक्त अपने अंदर की आग की लावा को बाहर नहीं निकाल सकती । अगर ऐसा वह करती तो वह आग समाज के उन पक्षों को उजागर करेगा जिन्हें देखने से हमें खिन्न आती है । तो सोच लीजिए उन पर जीने केलिए विवश स्त्री की स्थिति कैसी होगी ।

४.२.३.४ बावजूद इसके

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने से स्त्री की समस्याओं का समाधान नहीं होता । आत्मनिर्भर होने केलिए आर्थिक स्वावलंबिता के साथ-साथ वैचारिक स्वावलंबिता का होना भी ज़रूरी है । इसीलिए "बावजूद इसके" कहानी की प्रीति आर्थिक रूप से स्थिर होकर भी अपनी समस्या का समाधान नहीं ढूँढ पाती ।

प्रीति अपने पति की प्रताड़नापूर्ण व्यवहारों को सहकर कई बार समझौता कर बैठी ।

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । उसके पति गोयल का एवं उसके व्यवहार में आकाश पताल का अंतर हैं । गोयल का अहंकार, पत्नी को वस्तु की तरह इस्तेमाल करने का एकाधिकार, पार्टियों में छूट देने एवं लेने की बात, इस पर प्रीति का अड़ जाना इन सब ने मिलकर उनके बीच के रिश्ते को टूट कर बिखेर दिया । शादी के बाद वह न खुद को बदल सकी, न गोयल अपने को । गोयल की लापरवाही के कारण जब उसकी बेटी मोना की मृत्यु हुई तो बात और बिगड़ गयी । गोयल का व्यवहार इतना बर्बरता पूर्ण हो गया कि प्रीति का उसके साथ रहना दूभर हो गया । उसके देवर ने उसे अपने मायके छोड़ दिया ।

मायके में वह अपने घरवालों की परवाह न करते हुए एक फइव स्टार होटल में नौकरी करने लगती है । गोयल को प्रीति का उससे दूर रहकर नौकरी करना अच्छा नहीं लगा । वह बार-बार चिट्ठियाँ लिखने लगा कि प्रीति लौटकर उसके पास आए । गोयल पितृसत्तात्मक समाज के पुरुष का उत्तम उदाहरण है । वह नहीं चाहता है कि उसकी पत्नी आत्मनिर्भर होकर उसके बिना ज़िंदगी जिए । वह हमेशा पत्नी को अपने पैरों-तले कुचलकर रखना चाहता है । चित्रा जी के अनुसार "पुरुष के अहं का सब्र छोटा होता है ।"९६ इसीलिए पत्नी से अलग होकर उसकी मदद के बिना जीने से उसकी अहं को चोट पहुँचता है । उसे लगता है कि पत्नी उसके बिना जी नहीं सकती ।

प्रीति की माँ पुराने खयालात की स्त्री है । जब बेटी ने पति के बुरे व्यवहार के बारे में कहा तो उन्होंने उसे भला बुरा कहा । लेकिन जब बेटी ने कहा कि वह अब वापस अपने पति के पास लौटकर जानेवाली नहीं है, तो एकाएक उनका तेवर बदल जाता है । वह कहती है - "इतना बुरा तो नहीं है....ऐसे ऐसे जाहिल मर्दों से पाला पड़ता है....अरे, अपने बाप की पूछ, आज ज़िंदा नहीं है तो कहते भी जुबान कटती है ....एब न हो तो मर्द कैसा ! और तेरी ऐंठ क्या कम है ! कोन खाता-पीता नहीं आजकल? फिर पिए हुए आदमी के मुंह लगती क्यों है? ।"९७ माँ समाज से डरती है । शायद वह सोचती है कि ब्याही बेटी जब घर आकर बैठ गयी तो लोग क्या कहेंगे । वह यह नहीं सोचती है कि अपनी बेटी गोयल जैसे मर्द के साथ कैसे जिएगी । पुरुष में कमियाँ हो सकती है । उसे मर्द का लक्षण माना जाता है । लेकिन स्त्री में कोई कमी नहीं होनी चाहिए । उसकी माँ के अनुसार समाज में अकेली औरत का जीना मुश्किल है । यह एक हद तक सच भी है कि समाज अकेली औरत का जीना हराम कर देता है ।

लड़की जब ब्याह करके पति के घर चली जाती है तो वह मायके में सिर्फ दो दिन के मेहमान बनकर ही रह सकती है । इसीलिए लड़कियाँ ससुराल के अत्याचारों को सहने केलिए मजबूर होती है । जब बेटी दो दिन से ज़्यादा रहने लगती है तो घरवाले घबरा जाते हैं, और पूछ-ताछ शुरू होती है ।

प्रीति नौकरी करके आत्मनिर्भर बनना चाहती है । लेकिन उसकी भाभी के अनुसार प्रीति का आत्मनिर्भर होने की बात भ्रम है । भाभी कहती है - "घर से बाहर निकलकर चार अन्य लोगों का शोषण और लताड़ बर्दाश्त कर सकती हो, पर अकेली पति को सहन नहीं कर सकती! यह कैसा स्वाभिमान है? ।"९८ घरवाले उसके साथ देने के बजाय उसके खिलाफ हो जाते हैं । क्योंकि समाज तलाक-शुदा औरत को एक अलग दृष्टि से देखता है । और तो और तलाक लेकर घर में रहने वाली स्त्री घर वालों को हमेशा एक बोझ ही लगती है ।

एक प्रीति का देवर जतिन है जो उसे नए जीवन केलिए प्रेरणा एवं होसला देता है । प्रीति के भाई तक को उसकी यह बात अच्छी नहीं लगती । प्रीति का पति किसी तरह उसका पीछा छोड़ने वाला नहीं है । वह नई चाल चलकर प्रीति को नौकरी से बर्खास्त कराने केलिए द्विवेदी जी को पत्र लिखता है । द्विवेदी इसी ताक में था कि किस प्रकार प्रीति को अपने शोषण का शिकार बना सके । इसी बहाने उसे प्रीति का शोषण करने का नया उपाय मिल जाता है । तंग आकर प्रीति नौकरी छोड़ने का निश्चय करके त्यागपत्र लिखती है ।

गोयल ने तलाक के कागज़ात प्रीति के भाई के पास बिना दस्तखत के भेज दिया और साथ में एक चिट्ठी भी राखी । वह किसी भी तरह प्रीति को वापल चाहता है । उसने प्रीति के भाई पर उसकी कमाई चूसने का आरोप लगाया । यह पढ़कर भाई को बुरा लगा । वह कहता है - "कमीना आदमी है! किसी भी हद तक उतर सकता है । तुम क्या, कोई भी उसके संग निबाह नहीं सकता । मुझे बस इतना ही कहना है । निश्चिंत होकर नौकरी करो । अच्छे-अच्छे घरों की लड़कियाँ काम करती है होटलों में । एड इट्स आ वेल-पेड जाब । स्पष्ट लिख रहा हूँ उसे - तुम्हारे लौटने की बात निकाल दे दिमाग से ।"९९ जब प्रीति के साथ गोयल ने बुरा व्यवहार किया इस से उसके भाई का कोई लेना-देना नहीं था । लेकिन जब पति ने प्रीति के नौकरी करने के जिम्मेदार उसके भाई को घोषित किया, तो उसे गोयल बुरा आदमी हो गया ।

प्रीति को मायके में न माँ से, न भाई-भाभी से कभी भी हिम्मत नहीं मिली कि वह

स्वतंत्र रूप से अपना निर्णय ले सकूँ । वह परिवार में भाई एवं पति के बीच पिसती रहती है । एक ओर पति की प्रतांड़नापूर्ण व्यवहार है तो दूसरी ओर माँ, भाई एवं भाभी की बेरुखी पूर्ण बर्ताव । दोनों के बीच वह सांडविच की तरह दब गयी है । प्रीति तो भाई के काम करने के और पति के काम न करने के बीच पिसना नहीं चाहती । ज़िंदगी तो उसकी अपनी है । निर्णय भी उसी को ही लेना है । ज़िंदगी भर वह भागना नहीं चाहती । वह अपनी ज़िंदगी अपनी मर्ज़ी से जीना चाहती है ।

उसे मालूम है कि मजबूरी का फायदा उठाने वाले सब कहीं होंगे । वह द्विवेदी जैसे लोगों से भाग तो नहीं सकती । बल्कि उसे उनका मुक़ाबला करना है । वह घर, परिवार, एवं समाज से लड़कर अपने पैरों पर खड़े रहना चाहती है । इसकेलिए उसको किसी के साथ का ज़रूरत है । लेकिन सच तो यह है कि उसका साथ देने वाला कोई नहीं है । इसीलिए वह सोचती है - "कहाँ-कहाँ से भागेगी? गोयल केलिए नौकरी छोड़ दें? लौट जाए? भैया केलिए करती रहें? द्विवेदी! द्विवेदी तो हर दफ्तर के केबिन में मौजूद हो सकता है । लड़ाई खुद की है; फिर? ।"१०० प्रीति को मालूम है कि अपनी लड़ाई उसे खुद लड़नी है । अगर इस लड़ाई में वह सफल हुई तो साथ देने वाले कई होंगे । लेकिन अगर हार गयी तो उसके चारों तरफ उसकी बुराई करनेवाले ही होंगे । प्रीति अपनी ज़िंदगी किसी के हाथ में सौंपने केलिए तैयार नहीं । वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखना चाहती है । वह अपने परिवार में, समाज में, अपनी अस्मिता को कायम रखकर अपनी नई ज़िंदगी की शुरुआत करना चाहती है ।

पहले तो स्त्री पति के पैरों में अपनी ज़िंदगी मानती थी । अपने पति से अलग होकर रहने की कल्पना तक वह नहीं कर सकती थी । लेकिन आज उसके इस सोच में बदलाव आया है । वह अनचाहे रिश्तों को ढ़ोकर जीना नहीं चाहती । ज़िंदगी भर संबंधों के बोझ लेकर जीने के बदले उस संबंध को तोड़ने का साहस दिखाती है, और स्वतंत्र होकर जीना पसंद करती है । वह सिर्फ दूसरों केलिए ही नहीं अपनेलिए भी जीना चाहती है ।

४.२.३.५ चेहरे

"चेहरे" कहानी में चित्रा जी ने रेलवे स्टेशन पर भीख माँगनेवाली भिखारिनों के शोषण का चित्रण किया है । रेलवे स्टेशन के टिकट-घर के सामने भीख माँगनेवालों की भीड़ रहती है । भीड़ में लोगों की जेबें काटी जाती है और यात्रियों को परेशान किया जाता है ।

भिखारिनें आकर यात्रियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती रहती है । कोई दूसरा आकर इस बीच यात्रियों की जेब काटता है ।

एक युवक ने अपनी जेब काटने से पहले भी कई बार रेलवे के अधिकारियों को मौखिक एवं लिखित रूप में शिकायत की । साथ ही उस युवक ने एक प्रमुख स्थानीय अखबार में टिकट घरों पर भिखारियों के बढ़ते उत्पात और यात्रियों की परेशानियों के बारे में पाठकों की ओर से पत्र के रूप में लेख भी लिखा । लेकिन कोई कारवाई नहीं हुई । रेलवे अधिकारियों ने इसे सरकार की समस्या बतायी । सरकार द्वारा बनाए गए "भिखारी पकड़ो और पकड़वाओ, मुंबई शहर को स्वच्छ बनाओ"१०१ अभियान की असफलता के बारे में बताया । उनके अनुसार यात्री इस में सहयोग नहीं देते । इसलिए इसकी थोडी बहुत ज़िम्मेदारी आम जनता की भी है । क्योंकि "उन्हें अपनी भीख देने और इन भिखारियों के माध्यम से अपना परलोक सुरक्षित करने की आदत से निजात पाना होगा ।"१०२ लोगों के मन में तरह-तरह के वहम है । इस में से एक है भीख संबंधी वहम । ऐसा विश्वास है कि भीख देने से पुण्य मिलेगा और परलोक पहुँचने पर सीधे स्वर्ग सिधारेंगे । पहले लोगों के मन से इस तरह के अंधविश्वास को बाहर निकालना ज़रूरी है ।

भीख माँगना आजकल पेशा बन गया है । यह एक बहुत बड़ी सामाजिक समस्या है । इसके कारण बहुत सारे बच्चे लापता हो जाते हैं । इन भिखारियों के नेता भी होते हैं, जो बच्चों को पकड़कर भीख माँगने केलिए प्रेरित करते हैं । इसलिए भीख जैसे सामाजिक समस्या को समाज से हटाने का प्रयत्न करना चाहिए । क्योंकि इसे दूर करने से बहुत सारी अन्य समस्याओं का समाधान यों ही हो जाएगा ।

उस युवक ने अपनी जेब काटते ही स्टेशन इंचार्ज के सामने जाकर शिकायत की । लेकिन उस शिकायत का उसे घिसा-पिटा जवाब ही प्राप्त हुआ । इसी बीच एक वृद्ध सज्जन की जेब काटकर एक भिखारी का लड़का भाग गया । उसकी माँ वहाँ उस सज्जन से भीख माँग रही थी। तभी वह लड़का उसको धक्का देता हुआ बीच से निकालकर भाग गया । उत्तेजित भीड़ का नेतृत्व करते हुए उस युवक ने कहा कि वह लड़का भिखारिन का ही बच्चा है । उसने सभी भिखारियों को स्टेशन से बाहर निकाल देने की कोशिश की । लेकिन वह भिखारिन वहाँ से जाने केलिए तैयार नहीं थी । वह पूरी भीड़ को चुनौती देती हुई गरजने लगी - "तेरी मां....दम है तो लगा हाथ ! बुला बड़े बाबू को ! बुला....उखाड़ उसकी ! देखती हूँ,

कौन हटाता है मेरे को ! मैं हर रोज बैठूगी अउर इदरीच बैठूगी....ए जागा मेरी ।"१०३ वह वहाँ से हिलने तक केलिए तैयार नहीं थी । उसके स्वर में अधिकार था । उसके मुँह से गालियाँ सुनकर पूरी भीड़ के कान लाल हो गए । लेकिन युवक पीछे हटने केलिए तैयार नहीं था । उसने उसकी बाहें पकड़कर बाहर निकालने की कोशिश की । उसी वक्त चार सिपाही आए और उन्होंने उस भिखारिन को घेरने की कोशिश की । तब वह उससे कहने लगी - "दिखाई देगी मैं, दिखाई देगी....इदरिच बैठेगी....ये जगा मेरी है और काय को नई बैठेगी । वो जो बड़े बाबू बैइठते आत मध्ये (भीतर) हफ्ता लेने मेरे से हफ्ता !और ये भडुए ! (उसने सिपाहियों को दुत्कारा) कैसा पकड़ेंगे मेरे को, रात यारड़ में ले जा के..... ।"१०४ उसके इन शब्दों में नारी पर होनेवाले शोषण के खिलाफ विद्रोह मौजूद है । भीख माँगने केलिए वह जहाँ बैठी थी उस जगह बैठने केलिए उसे पैसा देना पड़ता है । इस तरह उसका आर्थिक रूप में शोषण किया जाता है । साथ में शारीरिक रूप में भी उसका शोषण किया जाता है । इन शब्दों में हमारी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध उठायी गयी आवाज़ सुनाई देती है ।

डॉ.घनश्याम दास भुतडा के अनुसार "भिखारिन का यह जो नया रूप हमारे सामने लेखिका ने रखा है, उससे स्पष्ट होता है कि दया या भीख के नाम पर आज व्यवसाय हो रहा है । व्यवस्था कुछ ऐसी भ्रष्ट हो रही है कि भिखारियों से भी हफ्ते लेने केलिए संबन्धित लोग नहीं हिचकते ।"१०५ ये लोग हमारे समाज के निम्न स्तर के हैं । यह बहुत दुःख की बात है कि आर्थिक, सामाजिक एवं संस्कृतिक रूप से पिछड़े इन लोगों का शोषण होता रहता है । भीख अब व्यवसाय बन चुका है । यह एक बहुत भयानक सामाजिक समस्या है । भिखारियों का कई तरीकों से शोषण किया जाता है । इनसे जुल्म करवाकर इनका इस्तेमाल किया जाता है । इसलिए इस सामाजिक बीमारी को समाज से उखाड़ फेंकना ज़रूरी है ।

चित्रा जी ने इस कहानी से हमारे समाज के बहुत सारे ऐसे चेहरों से नकाब उतारने की कोशिश की है, जिन्हें देखने से हमें खिन्नता आती है । भिखारिन समाज के निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है । आर्थिक, सामाजिक एवं संस्कृतिक रूप में समाज के निचले स्तर के होने पर भी उसके अंदर विद्रोह की आग है । वह समाज के चारों तरफ से शोषित है । सब उन्हें घृणा की दृष्टि से ही देखते हैं । लेकिन सुसंस्कृत कहे जानेवाले समाज के लोगों के चहरों में कितना कुछ छिपा रहता है ।

जब यह चेहरा उस युवक के सामने खुल जाता है तब वह स्तब्ध रह जाता है । रेलवे अधिकारियों एवं पुलिस की यह सच्चाई सिर्फ उसने नहीं सुनी । भिखारिन की बातें

सब ने सुनी हैं । लेकिन लोग सच्चाई एवं नैतिकता के प्रति नपुंसक हो बैठे हैं । किसी ने उसके खिलाफ प्रतिरोध व्यक्त करने की हिम्मत नहीं दिखायी । सब अपने बारे में ही सोचते हैं । लेकिन उस युवक ने निश्चय किया - "वह नहीं छोड़ेगा !सुरक्षा की लडॉई उनसे पहले इनसे लड़नी होगी....ये जो खिड़कियों के भीतर दुबके बैठे हैं "१०६। वह खिड़कियों के पीछे बैठे अधिकारियों से लड़ना चाहता है । जब वह झांककर अंदर देखता है तो उसे बाहर की " समूची भीड़ खिड़की के भीतर, मेज़ों पर झुकी हुई बैठी नज़र आई ।"१०७ अर्थात् उसे एक से नहीं पूरी व्यवस्था से लड़ना है । बाहर जितने भी लोग है, उससे ज़्यादा व्यवस्था के अंदर है । व्यवस्था के अंदर के लोगों से लड़ना आसान काम नहीं । लेकिन किसी न किसी को इसकेलिए पहला कदम उठाना ही है । इसलिए उसने निश्चय कर लिया कि वह इसके खिलाफ ज़रूर लड़ेगा ।

४.२.३.६ हस्तक्षेप

"हस्तक्षेप" विज्ञापन के क्षेत्र में काम करनेवाली दो महिलाओं की कहानी है । यह चित्रा जी की "एक ज़मीन अपनी" उपन्यास का छोटा-सा अंश है । इस में नीता आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है । उसके मन में नारीवाद को लेकर भ्रामक धारणाएँ हैं । लेकिन उसकी सहेली अंकिता नारीवाद को लेकर वास्तविक धारणा रखनेवाली है । दोनों के बीच नारी की आज़ादी को लेकर जो राय है वही इस कहानी का संक्षेप है ।

नीता एवं अंकिता सहेलियाँ हैं । नीता एक सफल मॉडल है । और अंकिता विज्ञापन के क्षेत्र में कापी-राइटर का काम करती है । नीना ने एक विज्ञापन केलिए बहुत ही कम वस्त्र पहनकर काम किया । इस से अंकिता बहुत दुःखित है । वह नीता से जानना चाहती है - "ज़रूरी है रातों रात नंबर वन का दर्जा हासिल करने केलिए वह सब करना जो एक स्त्री केलिए ही नहीं, सम्पूर्ण स्त्री-समाज केलिए अशोभनीय और लज्जा का विषय है ।"१०८ अंकिता के अनुसार इस तरह कम कपड़े पहनकर नीता को विज्ञापन में काम नहीं करना चाहिए था । क्योंकि ऐसा करने से वह अपनी ही नजरों में गिर जाएगी । मशहूर मॉडल बनने केलिए इस तरह कम कपड़ों में रहना अच्छा नहीं है । लेकिन नीता को ऐसे कपड़े पहनने में कोई संकोच नहीं लगता । नीता के अनुसार अंकिता भी उन महिला सामाजिक संगठनों की तरह है जो स्त्रियों के कपड़ों को लेकर हलचल मचाते हैं और नारे लगते हैं । वह कहती - "नारे लगानेवाली ये महिलाएँ, स्त्री की अस्मिता की चिन्ता में दुबली होती ये भगिनियाँ, घरों में अपनी हुकूमत का भ्रम पोसे रहने केलिए न जाने किन्-किन संबंधों के

मुखौटों में स्त्री को उन सामान्य मानवीय अधिकारों से भी वंचित रखने में नहीं हिचकिचातीं, जिनकी वकालत का दावा है उनका ।"१०९ नीता समाज की ऐसी औरतों की बातों को नज़र अंदाज़ करना चाहती है । वह अपनी इच्छा के अनुरूप कपड़े पहनना पसंद करती है । उसे किसी की परवाह नहीं ।

अंकिता के अनुसार नीता जिसे आधुनिक कहती है वास्तव में वह आधुनिक नहीं है । स्त्री को अपने अधीन में रखने केलिए साजिश की जाती हैं । आधुनिकता के नाम पर हर जगह स्त्री का इस्तेमाल ही हो रहा है । नीता के द्वारा आधुनिकता की जो परिभाषा दी गयी है, अंकिता के अनुसार वह परिभाषा अधिकार, आधुनिकता और स्वतन्त्रता के नाम पर पुरुषों द्वारा कई माध्यमों से स्त्री को सौंपी जा रही है । अर्थात् आधुनिकता की परिभाषा अखबारों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, फिल्मों एवं पोस्टरों के जरिये स्त्री को सौंपी जा रही है । स्त्री पुरुष के इस धोखे को बिना समझे ही उसे दोनों हाथों से स्वीकार कर रही है ।

अंकिता कला एवं अश्लीलता पर फरक करके कहती है - "वह सब अश्लील होता है, जिसे देख कर मन में अश्लील प्रक्रिया उपजे । इरादे को कलात्मकता की आड़ में छिप पाना या छिपा पाना कठिन है । अभिव्यक्ति बड़ी पारदर्शी होती है । तलछटी का रोम-रोम सतह-सा आंखों की सीमा में पसर आता है, चाहे जिनती अवधारणाएँ रचते, परोसते रहो.... ।"११० अंकिता के अनुसार कम वस्त्र पहनने से देखनेवाले के मन में अश्लील प्रक्रिया उपजता है तो वह कभी भी कला नहीं । इसलिए वह इसके खिलाफ है । कलात्मकता में लपेट कर अश्लीलता को प्रदर्शित करने से अश्लीलता कला नहीं बन पाएगी ।

चित्रा जी इसमें नारी की आज़ादी पर बल देती हैं । अंकिता स्त्री-स्वातंत्र्य को केवल देह-प्रदर्शन के रूप में नहीं देखती । स्त्री-स्वातंत्र्य में वह अपने अस्तित्व की स्थापना को प्रमुखता देती है । लेकिन उसे नारी की आज़ादी के नाम पर उसके उच्छृखलित रूप बिलकुल पसन्द नहीं है ।

४.२.३.७ नतीजा

आज नारी अपनी पहचान खुद बनाती है । धर्म, समाज की मान्यताएँ , रूढ़ि-प्रथाएँ, स्त्री-पुरुष संबंध जैसे विषयों पर वह खुद के विचार व्यक्त करती है । "नतीजा" कहानी की नायिका पूरबी दी को समाज की मान्यताओं एवं रूढ़ियों के प्रति अपना दृष्टिकोण है । वे वेश्याओं की बच्चियों को पढ़ाने की कोशिश करती हैं । इसकेलिए "होम" नामक संस्था

चलाती हैं । उनकी इस संस्था में सत्ताईस बच्चियाँ हैं । वे इन बच्चियों केलिए शिक्षा की अलग व्यवस्था नहीं चाहती । इन्हें आम बच्चों की तरह सरकार(नगरपालिका) के स्कूल में पढ़ाना चाहती हैं । इसकेलिए उन्हें काफी तकलीफें झेलनी पड़ीं । लेकिन पूरबी हार माननेवालों में से नहीं थी ।

इन बच्चियों के बीच "सोना-गछी" की अंधेरी कोटरी में "एड्स" जैसी बीमारियों से पीड़ित स्त्री की बेटी शिवानी, अपनी ही माँ के द्वारा दलाल के हाथों में बेची गयी पियासी जैसी बच्चियाँ हैं । शिवानी माँ से मिलने की ज़िद्द कर रही थी । लेकिन पूरबी दी ने मिलने नहीं दिया । वह चाहती है कि उसकी माँ अस्पताल में भर्ती हो जाए और उसका इलाज हो । इलाज से तबीयत कुछ ठीक हो जाय तभी वह शिवानी को माँ से मिलवाएगी । क्योंकि उन्हें मालूम है कि माँ से मिलकर उनकी तकलीफ देखने के बाद वह सामान्य जीवन नहीं बिता पाएगी । एक बार शिवानी ने होम से भाग जाने की कोशिश भी की ।

बहुत कोशिशों के बाद नगरपालिका के स्कूल में बच्चियों का दाखिला हुआ था । लेकिन अब प्रिंसिपल साहिबा ने रुमा को, जो होम में बच्चियों की पढ़ाई की ज़िम्मेदारी संभालती है, बुलाया है और बच्चियों की शिकायत की हैं । प्रिंसिपल ने रुमा के हाथों पूरबी दी के नाम एक खत भी भेजा है । रुमा को मालूम है -"अनुशासन बनाए रखने के नाम पर प्रिंसिपल बच्चियों को किसी बहाने स्कूल से बाहर कर सकती हैं । दाखिले के समय कम तेवर नहीं दिखाए। पूरबी दी का ही जिगरा था कि कानून और सरकार -उन्होंने दोनों को नंगा कर कटघरे में ला पटका । लिखित आदेशों के समक्ष झुकना लाचारी थी प्रिंसिपल की । पूरबी दी का हट था - बच्चियाँ सामान्य स्कूल में सा मान्य बच्चों के बीच उनके साथ ही पढ़ेंगी ।"१११ हमारा संविधान १४ साल के कम उम्रवाले बच्चों को समान शिक्षा सार्वजनिक रूप में देने की व्यवस्था करता है । लेकिन व्यावहारिक रूप में यह लागू नहीं होता । कानून में सब बच्चों को चाहे जिस किसी भी स्तर के या वर्ग के हो एक साथ पढ़ने की व्यवस्था है । आर्थिक, सामाजिक, संस्कृतिक एवं बौद्धिक स्तर के अंतर के बिना सब को एक साथ शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा है । तभी तो पूरबी दी ने होम के बच्चियों को अन्य बच्चों के साथ स्कूल में पढ़ाने की ज़िद्द की थी ।

प्रिंसिपल के खत पढ़ने के बाद पूरबी दी ने होम के कर्मचारियों की मीटिंग बुला दी । मीटिंग में खुलकर बातें हुई । बच्चियों के बारे में कुछ कर्मचारियों की शिकायत थी कि इनके पढ़ाई से ज़्यादा डान्स में दिलचस्पी है । टी.वी. पर दिखाये गए डान्स के डुमके ये लड़कियाँ

जल्दी सीख लेती है । लेकिन किताब की बातें उन्हें लाख कोशिश करने पर भी याद नहीं रहता । इसका कारण उनका वातावरण है । वे जिस महोल से आई हैं, उसका असर उनपर होता है ।

होम में केतकी दी बच्चियों की देख-रेख करती है । उनकी पूरी ज़िम्मेदारी केतकी दी को हैं । उन्हें बच्चियाँ "दीदी माँ" कहकर पुकारती है । बच्चियों के खाने पीने से लेकर दवाई देने तक सारा कम माँ की तरह वह निभा रही है । केतकी दी के चार बेटे हैं । पति के गुज़र जाने के बाद चारों बहुओं की चाकरी करके वह थक गयी थी । विधवा होने के ठीक तीसरे साल उसने बच्चों से संबंध छोड़कर होम में इन बच्चियों के साथ नया संबंध जोड़ दिया । उत्तर भारत में आज भी विधवा स्त्रियाँ बेटे-बहुओं से तिरस्कृत होने पर मथुरा वृदवान जाकर बसते हैं और अपना शेष जीवन ईश्वर को समर्पित करते हैं । लेकिन केतकी ने पूरबी के कहने के अनुसार अपना शेष जीवन इन बच्चियों को समर्पित किया ।

पूरबी दी चाहती है कि ये बच्चियाँ पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो सके ताकि अपनी माँ का रास्ता न अपना सके । इसलिए पूरबी एवं होम के कर्मचारी कोशिश करते हैं कि ये अच्छी तरह पढे । बच्चियों को लेकर पूरबी दी बहुत चिंतित हैं । उन्हें लगता है - "उनका संघर्ष व्यर्थ जाएगा? नचनियाँ बनेंगी । चेहरे लीप-पोत, माँ की भांति चौराहों पर खड़ी हो, ग्राहक फंसाएगी? रिक्शे-टंगेवालों से फंस बच्चे जानेंगी ....उफ, कुछ नहीं बदल पाएँगी वे....कुछ नहीं ! ।"११२ पूरबी दी सपने में भी नहीं चाहती कि ये बच्चियाँ अपनी माँ के रास्ते पर चले । लेकिन पढ़ाई की ओर उनकी बेरुखी देखकर उन्हें ड़र लगता है । पूरबी दी "सेक्स वर्कर" की लेबल छिपवाकर वेश्याओं का अलग समुदाय बनाने की कोशिश करने के भी खिलाफ हैं । क्योंकि उनके अनुसार ऐसी परिस्थिति में "सेक्स वर्करों" की औलादों का भी समाज की मुख्यधारा से अलग किया जाएगा । यह एक बड़ी सामाजिक समस्या बन जाएगी ।

परीक्षा के बाद जब बच्चियों के नतीजे का कार्ड मिला सभी बच्चियाँ फेल हो गईं । इससे पूरबी दी पूरी तरह टूट गईं । ऊन्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगा । "वे समाधि लेना चाहती हैं । अपने-आपको और कहाँ छुपे? गले में बांध टूट रहे । ऐसे लीलते दिनों से समाना होगा - सोचा नहीं था उन्होंने ! ये टूटे बांध आंखों के रास्ते बह रहे....बाबा ! बाबा....वे पुकार रही हैं अंधेरे में । बाबा का हाथ हाथ में नहीं आ रहा ।"११३ होम को लेकर उन्होंने बहुत संघर्ष किए । उनके सगे संबंधी उनके खिलाफ हो गए । फिर भी उन्होंने हार नहीं मनी ।

उन्होंने अपने घर को होम बनाकर समस्या का समाधान किया । लेकिन इन सब के बावजूद जब उसका कोई नतीजा नहीं हुआ तो वह पूरी तरह बिखर जाती है ।

लेकिन अगले दिन रुमा आकर बताती है कि रत्ना और गोरी नामक बच्चियों का कार्ड कल मिला नहीं था । जब मिल गया तो मालूम हुआ कि वे दोनों पास हुई हैं । यह सुनकर पूरबी दी की जान में जान आ गयी । उन्होंने रुमा को गले लगाकर कहा - "मैं पास हो गई रुमा....पास हो गई मैं... ।"११४ उन्हें लगता हें कि उस कार्ड में उनका नतीजा हैं । अपनी इस परीक्षा में वे पास हो गई हैं । यह उनका न तीजा है, जिसकी कोशिश वे लगातार करती आईं ।

चित्रा जी ने "नतीजा" कहानी के ज़रिए वेश्या-वृत्ति करनेवाली स्त्रियों की बच्चियों की शिक्षा पर ज़ोर दिया है । पूरबी दी उस बच्चियों को शिक्षित करवाकर अपने पैरों पर खडॉ करवाना चाहती है, ताकि वे अपनी माँ के मार्ग पर न चल सकें । नागरिक होने के कारण यह एक सामाजिक सरोकार भी है । लेकिन कोई इसके बारे में सोचता तक नहीं । सब वेश्या-वृत्ति को हीन दृष्टि से देखते हैं । लेकिन पूरबी दी ऐसी नारी नहीं है । वे समाज के प्रति अपना दायित्व निभा रही है । समाज में अपनी पहचान भी बनाना चाहती है । ताकि आगे चलकर लोग उनके काम से प्रेरित होकर समाज के प्रति अपना दायित्व निभा सके ।

पूरबी दी सामाजिक कल्याण का काम कर रही है । इसके लिए उन्हें कई मुसीबतों का सामना करना पडॉ । सगे-संबंधी भी उनके खिलाफ हो गए सब को लगता था कि शादी किए बिना पूरबी दी जो काम कर रही है वह सिर्फ नाम कमाने केलिए है । लेकिन ऐसा बिल कुल नहीं है । इन बच्चियों केलिए उन्होंने समाज से भी काफी लडॉई लड़ी । अगर ये बच्चियाँ हार जातीं तो वह हार उनकी हार होती ।

निष्कर्ष

चित्रा मुद्गल हिन्दी कथा साहित्य में नारी अस्मिता की प्रहरी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है । उन्होंने अपनी कहानियों में समाज के विभिन्न स्तरों के नारियों का चित्रण किया है । उनकी कहानियों में एक ओर गरीबी के कारण परिवार को चलाने केलिए दारू का धन्धा करनेवाली औरतें हैं, तो दूसरी ओर बड़े दफ्तरों में ऊँचे पद पर आसीन स्त्रियाँ भी है ।

चित्रा जी की नायिकाएँ अपने “स्व” को पहचानती है और अपने “स्व” की स्थापना करने की कोशिश भी करती है । बदलते सामाजिक परिवेश के साथ वे अपनी निजी मूल्य की स्थापना की चाहत रखती है ।

चित्रा जी की नायिकाएँ परिवार में अपना समान अधिकार चाहती है । क्योंकि भले ही वे जितना भी आत्मनिर्भर हो, उन्हें परिवार में ही रहना पड़ता है । इसकेलिए स्त्री-पुरुष संबंधों में परिवर्तन होना ज़रूरी है । उनकी नायिकाएँ अपनी कार्यकुशलता एवं क्षमता से परिवार में अपना अधिकार प्राप्त करने की कोशिश करके अपनी अस्मिता को कायम रखती है । कभी-कभी यह कोशिश असफल भी हो जाता है । तो वह परिवार के ढाँचे से बाहर निकाल कर पुरुष को छोड़ने केलिए मजबूर हो जाती है ।

उनकी नायिकाएँ घर-परिवार के साथ समाज में भी अपना स्थान बनाना चाहती है । समाज ने स्त्री होने के नाते उसके लिए बनाये गये मूल्यों एवं आदर्शों को तोड़ना चाहती है और अपने अधिकार की माँग करती है ।

चित्रा जी की कहानियों में नारी अस्मिता सिर्फ वैयक्तिक न होकर पारिवारिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर भी चित्रित है । उनके नारी पात्र आर्थिक रूप से स्वावलंबित है । वैचारिक रूप से अपने आप से एवं समाज से लड़ रही है । वे अपनी अस्मिता को परिवार एवं समाज में बनाये रखने केलिए संधर्ष भी कर रही है ।

संदर्भ

१. हिन्दी का गद्य साहित्य - डॉ.रामचन्द्र तिवारी - पृ.सं. २४९

२. शून्य -आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २०५

३. शून्य -आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २०९

४. शून्य -आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २०९

५. शून्य -आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २१०

६. शून्य -आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २११

७. हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में चित्रित नारी -डॉ. सो मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १०५

८. शून्य -आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १९७

९. प्रमोशन- आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६०

१०. प्रमोशन- आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६२

११. प्रमोशन- आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६२

१२. प्रमोशन- आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६३

१३. प्रमोशन- आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६४

१४. प्रमोशन- आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६४

१५. चित्रा मुद्गल -एक मूल्यांकन - के.वनजा - पृ.सं. ११५

१६. सफेद सोनारा - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५४

१७. सफेद सोनारा - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५०

१८. सफेद सोनारा - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५४

१९. चित्रा मुद्गल -एक मूल्यांकन - के.वनजा - पृ.सं. १३०

२०. सौदा - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २३१

२१. सौदा - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २३३

२२. सौदा - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २३६

२३. सौदा - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २३७

२४. लता शर्मा - हंस - सितंबर -२००३- पृ.सं. ९१

२५. इस हमाम में - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५५

२६. इस हमाम में - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५६

२७. इस हमाम में - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५७

२८. इस हमाम में - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५८

२९. इस हमाम में - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६०

३०. इस हमाम में - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६०

३१. लेन - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १४०

३२. लेन - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १४१

३३. लेन - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १४२

३४. लेन - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १४८

३५. लेन - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५५

३६. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन - डॉ.गोरक्ष थोरात - पृ.सं. ७४

३७. लाक्षागृह - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २३७

३८. लाक्षागृह - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २३९

३९. लाक्षागृह - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४१

४०. लाक्षागृह - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४१

४१. हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में चित्रित नारी -डॉ. सो मंगल कप्पिकेरे - पृ.सं. १५९

४२. प्रेतयोनि - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १०२

४३. प्रेतयोनि - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १०२

४४. प्रेतयोनि - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १०८

४५. प्रेतयोनि - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ९९

४६. प्रेतयोनि - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ९७

४७. प्रेतयोनि - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १०९

४८. हिन्दी कहानी और नारी विमर्श - डा.शोभा निम्बलकर - पृ.सं. १७०

४९. अभी भी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २०

५०. अभी भी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २१

५१. स्त्री-उपेक्षिता -प्रभा खेतान - पृ.सं. ३४४

५२. ट्रेन छूटने तक - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ४७

५३. ट्रेन छूटने तक - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ४५

५४. ट्रेन छूटने तक - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ४५

५५. ट्रेन छूटने तक - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ४४

५६. लकड़बग्घा - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ३२

५७. लकड़बग्घा - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २५

५८. प्रेतयोनि - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ९६

५९. लकड़बग्घा - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ३२

६०. हिन्दी कहानी और नारी विमर्श - डा.शोभा निम्बलकर - पृ.सं. १३३

६१. वेद प्रकाश अमिताभ - समीक्षा -जुलाई-सितंबर - १९९३ - पृ.सं. २२

६२. स्टेपनी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५७

६३. स्टेपनी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५९

६४. स्टेपनी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६१

६५. स्टेपनी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६१

६६. स्टेपनी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६१

६७. स्टेपनी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६२

६८. स्टेपनी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६४

६९. स्टेपनी - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६४

७०. अपनी वापसी - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १६०

७१. अपनी वापसी - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १६२

७२. अपनी वापसी - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १७४

७३. अपनी वापसी - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १६०

७४. अपनी वापसी - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १७१

७५. अपनी वापसी - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १६९

७६. तशमहल - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १२४

७७. तशमहल - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १२५

७८. तशमहल - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १२७

७९. तशमहल - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १२८

८०. तशमहल - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १२८

८१. वेद प्रकाश अमिताभ - समीक्षा -जुलाई-सितंबर - १९९३ - पृ.सं. २४

८२. स्त्री का प्रतिरोध -चित्रा मुद्गल के उपन्यास “एक ज़मीन अपनी में” - विजयश्री.के.पी- पृ.सं.४३

८३. गिल्टी रोज़ेस - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २५८

८४. गिल्टी रोज़ेस - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६०

८५. गिल्टी रोज़ेस - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६१

८६. जब तक बिमलाऐं हैं - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६६

८७. जब तक बिमलाऐं हैं - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २७२

८८. जब तक बिमलाऐं हैं - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २७२

८९. जब तक बिमलाऐं हैं - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २६६

९०. घनञ्जय कुमार - राष्ट्रीय सहारा - ११ नवंबर २००२ - पृ.सं. ९

९१. केंचुल - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५७

९२. केंचुल - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ५८

९३. केंचुल - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ६८

९४. केंचुल - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ७१

९५. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन -डॉ. गोरक्ष थोरात - पृ.सं. ७१

९६. बावजूद इसके - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ११६

९७. बावजूद इसके - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ११२

९८. बावजूद इसके - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ११५

९९. बावजूद इसके - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १२५

१००. बावजूद इसके - आदि-अनादि -I चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १२६

१०१. चेहरे - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १११

१०२. चेहरे - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. १११

१०३. चेहरे - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ११६

१०४. चेहरे - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ११६

१०५. समकालीन कहानियों में नारी के विविध रूप -डॉ.घनश्याम दास भुतडा- पृ.सं. ९५

१०६. चेहरे - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ११७

१०७. चेहरे - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. ११७

१०८. हस्तक्षेप - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४१

१०९. हस्तक्षेप - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४२

११०. हस्तक्षेप - आदि-अनादि -II चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४५

१११. नतीजा - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४१

११२. नतीजा - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४१

११३. नतीजा - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४१

११४. नतीजा - आदि-अनादि -III चित्रा मुद्गल - पृ.सं. २४१

अध्याय पाँच

चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता

५.१ चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता

मलयालमम् के मशहूर महिला साहित्यकार चंद्रमती की कहानियों में मौलिकता एवं प्रतिभा का मिलन है । उन्होंने अपनी कहानियों में वैचारिकता एवं भावुकता को एक साथ मिला दिया है । "आर्यावर्तनम् (आर्या की गाथा)" , "देवीग्रामम् (देवी का गाँव)" , "राइन डियर" , "स्वयं स्वांतम्" , "दैवम स्वर्गतिल (ईश्वर स्वर्ग में)" , "तट्टारकुडियिले विग्रहंगल (तट्टारक्कुट्टि की मूर्तियाँ)" , "अन्न्युड़े अत्ताषविरुन्नु (अन्न का दावत)" , आदि उनके कहानी संग्रह हैं । उनकी कहानियों के केंद्र में गाँव, प्रकृति, देवी, शक्ति आदि स्त्री के ही विभिन्न रूप हैं । उन्होंने ज़्यादातर नारी विषयक कहानियाँ ही लिखी हैं । लेकिन वे अपने आप को कभी नारीवादी नहीं मानती । चंद्रमती की कहानियों के बारे में कहा जाता है कि उनकी कहानियों के केंद्र में हमेशा परिवार ही रहता है । उन्होंने स्त्री के वैयक्तिक एवं सामाजिक समस्याओं को भी अपनी रचना का विषय बनाया ।

औद्योगिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के कारण हमारे समाज का ढाँचा बदल गया । परिवार से हटकर समाज व्यक्ति-केन्द्रित हो गया । इसलिए समाजिकता का आकलन एवं समाज में स्त्री का अस्तित्व एवं अस्मिता, समाज की इकाई परिवार से एवं परिवार की इकाई व्यक्ति के रूप में परिणत होती है ।

चंद्रमती की कहानियों के केन्द्र में प्यार का बंधन है । उनकी नायिकाएँ प्यार के बंधन को तोड़कर बाहर नहीं जा सकती । परिवार एवं पारिवारिक समस्याओं को वे अपने प्यार के ज़रिये व्यक्त करने की कोशिश करती है । इसलिए उनकी कहानियों की अपनी अलग पहचान है ।

५.१.१ चंद्रमती की कहानियों में वैयक्तिक नारी अस्मिता

चंद्रमती की कहानियों की नारी सारे विश्व में फैली हुई प्राकृतिक शक्ति का प्रतीक है । उनकी "देवीग्रामम्" कहानी नायिका की "मैं देवीग्रामम् की नारी" शब्द से शुरू होती है । उनके इन शब्दों में आत्मविश्वास एवं नारी होने का गर्व भी है । उनकी नायिकाओं की वैयक्तिक अस्मिता हमेशा परिवार से जुडी हुई है । उनकी कहानियों में परिवार से बिछुड़ कर नारी के अकेले अस्तित्व की चिंता कहीं भी दिखाई नहीं देती ।

५.१.१.१ कत्तु कुत्त्

कहानी की नायिका "वह" अपने पति के साथ अच्छी गृहस्थी बिता रही है । उसके बड़े बच्चे हैं और उनकी शादी भी हो चुकी है । फिर भी दोनों पति-पत्नी नव दूल्हा-दुल्हन की तरह ही जी रहे हैं । उसके पति ने उसे पूरी आज़ादी दी है । उनकी खुशी के बीच ज़बरदस्ती से पति का दोस्त घुस आया । उसने अपनी बातों से उसे फँसा दिया । उसने अपनी मर्ज़ी से पति के दोस्त के साथ अनैतिक संबंध रखा । लेकिन जब बाद में वह आदमी उसपर अपना अधिकार जताने लगा तो वह उसके खिलाफ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है ।

प्रेमी ने कई बार उसे फोन किया । उसने फोन पर अपना गुस्सा निकाल दिया । प्रेमी ने उसे पाँच खत लिखे । नायिका ने किसी का भी उत्तर नहीं दिया । लेकिन अब वह उसे वापस पाँच खतों की जवाबी-खत लिख रही है । उस खत में वह पति के दोस्त का प्रेमी में बदलने का ज़िक्र करती है । वह लिखती है कि किस तरह प्रेमी ने अपने दोस्त की बीवी को वश में किया । वह उसे साफ लिखती है - "एक बार साथ सोने से पूर्ण अधीनता चाहना बेवकूफी है । तुम्हारे चाहने से नहीं बल्कि अपनी मर्ज़ी से मैं ने तुम्हारे साथ संबंध रखा था । अब वही इच्छा एवं अधिकार के साथ मैं इस संबंध को तोड़ रही हूँ ।"१ पुरुष सोचता है कि अगर एक बार स्त्री ने उसके साथ संबंध रख दिया तो वह ज़िंदगी-भर उसके गुलाम बनकर रहेगी । आज कल स्त्री के साथ यही होता है । एक बार की गयी गलती को लेकर पुरुष उसे ब्लाक मेल करके बार-बार इस्तेमाल करता है । पुरुष उसे डरा-धमका कर अपने वश में करता है और उससे जो चाहे करवाता है ।

"कत्तूकुत्त्" कहानी की नायिका ऐसी नहीं है । वह अच्छी तरह जानती है कि खत को लेकर प्रेमी उसे ज़रूर ब्लाक मेल करेगा । इसलिए वह खत कंप्यूटर में डी.टी.पी करती है । यही नहीं उसने खत में अपना या अपने प्रेमी का नाम नहीं लिखा । इसकेलिए वह प्रेमी की पत्नी को ही धन्यवाद देती है । क्योंकि उसी ने कहा था - "पुराने बैंक पास बुक बरबाद करना आसान है । सिर्फ उसके कवर पेज एवं अंदर के अपना नाम लिखा हुआ पन्ना फाड़ देना है । बाकी पन्ने किसी के भी हो सकते हैं ।"२ वह आगे लिखती है कि जिस तरह यह खत किसी का हो सकता है उसी तरह ये अक्षर भी किसी के हो सकते हैं । इसमें तुम्हारा या मेरा नाम नहीं है । इसलिए सब कुछ भुलाकर हम आगे बढ़ेंगे । पारिवारिक सभा में हम अच्छे दोस्त बनेंगे ।

स्त्री एवं पुरुष के बीच का आकर्षण स्वाभाविक है । लेकिन शादी-शुदा स्त्री एवं पुरुष के बीच जब यह आकर्षण होता है तब रिशों में दरारें पड़ती हैं । कहानी की नायिका अपनी मर्ज़ी से ही पुरुष दोस्त के साथ रिश्ता जोड़ती है । अपनी मर्ज़ी से ही उसे तोड़ती भी है । उस में रिश्ते को कायम रखने एवं खतम करने की क्षमता है । तभी तो घर-परिवार में वह अपनी अस्मिता को बनाए रखती है ।

वह अपनी आज़ादी को चाहनेवाली है और उसे पहचानती भी है । उसे मालूम है कि पति के दोस्त के साथ यह रिश्ता कायम रखने से उसकी आज़ादी एवं ज़िंदगी बरबाद हो सकती है । इसीलिए वह बिना किसी हिचक से उस संबंध को तोड़ देती है । पुरुष हमेशा स्त्री पर अपना अधिकार जताना चाहता है । स्त्री को पुरुष के इस स्वभाव के प्रति सजग रहना है । पुरुष से संघर्ष के बिना स्त्री अपनी अस्मिता बरकरार नहीं रख सकती है ।

विवाहेतर-संबंधों में पड़ना आसान है । लेकिन उससे बाहर निकलना मुश्किल है । परिवार की नीव नारी पर ही निर्भर है । अगर नारी अपना व्यक्तित्व कायम रख सकती है तो वह उस की जिंदगी की भलाई ही होगी । नहीं तो इस तरह के रिश्ते उसके घर-परिवार को बरबाद कर देंगे ।

५.१.१.२ ओरु सूपर कथा (एक सूपर कहानी)

इस कहानी में चंद्रमती ने कल्पना की है कि स्त्री केलिए बनाये गये नियम एवं अड़चनें पुरुष पर लागू हो जाय तो कैसा होगा? सिनेमा के मशहूर अभिनेता को एक लड़की से प्यार हो जाता है । उसे लगता है कि कोई भी लड़की उसके प्यार को नहीं टुकराएगी । इसी विश्वास के साथ वह लड़की के सामने अपने प्यार का इज़हार करके उससे शादी करने की इच्छा प्रकट करता है । लड़की सोचने केलिए कुछ वक्त माँगती है और बाद में शादी केलिए हाँ भी कर देती है । लेकिन उसका एक शर्त है । वह कहती है- "आप आइंदा कभी भी सिनेमा में काम नहीं करेंगे । क्योंकि मेरे पति का दूसरे औरतों को छूकर अभिनय करना, उन्हें गले लगाना मुझे अच्छा नहीं लगता ।"३ जब किसी अभिनेत्री की अभिनेता से शादी होती है तो अक्सर यही शर्त लगाया जाता है कि शादी के बाद वह सिनेमा में काम नहीं करेगी । लेकिन अब फरक इतना है कि पुरुष के बदले स्त्री ने शर्त लगायी है । यह सुनकर वह दंग रह जाता है ।

कहानी का अंत कुछ इस तरह होता है " "सीता रोती है" नामक सिनेमा में वह श्रीराम का रोल अदा कर रहा था । जब सीता धरती चीरकर अंदर जाती है तो वह द्रष्टा बनकर देखने वाला राम था । लेकिन अब एक छोटे से बदलाव से वह सीता बनकर धरती के अंदर चला गया ।"४ पुरुष-वर्चस्ववादी समाज के कारण ही सीता धरती फाड़कर अंदर चली गयी थी । सिनेमा में राम का रोल अदा करते वक्त उसे सीता का दर्द मालूम नहीं था । वह सिर्फ द्रष्टा बनकर रह गया । लेकिन असली ज़िंदगी में जब उसे सीता का रोल अदा करना पडा तो वह भी सीता के समान धरती फाड़कर अन्दर चला गया ।

रामायण में सीता के पातिव्रत्य पर उँगली उठायी गयी थी । क्योंकि सीता रावण के अशोक वन में कुछ दिन रही थी । इसलिए सीता को राम के सामने, समाज के सामने अपना पातिव्रत्य स्थापित करना पड़ा । राम के साथ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । क्योंकि राम को तो पुरुष-वर्चस्ववादी समाज ने पहले से ही एकपत्नीव्रत का दर्जा देकर सुरक्षित रखा । इसी के कारण श्रीराम पूजनीय है । सीता के साथ उन्होंने जो भी किया वह भी न्याय संगत माना गया । अगर सीता केलिए बनाये गये नियम राम केलिए भी लागू किया गया होता तो राम को भी धरती फाड़कर अंदर जाना पड़ता । राम ने अपने स्पर्श से अहल्या को शापमोक्ष दिया । उन्होंने शबरी का जूठा बेर खाया । क्या यह न्याय संगत था । इन सब केलिए सीता ने कभी भी राम की अग्नि परीक्षा की माँग नहीं की ।

कहानी का नायक फिल्म स्टार है । वह स्त्रियों के साथ खुल मिलकर, गले लगाकर काम करता है । इसीलिए उससे शादी करनेवाली लड़की चाहती है कि उसका पति शादी के बाद सिनेमा में काम न करें । अगर पति को पत्नी का दूसरे पुरुषों के साथ काम करना पसंद नहीं है, तो स्त्री का भी हक बनता है कि वह अपने पति को दूसरे स्त्रियों के साथ काम करने से रोके ।

यह चंद्रमती की स्त्रीवादी दृष्टिकोण को व्यक्त करनेवाली कहानी है । समाज में स्त्री एवं पुरुष केलिए समान नैतिक नियम का होना ज़रूरी है । नहीं तो वह अपने लिए नये नैतिक नियमों को बनाएगी, जिससे समाज का अस्तित्व संकट में आ जाएगा ।

५.१.१.३ सर्वम् सहा (सब कुछ सहनेवाली)

इस में अलग-अलग परिवेश के तीन स्त्रियों का ज़िक्र हुआ है । नायिका विजया साहित्य रचना में रुचि रखनेवाली है । वह महिला सहित्यकारों के एक मीटिंग में भाग

लेने गयी थी । जब मीटिंग के बाद घर वापस आती है, तो पति टी.वी. देख रहा था । बेटी ने माँ से बताया कि उनकी नौकरानी आज काम पर नहीं आयी है । क्योंकि वह अपने पति को बेल (bail) में लेने केलिए पुलिस स्टेशन गयी है । उनकी नौकरानी पति से अलग होकर रहती थी । फिर भी पति जब बलात्कार के केस में पकड़ा गया तो वह उसे छुड़वाने केलिए जाती है । भारतीय समाज ने स्त्री को ऐसे ढाँचे में डाल दिया है कि वह अपने पति के हर गुनाह माफ करने केलिए तैयार होती है ।

घर आते वक्त विजया सामनेवाली गली में से आये शोर की ओर न चाहकर भी ध्यान देती है । वहाँ मुरुकेशन नामक पति अपनी गर्भवती पत्नी को पीट रहा था । उसकी दूसरी पत्नी यह दृश्य देख रही थी । मुरुकेशन की पत्नी पूरी तरह अपने पति पर निर्भर है । इसलिए वह चीख कर कह रही है - "तुम चाहो तो किसी को भी लाकर यहाँ रख लो, मैं कुछ भी तो नहीं कहूँगी । लेकिन मुझे यहाँ से मत निकालो । मैं इन बच्चों को लेकर कहाँ जाऊँगी ।"५ अपने पति से अलग होकर जीना उसकेलिए मुश्किल है । वह अकेली अपने बच्चों की देख-भाल नहीं कर सकती । तभी तो वह सब कुछ सहने केलिए तैयार होती है ।

आज समाज में दाम्पत्य-विघटन की समस्याएँ ज़्यादा हो रही है । विजया का पति जानता है कि नौकरानी काम केलिए नहीं आयी है । फिर भी उसे कोई फरक नहीं पड़ता । क्योंकि घर के अंदर की दुनिया सिर्फ स्त्री केलिए रखी हुई है । घृणा भाव से टी.वी. देखनेवाले पति से मालूम पड़ता है कि घर के काम के बोझ का उस पर कितना असर पड़ता है । चंद्रमती कहना चाहती है कि स्त्री ही हमेशा सब कुछ सह लेती है, चाहे वह गरीब हो, या अमीर । समाज के निम्न वर्ग में ही नहीं बल्कि अमीर एवं सुसंस्कृत कहने वाले लोगों में भी स्त्री की यही हालत है । आज के बदलते परिवेश के साथ पुरुष के दृष्टिकोण का भी बदलना ज़रूरी है । पति-पत्नी दोनों नौकरी करके ही घर चलाते हैं । तो पति का फर्ज़ बनता है कि वह घर के काम में पत्नी का हाथ बाँट लें ।

विजया साहित्य में रुचि रखने के कारण साहित्य सभा में भाग लेती है । सभा में इटली से आयी औरत कहती है - "सीता का पातिव्रत्य सरल था । क्योंकि राम जैसे पति मिलने से उसका पतिव्रता होना आसान है । आप लोगों को अपने आप से ऐसे प्रश्न पूछना चाहिए । तभी रावण के कामलीलाओं को सहने के बाद भी पतिव्रता होकर जीनेवाली मंडोदरी का पातिव्रत्य एवं सहनशीलता के बारे में आप जान सकती है ।"६

उसके अनुसार सीता तो हमेशा सुरक्षित थी । लेकिन मंडोदरी को क्या कुछ न सहना पड़ा । यहाँ यह इशारा किया कि पति के अनुसार ही पत्नी की ज़िंदगी है । सीता भी कहाँ सुरक्षित थी । उसे भी कितना अपमान सहना पडॉ ।

आधुनिक समाज में स्त्री की स्थिति सीता या मंडोदरी के समान ही है । वातावरण तो बदल गया । लेकिन बदलते वातावरण के साथ उसकी स्थिति और बिगड़ती गयी । सब को सीता जैसी पत्नी की ज़रूरत है । लेकिन राम बनने केलिए कोई तैयार नहीं है । हाँ एक हद तक सब पुरुष राम बन सकेंगे । अपनी पत्नी के बारे में बुराई सुनने पर उसे तुरंत छोड़ने केलिए तैयार हो जाएगा । इस लेकिन समस्या यह है कि पत्नी को छोड़ने पर क्या वह मर्यादा पुरुषोतम राम बन सकेगा ।

विजया के पड़ोस के गली में रहनेवाले मुरुकेशन की पत्नी पुराने जमाने की स्त्रियों के समान है । वह शारीरिक पीडॉ सहने के बाद भी पति के साथ रहना चाहती है । वह पति को दूसरी स्त्री के साथ रहने की अनुमति भी देती है । क्योंकि वह पति के पैरों तले अपनी ज़िंदगी को मानती है । पति चाहे उसके साथ कितना ही बुरा व्यवहार करें वह उसे छोड़ने केलिए तैयार नहीं । यह कैसी विडम्बना है । पुरुष स्त्री की इस दुर्बलता का फायदा उठाता है । स्त्री के मन में यह विश्वास बचपन में ही थोपा जाता है कि समाज में पुरुष के बिना जीना मुश्किल है । आज स्त्री की सोच में कुछ बदलाव दिखाई देता है । वह पति के दुराचरणों को सहकर उसके साथ रहने केलिए तैयार नहीं ।

विजया की नौकरानी पति से अलग होकर जी रही है । वह अपनी जीविका चलाने केलिए नौकरी करती है । आर्थिक रूप से वह स्वावलंबी है । फिर भी पति को परमेश्वर माननेवाली भारतीय परंपरा से वह अब तक मुक्त नहीं है ।

इस कहानी की स्त्रियाँ समाज के भिन्न स्तर का प्रतिनिधित्व करती है । लेकिन तीनों की मानसिक स्थिति एक जैसी है । क्योंकि समाज ने स्त्री को ऐसे ढाँचे में डाल दिया है कि वह हमेशा पुरुष के पैरों तले अपनी ज़िंदगी को ढूँढती रहें । इससे बाहर निकलकर ही वह अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ सकेगी और अपना पहचान बना पायेगी ।

५.१.१.४ वारांत्यम् (हफ्ते का अंतिम दिन)

इस कहानी में चंद्रमती ने स्त्री की असहाय स्थिति का चित्रण किया है । अपने

दाम्पत्य की रक्षा के लिए हमेशा स्त्री को ही समझौता करना पड़ता है । एक चिट्ठी के द्वारा पत्नी को पता चलता है कि पति का किसी दूसरी स्त्री के साथ अनैतिक संबंध है । चिट्ठी पढ़ने के बाद थोड़ी देर केलिए वह चिंतित रहती है । बाद में वह अपने आप को संभालती है । उस वक्त उसका पति घर पर नहीं था । वह काम के सिलसिले में शहर से बाहर था । पति के वापस आने पर वह आनमनी-सी रहती है । पत्नी के चेहरे की उदासी देखकर पति रवि बच्ची से पूछता है - "तेरी माँ को आज हो क्या गया है? लाइट क्यों आफ है? ।"७ तब वह पति से कहना चाहती है - "तुम बेटी से क्यों पूछ रहे हो । मुझ से पूछ लिया होता, मैं बताती कि यहाँ की बिजलीकरण ऐसा है । एक बत्ती के जलने पर दूसरी बुझ जाती है । सिर्फ एक बत्ती का जलते रहना काफी नहीं है क्या? सिर्फ मैं । रवि! बीच में तुम क्यों दूसरी.... ।"८ वह मन में भी वाक्य पूरा न कर पायी ।

पत्नी ने वह चिट्ठी चोली के अंदर रखी है । उस रहस्य को उसने अपने सीने से लगाकर रखा । वह पति से पूछना चाहती है । लेकिन पूछती नहीं । उसके चेहरे की उदासी देखकर रवि उसे छाती से लगाकर पूछता है - "क्या बात है? बिना बताए मैं कैसे जान पाऊँगा? ।"९ इन शब्दों में उसके प्रति पति का प्यार एवं चिंता व्यक्त था । वह अपनी पत्नी की उदासी से खिन्न था । इसलिए वह जानना चाहता कि उसकी पत्नी उदास क्यों है? यह अपनी पत्नी के प्रति उसकी चिन्ता और प्यार नहीं तो और क्या है? इसीलिए वह निश्चय करती है कि उस खत के बारे में ज़्यादा कुछ सोचेगी नहीं ।

उस चिट्ठी एवं उस में लिखी बातों को भूलकर वह अपने मन को आज़ाद करती है । क्योंकि उसने पति की आँखों में अपने प्रति प्यार देखा । उसने निश्चय कर दिया कि चिट्ठी में जो बात लिखी थी वह झूठ है । अगर उस गुमनाम चिट्ठी में लिखी बात सच है तो भी वह कुछ नहीं कर सकती । क्योंकि उसे मालूम है कि वह जहाँ खड़ी है उससे पीछे जाना उसके लिए मुमकिन नहीं । उसकी ज़िंदगी वहीं पति के साथ ही है । क्योंकि उसके अनुसार "अपनी जगह यही है चाहे उसकी चारों तरफ जितने भी घास उगे । क्या रवि इस से इनकार कर सकता है ।"१० यह जानकारी उसे उस गुमनाम चिट्ठी की उपेक्षा करने वाले अपने निर्णय को मजबूत बना देती है । इस संकटपूर्ण स्थिति को पार करके उसे आगे जाना ही है । यही उसकी नियति है और यही सभी स्त्रियों की नियति है ।

पति के अन्य स्त्री के साथ संबंध को जानकार वह दु:खित तो ज़रूर होती है । लेकिन वह इसके बारे में अपने पति से पूछ नहीं सकती । इसका दो कारण हो सकता

है । एक तो यह है कि अगर पति ने इस रिश्ते को कुबूल किया तो वह कहीं की न रह जाएगी । दूसरा कारण यह है कि अगर ऐसा कुछ भी नहीं है तो पति दु:खित होगा । वह अपने पति को दु:खी बनाना नहीं चाहती । पति को लगेगा कि पत्नी ने किसी अनजान आदमी की चिट्ठी पर विश्वास करके उस पर अविश्वास किया । शायद यह सब सोचकर वह चुप रही । उसे अपना परिवार अपने से भी ज़्यादा प्यारा है ।

उसे अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व को बनाए रखना है । वह अपनी चारों तरफ अस्मिता को ढूँढती रहती है । घुमनाम चिट्ठी नज़र अंदाज़ करने के अपने निर्णय को मज़बूत बनाकर स्वयं अपनी जगह पति की ज़िन्दगी में स्थापित करने की कोशिश करती है ।

परिवार ही नारी की दुनिया एवं सीमा है । नारी अपने मन को पति एवं बच्चों के बीच ही बाँध देती है । वह चाहकर भी उस सीमा को लांध नहीं सकती ।

५.१.१.५ निलत्तिल् पोर

"निलत्तिल पोर्"११ चंद्रमती की लंबी कहानी है । इस में पति एवं पत्नी के बीच "अहं" के टकराहट एवं उसके कारण होने वाले संघर्ष का चित्रण है । कहानी का नायक अजयन अपनी पत्नी एवं बच्चों के साथ बैगलूर में रहता है । नायिका "मैं" गाँव में पली-बढ़ी है । इसी कारण उसके मन में शहर से ज़्यादा गाँव के प्रति मोह है ।

वह अपने गाँव में बच्चों के साथ आयी है । अपने पति के साथ हुए मतभेद के कारण उसे अचानक गाँव आना पडॉ । लेकिन इसे वह घरवालों से छिपाकर रखती है । गाँव में तीन साल में एक बार होनेवाला महामेला है "निलत्तिल पोर" । यह पर्व दुर्गा देवी के "दारिकन" नामक राक्षस के वध से संबन्धित मनाया जाता है । "गाँव की नानी" नाम से जाने जानेवाली उसकी नानी की सहेली उससे पति अजयन के बारे में पूछती है । नायिका का अपनी नानी के साथ गहरा संबंध था । वह नानी को याद करके रोती है तो "गाँव की नानी" कहती है - "ज़िंदा लोगों की समस्याओं का समाधान जीवित व्यक्ति को ही करना है । यही लोकनीति है ।"१२ वह अपने मन की बातों पर पर्दा डालना चाहती है । लेकिन नानी सब जान जाती है ।

नायिका को अपनी नौकरी में पदोन्नति हुई । उसे अपनी नौकरी केलिए ज़्यादा

वक्त देना पड़ा । इसके कारण उसकी दिनचर्या में बादलाव आने लगा । यह अजयन को स्वीकार्य नहीं था । वह कहता है - "लोगों के साथ ज़्यादा मिल-जुलकर करने वाली यह नौकरी हमें नहीं चाहिए । अब तक तू मेरे सपनों की नारी थी आगे भी ऐसा ही हो ।"१३ अजयन सिर्फ अपने सपनों के बारे में सोचता है । वह कभी यह नहीं सोचता कि उसकी पत्नी का सपना क्या है? वह क्या चाहती है? अंत में वह पत्नी से कहता है - "नौकरी को फुर्सत का समय बिताने या मनोरंजन का उपाय जैसा ही लेना है । परिवार से ज़्यादा नौकरी के प्रति ईमानदार होने की ज़रूरत नहीं है । हम तेरे तनख्वाह के बिना भी अच्छी तरह ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं ।"१४ नौकरी के सिलसिले में विदेश जाने की बात आयी तो उनके बीच का झगड़ा और बढ़ गया। पति ने साफ कह दिया - "आज तक मैं ने बहुत अड्जस्ट किया । इस से ज़्यादा मुझ से नहीं होगा । तुझे फैसला करना होगा कि नौकरी चाहिए या परिवार ।"१५ इस तरह वह नौकरी एवं परिवार के बीच में से किसी एक को चुनने केलिए विवश हो गयी । लेकिन उसकेलिए दोनों में से किसी एक को छोड़ना मुमकिन नहीं था ।

यह आधुनिक समाज के नौकरी-पेश स्त्री की समस्या है । नारी की नौकरी खाली समय बिताने केलिए है । लेकिन पुरुष की नौकरी ऐसी नहीं है । वह उस में प्रगति चाहता है, पदोन्नति चाहता है । नारी को भी नौकरी एवं परिवार केलिए समान रूप से वक्त निकालना पड़ता है । लेकिन पुरुष नौकरी के साथ घर या बच्चों केलिए वक्त नहीं निकाल सकता । वह सोचता है कि यह उसकी ज़िम्मेदारी नहीं है ।

नायिका की उदासी देखकर पिता जी जानना चाहते हैं कि उसके एवं अजयन के बीच कोई समस्या है । तो वह बताती है - "समस्या मैं हूँ, मेरी ईमानदारी है । मैं नौकरी एवं परिवार दोनों को समान दर्जा देना चाहती हूँ । इसके बीच में मचलता हुआ मेरा मन ही सबसे बड़ी समस्या है । कभी लगता है कि मेरा मन अपने वश में नहीं है ।"१६ यह नौकरी-पेश नारी की मानसिक स्थिति है । वह नौकरी एवं परिवार के बीच हमेशा पिसती रहती है ।

नायिका हमेशा घर एवं पति के बारे में सोचती रहती है । अपनी गैर मौजूदगी में अस्त-व्यस्त घर एवं पति की याद उसे सताती है । अचानक उसके मन में ख्याल आता है कि क्या अजयन भी इसी तरह मेरे बारे में सोचकर परेशान होगा? लेकिन जल्द ही उसे लगता है - "अजयन केलिए उसकी चादर बिछाने एवं खाना गरम करने के

सिवाय मेरी क्या ज़रूरत है ।"१७ यह सोच उसके मन को और दृढ़ बना देता है । पुरुष को अपनी माँगों की पूर्ति केलिए ही स्त्री की ज़रूरत होती है । चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक ।

गाँव की नानी उसे दिलासा दिलाती है - "कल तेरा अजयन आनेवाला है । सागर की लहरों की तरह सब के मन का कलंक मिट जाएँ ।"१८ नानी आशा करती है कि सब के मन से सारे गिले-शिकवे मिट जाए । नायिका को विश्वास नहीं होता । वह अजयन का इंतज़ार करती है । अगले दिन ही अजयन की चिट्ठी आती है । उसने उसके सारे गिले-शिकवे मिट गए । उसने लिखा - "मैं ने बहुत सोचा । माता-पिता,एवं बच्चों केलिए तू गर्व की बात हो सकती है , तो मैं भी कुछ त्याग करने केलिए तैयार हूँ । तुझे सिर्फ एक बात जाननी है । मेरी स्वार्थता का कारण तेरे प्रति मेरा प्रगाढ़ प्यार ही है । इसलिए मैं अपनी स्वार्थता को छोड़ देता हूँ ।"१९ अजयन ने अपने स्वार्थता को पहचान लिया । वह जान चुका कि पत्नी के बिना वह अधूरा है । इसीलिए उसने लिखा - "पंछियों के बिना यह घोंसला मेरे बर्दाश्त के बाहर है । तेरे एवं बच्चों के बिना मैं इस से ज़्यादा दिन इस घर में रह चुका हूँ । लेकिन इससे पहले कभी इतना अकेलापन मैं ने महजूस नहीं किया ।"२० अब वह अकेला रहना नहीं चाहता । वह अपने परिवार के पास वापस आ रहा है ।

व्यक्ति से ज़्यादा परिवार को, शहर से ज़्यादा गाँव की संस्कृति को इस में प्रमुखता दी है । नायिका गाँव की संस्कृति के साथ, गाँव के वातावरण के साथ बच्चों को मिलाने की कोशिश कर रही है । गाँव, वहाँ के आचार-विचार, रीति-रिवाज़ आदि के प्रति उस के मन में जो गरिमा एवं प्यार है, वह लेखिका का अपना दृष्टिकोण है । गाँव के प्रति लेखिका की भावुकता एवं भोलेपन को उन्होंने नायिका के ज़रिये प्रस्तुत किया है ।

अंत में अजयन का नायिका से मिलने के लिए गाँव की ओर रवाना होने का इशारा है । इस में लेखिका ने परिवार में स्त्री की अस्मिता को स्वीकारने वाले पति का चित्रण किया है । अजयन को एहसास हुआ कि बीवी-बच्चों के बिना उसका घर शून्य है । वह वापस अपने घर-परिवार में आना चाहता है ।

५.१.२ चंद्रमती की कहानियों में पारिवारिक नारी अस्मिता

आधुनिक समाज का पुरुष परंपरा एवं रूढ़ियों से बंधा हुआ है । इसलिए स्त्री के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण रखते हुए भी वह स्त्री-सत्ता को खुले मन से स्वीकार नहीं कर सकता । उसे ड़र है कि अगर उसने घर, परिवार एवं समाज में स्त्री की सत्ता को स्वीकार किया तो उ सकी सत्ता हाथों से खिसक न जाय । परिवार में उसने उत्तरदायित्वों के ज़रिये नारी को बाँधकर रखा है । चंद्रमती नारी को इस बंधन से मुक्ति दिलाना चाहती है । उनकी कहानियों की नारियाँ परिवार में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रही है ।

चंद्रमती की नारियाँ कभी भी परिवार के बाहर जाती नहीं । परिवार नामक संस्था के भीतर रह कर वे अपनी जगह ढूँढ रही हैं । अपनी अस्मिता को कायम रखने की कोशिश सीमा के अंदर रहकर करती है । लेकिन कभी-कभी इनकी सहन की सीमा भी टूट जाती है ।

५.१.२.१ कथा राघवीयम् (कहानी राघव की)

कहानी का नायक राघवन पुरुष-वर्चस्ववादी समाज का प्रतिनिधित्व करता है । इस में राघवन के ज़रिये नारिवाद की बातें व्यक्त की है । राघवन के तीन बहिनें हैं । तीन लड़कियों के बाद उसकी माँ को लड़का हुआ था । इसलिए उसकी माँ बेटियों से उसका सारा काम करवाती है । उसकी माँ के अनुसार "कितनी मिन्नतों के बाद मिला हुआ लड़का है । उसके कहा न माननेवाले यहाँ नहीं चाहिए । लड़की पैदा करना बहुत बड़ी बात नहीं । लड़का पैदा करने केलिए किस्मत अच्छी होनी चाहिए । जा, जाके उसने जो भी कहा है वह कर दो ।"२१ इस तरह वह अपनी माँ के सहारे बहनों से सारा काम करवाता था ।

दूसरों से अपना काम करवाने की उसकी आदत थी । शादी के पहले बहनों और शादी के बाद पत्नी से । उसकी पत्नी सरस्वती पुराने ज़माने की स्त्रियों के समान हमेशा राघवन की छाया बनकर उसकी गुलामी करती रही । लेकिन अब सब कुछ बदल गया । अब उसकी पत्नी उससे काम करवाने लगी है । राघवन के अनुसार उसकी पत्नी शहर से आयी नारीवादी स्त्रियों के संपर्क में पड़कर बिगड़ गयी है । उनके संपर्क के कारण उसकी पत्नी का नज़रिया अब बिलकुल बदल चुका है । सरस्वती पूछने लगी है - "आदमी का

साथ होने से स्त्री केलिए क्या सब कुछ मिल गया? ऐसा सोचना बेवकूफी है । स्त्री का अपना व्यक्तित्व होता है ।"२२ ये नारीवादियों की बातें हैं । अपनी पत्नी के मुँह से ऐसी बातें सुनकर वह सन्न रह गया । क्योंकि "व्यक्तित्व" जैसा शब्द राघवन केलिए बिलकुल नया था, जिसका अर्थ स्वयं उसे पता नहीं ।

पहले तो राघवन पिछले दिन का नशा के कारण सबेरे देर तक सोता रहता । लेकिन अब जब वह चादर ओढ़कर सोता है तो सरस्वती उसे जागकर घर के काम में हाथ बटाने केलिए कहती है । उसके अनुसार "स्त्री एवं पुरुष परिवार नामक रथ के दो पहिये हैं । दोनों पहियों का एक साथ होने से ही परिवार आगे बढ़ेगा ।"२३ सरस्वती के मुँह से ऐसी बातें सुनकर वह बेजुबान रह जाता है । उसे अच्छी तरह मालूम है कि ये सब उन नारीवादी स्त्रियों का ही असर हैं ।

शहर से आये नारीवादी स्त्रियों द्वारा आयोजित मीटिंग में भाग लेने के कारण ही उसके विचारों में यह बदलाव आया है । सरस्वती ही नहीं उस गाँव की सारी औरतें उनकी बातों से प्रभावित हैं । गाँव के सारे मर्द जानते हैं कि उनकी औरतों के स्वभाव में जो बदलाव आया है, उसका कारण शहर से आए बड़े घर की स्त्रियाँ हैं । लेकिन वे इनके खिलाफ कुछ भी नहीं कर पाते । क्योंकि इन महिलाओं के पति ऊँचे पद पर विराजमान हैं ।

एक बार राघवन नशे में धुत्त होकर घर आया । उसने घर के बरामदे में उल्टी भी की । पहले तो सरस्वती वह सब साफ करती थी । लेकिन अब उसने ऐसा नहीं किया । यही नहीं उस दिन सरस्वती ने खाना भी नहीं बनाया । राघवन ने होटल में जाकर खाना तो खाया । लेकिन घर का खाना न खाने के कारण उसका मन एवं पेट दोनों नहीं भरा । सरस्वती ने अपने पिता की कसम खाकर राघवन से कहा कि अगर वह इस तरह ज़्यादा पीकर आयेगा तो वह खाना नहीं बनाऊँगी और भूखी रहकर मर जाऊँगी । उसने एक दम शराब पीने से मना नहीं किया बल्कि ज़्यादा पीने से मना किया है । तब से राघवन के स्वभाव में बदलाव आया । क्योंकि उसे मालूम है कि अपने पिताजी की कसम खाकर अगर सरस्वती कुछ कहती है तो उसे वह ज़रूर करके दिखाती है ।

गाँव के बाकी पुरुषों के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ । "मुत्तुरामन" ने अपनी पत्नी "कनकम्" को नशे में धुत्त होकर बहुत पीटा । इस पर अगले दिन ही पुलिस

अफसर ने उसे पुलिस स्टेशन बुलाकर धमकी दी । उसके बाद "मुत्तुरामन" भी अपनी पत्नी के वश में आया ।

` उसी तरह "पोल्सन" ने अपनी पत्नी "अन्नम्मा" का कहना न मानकर दारू पीकर उसे एवं बच्चों को पीटा । अगले दिन ही अन्नम्मा अपने घर चली गयी । नारीवादियों ने उसे एक नर्सरी स्कूल में "आया" का काम दिलवा दिया । कुछ दिन बाद बच्चे भी उसके साथ चले गए । पोल्सन अकेला हो गया । इस तरह नारीवादी स्त्रियों की बातों से गाँव के स्त्रियों एवं पुरुषों में काफी सुधार आया ।

पुराने जमाने की स्त्रियाँ सीता के समान हमेशा राम की छाया बनकर गुलामी को लेकर जीती थी । लेकिन आधुनिक युग की राम कथा की नायिका समय के बदलाव को पहचानती है और उसके अनुसार जीना भी जानती है । वह अपनी ज़िंदगी का निर्माण स्वयं करना चाहती है ।

सरस्वती अब घर में अपनी जगह बना चुकी है । अगर स्त्री घर के बाहर जाकर काम कर सकती है तो पुरुष घर के काम में उसका हाथ बाँट सकता है । इस तरह घर के बाहर एवं भीतर की दुनिया दोनों को आपस में बाँटना चाहिए । घर-परिवार में ऐसी अवस्था होगी तो नारी अपनी अस्मिता कायम रख सकती है ।

५.१.२.२ ओरु नववधुविंडे जीवितत्तिल् ग्रेयम् ग्रीनिण्डे प्रसक्ति (एक नवोढ़ा के जीवन में ग्रेयम ग्रीन की प्रासंगिकता)

कहानी की नायिका नयी नवेली दुल्हन है । कहानी की नायिका का कोई नाम नहीं । उसके दूल्हे का भी नाम नहीं । लेकिन उसके प्रेमी को प्रवीण नाम दिया गया है । नायिका शादी के बाद अपने प्यार को हृदय में लेकर ही ससुराल जाती है । पहले दिन से ही वह ससुराल में सब से विमुख होकर रहती है । क्योंकि वह अपने प्रेमी से फोन पर बातें करना चाहती है । लेकिन उसे अपनापन देने वाली कोई जगह उस बड़े घर में नहीं थी । शादी के अगले पल से लेकर उस केलिए अपनेलिए एक पल भी मिलना दूभर हो गया । किसी तरह गुसलखाने में जाकर वह प्रेमी को फोन करने की कोशिश में लगी रहती है । लेकिन वह ज़्यादा वक्त वहाँ गुज़ार नहीं सकती थी । उसका प्रेमी तो उसका फोन तक उठाता नहीं । इसलिए उस ने अपनी सहेली को फोन करके प्रेमी के बारे में पूछा । सहेली उसे सब कुछ भूलने का उपदेश देती है ।

शादी की पहली रात में प्रेमी प्रवीण के प्रति अपने प्यार के कारण वह पति को टाल-मटोल देती है । इसकेलिए वह सिरदर्द का बहाना बनाती है । इस अवसर पर लेखिका कहती है - "वह कालेज की सब से अच्छी अभिनेत्री थी न? ।"२४ इस में लेखिका ने दाम्पत्य में अभिनय की ज़रूरत पर व्यंग्य किया है । स्वस्थ एवं सफल दाम्पत्य में अभिनय की अपनी मुख्य भूमिका होती है । नायिका उसे बखूबी निभा रही है ।

अगली रात उसके पति ने उससे ज़बरदस्ती अपना संबंध स्थापित किया । इस पर नायिका कहती है कि उसने कहीं पढ़ा था - "पत्नी के साथ उसकी अनुमति के बिना शारीरिक संबंध रखना बलात्कार ही है ।"२५ मलयालमम् के मशहूर महिला साहित्यकार "माधविकुट्टी" ने भी ऐसा ज़िक्र किया था । शादी के बाद स्त्री पर पुरुष अपना अधिकार ज़मा लेता है । शादी के ज़रिये उसके शरीर पर वह बेवक्त, बेमतलब, बिना इजाज़त का हमला करता है । क्योंकि उसे लगता है कि शादी के ज़रिए समाज ने इसकेलिए उसे अनुमति दी है ।

जब नाश्ता करने के बाद पति अपने विदेशी मित्र को लेने बाहर जाता है, तो वह एक बार फिर प्रेमी को फोन करती है । लेकिन प्रेमी ने फोन नहीं उठाया । प्रवीण के बारे में जानने केलिए उसने फिर अपनी सहेली को फोन किया । सहेली ने बताया - "उसने (प्रेमी ने) मुझे बुलाया था । उसने कहा कि तुझ से कहना कि दुबारा उसे परेशान मत कर ।"२६ प्रेमी उससे अपना पीछा छुड़ाना चाहता है । फिर भी वह प्रवीण को भूलने केलिए तैयार नहीं होती ।

वह शादी से पहले अपने प्रेमी के साथ भाग जाने केलिए तैयार थी । लेकिन प्रेमी ने इससे इन्कार किया । प्रवीण के अनुसार दो दिन भूखा रहने से ये प्यार, त्याग सब चला जाएगा । घरवालों के ज़िद्द के आगे उसने शादी केलिए हाँ कर दी ।

तीसरे दिन वह "ब्यूटी पार्लर" जाने की बहाना बनाकर अपने प्रेमी से मिलने जाती है । प्रवीण एवं दोस्तों के बीच हुए बातें सुनकर वह दंग रह जाती है । उसका दोस्त अन्दर जाकर प्रेमी से कहता है - "ग्रेयम ग्रीन ने कहा था न, छोटी लड़कियों से प्यार मत करना । इसकेलिए शादी शुदा औरतें ही ठीक है । पति दफ्तर में, बच्चे स्कूल में और कोंडम बाग में ।"२७ उसके दोस्त के अनुसार शादी शुदा औरतों से प्यार करना ही ठीक है । उनसे शादी का खतरा तो नहीं होगा । इस्तेमाल करने के बाद आसानी से

उनका पीछा छुड़ा सकते हैं । अब जो नायिका की शादी हो चुकी है, तो उससे शादी की खतरा नहीं होगा । उसे वह किसी भी तरह इस्तेमाल भी कर सकता है । वह चाहे तो उसके साथ संबंध रख सकता है और जी भरने पर उसे छोड़ भी सकता है ।

अपने दोस्तों के साथ प्रेमी की बातें सुनने के बाद उसे मालूम हुआ कि उसके प्रेमी के मन में उसके प्रति प्यार नहीं है । प्रेमी से धोखा खाने के बाद वह वापस अपने घर ही जाएगी । क्योंकि वही वह सुरक्षित है । यहाँ भी चंद्रमती ने कहानी को आगे बढ़ाने केलिए बहुत कुछ छोड़ दिया । पुरुष केलिए स्त्री हमेशा खिलौना ही है । जिस तरह बच्चे नये खिलौने मिलने पर पुराने फैक देते हैं, उसी तरह पुरुष भी नये की खोज में पुरानी को छोड़ देता है । वह हमेशा नयेपन की खोज में रहता है । स्त्री ही हमेशा पुरानी हो जाती है । पुरुष सदा ताज़ा ही रहता है ।

५.१.२.३ ज्योति विश्वनाथण्डे (पोस्ट मोडेन) कथा (ज्योति विश्वनाथन की पोस्ट मार्डन कहानी)

कहानी की नायिका “ज्योति” डाक्टर की पढ़ाई विदेश में पूरा करके स्वदेश आकर बड़े अस्पताल की एम.डी बन गयी है । उसका पति “विश्वनाथन” इंजिनीयर है । विश्वनाथन अपने आप को नारीवादी मानता है । इसीलिए पत्नी का अपने काम में व्यस्त रहना, घर देर से आना, संगोष्ठियों केलिए दूर चले जाना - इन सब से वह पत्नी से गुस्सा नहीं होता । संगोष्ठियों में भाग लेने केलिए जब पत्नी जाती है, तो वह उसे एयरपोर्ट छोड़ देता है । वापस आने पर गाड़ी लेकर उसका इंतज़ार करके ले आता भी है ।

कहानी की शुरुआत में पति-पत्नी के बीच सामंजस्य को दिखाया । लेकिन कहानी के अंत में चंद्रमती उसके अंदर के खोखलेपन को दर्शाती है । ज्योति अपने काम में इतने व्यस्त है कि उसके पास घर के काम केलिए वक्त ही नहीं । घर का सारा काम नौकरानी शांता की ज़िम्मेदारी है । वह उसे बखूबी निभा रही है ।

ज्योति चिकित्सा शास्त्र में अनुसंधान कर रही है । वह “एड्स” नामक बीमारी की नयी दवा की खोज में है । इस सिलसिले में एक महीने केलिए उसके साथ काम करने केलिए विदेश से दो वैज्ञानिक भी आते हैं । वह अपने अनुसंधान में सफल भी होती

है । अपने काम से मुक्त होकर वह अपने पति के पास आकर बहुत सारी बातें करके उसके छाती पर सिर रखकर सोती है । जब आधी रात को उसकी नींद खुली तो वह अपने पति को नौकरानी के कमरे में जाते हुए देखती है । यह देखकर वह न रोयी, न शोर मचायी, बल्कि चुप रही । एक पल केलिए उसके सामने उसके आगे के औद्योगिक काम की व्यस्तता आ गयी । उसके लिए उसका करियर ही सब कुछ है । वह नौकरानी को काम से निकाल नहीं सकती । क्योंकि नौकरानी शांता पर वह पूरी तरह निर्भर है । अपना काम छोड़कर वह अपना घर नहीं संभाल सकती । यही नहीं अगर शान्ता की जगह और कोई आ जाय - "तो क्या निश्चय है कि यह समस्या नहीं दोहराएगी ।"२८ शान्ता की जगह अगर और कोई आ जाय तो भी इस समस्या का समाधान नहीं होगा । ज्योति तो हमेशा अपने काम में व्यस्त रहेगी और विश्वनाथन अपनी मनमानी करेगा ।

"एड्स" जैसी बीमारी संसार केलिए विनाशकारी है । ज्योति इस विनाशकारी बीमारी केलिए नयी दवा की खोज में है । एक ओर ज्योति समाज केलिए मंगलकारी काम में व्यस्त है । दुसरी ओर वह अपना पति खो देती है । स्त्री केलिए इससे बढ़ा संघर्ष और क्या हो सकता है । ज्योति के सामने यह चुनौती रहती है कि उसे सामाजिक अस्मिता को स्वीकारना है या पारिवारिक अस्मिता को । यहाँ ज्योति सामाजिक उन्नति केलिए अपने पति की गलती को नज़र अंदाज़ कर लेती है ।

पुरुष-वर्चस्ववादी हमारे समाज में ज्योति जैसी नारी अपनी अस्मिता का सवाल खडॉ करती है । इस कहानी में चंद्रमती जी ने "एड्स" को "मानव की आज़ादी के रुकावट के रूप में "२९ चित्रित किया है । इसे विश्वनाथन के नौकरानी के साथ लैंगिक संबंध के साथ जोड़कर देखना है । ज्योति की नयी दवा बिना डर के स्त्री-पुरुष संबंध स्थापित करने की आज़ादी देगी । उसके पति का नौकरानी के साथ संबंध को वह विवश होकर चुपचाप सह लेती है । वह अपनी अस्मिता अपनी औद्योगिक प्रगति में ढूँढती है । इतिहास गवाह है कि आदिकाल से लेकर यहाँ पुरुष-वर्चस्ववादी समाज ही रहा है । इस समाज ने हमेशा स्त्री को दबाकर रखने की कोशिश की है । इसके तरीके अलग अलग हो सकते हैं । लेकिन लक्ष्य एक है ।

इस कहानी में चंद्रमती ने स्वास्थ्य के क्षेत्र के भ्रष्टाचार का ज़िक्र किया है । इसकेलिए उन्होंने ज्योति को "चिकित्साक्षेत्र का सौदागर" ३० कहा । उसी तरह नये साहित्य-आलोचकों की ओर भी चंद्रमती ने अपना व्यंग्य बाण चलाया । वे कहती है -

"हमारा विश्वनाथन कविता लिखता है । कविता माने "डी कंस्ट्रक्षनिस्ट" । आलोचकों के सिवा सब की समझ में आनेवाली कविता ।"३१ उनके अनुसार भाषाविज्ञान के अतिक्रमण ने साहित्यिक आलोचना को आम आदमी से दूर कर दिया है । उन्होंने नारीवादियों को भी नहीं छोडॉ । ज्योति एवं विश्वनाथन के पड़ोसियों के बारे में वे कहती हैं- "ये पड़ोसी (औरतें) अपने आप को नारीवादी मानने वाले हैं । लेकिन पति की रक्त चाप की दवा देने केलिए समय पर घर पहुँचने वाली है ।"३२ उनकी कहानियाँ नारीवाद के नाम पर या लेबल पर नहीं लिखी गयी । बल्कि कहानी के पंक्तियों के बीच हम इसे ढूँढ सकते हैं ।

५.१.२.४ तांगुचुरुलुकल

कहानी की नायिका "वसुंधरा" गृहिणी है । अपने पति के होते हुए भी वह रमेशन के साथ अनैतिक संबंध रखती है । शादी से पहले वसुंधरा के पति "ब्रह्मदत्तन" ने किसी से प्यार किया था । "गौरी" नामक अपनी प्रेमिका की याद में वह अपने किराये के घर में "गौरीगात्र"३३ नामक नारियल का पेड़ लगाना चाहता है । अब भी उसे ज़िंदगी के उलझनों में कभी कभी उसकी याद आती है । उसकी यादों को बरकरार रखने केलिए ही वह उसके नाम के नारियल का पेड़ लगाना चाहता है । वसुंधरा अपने पति की गैर हाज़िरी में रमेशन के साथ अनैतिक संबंध रखती है । जब रमेशन उससे कहता है कि वह किसी दूसरी लड़की के साथ शादी करनेवाला है तो वसुंधरा दंग रह जाती है ।

हमारी सामाजिक व्यवस्था में पति-पत्नी एक दूसरे को संभालनेवाले बेल के समान है । लेकिन इस अलिखित नियम में जीनेवाले पति-पत्नी पारिवारिक संबंध के बाहर उनके अनुरूप सहारा ढूँढते हैं । इस के सहारे वे शारीरिक एवं मानसिक रूप से पूर्णता पाने की कोशिश करते हैं । इसीलिए उसकी शादी को लेकर परेशान एवं दु:खी वसुंधरा से रमेशन कहता है - "दोनों में से सब से अच्छी चीज़ लेनेवाली तुझे अगर यह मालूम नहीं है कि तू क्या दे रही है, तो वह स्वाभाविक है । कुछ भी हो, मुझे जाने दो ।"३४ वसुंधरा पति एवं प्रेमी से उसे जो चाहिए वह लेती है, चाहे वह शारीरिक सुख हो या मानसिक ।

कहानी की शुरुआत में वसुंधरा करेले की बेल को जुही की बेल एवं गुड़हल के पौधे पर पसार देती है । कुछ ही समय में करेला अपने चीरक के सहारे दोनों पर पसार रहती है । करेले का बेल आधुनिक नारी का प्रतीक है । चमेली का बेल एवं गड़हल का

पौधा प्रेमी एवं पति का प्रतीक है । वसुंधरा रूपी करेले का बेल अपने चीरक के सहारे चमेली रूपी प्रेमी के बेल एवं पति रूपी गड़हल के पौधे पर पसार कर आगे बढ़ती है । लेकिन प्रेमी रमेशन जब शादी करने का फैसला करता है तो उसे गुस्सा आता है । वह रमेशन से पूछती है - "एक पत्नी, तुझे ऐसे क्या देनेवाली है, जो तुझे मुझ से प्राप्त नहीं ।"३५ रमेशन इसका उत्तर देना नहीं चाहता । उसे मालूम है कि वसुंधरा एवं उसके बीच के प्यार की खुशबू चमेली के फूल के समान है । लोगों के सामने वह इस का रस लूट नहीं सकता । चोरी-छिपे ही वह उससे मिल सकता है ।

रमेशन ने वसुधारा को अपने पति के साथ सिनेमा थियेटर में देखा था । उसने यह भी देखा कि वह किस तरह अपने पति के साथ खुश रहती है । लेकिन यह मानने केलिए वसुंधरा तैयार नहीं है । कुछ भी हो रमेशन शादी करने के अपने इरादे से पीछे हटने केलिए तैयार नहीं ।

कहानी के अंत में वसुंधरा चमेली एवं गड़हल पर पसारे करेले के बेल को काट देती है । बेल के काटने के बाद करेला का चीरक नीचे गिरता है । पौधे से झूलकर नीचे गिरने के बाद ही करेले के बेल स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ सकता है । चीरक के सूखने के बाद ही वह चमेली के बेल एवं गड़हल के पौधे से अपना संबंध तोड़ सकती है । उसके बाद उसे स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ना है । वसुंधरा रूपी करेले के बेल का अस्तित्व ब्रह्मदत्तन एवं रेमेशन के साथ जुड़ा हुआ है । रमेशन से उसका संबंध अब टूट चुका है । अगर ब्रह्मदत्तन रूपी सहारा भी छूट जाता है तो भी उसे ज़िंदगी में आगे बढ़ना ही है । क्योंकि आधुनिक नारी की अस्मिता किसी का सहारा नष्ट होने से एक दम नष्ट नहीं होती । अपने आपको संभालने की क्षमता उसमें है । लेखिका आशा करती है कि आधुनिक नारी होने के कारण वह अपने आप को संभालकर आगे बढ़ेगी ।

रमेशन ने वसुंधरा से करेले के बेल को चारों ओर फैलने के लिए पंडाल डाल कर देने को कहा था । साथ ही अन्य पौधों को उखाड़ फेंकने को भी कहा । उसके अनुसार "सिर्फ फायदा मिलने वाले पौधों को पालना है । यही मेरी नीति है ।"३६ वह अपनी प्रेमिका वसुंधरा से ऊब चुका है । अब उससे रमेशन को किसी तरह का फायदा नहीं है । रमेशन ने वसुंधरा का इस्तेमाल किया । अब वह उससे ऊब गया है । इसलिए वह नया सहारा ढूँढता है । पुरुष ज़्यादा दिन तक किसी के साथ टिक नहीं सकता । वह तो नया सहारा ढूँढ ही लेता है ।

५.१.२.५ पावनस्मरणयकु नेरमिल्लाते (पुण्य स्मृति केलिए फुर्सत नहीं)

कहानी की नायिका अपने पति एवं बच्चों के साथ टी. वी देख रही है । उसे दूरदर्शन के खबर से पता चलता है कि उसके प्रेमी की मृत्यु हुई है । खबर सुनने के बाद वह थोड़ी देर केलिए स्तब्ध रहती है । वह अपने प्रेमी की मृत्यु पर दु:खित होकर थोड़ी देर चुप रहना चाहती है । उसके लिए दो बूँद आँसू बहाना चाहती है ।

लेकिन घरवालों के सामने वह अपना दु:ख प्रकट करना नहीं चाहती । इसलिए वह रसोई में चली जाती है । रसोई में उसे रात के खाने केलिए बारह रोटियाँ बनानी है । लेकिन तीन रोटियाँ बनाने के बाद वह अपने कमरे में चली जाती है । थोड़ी देर बाद उसे ढूँढकर बेटियों के साथ पति आकर कमरे का दरवाज़ा खटखटाने लगता है । एक पल केलिए उसे गुस्सा आता है और वह अपने आप से पूछती है - "मैं कुछ भी करूँ, इससे इन्हें क्या फरक पड़ता है । मैं ने किसी की जरूरतों पर अब तक कोई अडचण नहीं डाली । क्या मुझे अपने लिए कुछ पल का भी हक नहीं है? ।"३७ लेकिन अगले ही पल उसे लगता कि प्यार भरे इन आंखों को देखकर ये सब मैं इनसे कैसे पूछ सकती हूँ ।

उसने अपने पति एवं बच्चों की सारी जरूरतों को एक अच्छी पत्नी एवं माँ बनकर पूरा किया । अब उसे अपने लिए कुछ पल की ज़रूरत है । लेकिन परिवार में स्त्री को अपने लिए कुछ समय मिलना मुश्किल है ।

हमारा समाज और परिवार स्त्री को इस धोखे में रखता है -'घर स्त्री का है' । लेकिन उसे कु छ पल अकेले बिताने केलिए घर में जगह ढूँढनी पड़ती है । यही "ओरु नववधुविन्डे जीवितत्तिल ग्रेयम ग्रीनिडे प्रसक्ति" नामक कहानी में नई दुल्हन की स्थिति है । वह ससुराल में अपने लिए जगह ढूँढती है । घर-परिवार में उसे अपने लिए कुछ पल अकेले बिताना मुश्किल हो जाता है । यह कैसी विडम्बना है? कैसी नीति है?

वर्जिना वुल्फ ने ठीक ही कहा है कि घर में स्त्री को अपनेलिए एक कमरा तक नहीं है । स्त्री का अपना कुछ भी नहीं होता । उसका सब कुछ सब केलिए होता है । उसकी पसंद-नापसंद के बारे में किसी को पता नहीं । लेकिन उसको सब की रुचि-अरुचि, इच्छा-अनिच्छा आदि के बारे में पता है । इस तरह वह अपनी अस्मिता दूसरों में ढूँढती है । वह अपना अस्तित्व एवं अस्मिता परिवार में पाने की कोशिश करती है । क्योंकि इसी में उसकी खुशी है और यही उसकी पहचान है ।

स्त्री का अपना दु:ख और दर्द नहीं होता । उसका दु:ख, दर्द, हँसी सबकुछ परिवार से जुड़ा हुआ है । वह परिवार की इज्ज़त-आबरू की रक्षा केलिए अपना दर्द को बेजुबान होकर दबा देती है । स्त्री की वैयक्तिक आज़ादी पर हमेशा प्रश्न चिह्न लगाया जाता है । इस कहानी की नायिका अपनी वैयक्तिक आज़ादी नष्ट होने पर भी अपने पति एवं बच्चों से नफरत नहीं करती । परिवार के सदस्यों के बीच प्यार का जो बंधन है, वह उसे परिवारवालों पर दोष लगाने से रोक लेता है ।

इन सब से बढ़कर इस यथार्थ से हम आँख नहीं मूँद सकते कि अपने पूर्व प्रेमी की मृत्यु पर दु:ख प्रकट करने का समय या आज़ादी उसे प्राप्त नहीं । चंद्रमती के अनुसार घरवालों का उसके प्रति प्यार एवं ममता के सामने उसका वैयक्तिक अस्मिता नगण्य है । घर परिवार केलिए अपने आप को समर्पित करनेवाली स्त्री की ज़िंदगी में काल्पनिकता, गृहातुरता, या विगत सपनों केलिए कोई जगह नहीं । क्योंकि वह परिवार के ढाँचे में अपने आप को डालकर सब कुछ परिवार केलिए न्योछावर करने में अपनी ज़िंदगी की सार्थकता मानती है । या यों कह सकते है कि उसकी वैयक्तिक अस्मिता उसके परिवार के साथ जुड़ी हुई है ।

५.१.२.६ अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन)

स्त्री को गुलाम बनाकर रखनेवाली हमारी पारिवारिक व्यवस्था से आज़ाद होनी की इच्छा रखनेवाली स्त्री का चित्रण इस में हुआ है । पूरी ज़िंदगी दूसरों केलिए जीनेवाली स्त्री जब अपने "स्वं" को पहचानती है तो उसके अन्दर दु:ख, दर्द एवं निराशा का अनुभव होता है । "अंजामंडे वरवु" कहानी की नायिका सावित्री कभी भी नारी की आज़ादी केलिए नहीं ललचायी । वह अपने सपनों के साथ आज़ाद होकर जीना चाहती थी । वह अपने लिए एक कमरा और उस में लिखने केलिए एक मेज़ चाहती थी । लेकिन उसके लिए वह भी एक सपना बन कर रह गया ।

सावित्री का पति "सत्यनेशन" के मन में अब उसके प्रति कोई प्यार या ममता नहीं । उसके लिए घर के अन्य सामानों की तरह वह भी एक चीज़ है । उसे कहीं से प्यार नहीं मिला - न पति से, न बच्चों से । साँस-ससुर से तो बिलकुल नहीं । वह बिना किसी प्रतिक्रिया के घर-गृहस्थी संभाल रही है । उस घर में सब अपनी दुनिया में व्यस्त है । बीमार साँस-ससुर की सेवा केलिए एक होम-नर्स है । उसे लगता है कि घर में उस होम-नर्स गीतालक्ष्मी की जगह उससे कहीं ज़्यादा अच्छी है । इन सब से ऊबकर वह

आत्महत्या करने के बारे में सोचती है और निश्चय करती है कि पाँचवी रेल गाड़ी के सामने वह अपने आप को समर्पित करेगी । वह अपनी आत्महत्या कुछ इस प्रकार करना चाहती है कि देखनेवालों को वह दुर्घटना लगे ।

जब सावित्री ने आत्महत्या करने का निश्चय किया तब लेखिका पूछती है - “सावित्री क्यों आत्महत्या करना चाहती है? ।”३८ सावित्री के बारे में जानने के बाद शायद इसका उत्तर मिलेगा । लेखिका अपने इस सवाल का उत्तर यों देती है - “यहाँ से अपनी बचाव न चाहनेवाली ऐसी कौन सी नारी होगी? ।”३९ सावित्री जैसी औरत इस दुनिया से किसी भी तरह अपना बचाव चाहती है ।

ज़िंदगी के आखिरी दिन सावित्री किसी से झगड़ा करना नहीं चाहती । हमेशा होम-नर्स गीतालक्ष्मी एवं घर की नौकरानी के बीच चूल्हे को लेकर झगड़ा होता था । इसलिए उसके पति ने हीटर का एक चूल्हा गीतालक्ष्मी को दे दिया । गीतालक्ष्मी चूल्हे पर पानी गरम करती है । इस वक्त सावित्री साँस के कमरे में चली जाती हैं । लेकिन सावित्री को देखकर उसकी साँस रोनी लगी - “गीतालक्ष्मी जल्दी आ । इसे यहाँ से जाने को कह दे । मैं इसे देखना नहीं चाहती ।”४० नर्स आकर सावित्री से कमरे के बाहर जाने को कहती है । यह सावित्री केलिए अपमान ही था । लेकिन आज के दिन वह सब कुछ सहने केलिए तैयार हुई । क्योंकि आज उसकी ज़िंदगी का आखिरी दिन है ।

उसके बाद वह ससुर के कमरे में चली गयी । रक्तचाप के कारण उनकी आखों की रोशनी चली गयी थी । दरवाज़े की आहट सुनकर उन्होंने सोचा कि होम नर्स गीतालक्ष्मी है । इसलिए वह कहने लगा - “जल्दी आ....कल रात तू क्यों नहीं आई । बूढ़ा है तो सोच लिया होगा कि यही काफी है । मैं देर तक तेरे इंतज़ार में सोया नहीं । आ.... ।”४१ बूढ़े ससुर की कामोन्माद भरी बातें सुनकर सावित्री वहाँ से चली गयी ।

उसके बाद वह बच्चों को बुलाने केलिए उनके कमरे में जाती है । बच्चों ने उसे वहाँ से भगा दिया । बेटी ने कहा - “माँ,चली जा न । हम अपना काम स्वयं करेंगे ।"४२ अब वे अपना काम स्वयं कर सकते हैं । घर में पिता, दादा-दादी आदि के माँ के साथ बर्ताव का असर बच्चों पर पड़ता है । इसीलिए वे माँ से इस तरह की बातें करते हैं ।

उसके बाद उसे जाने केलिए एक ही जगह बची थी - अपना कमरा । लेकिन सावित्री वहाँ जाना नहीं चाहती । उस कमरे में उसे बिना प्यार की रति ही प्राप्त होती

है । स्त्री एवं पुरुष के प्यार का अंतर यही है । स्त्री प्यार के साथ अपना शरीर पति को समर्पित करना चाहती है । लेकिन पुरुष स्त्री पर शरीर के ज़रिये अपना हक जताना चाहता है ।

बच्चों के बीच होनेवाले झगड़ों केलिए भी पति सावित्री को ही ज़िम्मेदार मानता है । पति के अनुसार उसके कोख में जन्म लेने के कारण ही बच्चे इतने बिगड़ गये हैं । बच्चों के स्कूल चले जाने के बाद वह अपने पति के साथ बैठकर नाश्ता करना चाहती है । लेकिन इसकेलिए भी सत्यनेशन उसे खरी-खोटी सुनाता है ।

सावित्री की शादी बीस साल की उम्र में सत्यानेशन के साथ हुई थी । बत्तीस साल की अपनी ज़िंदगी को वह परख रही है । उसकी ज़िंदगी का हरेक पल दूसरों केलिए ही था । वह अपने सपनों के साथ निश्चिन्त होकर जीना चाहती थी । लेकिन वह सत्यनेशन की ज़िंदगी में पहुँच गयी, जहाँ प्यार केलिए कोई जगह नहीं । सिर्फ ज़िम्मेदारी निभाना ही ज़िंदगी बन गयी - माँ, पत्नी, और बहू की ।

मरने से पहले वह एक बार सत्यनेशन को छूना चाहती है । लेकिन नौकरानी गीतालक्ष्मी के साथ हँस कर बातें करने वाले पति को देखकर उसने छूने का अपना इरादा बदल दिया । शादी के बारह सालों में एक बार भी सत्यनेशन ने उससे इस तरह हँसी-खुशी बातें नहीं की थी ।

आत्महत्या करने केलिए सावित्री पटरी के बीच में खड़ी होती है । एक पल में दाएँ या बाएँ की ओर कूदकर वह ज़िंदगी में वापस आ सकती है । पिछले बारह सालों में उसने ऐसा ही किया था । अब उसने अपने मन को दृढ़ बना दिया है । गाड़ी उसके पास पहुँचने से पहले पटरी से फिसलकर झील में गिर पड़ी । पटरी से फिसलकर गाड़ी के गिरने केलिए आँधी की ज़रूरत है । लेकिन घटना के चश्मदीन गवाह सावित्री का मानना हैं कि वहाँ आँधी तो क्या हवा तक न चली थी । लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार "कई ऐसी आँधी हैं जो मनुष्य के निश्वास के समान नग्न नेत्रों से दिखाई नहीं देती ।"४३

स्त्री के आहों (निश्वास) में इतनी शक्ति है कि वह आँधी के समान सब कुछ बर्बाद कर सकती है । लेकिन नारी अपने इस शक्ति का इस्तेमाल नहीं करती । इतने सालों से सावित्री के अन्दर दबाकर रखी गयी आहें जब बाहर निकली तो उसमें सब कुछ तबाह करने की शक्ति होती है ।

सावित्री पत्नी के रूप में, माँ के रूप में एवं बहू के रूप में अपनी पहचान खो चुकी है । उस के बच्चे उससे प्यार भरी बातें नहीं करते । पति को उसका प्यार नहीं, रात में सिर्फ उसका शरीर चाहिए । इसलिए वह कहती है कि उसके कमरे में "स्नेह रहित रति सो रही है ।"४४ सावित्री अब इन बंधनों से मुक्ति पाना चाहती है । उसने अपनी अस्मिता को पहचान लिया । लेकिन उसे कायम रखने की हिम्मत उसमें नहीं है । इसीलिए वह आत्महत्या करना चाहती थी ।

५.१.२.७ 9/11

स्त्रियों के बारे में हमारे समाज की आम धारणा को इस कहानी में व्यक्त किया गया । साथ ही साथ इन सब से भिन्न होकर जो यथार्थ है उसका भी इस में ज़िक्र हुआ है । यह ११ सितंबर २०११ में अमरीका में हुए विस्फोड़ के वातावरण में लिखी कहानी है । कहानी के दो मुख्य स्त्री पात्र है - मीना और ज्योत्सना । दोनों एक साथ कालेज में पढ़ते थे । मीना अमरीका में रहती है । जब वह भारत में आयी तो ज्योत्सना से मिलना चाहती है । दोनों बरसों बाद मिल रहे हैं ।

ज्योत्सना हमारे भारतीय परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है । वह परिवार में पति एवं बच्चों केलिए जीनेवाली नौकरी-पेश मध्यवर्ग की नारी है । घर में पति एवं बच्चों केलिए खाना बनाकर रखने के बाद ही वह अपनी सहेली से मिलने बाहर जाती है । लेकिन अगर पति को अपने दोस्त से मिलने जाना होता तो वह यों ही जा सकता है । उसे घर की जिम्मेदारियों को पूरा करके जाने की ज़रूरत नहीं । स्त्री को इस धोखे में रखा जाता है कि घर स्त्री का है । हाँ, यह सही है कि घर पर स्त्री का ही अधिकार है । लेकिन उसे घर के किसी भी बात पर निर्णय लेने का अधिकार नहीं ।

दोनों सहेलियाँ खाना खाने केलिए भोजनालय जाती हैं । वहाँ ज्योत्सना के साथ दफ्तर में काम करनेवाली सहेली उससे पूछती है - "क्या तुम अकेली आयी हो? ।"४५ यह सुनकर मीना को गुस्सा आया । ज्योत्सना उसे समझाने की कोशिश करती है । हमारा समाज बेवक्त स्त्री को हमेशा पुरूष के साथ ही देखना चाहता है । दो स्त्रियाँ साथ में हैं तो भी वह अकेली मानी जाती है । समाज की ऐसी प्रतिक्रियाओं पर मीना अपना विरोध प्रकट करती है । उसके मन में अपने देश के प्रति हमेशा घृणा ही है । क्योंकि भारतीय समाज की ऐसी धारणाओं से वह पहले से ही परिचित थी ।

दोनों पुरानी बातें याद करती हैं । उसके बाद दोनों साहित्य के बारे में चर्चा करने लगती है । इस बीच ११ सितंबर २०११ की घटना के बारे में लिखी गयी एक कविता के बारे में भी चर्चा हुई । उस कविता के अनुसार हमारी ज़िंदगी बहुत छोटी है । भविष्य के बारे में किसी को कुछ भी मालूम नहीं । इसलिए हमें अपने मनोविकारों को आनेवाले कल केलिए रखना नहीं चाहिए । क्योंकि अगर आगे बताने का समय नहीं मिला तो क्या करेंगे । अपने दोस्त से अलविदा कहकर मन में ढेर सारा प्यार लेकर ही ज्योत्सना घर वापस आयी । घर आते ही पति पूछता है कि तुम्हारे बीच कौन सी बातें हुई । पति खिल्ली उठाकर पूछता है - "क्या कहा सहेली ने? न्यूयार्क में साड़ी का दाम कम है क्या? सोने का दाम क्या है? ।"४६ पति के अनुसार "साडी या सोने के सिवा स्त्रियाँ ओर किसके बारे में बातें करेगी? "४७ । उसके अनुसार स्त्रियों के बीच बौद्धिक वार्तालाप संभव नहीं है । यह सुनने के बाद वह रसोई घर जाती है । वहाँ का महोल देखकर वह अपने आप से पूछती है - "समय के बीत जाने से पहले मैं किस से क्या कहूँ? ।"४८ यह सच है कि मनोविकारों को खासकर प्यार को दबाकर रखना नहीं चाहिए । उसे समय पर प्रकट करना चाहिए । लेकिन यह भी सच है कि उसकेलिए अनुकूल माहौल का होना भी ज़रूरी है ।

नारी का बुद्धिजीवी होना पुरुष समाज केलिए खतरा है । क्योंकि अगर वह सोचने लगेगी तो बहुत सारे पोल खुल जाएँगे । नारी को अपने वश में रखने केलिए पुरुष ने कितने सारे नियम, आचार एवं रूढ़ियाँ बनाया है । अगर वह सोचने लगेगी तो उन सब को वह गलत स्थापित करेगी । इससे पुरुष के अहं पर चोट लगेगी । पुरुष को बस बुद्धिजीवी होने का दिखावा करना है ।

५.१.३ चंद्रमती की कहानियों में सामाजिक नारी अस्मिता

नारी के सामाजिक अधिकार के प्रति चंद्रमती वाकिफ है । नारी को सामाजिक अधिकार तभी प्राप्त होगा जब वह स्वतंत्र रूप से समाज में विचरण करने तथा अपनी अलग पहचान को बनाये रखने की कोशिश करें । इसके साथ-साथ उसे अपने राजनैतिक, कानूनी, पारिवारिक एवं आर्थिक अधिकारों को भी प्राप्त करना है । तभी सही अर्थ में वह समाज में अपनी अस्मिता को बनाए रख सकती है ।

चंद्रमती की नायिकाएँ सामाजिक व्यवस्था एवं नियमों के विरुद्ध अपनी आवाज़ ज़रूर उठाती है । लेकिन उनकी आवाज़ को दबा दिया जाता है । उनकी नायिकाओं में

सामाजिक बंधन को तोड़ने की क्षमता नहीं है । वे हमेशा घर-परिवार एवं समाज से जुड़ी रहती है । जब भी नारी अपनी अस्मिता को बनाए रखने की कोशिश करती है तब समाज उसे चारों तरफ से जकड़ लेता है ताकि वह हिल न सकें ।

५.१.३.१ मालत्तिनु वेलियिल (दराज के बाहर)

कहानी की नायिका समाज के निम्न स्तर की है । नीली साड़ी पहनकर "वह" अकेले समुद्र तट पर सैर केलिए घर से निकलती है । कहानी में वह बेनाम है । "वह" बस में सफर करते समय एक पुरुष को झाँक कर देखती है । एक पुरुष किसी लड़की को अगर झाँक रहा है तो वह स्वाभाविक है । लेकिन लड़की का झाँकना समाज को अस्वाभाविक लगता है । चंद्रमती की "सर्वे", "अमलयुड़े मोचनम्", "जनकीय कोड़ती" जैसी कहानियों की तरह इसमें भी पंक्तियों के बीच से अर्थ निकालना पड़ता है ।

नीली साड़ी वाली "वह" समुद्र तट पर भिन्न तरह के लोगों को देखती है । समुद्र तट पर वह देर रात तक रहती है । इस के बीच उसने जो कुछ भी देखा और महसूज़ किया, आगे कहानी में इसी का ज़िक्र है । उसे समाज के खोखलेपन से नफरत है । समुद्र तट पर हँसते जोड़ियों को देखकर वह असमंजस में पड़ती है कि ये पति-पत्नी है या प्रेमी-प्रेमिका । वह उस जोड़ी के पास जाकर पुरुष से इस तरह बर्ताव करती है कि पुरुष का उसके साथ सालों का संबंध था । वह उस पुरुष से कहती है - "विजयन, तुम इतने दिन तक कहाँ थे । यहाँ आने के बाद भी तुम ने मुझे याद नहीं किया । ....आप क्यों चुप हैं? इस गरीबन को तुम भूल गए क्या? मैं ने सुना है कि सब मर्द एक जैसे होते हैं । लेकिन तुम....पुरानी बातों को कैसे भूल सकते हो ।"४९ ऐसी बातें बोलकर वह उसके साथ खड़ी लड़की को विश्वास दिलाती है कि उस आदमी ने उसे धोखा दिया है ।

इसके बाद वह एक पुरुष से जानबूझकर टकराती है । जब वह आदमी हिचकिचाता है तो वह कहती है - "मैं ने आप को देखा नहीं, मैं सोच में डूब कर चली थी ।"५० अक्सर पुरुष ही ऐसी हरकतें करता है । चंद्रमती की नायिका पुरुष की हरकतें करती है । वह देखना चाहती है पुरुष के करतूत अगर स्त्री करने लगेगी तो समाज की प्रतिक्रिया क्या होगी । नायिका के करतूत से वह आदमी नीरस होकर भीड़ में गायब हो जाता है । वह अपने आप से वादा करती है - "एक दिन मैं भी इस समुद्र तट पर आऊँगी । उस वक्त मेरे कमर पर हाथ रखकर, मेरे कानों में प्यार भरी बातें कह कर मेरा सूरज मेरे साथ होगा ।"५१

अपनी ज़िंदगी को लेकर उसके मन में कई सपने हैं । वह छोटा सा सुंदर परिवार चाहती है । उससे बहुत प्यार करनेवाला पति चाहती है । वह अपने पति के कानों में प्यार भरी बातें कहकर समुद्रतट पर टहलना चाहती है । वह अपने बच्चे के नामकरण का सपना देखती है । उसे अच्छी तरह मालूम है कि यह सब सपने बनकर ही रह जाएंगे । वह ज़िंदगी से निराश नहीं । वह स्वच्छंद रूप से समाज में रहना चाहती है ।

वह गरीब है । इसलिए शादी एवं परिवार सिर्फ उसके सपने तक ही सीमित है । हमारे समाज में दहेज एक ऐसी डरावनी सामाजिक सच है, जिसके रहते झोंपड़ी में रहनेवाली लड़की शादी का सपना नहीं देख सकती । बाकी सारे गुणों के होते हुए भी अगर दहेज देने केलिए उसके माँ-बाप के पास पैसा नहीं है तो उसे एक अच्छी गृहस्थी का सपना देखने तक का हक नहीं ।

समुद्र तट से वापस घर जाते वक्त रास्ते में वह अपनी सहेली मालिनी से मिलती है । उसकी सहेली को उसकी गरीबी के बारे में मालूम नहीं । अगर मालूम होता तो शायद ही मालिनी उससे दोस्ती करती । सहेलियों के बीच उसका अलग व्यक्तित्व है । वह अपनी सहेली से अपनी गरीबी छिपाकर दोस्ती कायम रखती है । उसकी सहेली उससे डॉ.अशोक के बारे में बताती है । डॉ.अशोक जर्मनी से पढ़ाई पूरा करके पिछले हफ्ते ही स्वदेश लौट आया है । मालिनी के माता-पिता चाहते थे कि दोनों शादी करें । लेकिन इस बीच मालिनी ने रघु से प्यार किया और रघु के साथ उसकी सगाई भी हो चुकी है । अब डॉ.अशोक को देखने के बाद मालिनी उसके व्यक्तित्व की ओर आकर्षित हुई । वह उससे शादी करना चाहती है । तब नायिका मालिनी से सगाई की अंगूठी फेंक देने को कहती है । लेकिन ऐसे करने से पहले मालिनी अशोक के मन की बात जानना ज़रूरी समझती है । इसलिए वह नायिका के ज़रिए मालिनी के प्रति अशोक की राय जानने की कोशिश करना चाहती है । वह मालिनी को दिलासा देती है कि वह अशोक के दिल की बात ज़रूर जान लेगी । तब नायिका मालिनी से अशोक से उसकी मुलाक़ात करवाने को कहती है । वह झोंपड़ी के कुछ पीछे के रास्ते पर मालिनी से गाड़ी रुकवाकर झोंपड़ी की ओर चली जाती है । क्योंकि वह मालती को यह बताना नहीं चाहती कि वह इस झोंपड़ी में रहती है ।

समाज के खोखलेपन से नफरत करनेवाली कहानी की नायिका समाज से नहीं डरती । उसे इस के बारे में कोई फिक्र नहीं है कि उसके बारे में समाज क्या सोचेगा ।

तभी तो वह बस में सफर करते समय लड़के को झाँकती है और समुद्र तट पर जानबूझकर एक आदमी से टकराती है । उसकी सारी हरकतें लड़कों जैसी ही है । लेकिन उसका मन कोमल है । वह सपनों की दुनिया में सफर करती है । ज़िंदगी को लेकर उसका अपना अलग दृष्टिकोण है ।

उसकी सहेली मालिनी के कहने के अनुसार अगले दिन ही वह डॉ.अशोक से मिलना चाहती है । मालती उससे अगले दिन साढ़े चार बजे मुलाक़ात का समय बताकर अलविदा कहती है । उस वक्त वह सोचती है - "अगर डॉ.अशोक मालिनी के कहने के अनुसार ही है तो.... ।"५२ वाक्य को वह अधूरा छोड़ देती है और होंठों के मुस्कान को दबा देती है । यह तय है कि जो भी हो वह कभी मालती के बारे में अशोक की राय जाननेवाली या पुछनेवाली नहीं । क्योंकि मालिनी से अलविदा कहते वक्त उसने अपने आप से कहा - "जा, जाकर सुख की नींद ले । शायद कल तू सो नहीं सकेगी ।"५३ यह तय है कि वह अपने बारे में अशोक की राय बनाने की कोशिश करेगी ।

५.१.३.२ जनकीय कोड़ती (लोक अदालत)

"जनकीय कोड़ती" में नायिका मेबिल साइमन की पैरवी हो रही है । उसके ऊपर कई इल्ज़ाम लगाए जाते हैं । वह सलोमी उपनाम पर साहित्य रचना करती है । उस पर लगाया गया पहला एवं महत्वपूर्ण इल्ज़ाम यह था कि वह साहित्य रचना करती है । उस पर यह आरोप भी लगाया गया कि वह भारतीय स्त्री के समान अपने घर-परिवार के अंदर चिपककर नहीं रहती । वह खुले विचार रखनेवाली है ।

मेबिल के पति के अनुसार वह विचित्र स्वभाव वाली औरत है । स्त्रियों केलिए समाज के द्वारा बताये गये काम करने में उसे बिलकुल रुचि नहीं । वह हमेशा किताबों में डूबी रहती है । इसी वजह से दूध का उबालकर बाहर जाना, उसे पता नहीं जाता । हमारे पुरुष-वर्चस्ववादी समाज केलिए स्त्री के साहित्य क्षेत्र में प्रवेश करना बहुत बड़ा अपराध है । उसके पति का कहना है कि वह रात को खुले आसमान ताकने केलिए छत्त पर जाती है । हमारे समाज के आम पुरुष के समान वह भी चाहता है कि उसकी पत्नी जो भी काम करें उसकेलिए ही करें ।

अदालत उससे कई सवाल पूछता है, जिसका संबंध दैनिक जीवन से है । लेकिन उसे किसी भी सवाल का जवाब मालूम नहीं था । उससे घर-गृहस्थी केलिए ज़रूरी गैस,

चावल जैसे चीज़ों का दाम पूछा जाता है । समाज की आम धारणा है कि एक गृहणी होने के नाते उसे इन चीज़ों की जानकारी होनी चाहिए । क्योंकि पुस्तकें पढ़ना, साहित्य रचना जैसे बौद्धिक कार्य सिर्फ पुरुष ही कर सकता है । यह स्त्री का काम नहीं है । कहानी के अंत में लोक अदालत यह फैसला सुनाता - "मेबिल, बच्चों की देखबाल करके अपने पति केलिए उसका प्रिय खाना बनाने सीखना । उसके कपड़ों को धोकर, उसका घर साफ कर के उसके बच्चों का देखभाल करके रहना । उसे नौकरी को समय काटने का उपाय मानकर एक अच्छी माँ एवं पत्नी बनकर मृत्यु तक जीने की सज़ा सुनाती है ।"५४ समाज में हर स्त्री के साथ यही होता है । उसे ज़िंदगी भर दूसरों केलिए जीना पड़ता है । दूसरों केलिए जीकर वह अपने लिए जीना भूल जाती है । इस कहानी में भी स्त्री की अपूर्णता की बात कही गई है । जिस तरह पुरुष के बिना स्त्री अपूर्ण है, उसी तरह पुरुष भी स्त्री के बिना अपूर्ण है । लेकिन यह मानने केलिए हमारा पुरुष-वर्चस्ववादी समाज तैयार नहीं है । अगर स्त्री को नौकरी में तरक्की प्राप्त होती है तो वह उसकी काबिलियत नहीं मानी जाती है ।

"अमलयुडे मोचनम्(अमला की मुक्ति)" एवं "जनकीय कोड़ती(लोक अदालत)" आदि कहानियों में यह दिखाने की कोशिश की गयी है कि नारी को अपनी अस्मिता बनाये रखने केलिए पुरुष-समाज से संधर्ष करना पड़ता है । यह संघर्ष शारीरिक एवं बौद्धिक धरातल को पार कर शैक्षिक एवं मानसिक धरातल पर पहुँचता है ।

समाज महिला साहित्यकार को अलग दृष्टि से देखता है । साहित्य रचना करने का अधिकार सिर्फ पुरुष को ही है । स्त्री साहित्य रचना नहीं कर सकती । महिला साहित्यकार को हमेशा समाज दूसरे स्तर के नागरिक के रूप में देखता है और शंका की दृष्टि से उसका पीछा करता है । भारतीय परंपरा एवं संस्कृति स्त्रियों को घर के चहार-दीवारी के अंदर रहने केलिए बाध्य करती है ।

साहित्यकार के दिल एवं दिमाग आम लोगों से भिन्न होता है । वह अक्सर काल्पनिक दुनिया में चला जाता है । इसलिए उसके चरित्र एवं बर्ताव आम लोगों से भिन्न होता है । इसीलिए मेबिल रात को खुले आसमान ताकने छत्त पर जाती है । उसके पति के अनुसार यह सब विचित्र आचरण है । वह समाज के आम पुरुष के समान एक ऐसी पत्नी चाहता है, जो उसके मन बहलाएँ और घर-परिवार की देखभाल करें ।

साहित्यकार घर-गृहस्थी के मामलों से कोसों मील दूर रहता है । क्योंकि उसकी दुनिया इन सब से अलग है । लेकिन नारी होने के कारण महिला साहित्यकार घर-गृहस्थी के मामले को नज़र-अंदाज़ नहीं कर सकती । क्योंकि हमारा समाज इसे बहुत बड़ी गलती मानता है ।

उसके पति के अनुसार "सब मामलों में उसकी अपनी राय एवं सिद्धान्त है । स्त्रियों केलिए कहे गये किसी मामले में उसका ध्यान नहीं।"५५ यह पुरुष-वर्चस्ववादी समाज का नज़रिया है । स्त्री को किसी भी बात पर अपनी राय प्रकट करने की आज़ादी नहीं है । उसी तरह लिखना, सोचना यह सब मर्दों का काम माना जाता है ।

मेबिल से पूछा जाता है - "एक औरत होने के नाते ज़िंदगी को सार्थक बनाने केलिए उसने ऐसा कौन सा काम किया है ।"५६ वह उत्तर देती है कि उसे नौकरी में डबल प्रमोशन (दुगुनी पदोन्नति) प्राप्त हुई है । तब अदालत यह जानना चाहता है कि इससे वैयक्तिक लाभ के सिवाय तुम्हारे परिवार को क्या लाभ हुआ है । यह माना जाता है कि अगर औरत का प्रमोशन होता है तो उसका लाभ सिर्फ उसके लिए ही होता है । लेकिन पुरुष की पदोन्नति का लाभ पूरे परिवार को है । लेकिन असलियत उसका ठीक विपरीत है ।

आगे उसने कहा कि वह साहित्य रचना कर रही है और उसकी रचनाएँ छप भी जाती है । तो अदालत ने इसका उत्तर यों देता है कि सिफारिश एवं अधिकार का प्रयोग करके कोई भी यह कर सकता है । इसका व्यंग्य यह है कि महिला कहानीकार की रचनाएँ अगर छपती है, तो वह सिफारिश के कारण ही है । इस तरह समाज की ओर से उसकी काबिलियत पर उँगली उठायी जाती है । नारी की प्रगति से समाज की प्रगति को आँका जाता है । लेकिन समाज हमेशा नारी की स्वाभाविक प्रगति को रोकने की कोशिश करता है । इसलिए नारी को समाज में अपनी अस्मिता को बनाये रखने केलिए बड़ा संघर्ष करना पड़ता है ।

५.१.३.३ अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति)

कहानी की नायिका अमला पढ़ी-लिखी एवं नौकरी पेश स्त्री है । वह अपने पति से तलाक चाहती है । उसके पति का किसी दूसरी स्त्री के साथ संबंध है । लेकिन माँ, पिताजी, उसके पति का दोस्त, उसकी सहेली आदि सब उसके फैसले के खिलाफ है । इस

कहानी के द्वारा चंद्रमती दिखाना चाहती है कि व्यक्ति, परिवार एवं समाज किस त रह स्त्री के ऊपर अपना हक जताता है । समाज हमेशा स्त्री के ऊपर अपने बनाए हुए नियम थोपकर उसे अपने नियंत्रण में रखने की कोशिश करता है ।

अमला की सहेली उसे समझाती है कि उसके पति सुरेश ने शायद गलती की होगी । "लेकिन इस धरती के प्राय: सभी पुरुष गलती करते हैं ।"५७ इसलिए यह कोई बड़ी बात नहीं । वह अमला के तलाक लेने के हठ के खिलाफ है । उसके अनुसार समाज तलाक-शुदा औरत का जीना हराम कर देती है । क्योंकि "समाज तलाक शुदा स्त्री के पीछे हमेशा नुक्स निकालने केलिए सूक्ष्म दर्शिनी लेकर चलता है ।"५८ इसलिए वह कहती है कि तलाक लेने के बाद स्त्री का एक पुरुष के साथ स्वतंत्र रूप से बात करना भी मुश्किल हो जाएगा । वह अमला को उपदेश देती है - "कई बातों को अनदेखा करके ही हम स्त्रियाँ समाज में जी सकती हैं ।"७१ वह आगे कहती है - "तलाक केलिए तेरी ज़िद्द शायद पूरी होगी । लेकिन तू ने कभी भी सोचा है कि तलाक लेनेवाली स्त्री को समाज विधवा से भी खतरनाक मानता है ।"५९ तलाक को लेकर समाज के इस नज़रिये के कारण ही नारी तलाक से डरती है, और पुरुष के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं जूटा पाती है । लेकिन अमला ऐसी नारी नहीं है । वह किसी भी कीमत पर पति का धोखा बर्दाश्त करने केलिए तैयार नहीं है ।

पिता के अनुसार अगर उसके पति सुरेश ने गलती की है तो उस में अमला का भी दोष है । क्योंकि जिस तरह विजयी पुरुष के पीछे स्त्री है तो गलती करनेवाले पुरुष के आगे भी स्त्री ही है । इसलिए वह बेटी से अपना हठ छोड़कर पति एवं बच्चों के साथ खुशी से रहने का उपदेश देता है ।

उसकी माँ पुराने ख्यालोंवाली है । माँ के अनुसार "औरत चाहे कितनी प्रगति करें, वह हमेशा औरत ही होती है । तेरी आज़ादी या व्यक्तित्व, ये सब मेरे समझ के बाहर की बात है । लेकिन मेरी माँ ने मुझे सिखाया था कि पुरुष जन्म से ही पूर्ण है और स्त्री अपूर्ण ।"६१ उसकी माँ का मानना है कि स्त्री को पूर्णता केलिए पुरुष का साथ चाहिए । लेकिन पुरुष अपने आप में पूर्ण है । उसे पूर्णता केलिए स्त्री की ज़रूरत नहीं। वह आगे बेटी को समझाती है - "मुझे मालूम है कि तू इस पर सहमत नहीं होगी । लेकिन अगर हम ने इस पर विश्वास किया तो हम सुरक्षित है ।"६२ भारतीय संस्कृति

अर्धनारीश्वर संकल्पना पर आधारित है । इसके अनुसार स्त्री एवं पुरुष एक दूसरे के बिना अपूर्ण है । लेकिन हमारा समाज हमेशा स्त्री को ही अपूर्ण मानता है और पुरुष को पूर्ण ।

अमला एवं सुरेश का दोस्त अमला से कहता है कि उसकी मुलाक़ात सुरेश से हुई है । सुरेश के अनुसार उसने कोई गलती नहीं की । अमला को उसने पूरी आज़ादी दी थी । तभी तो वह अपनी जिंदगी एवं नौकरी में इतने आगे बढ़ सकी । आगे पति का दोस्त कहता है कि वह अमला के पति से सहमत हूँ । अगर वह अमला के पति की जगह होता तो कभी भी अपनी पत्नी को इतनी आज़ादी नहीं देता । वह पत्नी को साथ लिये बिना कई बार दफ्तर के काम के सिलसिले में टूर (tour) गया है । लेकिन एक स्त्री कैसे एक अन्य पुरुष के साथ काम के सिलसिले में ही सही टूर पर जा सकती है । यह हमारे समाज की राय है । समाज ने स्त्री केलिए कई नियम बनाकर रखे हैं । न चाहकर भी उसे उसका पालन करना पड़ता है । उसका दोस्त अमला से क़हता है कि सुरेश तलाक नहीं चाहता । बच्चों के बारे में सोचकर वह सब कुछ भूलने केलिए तैयार है । अगर बात अदालत में पहूँचेगी तो बहुत बड़ी मुसीबत होगी । गलती तो सुरेश ने की है । लेकिन सुरेश का अहं यह मानने केलिए तैयार नहीं । भूलने की बात कहकर सुरेश अमला पर उदारता दिखा रहा है ।

इन सब की बातें सुनने के बाद अमला कहती है - "मैं ने आज़ादी चाही । और मैं ने पुरुष को अलग व्यक्तित्व नहीं एक ही व्यक्तित्व समझने की कोशिश की ।"६३ वह स्त्री एवं पुरुष के बीच भिन्नता नहीं मानती । उसके अनुसार दोनों बराबर है । यह चंद्रमती की नारीवादी सोच है । अमला का मानना है - "बचपन में मेरे पिताजी ने मेरे अंदर उगाये आज़ादी से ही मेरा सत्व रूपायित हुआ ।"६४ लेकिन उसी पिता जी ने अमला से कहा - "अकेले ज़िंदगी का मुक़ाबला करने की तेरी यह हिम्मत अस्थायी है ।"६५ अर्थात् उनके अनुसार स्त्री अकेले ज़िंदगी का सामना नहीं कर सकती । उसे जिंदगी में किसी की सहारे की ज़रूरत होती है । लेकिन अमला पति के सहारे के बिना अपना अस्तित्व बनाना चाहती है ।

अमल का यह विश्वास है कि चाहे विदेश में हो या स्वदेश में, उसे डर नहीं लगता था । क्योंकि उसका तन-मन सुरक्षित एवं पवित्र है । इसलिए उसे सज़ा भुगतने या क्षमा माँगने की ज़रूरत नहीं । उसने अपने पति को देवता माना । शायद उसकी यही गलती थी । मनुष्य गलती कर सकता है । लेकिन देवता नहीं । इसीलिए सुरेश की गलती ने

उसे इतना आहत कर दिया । उसे अच्छी तरह मालूम है कि सब उसके रक्त के प्यासे हैं । वह आगे बताती है - “अगर मेरे रक्त से सब की प्यास बुझेगी, तो कोई बात नहीं । मैं यहाँ निस्सहाय हूँ ।”६६

अमला के अनुसार वह आज़ादी का मोह रखने वाली है । लेकिन उसकी आज़ादी भारतीय संस्कृति की इज़ाजत के बाहर है । यह उसकी गलती थी । क्योंकि उसने स्त्री-पुरुष में भेद नहीं समझा । लेकिन अब उसे एहसास हुआ कि जो कुछ भी उसने सोचा या समझा था वह सब गलत है । अमला को किसी ने समझने की कोशिश नहीं की - न पति ने, न माँ ने, और न ही पिता ने । उसने अपनी ज़िंदगी में बच्चों को दूसरा स्थान ही दिया । उसके मन सबसे ऊँचे स्थान पर उसका पति ही विराजमान था । इसीलिए वह कहती है - “शायद इसीलिए सुरेश की अवनति ने मेरे दिल में इतना गहरा घाव बना दिया ।”६७ पति-पत्नी के बीच के रिश्ते की नीव भरोसे पर निर्भर है । जब भरोसा टूट जाता है तो नीव हिलने लगती है । अमला ने अपने पति पर आँख मूंदकर भरोसा किया था । इसीलिए उस भरोसे के टूटने से वह आहत हुई ।

अमला स्त्री-पुरुष के बीच किसी भी प्रकार के भेद न मानने वाली है । इसीलिए स्त्री की आज़ादी पर वह विश्वास रखती । लेकिन परिवार एवं समाज स्त्री की इस आज़ादी को माननेवाले नहीं । इसीलिए उसके एवं पति के पुरुष दोस्त का मानना है - “मैं अपनी पत्नी को दूसरे पुरुषों के साथ सफर करने नहीं दूंगा । उसका उनके साथ होटल में रहना मेरे लिए असहनीय है ।”६८ यह पुरुष-वर्चस्ववादी समाज का स्वर है । समाज नारी की आज़ादी की सीमा बाँधता है । स्त्री-पुरुष की समानता पर हज़ारों बातें करेंगे । लेकिन औद्योगिक काम केलिए ही सही स्त्री का पुरुष के साथ सफर करना या होटल में रहना समाज की आंखों में गुनाह है । समाज के इस दृष्टिकोण का बदलना ज़रूरी है ।

अमला के मन में सुरेश के प्रति हमेशा प्यार एवं इज्ज़त था । पति का दोस्त अमला से कहता है - “सुरेश के अनुसार अमला औद्योगिक काम के सिलसिले में कई बार होटल में रह चुकी है । उस वक्त जो कुछ भी उस होटल के कमरे में हुआ, उससे ज़्यादा कुछ उसने भी नहीं किया ।”६९ ये बातें सुनकर अमला दंग रह जाती है । उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसका पति उसके बारे में ऐसा सोचेगा । अमला के पति का मानना है कि अमला का भी किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध हुआ होगा ।

अमला कहती है - "शरीर पर कील ठोंक कर सलीब पर चढ़ने के बाद भी धरती की बेटी को शापमोक्ष मिलता नहीं । अमला, अमला हार जाती है ।"७० ईसा को सलीब पर चढना पडा । सच्चाई के बखान करने वाले को समाज हमेशा सूली पर चढ़ा देता है ।

इस कहानी की सब से बड़ी खूबी उसके हरेक पंक्ति में छिपे विपरीत अर्थ है । इसलिए पाठक को सतर्क होकर पंक्तियों के बीच में से उसका अर्थ निकालना है । अमला हमारे पुरुष-वर्चस्ववादी समाज के सामाजिक व्यवस्था से आज़ाद होने की इच्छा रखनेवाली है । लेकिन परिवार एवं समाज ने उसके ऊपर अपना अधिकार ज़मा लिया । अमला के अंदर स्त्री को अपने सत्व एवं अधिकार का एहसास तो ज़रूर है । लेकिन चारों तरफ से घेरे हुये सामाजिक व्यवस्था ने उसके अंदर की शक्ति को निचोड़ डाला है ।

५.१.३.४ अड़िच्चिरकुकल (नीचे का पंख)

"अड़िच्चिरकुकल" चंद्रमती की प्रतिकात्मक स्त्रीवादी कहानी है । इस में चिड़िया के ज़रिए नारी की आज़ादी का ज़िक्र करने की कोशिश की है । एक नन्ही सी चिड़िया के पंख काट दिये गये । यह चिड़िया एक विशेष किस्म की है । इस किस्म की चिड़ियाँ ज़्यादा उड़ती नहीं । इसलिए किसी ने भी उसके उड़ने के बारे में सोचा नहीं । क्योंकि उसके पंख तो पहले से ही काट दिया गया था ।

नन्ही चिड़िया ने अकेले ही उड़ने की कोशिश की । वह थोड़ी दूर तक उड़ने के अपने प्रयास में सफल भी हुई । यह देखने के बाद पक्षियों के समाज ने उसके लिए एक सोने का पिंजड़ा बनवाने का निश्चय किया । पाँच तोले सोने का पिंजड़ा बनवाया । एक छुरी से उसके नीचे के पंख काट दिये गये । उसके नीचे के पंखों के बारे में किसी को कानों कान खबर नहीं था ।

इसी तरह एक बार नीचे के पंख काट दिये जाने के कारण अस्वतंत्र एक तोता पिंजड़े से बच कर उस पेड़ पर रहने केलिए आयी थी । समाज के अन्य लोगों का मानना है कि इस तोते के असर के कारण ही हमारी चिड़िया भी उड़ने की कोशिश कर रही थी ।

पिंजड़े के अंदर बंद चिड़िया ने अपना पहला अंडा दिया । इस से सब खुश हुए । क्योंकि उन्होंने सोचा कि आगे से वह उड़ने की कोशिश नहीं करेगी । उसे मालूम पड़ जाएगा कि उसके पंख उड़ने केलिए नहीं बल्कि अंडों को गर्मी प्रदान करने केलिए है ।

लेकिन सब की आशाओं पर पानी फेर कर वह चिड़िया उड़ गयी और उसके बच्चे खाने केलिए तरस गये ।

इस कहानी में पाँच तोले सोने का पिंजड़ा स्त्री का मंगलसूत्र है । मंगलसूत्र स्त्री पर लगाम रखने की समाज की साजिश है । स्त्री का मंगलसूत्र उसकी आज़ादी की सीमा है । समाज स्त्री की आज़ादी की सीमा निर्धारित करता है । मंगल सूत्र उसकी आज़ादी पर रोक लगा लेता है । परिवार की जिम्मेदारियाँ उसे अपनी अस्मिता की तलाश में रोक डाल देती है । शादी को लेकर चंद्रमती की यह सोच उग्रवादी नारीवादियों की है

मन में आज़ादी की तीव्र अभिलाषा रखनेवाली चिड़िया उड़ने का प्रयास बार- बार करती रही । शायद इसी प्रयास के कारण उसके पंखों के नीचे छोटा सा पंख उग गया था । “नीचे का पंख देख कर सब ताज्जुब हो गये । क्योंकि उस किस्म की चिड़ियों के नीचे का पंख नहीं होते थे ।”७१ नीचे का पंख चिड़िया की आज़ादी का प्रतीक है । चिड़िया की तरह नारी भी अपनी आज़ादी चाहती है । उसकी पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण उसकी आज़ादी की चाह पर रोक डाल देती है । इसीलिए पक्षियों के समाज ने चिड़िया के पंख काट दिये । यहाँ पक्षियों का समाज चिड़िया को लेकर चिंतित है । उसी तरह हमारा समाज भी नारी की प्रगति को लेकर चिंतित है । यह चिंता उसकी प्रगति पर रोक लगा लेती है ।

चिड़िया निराश नहीं होती । वह अपनी कोशिश ज़ारी रखती है । बच्चे को जन्म देने के बाद पक्षियों के समाज ने सोचा कि अब वह उड़ने की कोशिश नहीं करेगी । क्योंकि बच्चे हमेशा माँ की ज़िम्मेदारी है । उसका पालन-पोषण स्त्री पर ही निर्भर है । लेकिन अगली पीढ़ी को जन्म देने के बाद वह अपनी अस्मिता की खोज में ऊपर नीले आसमान की ओर उड़ जाती है ।

नारी की उन्नति सामाजिक उन्नति है । यदि नारी की उन्नति नहीं होगी, तो समाज का विकास भी नहीं होगा । पति और बच्चे एक हद तक उसकी कमज़ोरी है । उसे अपने परिवार एवं अपनी प्रगति के बीच चुनाव करना पड़ता है । अपनी अस्मिता को कायम रखने केलिए उसे हमेशा अपने परिवार से, संबंधों से, एवं समाज से संघर्ष करना पड़ता है । यही संघर्ष नारी की अपनी पहचान का परिचायक होगा । अपनी अस्मिता को समाज में बनाये रखने केलिए उसे हमेशा समाज से संघर्ष करना पड़ता है । नारी का अस्तित्व उसकी अपनी अस्मिता पर निर्भर है ।

५.१.३.५ आर्यावर्तनम् (आर्या की गाथा)

"आर्यावर्तनम्" की नायिका आर्या पिताजी की दूसरी औरत विजयलक्ष्मी से नफरत करने के साथ आराधना का भाव भी रखती है । इसी आराधना की वजह से वह उस औरत की नकल करने की कोशिश करती है । पी.गीता के अनुसार "इस कहानी की आर्या का पारिवारिक अनुभव संकीर्ण है ।"७२ आर्या नामक यह लड़की एक साथ दो पुरुषों को अपनी आज्ञा शक्ति के ज़रिए अपने उंगलियों में नचानेवाली बड़ी नानी आर्या की परंपरा की है । लेकिन उस में उसकी बड़ी नानी का कोई गुण नहीं । उसकी बड़ी नानी की परंपरा के बाकी सारी औरतें कमजोर थी । आर्या की माँ सिर पर हाथ रखकर उसे भला-बुरा कहती है तो उसकी नानी कहती - "ये उस नाम को सार्थक बनायें । हम तो कायर थे । लेकिन शायद ये हमें इस गुलामी से आज़ाद कर दें ।"७३ आर्या की नानी का विश्वास है कि उनकी पोती आर्या उन्हें परंपराओं की गुलामी से मुक्त करा देगी, और इस तरह वह अपने पूर्वजों के नाम को सार्थक बनायेगी ।

आर्या का पिता शहर में काम करता है । वह चाहता है कि उसकी पत्नी उसके साथ शहर आकर रहे । लेकिन परंपरा से जुड़ी हुई माँ इसकेलिए तैयार नहीं होती । वह अपने भाइयों के साथ गाँव में रहती है । पिताजी आधुनिक रीति-रिवाज़ों को माननेवाले हैं ।

आर्या के पिताजी हफ्ते में एक बार घर आते थे । आर्या अपने पिता के साथ शहर जाना चाहती है । क्योंकि वह अपने पिता से बहुत प्यार करती है । एक बार वह माँ-बाप के साथ शहर में पिता के घर गयी थी । लेकिन माँ के ज़िंद की वजह से उन्हें वापस गाँव आना पड़ा ।

आर्या के नाना ने नानी के रहते ही घर की नौकरानी "कावम्मा" के साथ संबंध स्थापित किया । उसे दूसरी पत्नी का दर्जा भी दिया . नानी के देहांत के बाद कावम्मा का भाई उस घर में रहने आया । इसे लेकर पिताजी नाना से झगडॉ करने लगे । आर्या के मामा नाना की दूसरी पत्नी के भाई को घर से बाहर करना चाहते थे । लेकिन उनमें नाना के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं थी । इसलिए उन्होंने आर्या के पिताजी की सहायता ली । लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ । आर्या के पिताजी हमेशा केलिए घर छोड़कर शहर चले गये । उसके बाद वे कभी वापस नहीं आये । आर्या हर हफ्ते सिगरेट

के गंध लेकर आनेवाले पापा का इंतज़ार करती रही ।

उसके बाद उसने सुना कि वीणा बजानेवाली, जुही के फूल का गजरा बालों में लगानेवाली विजयलक्ष्मी पिताजी के घर में रहने लगी है । आर्या के मामा एक-एक करके अपना परिवार बनाकर बड़े घर से अलग चले गये । माँ नाना की दूसरी औरत "कावम्मा" के बच्चों को पालकर वहीं रही । नाना जी की मृत्यु पर माँ की आंखों से एक बूँद आँसू तक न निकली । नाना के मरने बाद वह बड़ा घर पूरी तरह से उनकी दूसरी पत्नी कावम्मा के अधीन हो गया ।

कुछ दिन तक आर्या की माँ भाइयों के पास जाकर रही । लेकिन ज़्यादा दिन वह वहाँ न रह सकी । एक दिन अचानक उनकी मृत्यु हुई । उस वक्त आर्या कालेज में पढ़ रही थी । आर्या ने उसकी माँ की आंखों में हमेशा नफरत एवं आँसू ही देखा था । माँ हमेशा पिता से झगड़ती रहती थी । आर्या को लगता है कि शायद इसीलिए पिताजी विजयलक्ष्मी नामक औरत को पसंद करने लागे थे । शायद इसीलिए माँ की मृत्यु पर माँ के पास बैठ कर भी वह सोचती है - "होंठों में हमेशा भर्त्सना और मन में विद्वेष लेकर पूरी ज़िंदगी जलाकर राख करनेवाली इस औरत की कोख में मेरा जन्म कैसे हुआ।"७४ आर्या ने कभी अपनी माँ से प्यार नहीं किया । वह विजयलक्ष्मी की कोख केलिए तरसती गयी ।

आर्या हमेशा पिताजी से बहुत प्यार करती थी । उसके मन में हालतों का सामना करने में असफल होकर रोनेवाली माँ से सहानुभूति नहीं, नफरत् था । आर्या के बड़े मामा ने उसे पढ़ाई केलिए शहर भेजा । घर-परिवार के संकीर्ण स्थितियों में उलझी हुई आर्या को विपिन की दोस्ती अच्छी लगी । वह उसके साथ मन से रिश्ता जोड़ना नहीं चाहती थी और दोस्ती से आगे भी जाना नहीं चाहती थी । लेकिन उनके इस दोस्ती को समाज एक अलग नज़रिये से देखता है । विपिन के साथ आर्या के समुद्र तट पर जाने की खबर बड़े मामा के पास पहूँचा । बड़े मामा ने उसे फोन पर खरीखोटी सुना दी । बड़े मामा के बर्ताव से दु:खित होकर आर्या विपिन से नशे की गोली मंगवाकर चख लेती है । स्त्री-पुरुष के बीच के दोस्ती को हमारा समाज बुरी नज़र से देखता है । उसे लेकर समाज की अलग सोच है । यहाँ चंद्रमती कहना चाहती है कि परिवार में प्यार एवं सम्मान न

मिलने वाले बच्चे एक ऐसी दुनिया में पहुँचते हैं कि वहाँ से लौटना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है ।

रिहाबिलिटेशन सेंटर (पुनर्वास केंद्र) में उसकी मुलाक़ात पिताजी के उम्रवाले मेनन से होती है । मेनन का गन्ध उसे पिताजी की याद दिलाती है । वह मेनन की ओर आकर्षित होती है । शहर में मेनन की माँ के छोटे घर में वह मेनन के साथ रहने केलिए जाती है । वह पिताजी की दूसरी औरत विजयलक्ष्मी की तरह बालों में गजरा लगाकर किसी का इंतज़ार करना चाहती है । उसका सपना है - "लिपस्टिक के असहनीयता से ऊबकर आनेवाले मुसाफिर को झरने की शीतलता प्रदान करना और उसके जैसे बच्चों को जन्म देना है । उसकी छाती पर सिर रखकर सोना है । वही आर्या को शांति मिलेगी ।"७५ वह अपने परिवार से भिन्न परिवार को चाहती है, जहां नफरत नहीं प्यार ही प्यार होता है । वह माधविकुट्टी की नायिकाओं की तरह प्यार की प्यासी है ।

आर्या समाज से लड़ना चाहती है । समाज की पुरानी मान्यताओं को तोड़ना चाहती है । चंद्रमती कहानी का अंत कुछ इस प्रकार करती है - "हवा ने मुझ से कहा - तुम्हारे शीशमहल तोड़ने केलिए लोग रवाना हुए हैं । एक नहीं एक हज़ार....जब ये आएंगे तब आर्या को कहाँ शांति मिलेगी ।"७६ अगर वह मेनन के साथ रहने लगेगी तो समाज इसे बर्दाश्त नहीं करेगा । समाज उस पर एक नहीं हज़ार बार वार करेगा और सामाजिक आलोचना का सामना करने की हिम्मत उसमें नहीं है ।

समाज के कुछ नियम एवं दायरे हैं । समाज हमेशा स्त्री को उस दायरे में बाँध कर रखना चाहता है । लेकिन जब नारी अपनी सहनशीलता को पार करती है, तो आर्या के समान बर्ताव करने लगती है । आर्या सामाजिक मान्यता के खिलाफ लड़ना चाहती है । इसीलिए वह मेनन के साथ रहने केलिए उसकी माँ के घर जाती है ।

मेनन के साथ उसके रिश्ते का कारण पिता के प्रति उसका प्यार था । क्योंकि मेनन उसे पिताजी की याद दिलाता था । बालों पर मेनन के हाथ का स्पर्श उसे पिताजी की याद दिलाता है । सालों पहले घर छोड़कर जाते समय पिताजी ने इसी तरह उसके बालों को सहलाया था । वह पिताजी की दूसरी औरत विजयलक्ष्मी की तरह बनना चाहती है । पिताजी का प्यार दूसरी औरत विजयालक्ष्मी को ही प्राप्त हुआ था । शायद इसीलिए वह मेनन की दूसरी स्त्री बनना चाहती है । लेकिन हमारा समाज इसे अलग दृष्टि से

देखता है । समाज के खिलाफ खड़े होने केलिए बड़ी ताकत की ज़रूरत होती है । शायद आर्या में वह हिम्मत होगी । तभी तो वह बड़ी नानी की परंपरा के "आर्या" नाम को सार्थक बना पायेगी ।

स्त्री हमेशा पुरुष की इच्छा के अनुसार, समाज की इच्छा के अनुसार अपने आप को बदलने की कोशिश करती रहती है । वह अपने आप को पुरुष की प्रतीक्षा के ढाँचे में डालकर संयमित होकर रहना चाहती है । चंद्रमती इसे स्त्री की गुलामी मानती है । उनके अनुसार यह गुलामी उसे सर्वनाश की ओर खींच लेगी । हमारी परंपरा एवं समाज लड़की की नैसर्गिक प्रगति को रोक लेता है । समाज हमेशा स्त्री को पुरुष के लैंगिक जरूरतों की पूर्ति करने की चीज़ के रूप में ही देखता है । समाज की यह सोच स्त्री के मानसिक संतुलन को बिगाड़ देता है । आर्या इस का उत्तम उदाहरण है ।

निष्कर्ष

चंद्रमती की कई ऐसी कहानियाँ है जिस में पात्र एवं कहानीकार को पृथक करना मुश्किल हो जाता है । कभी-कभी पात्र कहानी से बाहर निकलकर पाठकों से संवाद भी करते हैं । उनके अनुसार उनकी कहानियों में बीस प्रतिशत आत्मन्श मौजूद है । चंद्रमती की "देवी ग्रामम्" एवं "आर्यावर्तनम्" कहानियों में चित्रित कई पात्र उनके ही भिन्न चेहरे हैं ।

उनकी नायिकाएँ परिवार के साथ जुड़ी हुई हैं । वे अपनी वैयक्तिक अस्मिता को परिवार के साथ जोड़ कर देखती है । उन्होंने "जनकीय कोड़ती(लोक अदालत्)" कहानी में महिला साहित्यकार के वैचारिक संघर्ष को सामाजिक अस्मिता के साथ जोड़कर देखने की कोशिश की है । उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार परिस्थिति साहित्यकार पर दबाव डालकर उनके दृष्टिकोण को बदलता है ।

संदर्भ

१. कत्तुकुत्तु - चंद्रमती - पृ.सं. ३६६

२. ओरु सूपर कथा (एक सूपर कहानी)- चंद्रमती - पृ.सं. ४०७

३. ओरु सूपर कथा (एक सूपर कहानी)- चंद्रमती - पृ.सं. ४०७

४. सर्वम् सहा (सब कुछ सहनेवाली) - चंद्रमती - पृ.सं. २२३

५. सर्वम् सहा (सब कुछ सहनेवाली) - चंद्रमती - पृ.सं. २२१

६. वारांत्यम् (हफ्ते का अंतिम दिन) - चंद्रमती - पृ.सं. ४६

७. वारांत्यम् (हफ्ते का अंतिम दिन) - चंद्रमती - पृ.सं. ४६

८. वारांत्यम् (हफ्ते का अंतिम दिन) - चंद्रमती - पृ.सं. ४७

९. वारांत्यम् (हफ्ते का अंतिम दिन) - चंद्रमती - पृ.सं. ४७

१०. गाँव का एक त्योहार जिसकी कहानी दारिक नामक राक्षस के वध से संबन्धित है ।

११. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. १०१

१२. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. १०५

१३. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. १०५

१४. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. ११९

१५. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. १०७

१६. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. ११३

१७. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. ११९

१८. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. १२०

१९. निलत्तिल पोर् - चंद्रमती - पृ.सं. १२०

२०. कथा राघवीयम् (कहानी राघव की) - चंद्रमती - पृ.सं. ८१

२१. कथा राघवीयम् (कहानी राघव की) - चंद्रमती - पृ.सं. ८३

२२. कथा राघवीयम् (कहानी राघव की) - चंद्रमती - पृ.सं. ८३

२३. ओरु नववधुविंडे जीवितत्तिल् ग्रेयम् ग्रीनिण्डे प्रसक्ति (एक नवोढ़ा के जीवन में ग्रेयम ग्रीन की प्रासंगिकता) - चंद्रमती - पृ.सं. ५२७

२४. ओरु नववधुविंडे जीवितत्तिल् ग्रेयम् ग्रीनिण्डे प्रसक्ति (एक नवोढ़ा के जीवन में ग्रेयम ग्रीन की प्रासंगिकता) - चंद्रमती - पृ.सं. ५२९

२५. ओरु नववधुविंडे जीवितत्तिल् ग्रेयम् ग्रीनिण्डे प्रसक्ति (एक नवोढ़ा के जीवन में ग्रेयम ग्रीन की प्रासंगिकता) - चंद्रमती - पृ.सं. ५२८

२६. ओरु नववधुविंडे जीवितत्तिल् ग्रेयम् ग्रीनिण्डे प्रसक्ति (एक नवोढ़ा के जीवनमें ग्रेयम ग्रीन की प्रासंगिकता) - चंद्रमती - पृ.सं. ५३०

२७. ज्योति विश्वनाथण्डे(पोस्ट मोडेन)कथा (ज्योति विश्वनाथन की पोस्ट मार्डन कहानी) - चंद्रमती - पृ.सं. १७८

२८. ज्योति विश्वनाथण्डे (पोस्ट मोडेन)कथा (ज्योति विश्वनाथन की पोस्ट मार्डन कहानी) - चंद्रमती - पृ.सं. १७६

२९. ज्योति विश्वनाथण्डे (पोस्ट मोडेन)कथा (ज्योति विश्वनाथन की पोस्ट मार्डन कहानी) - चंद्रमती - पृ.सं. १७३

३०. ज्योति विश्वनाथण्डे (पोस्ट मोडेन)कथा (ज्योति विश्वनाथन की पोस्ट मार्डन कहानी) - चंद्रमती - पृ.सं. १७६

३१. ज्योति विश्वनाथण्डे (पोस्ट मोडेन)कथा (ज्योति विश्वनाथन की पोस्ट मार्डन कहानी) - चंद्रमती - पृ.सं. १७४

३२. लाल रंग के नारियल का पेड़

३३. तांगुचुरुलुकल - चंद्रमती - पृ.सं. २५८

३४. तांगुचुरुलुकल - चंद्रमती - पृ.सं. २५८

३५. तांगुचुरुलुकल - चंद्रमती - पृ.सं. २५७

३६. पावनस्मरणयकु नेरमिल्लाते (पुण्य स्मृति केलिए फुर्सत नहीं) - चंद्रमती -पृ.सं. ३३२

३७. अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन) - चंद्रमती - पृ.सं. १३३

३८. अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन) - चंद्रमती - पृ.सं. १३३

३९. अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन) - चंद्रमती - पृ.सं. १३४

४०. अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन) - चंद्रमती - पृ.सं. १३४

४१. अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन) - चंद्रमती - पृ.सं. १३४

४२. अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन) - चंद्रमती - पृ.सं. १३७

४३. अंजामंडे वरवु (पांचवें का आगमन) - चंद्रमती - पृ.सं. १३४

४४. ९/११ - चंद्रमती - पृ.सं. ५३२

४५. ९/११ - चंद्रमती - पृ.सं. ५३६

४६. ९/११ - चंद्रमती - पृ.सं. ५३६

४७. ९/११ - चंद्रमती - पृ.सं. ५३६

४८. मालत्तिनु वेलियिल (दराज के बाहर) - चंद्रमती - पृ.सं. १६

४९. मालत्तिनु वेलियिल (दराज के बाहर) - चंद्रमती - पृ.सं. १४

५०. मालत्तिनु वेलियिल (दराज के बाहर) - चंद्रमती - पृ.सं. १७

५१. मालत्तिनु वेलियिल (दराज के बाहर) - चंद्रमती - पृ.सं. १८

५२. मालत्तिनु वेलियिल (दराज के बाहर) - चंद्रमती - पृ.सं. १९

५३. जनकीय कोड़ती (लोक अदालत) - चंद्रमती - पृ.सं. १६१

५४. जनकीय कोड़ती (लोक अदालत) - चंद्रमती - पृ.सं. १५९

५५. जनकीय कोड़ती (लोक अदालत) - चंद्रमती - पृ.सं. १६१

५६. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती - पृ.सं. १५१

५७. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती - पृ.सं. १५२

५८. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती - पृ.सं. १५१

५९. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५१

६०. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५४

६१. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५४

६२. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५५

६३. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५६

६४. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५३

६५. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५६

६६. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५६

६७. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५६

६८. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५५

६९. अमलयुड़े मोचनम् (अमला की मुक्ति) - चंद्रमती- पृ.सं. १५५

७०. अड़िच्चिरकुकल (नीचे का पंख) - चंद्रमती - पृ.सं. १७८

७१. देवदूतिकल् माँञ्जुपोवत् - पी.गीता - पृ.सं. ११५

७२. आर्यावर्तनम् (आर्या की गाथा) - चंद्रमती - पृ.सं. १४१

७३. आर्यावर्तनम् (आर्या की गाथा) - चंद्रमती - पृ.सं. १४१

७४. आर्यावर्तनम् (आर्या की गाथा) - चंद्रमती - पृ.सं. १४५

७५. आर्यावर्तनम् (आर्या की गाथा) - चंद्रमती - पृ.सं. १४५

आधार ग्रन्थ

१.	आदि-अनादि	चित्रा मुद्गल सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली, प.सं -२००९
२.	चंद्रमतियुड़े कथकल्	चंद्रमती डी.सी बुक्स कोट्टयम्, प.सं -२००९

सहायक ग्रन्थ सूची

हिन्दी

क्र.सं	पुस्तक का नाम	लेखक व प्रकाशक का नाम
१.	आज का स्त्री आंदोलन	सं.रमेश उपाध्याय & सज्ञा उपाध्याय शब्द संधान, पश्चिम विहार, नई दिल्ली ११००६३ प.सं -२००४
२.	आम औरत -ज़िंदा सवाल	सुधा अरोडा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प.सं -२००९
३.	औरत केलिए औरत	नासिरा शर्मा , सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली,प.सं -२०१०
४.	औरत के हक में	तस्लीमा नज़रिन (अनुवाद) मुनमुन सरकार
५.	औरत : कल आज और कल	आशारानी ब्योरा, कल्याणी शिक्षा परिषद, दरियागंज, नई दिल्ली, प.सं -१९८३
६.	अंधेरे में सितारों की तलाश	डॉ.शणमुखन,

		जवाहर पुस्तकालय, सदर बाज़ार मथुरा (उ.प्र) -२८१००१,प.सं -२०
७.	उपनिवेश में स्त्री	प्रभा खेतान , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प.सं -२००३
८.	कृष्ण सोबती और सारा जोसफ के उपन्यासों में भारतीय नारी	डॉ.शीना ईपन जवाहर पुस्तकालय, सदर बाज़ार, मथुरा (उ.प्र) -२८१००१, प.सं - २०१०
९.	खुली खिड़कियाँ	मैत्रेयी पुष्पा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प.सं -२००९
१०.	चूकते नहीं सवाल	मृदुला गर्ग, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली,प.सं -२००२
११.	चित्रा मुद्गल -एक मूल्यांकन	के.वनजा, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली प.सं -२०११
१२.	चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन	डॉ.गोरक्ष थोरत अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प.सं -२०११
१३.	नयी सदी की पहचान श्रेष्ठ महिला कहानीकार	ममता कालिया, लोकभरती प्रकाशन, नई दिल्ली
१४.	नारी अस्मिता के विविध आयाम	डॉ.शनमुखन जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (उ.प्र),

१६.	नारी अस्मिता और कृष्णा सोबती-	अरुणा मुकिम, सन्मार्ग प्रकाशन, जवाहर नगर, नई दिल्ली, प.सं -२०१०
१७.	नारीवादी राजनीति -संधर्ष एवं मुद्दे	सं. साधना आर्य, निवेदिता मेनन जीनी लोकनीता हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय
१८.	भारतीय नारी-दशा दिशा	आशरानी ब्योरा, नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, प.सं - १९८३
२०.	भारतीय सामाजिक व्यवस्था	राम आहूजा रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली, प.सं-१९९५
२१.	मन माँजने की ज़रूरत	अनामिका सामयिक प्रकाशन, दरिया गंज नई दिल्ली, प.सं -२००८
२२.	मन्नू भण्डारी का रचना संसार	डॉ.शिना ईपन जवाहर पुस्तकालय मथुरा (उ.प्र), प.सं -२००९
२३.	मलयालम और हिन्दी कहानी में नारी मुक्ति आंदोलन	डॉ.रमला बीवी जवाहर पुस्तकालय मथुरा (उ.प्र), प.सं-२०१३,
२४.	महिला सशक्तिकरण : वायदे और हकीकत	डॉ.रेणु त्रिपाठी, रोहित पब्लिशिंग हाउस विश्वास नगर, शाहदरा दिल्ली -३२, प.सं - २००८

२५.	महिला सशक्तिकरण	प्रियंका माथुर, ज्योति प्रकाशन, जयपुर, प.सं - २०१२
२६.	मालती जोशी का कथात्मक साहित्य	डॉ.राजेंद्र सिंह चौहान समता प्रकाशन कानपुर प.सं-२००५
२७.	श्रुगला की कड़ियाँ	श्रीमती महादेवी वर्मा राधाकृषण प्रकाशन नई दिल्ली
२८.	समकालीन हिन्दी कहानी	बलराम, दिनमान प्रकाशन नई दिल्ली, प.सं -१९९०
२९.	समकालीन हिन्दी कहानी स्त्री-पुरुष संबंध	सुनंत कौर अभिव्यंजना प्रकाशन नई दिल्ली
३०.	समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप	डॉ. धनश्याम दास भुतडॉ अतुल प्रकाशन, ब्रह्मनगर, कानपुर, प.सं -१९९३
३१.	साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ	डॉ.विजया वारदा, विकासप्रकाशन, कानपुर, प.सं -१९९३
३२.	सठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी	डॉ.सौ .मंगल कप्पिकेरे, विकास प्रकाशन, कानपुर - २०८०२७, प.सं -२००२
३३.	स्त्री आकांक्षा के मानचित्र	गीताश्री, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प.सं -२०१०
३४.	स्त्रीत्व के मानचित्र -	अनामिका सामयिक प्रकाशन, दरिया गंज

		नई दिल्ली, प.सं -२००८
३५.	स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ -	रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प.सं -२०००
३६.	स्त्री का प्रतिरोध -चित्रा मुद्गल के उपन्यास "एक ज़मीन अपनी में"	के.पी.विजयश्री, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (उ.प्र), प.सं -२०१२
३७.	स्त्री-विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य	डॉ.के.एम.मालती, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली -११०००२, प.सं -२०१०
३८.	स्त्रीवाद और महिल उपन्यासकर	डॉ.वैशाली देशपांडे, विकास प्रकाशन कानपुर-२७,प.सं -२००७
३९.	स्त्री-विमर्श : साहित्यिक और	डॉ.करुणा उमरे, अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, प.सं -२००९
४०.	स्त्री लेखन और समय के सरोकार	हेमलता महीश्वर नेहा प्रकाशन नई दिल्ली, प.सं -२००८
४१.	स्त्री संधर्ष का इतिहास	डॉ. राधाकुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प.सं -२००५
४२.	हिन्दी कथा साहित्य में रूढ़िमुक्त स्त्री	डॉ.बी.सुधा, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प.सं -२०१०
४३.	हिन्दी कहानी का समकालीन परिदृश्य -	डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (उ.प्र), प.सं -२०१०
४८.	हिन्दी कहानी और नारी विमर्श	डॉ.शोभा निंबाल्कर,

		मानसी पब्लिकेशन्स, दरिया गंज, नई दिल्ली, प.सं -२००८
४९.	हिन्दी का गद्य साहित्य	डॉ.रामचन्द्र तिवारी, विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प.सं -१९९२
५०.	हिन्दी कथा साहित्य के विकास में	डॉ.ऊर्मिल गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प.सं -१९६६
५१.	हिन्दी कहानी के सौ वर्ष	सं.एन.एम.सन्नी और अन्ना सन्नी जवाहर पुस्तकालय मथुरा (उ.प्र), प.सं-२०१३
५२.	हिन्दी कहानी और मुस्लिम समाज	दीपिका रानी, संजय प्रकाशन, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२,
४५	हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी	डॉ.रेणु गुप्ता, अभिरुचि प्रकाशन
५५.	हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी के बदलते स्वरूप	डॉ.सुधा बालकृष्णन, संजय बुक सेंटर, गोलधर, वाराणसी -२२१००१ प.सं -१९९७
५६.	हिन्दी साहित्य में रूढ़ि मुक्त स्त्री	डॉ.सुधा.बी जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (उ.प्र), प.सं-२०१०

मलयालम

१.	अग्नियुम कथकलुम	सितारा एस.
२.	इस्लाम मतवुम् स्त्री स्वातंत्र्यवुम्	एन.वी.सुहरा

	(इस्लाम धर्म और स्त्री आज़ादी)	मैत्री बुक्स तिरुवनंतपुरम
३.	कन्नाडिकल उड़क्युन्नतेंद	पी.गीता करंट बुक्स तृशूर प.सं-१९९०
४.	गीता हिरण्यन्डे कथकल	गीता हिरण्यन
५.	चरित्रतिले पेन्नीडंगल	रश्मी बिनोय केरल भाषा संस्थान तिरुवनंतपुरम, प.सं-२००८
६.	तारुण्यतिंदे कथादरंगल	एस.श्रीजित पापरस बुक्स, प.सं-२००७
७.	देवदूतिकल माञ्जुपोवत	पी.गीता साहित्य प्रवर्तक सहकरण संघम नॅशनल बुक स्टाल कोट्टयम प.सं-१९९०
८.	पापत्तरा (पाप का चबूतरा)	सारा जोसफ करंट बुक्स तृशूर प.सं-१९९०
९.	पेणबुद्धीयुम् मट्टु प्रधान कृतिकलुम् (स्त्रीबुद्धि और अन्य कृतियाँ)	के.एस.रविकुमार डी.सी.बुक्स कोट्टयम् , प.सं-२००३
१०.	पेन्नेषुत्त	एन.जयकृष्णन केरल भाषा संस्थान

		तिरुवनंतपुरम, प.सं-२००२
११.	फेमिनिज़म -I	सं-डॉ.जानसी जाइम्स केरल भाषा संस्थान तिरुवनंतपुरम, प.सं.-२०१०
१२.	फेमिनिज़म -II	एन.जयकृष्णन केरल भाषा संस्थान तिरुवनंतपुरम, प.सं.-२०१०
१३.	फेमिनिज़म - चरित्रपरमाया ऑरान्वेषणम्	डॉ.एम.लीलावती प्रभात् बुक हाउस तिरुवनंदपुरम प.सं. २०००
१४.	फेमिनिस्ट साहित्य विमर्शनम्	एन.के.रवीन्द्रन हरिता पुस्तक केन्द्र तृशूर, प.सं.-१९९६
१५.	मौनत्तिंटे नानार्थङ्गल	एन.के.रवीन्द्रन हरिता पुस्तक केन्द्र तृशूर
१६.	माधविकुट्टीयुड़े स्त्रीकल	माधविकुट्टी मातृभूमि बुक्,
		कोट्टयम
१७.	माधविकुट्टीयुड़े स्त्रीकल	(सं)कलरकोड़ वासुदेवन नायर करंट बुक्स तृशूर प.सं-१९८५
१८.	वर्जिना वुल्फ एषुट्टक्कारियूडे मुरि	अनुवाद -एन.मूसक्कुटी मातृभूमि बुक्स कोट्टय, प.सं-२००४
१९.	स्त्री नीति -	(सं).डा.वी.एम.राजलक्ष्मी केरल भाषा इन्स्टीस्टुट

		तिरुवनंदपुरम, प.सं-१९८७
२०.	राजलक्ष्मी	रति मेनन साहित्य अकादमी नई दिल्ली प.सं-१९९०
२१.	शिशिर ऋतु की चींटियाँ	पी वत्सला. डी.सी बुक्स कोट्टयम
२२.	स्त्री, परिस्थिति, आत्मीयता	डॉ. मिनी प्रसाद क्राइस्तव सभा, तिरुवल्ला प.सं-२००९
२३.	स्त्री विमोचनतिन् ओरु नवदर्शनम्	ओषो मुद्रा बुक्स, कन्नूर, प.सं-२०००
२४.	स्त्री सत्वाविष्कारम -आधुनिक मलयालम साहित्यतिल	डॉ.एम.लीलावती केरल साहित्य अकादमी तिरुवनंदपुरम, प.सं-२००८
२५.	स्त्री,सत्वम् ,समूहम् : माधविकुट्टीयूडे कथकल ओरु पढनम्	ई.वी.रामकृष्णन पूर्णा पब्लिकेशन कालिकट, प.सं-१९९४
२६.	स्त्री -शास्त्रम् , समूहम्	(सं.)टी.के.आनंदी & डॉ.के.एन.गणेश केरला शास्त्र परिषद, त्रिशूर

अग्रेज़ी

१.	Who Stole Feminism	Christina Holf Sommers Simon&Schuster Rockefeller Center New York-10020
2.	The Woman destroyed	Translated by Patrick O'Brian

		Flamingo Fontana First Edition-1997
3.	Patriarchy	V.Geetha STREE Bhatkal and Sen South Avenue Calcutta 700026 First Edition -2007

कोश ग्रंथ

१.	अग्रेज़ी - हिन्दी वाक्यांश एवं मुहावरा कोश	डॉ. भारत भूषण & डॉ. सुरेश अवस्थी राजकमल प्रकाशन महात्मागांधी मार्ग अलहाबाद
२.	बृहत् प्रामाणिक हिन्दी कोश	आचार्य रामचन्द्र वर्मा (सं) लोकभारती प्रकाशन महात्मागांधी मार्ग अलहाबाद प.सं. २००४
३.	मलयालम् - मलयालम् हिन्दी कोश	एन.कुमारपिल्ले प्रशान्ति पब्लिशेर्स तिरुवनंदपुरम्
४.	शब्दतारावली	पी. दामोदरन नायर एस.पी.एस.एस कोट्टयम् प.सं. १९२३
५.	हिन्दी - मलयालम् - अग्रेज़ी कोश	डी.सी बुक्स कोट्टयम् प.सं. १९९७

पत्र-पत्रिकाएँ

१. मधुमती -मार्च -२०११
२. पंचशील शोध समीक्षा - मार्च २०११

३. संग्रथन -जुलाई -२०११
४. समीक्षा -जुलाई-सितंबर-१९९३राष्ट्रीय सहारा -११ नवंबर २००२
५. संकल्प -जुलाई-सितंबर -२००८
६. प्रेरणा -जनवरी-मार्च २०११
७. देशाभिमानी -२०११ जुलाई २१

Web-sites

1. www.literatureworld.com(hindi link)
2. www.gadhyakosh
3. www.swargvibha

अध्याय एक

नारी अस्मिता : स्वरूप एवं प्रक्रिया

अध्याय दो

हिन्दी महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता

अध्याय तीन

मलयालम् महिला कहानीकारों में नारी अस्मिता

अध्याय चार

चित्रा मुद्गल की कहानियों में

नारी अस्मिता

अध्याय पाँच

चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता

अध्याय छः

चित्रा मुद्गल एवं चंद्रमती की कहानियों में नारी अस्मिता - एक खोज

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची